VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

आर्थिक समीक्षा

2023–24

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

8468022022
9019066066

enquiry@visionias.in | /c/VisionIASdelhi | /visionias_upsc | vision_ias | /VisionIAS_UPSC | www.visionias.in

आर्थिक समीक्षा 2023-24

का सारांश

विषय-सूची

अध्याय 1: अर्थव्यवस्था की स्थिति: निरंतर आगे बढ़ते हुए ____ 2

अध्याय 2: मौद्रिक प्रबंधन और वित्तीय मध्यस्थता: स्थिरता ही मूलमंत्र ____ 15

अध्याय 3: कीमतें और मुद्रास्फीति: नियंत्रण में ____ 30

अध्याय 4: बाह्य क्षेत्र: समृद्धि के बीच स्थिरता ____ 39

अध्याय 5: मध्यम अवधि परिदृश्य: नए भारत के लिए विकास का विजन ____ 52

अध्याय 6: जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा संक्रमण: समझौताकारी सामंजस्य ____ 59

अध्याय 7: सामाजिक क्षेत्र: कल्याण जो सशक्त करे ____ 74

अध्याय 8: रोजगार और कौशल विकास: गुणवत्ता की ओर ____ 89

अध्याय 9: कृषि और खाद्य प्रबंधन: यदि हम सही कर लें तो कृषि में बढ़ोतरी अवश्य है ____ 103

अध्याय 10: उद्योग: लघु एवं मध्यम दोनों अपरिहार्य ____ 115

अध्याय 11: सेवाएं: विकास के अवसरों को बढ़ावा देना ____ 131

अध्याय 12: अवसंरचना: संभावित विकास को प्रोत्साहन ____ 138

अध्याय 13: जलवायु परिवर्तन और भारत: हमें समस्या को अपने नजरिए से क्यों देखना चाहिए ____ 151

MCQs के उत्तर ____ 162

अभ्यर्थियों के लिए संदेश

प्रिय अभ्यर्थी,

आर्थिक सर्वेक्षण को बेहतर तरीके से समझना जरूरी है। अतः आर्थिक सर्वेक्षण को अधिक व्यापक और आसान तरीके से समझने के लक्ष्य के साथ इस डॉक्यूमेंट में निम्नलिखित नए खंड शामिल किए गए हैं:

आर्थिक सर्वेक्षण को समझें: यह खंड, आर्थिक सर्वेक्षण क्या है और इसके महत्त्व का अवलोकन प्रदान करता है। यह आर्थिक सर्वेक्षण की आगे के विश्लेषणों के लिए मजबूत आधार प्रदान करता है।

प्रीकैप: इसके जरिए प्रत्येक अध्याय के आरंभ में एक स्नैपशॉट दिया गया है, जिसमें अध्याय में शामिल विचारों और विषय-वस्तु पर प्रकाश डाला गया है।

बजट में क्या कहा गया है?: यह खंड आर्थिक सर्वेक्षण और केंद्रीय बजट के बीच संबंधों का विश्लेषण तथा व्याख्या करता है। इससे यह समझने में मदद मिलेगी कि कैसे यह सर्वेक्षण बजट के लिए व्यापक आर्थिक संदर्भ प्रदान करता है।

शब्दावली: इसमें अध्याय में प्रयुक्त प्रमुख टर्म या पद का संग्रह है (प्रत्येक अध्याय के अंत में)।

क्विज़ और मुख्य परीक्षा के प्रश्न: प्रत्येक अध्याय को बेहतर तरीके से समझने और उसके महत्वपूर्ण बिंदुओं को याद रखने के लिए, अध्यायों के अंत में एक क्विज़ (MCQ) और मुख्य परीक्षा के प्रश्न जोड़े गए हैं। MCQ के उत्तर डॉक्यूमेंट के अंत में दिए गए हैं।

© Vision IAS

आर्थिक सर्वेक्षण को समझें

आर्थिक सर्वेक्षण क्या है?

यह **भारत के विकास पथ का व्यापक विश्लेषण** प्रस्तुत करता है। इसमें हमारे राष्ट्र के प्रति वैश्विक आशावाद को दर्शाया गया है। इसके अतिरिक्त, इसमें अवसंरचना पर ध्यान देने के साथ ही कृषि एवं उद्योग जैसे क्षेत्रकों में विकास और भविष्योन्मुखी क्षेत्रकों पर भी बल दिया गया है

इसे कौन तैयार करता है?

- **वित्त मंत्रालय** के **आर्थिक कार्य विभाग (DEA)** के आर्थिक प्रभाग (Economic Division) द्वारा,
- यह **मुख्य आर्थिक सलाहकार (CEA) के मार्गदर्शन में** तैयार किया जाता है।

आर्थिक सर्वेक्षण बजट से कैसे संबंधित है?

प्रस्तुति और तैयारी

- यह **बजट प्रस्तुत किए जाने के एक दिन पहले** जारी किया जाता है।
- यह देश में वार्षिक आर्थिक विकास का सारांश प्रस्तुत करता है और अर्थव्यवस्था की लघु एवं मध्यम अवधि की संभावनाओं को रेखांकित करता है।
- आगामी वर्ष के बजट से पहले इसे संसद में पेश किया जाता है।

बजट के लिए नीतिगत परिप्रेक्ष्य

- **वित्त मंत्रालय के एक प्रमुख दस्तावेज** के रूप में, आर्थिक सर्वेक्षण **अर्थव्यवस्था के सभी पहलुओं को शामिल करते हुए विस्तृत सांख्यिकीय डेटा** प्रदान करता है।
- यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए आधिकारिक मार्गदर्शिका है और आम तौर पर यह केंद्रीय बजट के लिए नीतिगत परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

आर्थिक परिदृश्य

- आर्थिक सर्वेक्षण देश की आर्थिक प्रवृत्तियों को उजागर करता है। ये प्रवृत्तियां संसाधनों को जुटाने के प्रयासों और बजट में उनके आवंटन में वृद्धि को प्रेरित करती हैं।
- यह सर्वेक्षण **कृषि और औद्योगिक उत्पादन, बुनियादी ढांचे, रोजगार, वित्त की आपूर्ति, व्यापार, विदेशी मुद्रा भंडार और अन्य प्रासंगिक आर्थिक कारकों के रुझानों का विश्लेषण** करता है। ये सभी कारक बजट को प्रभावित करते हैं।

आर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 का केंद्र बिंदु

परस्पर सहयोग और आम सहमति के आधार पर देश का संचालन करना

इस सर्वेक्षण में भू-राजनीतिक चुनौतियों का सामना करने में **भारतीय अर्थव्यवस्था की क्षमता** को उजागर किया गया है और विकास की गति को बनाए रखने के लिए विशेष रूप से निजी क्षेत्रक से निरंतर निवेश की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

यह कौशल विकास और तकनीकी अनुकूलन को साकार करने, रोजगार वृद्धि सुनिश्चित करने और शिक्षा को बाजार की जरूरतों के अनुरूप विकसित करने के लिए **सरकार, निजी क्षेत्रक एवं शिक्षा जगत के बीच एक त्रिपक्षीय व परस्पर सहयोग का आह्वान करता है।**

यह जटिल वैश्विक परिदृश्य का सामना करने और संधारणीय विकास प्राप्त करने के लिए अनुपालन के बोझ को कम करने, मशीनरी और उपकरणों में निवेश को बढ़ाने और संघ और राज्य सरकारों के बीच सहयोग को बढ़ावा देने के महत्त्व पर जोर देता है।

आर्थिक सर्वेक्षण 2022-23 का केंद्र बिंदु

भारतीय अर्थव्यवस्था का लचीलापन, इसके विकास स्तंभ और परिवर्तनकारी सुधारों से कमतर विकास-परिणाम

यह इस बात पर प्रकाश डालता है कि अर्थव्यवस्था में **अस्थायी आघातों के कारण सरकार द्वारा किए गए परिवर्तनकारी सुधारों के बावजूद अपर्याप्त प्रतिफल** प्राप्त हुए हैं।

हालांकि, वर्तमान दशक में, **मध्यम अवधि के मजबूत विकास स्तंभों की उपस्थिति** आशावाद और उम्मीद प्रदान करती है।

महामारी के इन वैश्विक आघातों और 2022 में **कमोडिटी की कीमतों में बढ़ोतरी के प्रभावों के कम होने के बाद, भारतीय अर्थव्यवस्था आने वाले दशक में तेजी से बढ़ने के लिए तैयार** है।

आपको इसे क्यों पढ़ना चाहिए?

यह **देश के आर्थिक कल्याण का एक समग्र परिप्रेक्ष्य** प्रदान करता है। यह महत्वपूर्ण है क्योंकि यह **नागरिकों को अर्थव्यवस्था की स्थिति से परिचित कराता है** और उन्हें सरकार के **प्रमुख आर्थिक निर्णयों के बारे में सूचित** करता है। यह **भारतीय अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रकों, उनके अंतर-संबंधों और संवृद्धि के चालकों का एक संक्षिप्त विवरण** देता है। इस तरह, यह अर्थव्यवस्था के सिंहावलोकन के साथ-साथ सामयिक और क्षेत्रीय विश्लेषण प्रदान करता है।

भारतीय अर्थव्यवस्था की स्थिति का चित्रात्मक रूपण

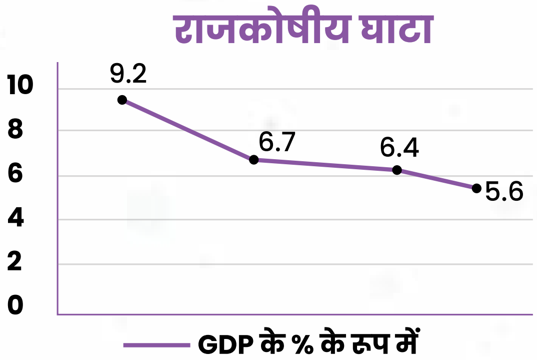

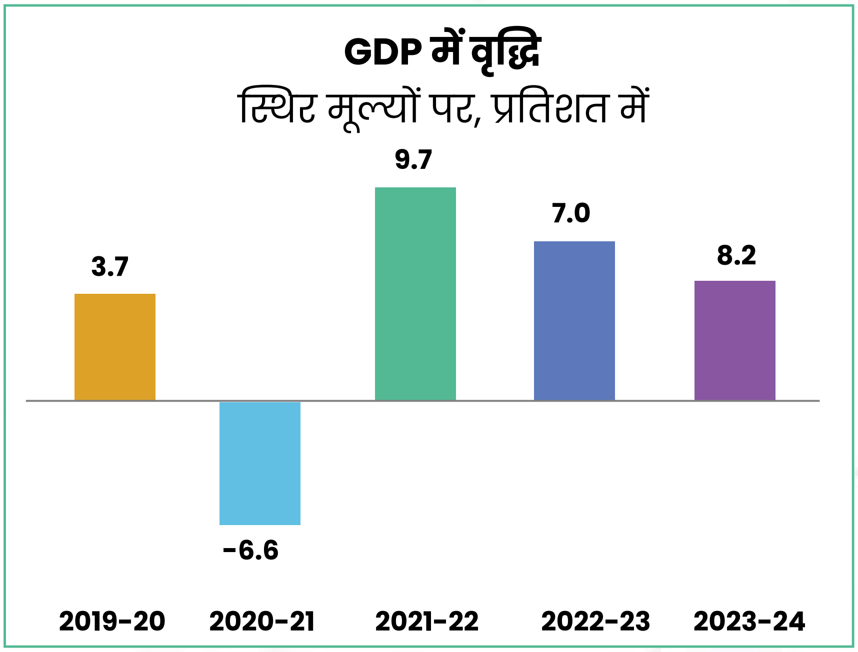

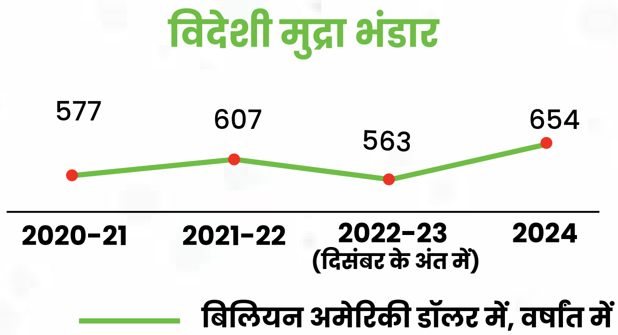

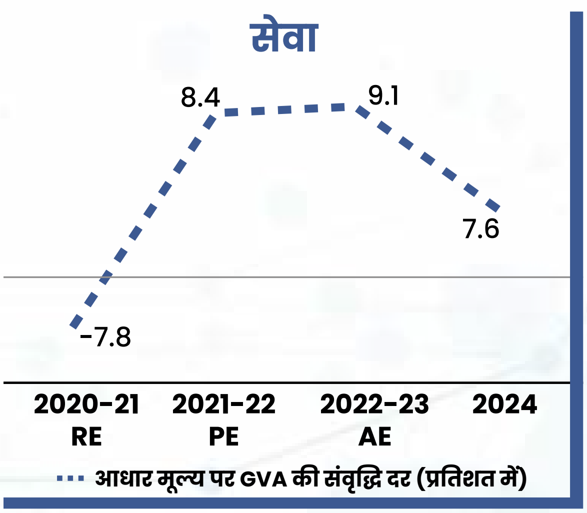

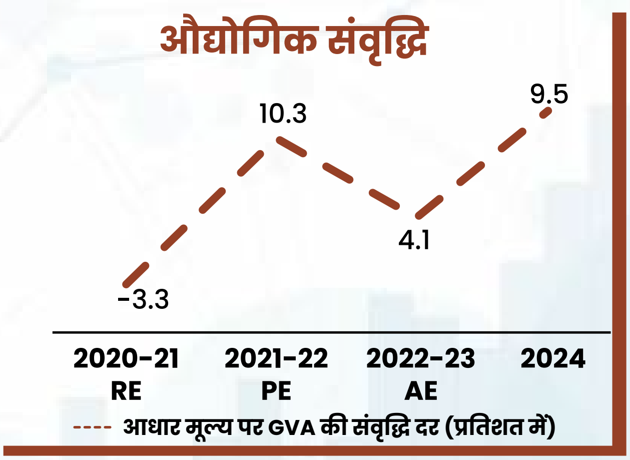

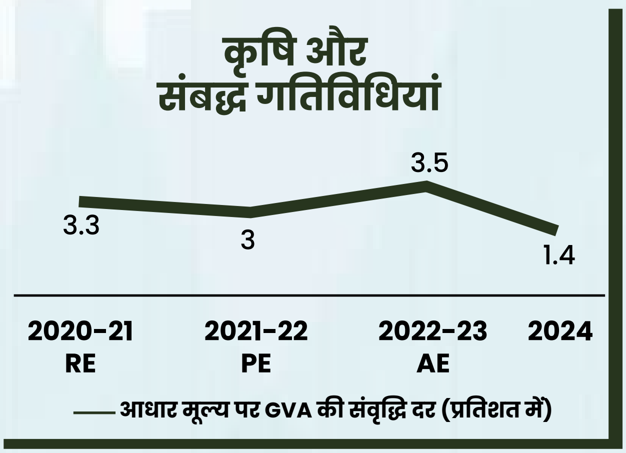

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

OUR ACHIEVEMENTS

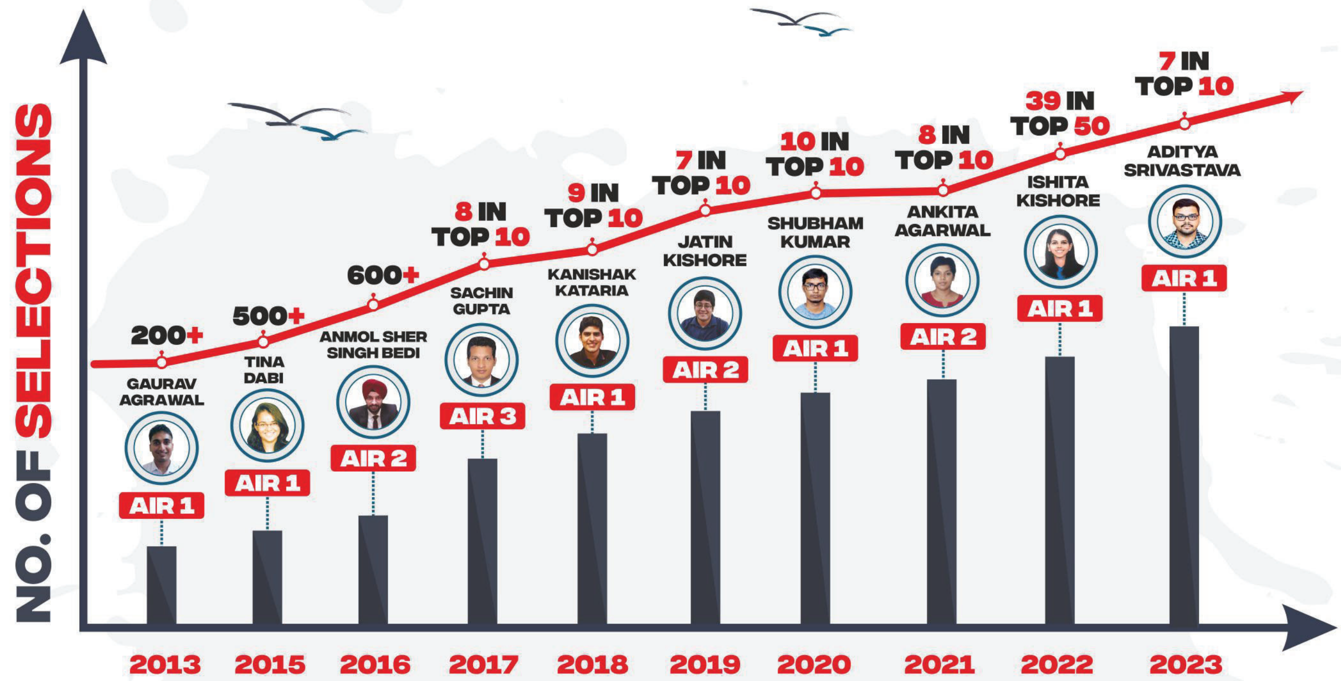

LIVE/ONLINE Classes Available

www.visionias.in

Foundation Course
GENERAL STUDIES
PRELIMS cum MAINS 2025

DELHI: 12 AUG, 9 AM | 14 AUG, 1 PM | 17 AUG, 5 PM
29 JULY, 1 PM | 30 JULY, 9 AM | 31 JULY, 5 PM

GTB Nagar Metro (Mukherjee Nagar):
30 AUG, 5:30 PM | 19 JULY, 8:30 AM | 23 JULY, 5:30 PM

AHMEDABAD: 20 AUG | BENGALURU: 21 AUG | BHOPAL: 5 SEPT | CHANDIGARH: 18 JULY

HYDERABAD: 12 AUG | JAIPUR: 21 AUG | JODHPUR: 11 JULY | LUCKNOW: 5 SEPT | PUNE: 5 JULY

फाउंडेशन कोर्स सामान्य अध्ययन 2025

- प्रारंभिक, मुख्य परीक्षा और निबंध के लिए महत्वपूर्ण सभी टॉपिक का विस्तृत कवरेज

DELHI: 22 अगस्त, 1 PM | 18 जुलाई, 1 PM | BHOPAL: 23 जुलाई | LUCKNOW: 18 जुलाई | JAIPUR: 16 अगस्त | JODHPUR: 11 जुलाई

Scan the QR CODE to download VISION IAS App. Join official telegram group for daily MCQs & other updates.

/visionias.upsc | /c/VisionIASdelhi | /c/VisionIASdelhi | /t.me/s/VisionIAS_UPSC

DELHI: HEAD OFFICE: 1st floor, Apsara Arcade, Near Gate-7 Karol Bagh Metro Station, 1/8 b, Pusa Road, Karol Bagh, Delhi – 110005 | CONTACT: 8468022022, 9019066066

AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | CHANDIGARH | GUWAHATI | HYDERABAD | JAIPUR | JODHPUR | LUCKNOW | PRAYAGRAJ | PUNE | RANCHI

अध्याय 1: अर्थव्यवस्था की स्थिति: निरंतर आगे बढ़ते हुए (State of The Economy: Steady as She Goes)

परिचय

आर्थिक मोर्चे पर कोविड महामारी के प्रति भारत की नपी-तुली प्रतिक्रिया में **तीन प्रमुख घटक शामिल** थे। इनमें पहला; बुनियादी ढांचे में सार्वजनिक व्यय पर ध्यान केंद्रित करना, दूसरा; व्यावसायिक उद्यमों एवं लोक प्रशासन की स्वाभाविक प्रतिक्रिया, और तीसरा; आत्मनिर्भर भारत अभियान शामिल हैं।

वैश्विक संकट, आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान और **मानसून की अनिश्चितता की वजह से बीच-बीच में घरेलू मुद्रास्फीति के दबाव में वृद्धि देखी गई।** हालांकि, प्रशासनिक एवं मौद्रिक नीति उपायों से इस दबाव से निपटने में मदद मिली। सार्वजनिक निवेश के बढ़ने के बावजूद सामान्य सरकार (केंद्र व राज्य सरकारों को मिलाकर) के **राजकोषीय संतुलन में उत्तरोत्तर सुधार हुआ है।** ऐसा कर अनुपालन बढ़ने से हुए लाभ की वजह से हुआ है। पिछले तीन वित्तीय वर्षों में भारतीय अर्थव्यवस्था में रिकवरी हुई है और इसका विस्तार हुआ है। वित्त वर्ष 2024 में वास्तविक सकल घरेलू उत्पाद (रियल GDP) वित्त वर्ष 2020 की तुलना में 20% अधिक रही। आर्थिक संवृद्धि **समावेशी रही है।** बेरोजगारी एवं बहुआयामी गरीबी में कमी तथा श्रम बल भागीदारी में वृद्धि से इसके स्पष्ट संकेत प्राप्त होते हैं।

अध्याय का प्रीकैप

वैश्विक आर्थिक परिदृश्य	मजबूत (रेजिलिएंट) भारतीय अर्थव्यवस्था के संकेतक
• **वैश्विक अर्थव्यवस्था** में **2023 में 3.2% की वृद्धि दर्ज की** गई, **जो 2022 की तुलना में मामूली** कमी को दर्शाती है। • **वैश्विक सामान्य सरकार के राजकोषीय घाटा** (GDP के प्रतिशत में) में 2022 की तुलना में 2023 में 1.6 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई। • वर्ष 2022 की तुलना में 2023 में **वैश्विक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) में गिरावट** आई है। • **वैश्विक अर्थव्यवस्था के समक्ष प्रमुख जोखिमों में शामिल हैं;** उच्च मुद्रास्फीति दबाव, बढ़ता भू-राजनीतिक तनाव, सीमा-पार वस्तुओं की आवाजाही पर प्रतिबंध और व्यवधान, उच्च ब्याज दर पर उधार मिलना, आदि।	• वित्त वर्ष 24 में **भारत की रियल GDP वृद्धि दर 8.2%** रही। इस उच्च वृद्धि दर की वजहें हैं; स्थिर उपभोग मांग और निवेश करने में बढ़ती रूचि। • चालू मूल्यों पर समग्र सकल मूल्य वर्धित (GVA) में **कृषि, उद्योग** एवं **सेवा क्षेत्रकों की हिस्सेदारी क्रमशः 17.7%, 27.6% और 54.7% थी।** • वर्ष 2023 में वैश्विक संवृद्धि मंद होने के कारण **वस्तुओं के निर्यात में मामूली गिरावट दर्ज की गई।**

समष्टिगत आर्थिक (मैक्रो-इकोनॉमिक) स्थिरता आर्थिक संवृद्धि में निरंतरता सुनिश्चित करती है
  ◦ केंद्र सरकार **का राजकोषीय घाटा वित्त वर्ष 23 में GDP का 6.4% था, जो घटकर** वित्त वर्ष 24 में **GDP** का 5.6% हो गया।
  ◦ वित्त वर्ष 24 में केंद्र सरकार की **राजस्व प्राप्तियों** में वर्ष-दर-वर्ष आधार पर **14.5% की वृद्धि** दर्ज की गई।
• **वित्त वर्ष 24 के लिए पूंजीगत व्यय 9.5 लाख करोड़ रुपए** रहा है, जो कि वर्ष दर वर्ष आधार पर 28.2% की वृद्धि दर्शाता है। यह व्यय वित्त वर्ष 20 के स्तर से 2.8 गुना अधिक है।
• **प्रमुख सब्सिडी पर व्यय में** वर्ष दर वर्ष आधार पर 22.1% की गिरावट दर्ज की गई है, जिसका मुख्य कारण उर्वरक एवं खाद्य सब्सिडी में कमी थी।
	समावेशी विकास
	• भारत का सामाजिक कल्याण अप्रोच **इनपुट-आधारित अप्रोच से आउटकम-आधारित सशक्तिकरण अप्रोच** में बदल गया है।
	• **बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति में पूर्ण-स्तर** अप्रोच प्राप्त करने में अंतिम व्यक्ति तक सेवा का लाभ पहुंचाना जरूरी है। इसके लिए सुधारों को लक्षित तरीके से लागू किया जा रहा है।
	• **महिला श्रम बल भागीदारी दर** पिछले छह वर्षों से बढ़ रही है। यह भागीदारी **2017-18 की 23.3% से बढ़कर 2022-23 में 37% हो गई।**
	• भारत में बहुआयामी गरीबी (Multidimensionally poor) पर नीति आयोग के परिचर्चा पत्र के अनुसार, **2015-16 से 2022-23 के बीच बहुआयामी गरीबों की संख्या में अधिक कमी** आई है।
	• **2022-23 में प्रति व्यक्ति मासिक उपभोग व्यय (MPCE)** में रियल टर्म्स में **2011-12 की तुलना में ग्रामीण** एवं **शहरी दोनों क्षेत्रों में वृद्धि दर्ज की गई है।**

• 13 वर्षों में पहली बार, **एस. एंड पी. ग्लोबल रेटिंग्स ने** मई 2024 में भारत की सॉवरेन क्रेडिट रेटिंग आउटलुक को **'स्थिर' से अपग्रेड करके 'सकारात्मक' (पॉजिटिव) कर दिया।** • **खुदरा मुद्रास्फीति (Retail inflation)** वित्त वर्ष 23 में औसतन 6.7% रहने के बाद **वित्त वर्ष 24 में घटकर 5.4% रह गई।** • वित्त वर्ष 24 में भारत से सेवा क्षेत्रक निर्यात 341.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर की **नई ऊंचाई** पर पहुंच गया। • मार्च 2024 के अंत में **बाह्य ऋण कम होकर GDP के 18.7%** तक आ गया था।	

आर्थिक परिदृश्य

- भारतीय अर्थव्यवस्था **कोविड महामारी के संकट से तेजी से उबर गई** है। वित्त वर्ष 24 में इसकी रियल आधार पर GDP, कोविड-पूर्व वित्त वर्ष 20 के स्तर से 20% अधिक रही है।
- **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) का अनुमान है कि 2024 में वैश्विक अर्थव्यवस्था की संवृद्धि दर 3.2% रहेगी।** जोखिम मोटे तौर पर संतुलित रहेंगे। वित्त वर्ष 2020 में समाप्त दशक के दौरान औसत वार्षिक वैश्विक संवृद्धि दर 3.7% थी।
- **2024 में भू-राजनीतिक संघर्षों के बढ़ने से** आपूर्ति श्रृंखला में व्यवधान, वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि, मुद्रास्फीति का दबाव फिर से बढ़ सकता है और मौद्रिक नीति में ढिलाई (ब्याज दरों में कटौती) को रोका जा सकता है। इससे पूंजी निवेश पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
- वैश्विक स्तर पर आर्थिक प्रदर्शन में अनिश्चितता के बावजूद भारत में घरेलू विकास के लिए जिम्मेदार घटकों ने वित्त वर्ष 24 में आर्थिक संवृद्धि को बनाए रखने में मदद की है। इस आर्थिक सर्वेक्षण में **6.5% से 7% की रियल GDP संवृद्धि दर** का अनुमान लगाया गया है।

वैश्विक आर्थिक परिदृश्य

- **संवृद्धि** : वर्ल्ड इकनोमिक आउटलुक (अप्रैल 2024) के अनुसार वैश्विक अर्थव्यवस्था ने 2023 में 3.2% की संवृद्धि दर्ज की, जो 2022 की तुलना में मामूली कमी है।
- **वैश्विक आर्थिक संवृद्धि के समक्ष चुनौतियां:** इनमें उच्च मुद्रास्फीति का दबाव, बढ़ते भू-राजनीतिक तनाव, वस्तुओं की सीमा-पार आवाजाही में व्यवधान, उच्च ब्याज दर पर उधार मिलना और विकसित अर्थव्यवस्थाओं में आर्थिक संवृद्धि दर का कम होना शामिल हैं।
- **राजकोषीय स्थिति:** वैश्विक **सामान्य सरकारी राजकोषीय घाटा** (GDP के प्रतिशत के रूप में) 2022 की तुलना में 2023 में 1.6% बढ़ गया।
    - यह वृद्धि मुख्यतः राजस्व प्राप्ति में गिरावट के कारण हुई है, वहीं व्यय सामान्यतः स्थिर ही रहा है।
    - इस वजह से, **वैश्विक सार्वजनिक ऋण भी** बढ़कर 2023 में GDP का 93.2% हो गया।
- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI):** 2022 की तुलना में 2023 में वैश्विक FDI इंफ्लो में गिरावट दर्ज की गई।
- **वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए जोखिम:**
    - **उच्च मुद्रास्फीति:** सर्विस आधारित मुद्रास्फीति और मजबूत श्रम बाजार के कारण, विशेष रूप से अधिकतर विकसित अर्थव्यवस्थाओं में, **कोर मुद्रास्फीति अधिक (स्टिकी) बनी रही।**
        - इस स्थिति ने कई केंद्रीय बैंकों को नीतिगत ब्याज दरों को उच्च स्तर पर बनाए रखने या 2023 में उनमें और वृद्धि के लिए मजबूर किया।
    - **क्षेत्रीय अंतर:** विकसित अर्थव्यवस्थाओं की बात करें तो संयुक्त राज्य अमेरिका की अर्थव्यवस्था में संवृद्धि दर की निरंतरता देखी गई वहीं **यूरो क्षेत्र में आर्थिक गतिविधियां धीमी रही।**
        - **यूरो क्षेत्र में** मंदी की वजह घरेलू संरचनात्मक समस्याएं, भू-राजनीतिक संघर्षों (जैसे कि रूस-यूक्रेन संघर्ष) का तुलनात्मक रूप से अधिक जोखिम तथा मौद्रिक नीति का सख्त होना रही है।

मजबूत (रेजिलिएंट) घरेलू अर्थव्यवस्था

- **मजबूत संवृद्धि दर:** वैश्विक चुनौतियों के बावजूद, **भारत की रियल GDP में वित्त वर्ष 2023-24 में 8.2% की संवृद्धि** दर्ज की गई। यह उच्च संवृद्धि स्थिर उपभोग मांग और निवेश करने में रुचि में सुधार के कारण हुई है।
  - आपूर्ति पक्ष की दृष्टि से, 2011-12 की कीमतों पर **सकल मूल्य वर्धित (GVA) में वित्त वर्ष 24 में 7.2%** की वृद्धि दर्ज की गई।
  - स्थिर (2011-12) कीमतों पर **निवल करों में वित्त वर्ष 24 में 19.1% की वृद्धि दर्ज की गई।** मजबूत कर वृद्धि और **सब्सिडी व्यय को तार्किक बनाने से** निवल करों की वृद्धि में सहायता मिली। यह वित्त वर्ष 24 में GDP और GVA वृद्धि के बीच अंतर का कारण बना।
- **अलग-अलग क्षेत्रकों की हिस्सेदारी:** वित्त वर्ष 24 में चालू मूल्यों पर समग्र GVA में **कृषि, उद्योग और सेवा क्षेत्रकों** की हिस्सेदारी क्रमशः **17.7%, 27.6% व 54.7%** थी।
  - **कृषि:** अनियमित मौसम पैटर्न और सभी जगह समान मानसूनी वर्षा नहीं होने के कारण **कृषि क्षेत्रक में GVA में वृद्धि की गति मंद रही है।**
  - **उद्योग:** वित्त वर्ष 24 में **विनिर्माण GVA में 9.9% की वृद्धि** दर्ज की गई। इनपुट (लागत) कीमतों में कमी और स्थिर घरेलू मांग की वजह से ऐसा संभव हुआ।
  - **सेवा:** GST व ई-वे बिल, दोनों में दोहरे अंकों की वृद्धि और मजबूती से उभरती हुई संपर्क-गहन सेवाएं (व्यापार, परिवहन, रियल एस्टेट) सेवा क्षेत्रक की वृद्धि के रूप में प्रदर्शित हुई। गौरतलब है कि **संपर्क-गहन सेवाएं (कांटेक्ट इंटेंसिव सर्विसेज)** कोविड महामारी के दौरान सबसे अधिक प्रभावित हुई थीं।
    - **वैश्विक क्षमता केन्द्रों** यानी **ग्लोबल कैपेसिटी सेंटर्स (GCCs) के प्रसार ने** भी भारत से सेवा निर्यात को मजबूती प्रदान की है।
- **निजी उपभोग:** वित्त वर्ष 2024 में **निजी अंतिम उपभोग व्यय (PFCE)** में रियल टर्म में 4% की वृद्धि हुई। निजी उपभोग GDP वृद्धि में एक महत्वपूर्ण और स्थिर घटक रहा है।
- **पूंजी निर्माण:** सकल स्थायी पूंजी निर्माण (GFCF) आर्थिक संवृद्धि के एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में उभर रहा है, जैसा कि **नॉमिनल** GDP **में इसकी बढ़ती हिस्सेदारी से स्पष्ट होता है।**
  - **निजी पूंजीगत व्यय: भारत, निजी पूंजीगत अप-सायकल यानी वृद्धि** के मध्य में है। सरकारी पूंजीगत व्यय से इसे और सहायता मिली है। वित्त वर्ष 23 में निजी क्षेत्र की गैर-वित्तीय कंपनियों द्वारा सकल स्थायी पूंजी निर्माण में 19.8% की वृद्धि दर्ज की गई।
  - **घरेलू (हाउसहोल्ड) पूंजी निर्माण:** 2013 के बाद से 2023 में सबसे अधिक आवासीय रियल एस्टेट की बिक्री की वजह से **घरेलू** क्षेत्रक, **पूंजी निर्माण प्रक्रिया में सबसे आगे रहे हैं।**

चार्ट I.21: निजी पूंजीगत व्यय में लगातार वृद्धि

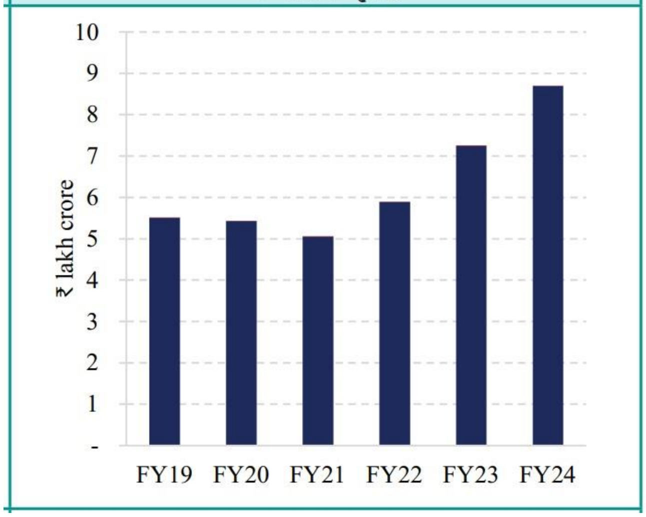

- **ऋण:** अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (SCBs) द्वारा औद्योगिक सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यमों (MSMEs) और सेवाओं को ऋण वितरण उच्च आधार (दर) के बावजूद **दोहरे अंकों में बढ़ रहा है।**
  - इसी प्रकार, आवासीय मांग में वृद्धि के अनुरूप, आवास के लिए **पर्सनल लोन में भी उछाल आया है।**
- **निर्यात: 2023 में** वैश्विक अधिक वृद्धि की गति धीमी होने के कारण **वस्तुओं के निर्यात में मामूली गिरावट** दर्ज की गई है।
  - इस संकुचन को फिक्स्ड निवेश (भौतिक संपत्तियों में निवेश) में वृद्धि द्वारा संतुलित किया गया। इससे **बाहरी प्रोत्साहनों के स्थान पर घरेलू प्रोत्साहनों का मिलना जारी रहा।**

बॉक्स 1.1. GDP, GVA और उनके घटकों में वृद्धि जारी रहने से मांग व उत्पादन को कोई स्थायी नुकसान नहीं हुआ

वित्त वर्ष 24 में GDP महामारी-पूर्व के अनुमानों के स्तरों पर पहुंच गई। **GVA, निजी उपभोग,** सकल स्थायी पूंजी निर्माण **और औद्योगिक GVA** मे भी **त्वरित रिकवरी दर्ज की गई। इस तरह मांग या उत्पादन में स्थायी नुकसान को टालने में मदद मिली।**

- कोविड महामारी की वजह से संकुचन ने **प्रति-चक्रीय (काउंटर-साइक्लिकल) राजकोषीय नीति** लागू करने का अवसर प्रदान किया। इस नीति के तहत पूंजीगत व्यय बढ़ाने पर बल दिया गया। इससे **सरकार के नेतृत्व में पूंजी निर्माण,** आर्थिक विकास के मुख्य आधार बने।
- **इसने प्रक्रियाओं में सुधारों को लागू करने** और **पब्लिक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर के उपयोग को** भी बढ़ावा दिया। इससे व्यवसाय करना आसान हो गया।
- कोविड महामारी की वजह से अधिक लोगों ने **डिजिटल प्रौद्योगिकियों को अपनाया और इससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिला।**

मैक्रो-इकोनॉमिक स्थिरता आर्थिक संवृद्धि में निरंतरता सुनिश्चित करती है

सार्वजनिक वित्त (पब्लिक फाइनेंस) में सुधार

- **राजकोषीय घाटा:** भारत राजकोषीय समेकन यानी फिस्कल कंसोलिडेशन को सही करने की राह पर है। केंद्र सरकार का **राजकोषीय घाटा** वित्त वर्ष 23 में सकल घरेलू उत्पाद के 6.4% से घटकर **वित्त वर्ष 24 में सकल घरेलू उत्पाद के 5.6% पर आ गया।**
  - राजकोषीय घाटे को कम रखने की प्रतिबद्धता ने **संप्रभु ऋण को सहनीय सीमा तक बनाए रखने में मदद की है।**
  - राजकोषीय घाटे में कमी की मुख्य वजह **प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष करों में मजबूत वृद्धि** तथा **बजटीय लक्ष्य से कहीं अधिक गैर-कर राजस्व** प्राप्त होना रही है। भारतीय रिजर्व बैंक से अधिक सरप्लस ट्रांसफर की वजह से **गैर-कर राजस्व अधिक** प्राप्त हुआ।
  - पिछले कुछ वर्षों में, **पूंजीगत व्यय** राजकोषीय घाटे का एक बड़ा हिस्सा **रहा है।** यह दर्शाता है कि उधार लिए गए संसाधनों की उत्पादकता यानी उपयोग में सुधार हुआ है।

चार्ट I.33: लगातार घटता घाटा अनुपात

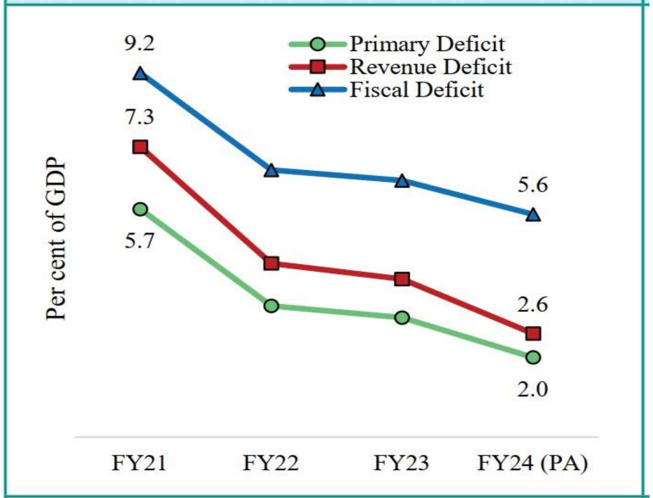

- **राजस्व:** महामारी के बाद राजकोषीय स्थिति में सुधार काफी हद तक राजस्व में वृद्धि के कारण प्राप्त किया जा सका है।
  - **राजस्व प्राप्तियां:** केंद्र सरकार की राजस्व प्राप्तियों में वित्त वर्ष 24 (PA) में **वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 14.5% की वृद्धि हुई है।** इसमे कर व गैर-कर राजस्व, दोनों में मजबूत वृद्धि हुई।
  - **सकल कर राजस्व (GTR):** वित्त वर्ष 24 में **सकल कर राजस्व में वृद्धि** 13.4% रहने का अनुमान लगाया गया। इस तरह **कर राजस्व में 1.4% की उछाल (टैक्स ब्याऐंशी) दर्ज की गई।**
    - यह वृद्धि वित्त वर्ष 23 की तुलना में **प्रत्यक्ष करों में 15.8% की वृद्धि और अप्रत्यक्ष करों में 10.6% की वृद्धि के कारण संभव हुई।**
    - मोटे तौर पर, **सकल कर राजस्व** का **55% प्रत्यक्ष करों से** और शेष **45% अप्रत्यक्ष करों से प्राप्त हुआ।**
    - **समय के साथ कर संग्रह की दक्षता में** वृद्धि हुई है। प्रत्यक्ष करों के संग्रह की लागत वित्त वर्ष 20 में सकल संग्रह के 0.66% से घटकर वित्त वर्ष 23 में 0.51% हो गई।

चार्ट I.36: मजबूत प्रत्यक्ष कर वृद्धि से सकल कर राजस्व में जीडीपी अनुपात में वृद्धि

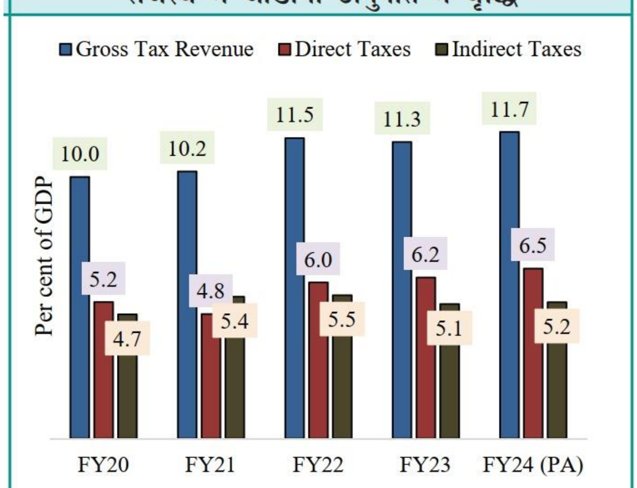

- **पूंजीगत व्यय: पूंजीगत व्यय** के लिए आवंटित कुल व्यय के हिस्से में **उत्तरोत्तर वृद्धि दर्ज की गई है। इससे व्यय की गुणवत्ता में सुधार हुआ है।**

© Vision IAS

- वित्त वर्ष 24 के लिए **पूंजीगत व्यय 9.5 लाख करोड़ रुपये रहा,** जो वित्त वर्ष 23 की तुलना में 28.2% अधिक है और वित्त वर्ष 20 के स्तर से 2.8 गुना अधिक है।
- सरकारी पूंजीगत व्यय से **निजी निवेश को भी बढ़ावा मिला है** और केंद्र सरकार राज्यों को **पूंजीगत परिसंपत्तियों के सृजन के लिए अनुदान-सहायता वितरित करती रही है। इससे राज्यों को अपने उत्पादक व्यय को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन मिला है।**
- **पूंजी निर्माण में निजी क्षेत्र को भी अपनी गति बढ़ानी चाहिए।** हालांकि, वित्त वर्ष 19 और वित्त वर्ष 23 के बीच, समग्र सकल पूंजी निर्माण में निजी गैर-वित्तीय कंपनियों की हिस्सेदारी में केवल 0.8% की वृद्धि हुई और यह 34.9% हो पाई है।

चार्ट I.40: केंद्र सरकार के प्रभावी पूंजीगत व्यय और जीडीपी अनुपात में वृद्धि[29]

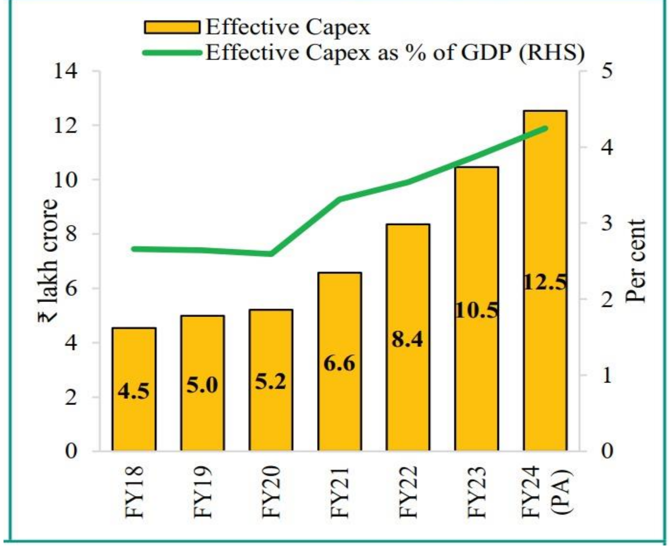

- **राजस्व व्यय:** बजट अनुमानों की तुलना में वित्त वर्ष 24 के लिए कुल व्यय **60.6 हजार करोड़ रुपये कम है,** हालांकि, ग्रामीण विकास और शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रकों के लिए राजस्व व्यय आवंटन बजट अनुमानों से अधिक है।
  - **ब्याज भुगतान:** कुशल व्यय प्रबंधन के साथ-साथ कम ब्याज पर उधार मिलने से **ब्याज भुगतान पर बजटीय व्यय में मामूली गिरावट आई है।** ब्याज भुगतान वित्त वर्ष 24 में राजस्व व्यय का 30.4% था।
    - **राजकोषीय समेकन** (फिस्कल कंसोलिडेशन) के प्रति प्रतिबद्धता के साथ ही **परिसंपत्ति मुद्रीकरण** (एसेट मोनेटाइजेशन) और **निजीकरण** से प्राप्त राजस्व, राजस्व व्यय में ब्याज भुगतान के हिस्से को कम करने के लिए आवश्यक होगा।
  - **सब्सिडी व्यय: प्रमुख सब्सिडी पर व्यय में** वर्ष-दर-वर्ष आधार पर 22.1% की कमी आई है, जिसका मुख्य कारण वित्त वर्ष 24 में उर्वरक और खाद्य सब्सिडी में क्रमशः 24.6% व 22.4% की कमी थी।

चार्ट I.45: राज्यों की कुल बकाया देनदारियाँ सकल घरेलू उत्पाद का % की दर से घट रही हैं

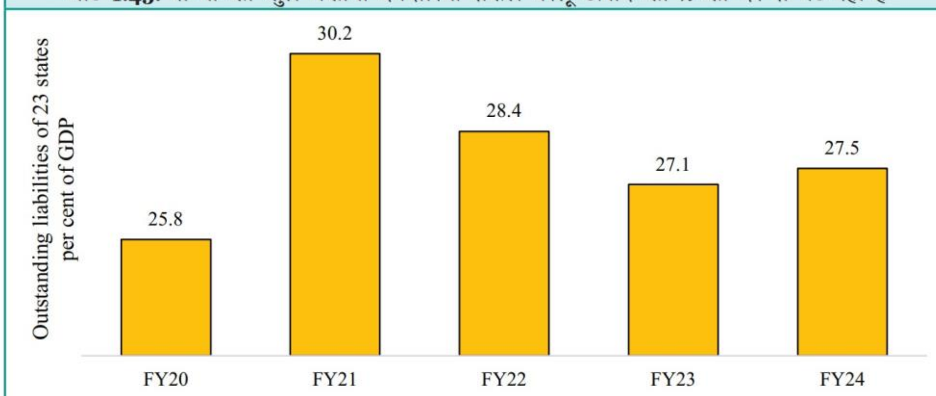

स्रोत: विवरण 19: राज्य सरकारों की कुल बकाया देनदारियाँ, राज्य वित्त: बजट का एक अध्ययन, आरबीआई

- **राज्य सरकार का वित्त:** राज्य सरकारों ने वित्त वर्ष 24 में अपनी वित्तीय स्थिति में सुधार जारी रखा है।
  - देश के 23 राज्यों, जिनके प्रारंभिक अन-ऑडिटेड अनुमान CAG द्वारा प्रकाशित किए गए थे, उन राज्यों का **राजकोषीय घाटा, सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में 2.8% रहा,** जबकि बजटीय अनुमान 3.1% का था।
  - केंद्र **सरकार द्वारा राज्यों को किया जाने वाला ट्रांसफर अत्यधिक प्रगतिशील (प्रोग्रेसिव) प्रकृति का है,** तथा जिन राज्यों का प्रति व्यक्ति सकल राज्य घरेलू उत्पाद (GSDP) कम है, उन्हें उनकी GSDP की तुलना में अधिक ट्रांसफर प्राप्त होता है।
- **सामान्य सरकारी ऋण:** GDP की तुलना में सामान्य सरकारी ऋण अनुपात में वित्त वर्ष 24 में थोड़ी वृद्धि हुई है क्योंकि मौद्रिक सख्ती के कारण ब्याज दरों में बढ़ोतरी हुई, जबकि मुद्रास्फीति के दबाव में कमी के परिणामस्वरूप नॉमिनल GDP वृद्धि बजटीय अनुमान से कम रही।
  - संघ सरकार के ऋण पर **करेंसी एवं ब्याज दर का निम्न जोखिम है।** ऐसा इसलिए क्योंकि केंद्र सरकार के कुल ऋण में विदेशी ऋण का हिस्सा कम है और **लगभग सभी विदेशी ऋण आधिकारिक स्रोतों यानी संस्थाओं से लिए गए हैं।**

- राजकोषीय मापदंडों में **निरंतर सुधार से** भारत **की क्रेडिट रेटिंग पर भी प्रभाव पड़ने लगा है।**
    - पिछले 13 वर्षों में पहली बार, S&P ग्लोबल रेटिंग्स ने मई 2024 में **भारत की सॉवरेन क्रेडिट रेटिंग आउटलुक को 'स्थिर' से अपग्रेड करके 'सकारात्मक' (पॉजिटिव) कर दिया है।**
        - S&P ने उल्लेख किया है कि सतर्क **मौद्रिक एवं राजकोषीय नीति, जो सामान्य सरकारी ऋण व ब्याज बोझ को कम करने पर बल देती है,** तथा आर्थिक मजबूती में सुधार करती है, अगले दो वर्षों में उच्च रेटिंग का कारण बन सकती है।

चार्ट I.50: सामान्य सरकारी देनदारियों और जीडीपी का अनुपात वित्त वर्ष 21 में अपने चरम से नीचे आ गया

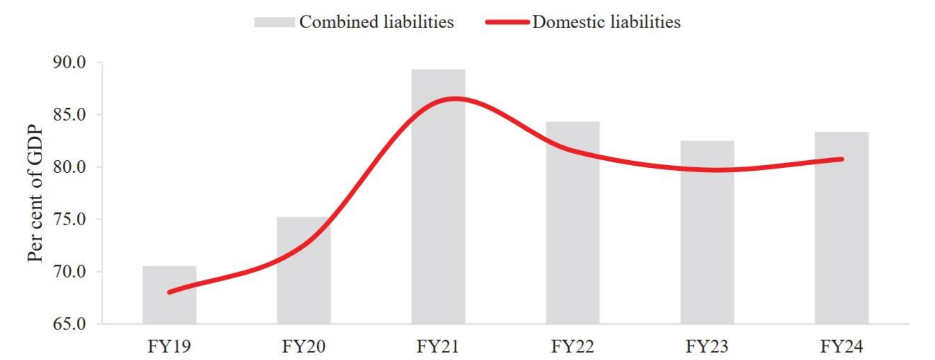

स्रोत: तालिका 112, केंद्र और राज्य सरकारों की संयुक्त देनदारियाँ, भारतीय अर्थव्यवस्था पर सांख्यिकी पुस्तिका, आरबीआई। नोट्स[34]

मुद्रास्फीति दबाव में कमी

- **मुद्रास्फीति में कमी:** वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला व्यवधानों और प्रतिकूल मौसम की स्थिति के बावजूद, वित्त वर्ष 24 में घरेलू मुद्रास्फीति दबाव में कमी आई।
    - **खुदरा मुद्रास्फीति** वित्त वर्ष 23 में औसतन 6.7% रहने के बाद वित्त वर्ष 24 **में घटकर 5.4% रह गई।**
- **मुद्रास्फीति में कमी के लिए जिम्मेदार कारक:**
    - **सरकार द्वारा उठाए गए कदम:** खुले बाजारों में वस्तुओं की बिक्री, निर्दिष्ट दुकानों पर खुदरा बिक्री, समय पर आयात, तरलीकृत पेट्रोलियम गैस (LPG) सिलेंडरों की कीमतों में कमी तथा पेट्रोल व डीजल की कीमतों में कटौती।
    - RBI ने मई 2022 से फरवरी 2023 के बीच **नीतिगत दरों** में कुल मिलाकर 250 बेसिस पॉइंट्स (BPS) की वृद्धि की, जिससे लिक्विडिटी के स्तर को एफिशिएंट तरीके से प्रबंधित किया जा सका।
- **भारत का विशेष प्रदर्शन**: अपने समकक्ष देशों में भारत एकमात्र ऐसा देश था जिसने वित्त वर्ष 22-24 की अवधि में **उच्च संवृद्धि दर के साथ निम्न मुद्रास्फीति को बनाए रखा।**

वित्तीय प्रणाली मजबूत बनी रही

- **RBI की भूमिका:** बैंकिंग और वित्तीय प्रणाली पर RBI की निगरानी और इसकी त्वरित विनियामक कार्रवाई सुनिश्चित करती है कि बैंकिंग प्रणाली किसी भी **बड़े आर्थिक या सिस्टेमेटिक संकटों** का सामना कर सकती है।
- **बैंकिंग एसेट्स की गुणवत्ता:** RBI की जून 2024 की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट से पता चलता है कि **अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (SCB) की एसेट्स गुणवत्ता में सुधार हुआ** है। सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (GNPA) अनुपात मार्च 2024 में घटकर 2.8% हो गया है। यह 12 वर्षों में सबसे निचले स्तर पर है।
    - वित्त वर्ष 24 में पूरी प्रणाली की **पूंजी से जोखिम-भारित संपत्ति अनुपात (Capital to Risk-Weighted Assets Ratio: CRAR)** में 37 बेसिस पॉइंट्स (bps) की मामूली गिरावट आई है।

भारत का विदेशी क्षेत्रक काफी अनिश्चितताओं के बावजूद भी सुरक्षित रूप से आगे बढ़ रहा है

- **वस्तु निर्यात (Merchandise Exports):** वित्त वर्ष 24 के दौरान मर्चेंडाइज निर्यात में **गिरावट** जारी रही, जिसका मुख्य कारण **कमजोर वैश्विक मांग और भू-राजनीतिक तनाव** का जारी रहना है।
    - हालांकि, वस्तु की कीमतों में गिरावट के कारण भारत में **मर्चेंडाइज आयात में तीव्र** गिरावट के परिणामस्वरूप वित्त-वर्ष 24 में **व्यापार घाटा कम** हुआ है।

- **सेवा निर्यात:** भारत से सेवा (सर्विस) निर्यात वित्त वर्ष 24 में **341.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर के नए उच्च स्तर** पर पहुंच गया।
- **प्राइवेट ट्रांसफर:** निवल प्राइवेट ट्रांसफर, जिसमें अधिकांश 'विदेशों से प्राप्त रेमिटेंस' शामिल है, **वित्त-वर्ष 24** में बढ़कर **106.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया।
- **चालू खाता घाटा (CAD)**: वित्त वर्ष 24 के दौरान चालू खाता घाटा **सकल घरेलू उत्पाद का 0.7%** रहा, जो वित्त वर्ष 23 में हुए 2.0% के घाटे से काफी सुधार को दर्शाता है।
- **विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI):** भारत में वित्त वर्ष 24 में **मजबूत FPI इंफ्लो** देखा गया। इससे **चालू खाता घाटा को कम करने** और RBI के पास **पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार बनाने** में सहायता मिली।
  - वित्त वर्ष 24 के दौरान शुद्ध FPI इंफ्लो **44.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर** रहा, जबकि इससे पहले के दो वित्त वर्षों में नेट आउटफ्लो दर्ज किया गया था।
- **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI):** भारत में निवल FDI इंफ्लो वित्त वर्ष 23 के 42.0 बिलियन अमेरिकी डॉलर से **घटकर** वित्त वर्ष 24 में **26.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया।
  - ऐसा मुख्यतः **बाहर धन भेजने (repatriation)/ विनिवेश में वृद्धि** के कारण हुआ।
- **विदेशी मुद्रा भंडार:** मार्च 2024 के अंत तक भारत का **विदेशी मुद्रा भंडार, 11 महीने के अनुमानित आयात** और कुल विदेशी ऋण के 100% से अधिक को कवर करने के लिए पर्याप्त था।
  - मार्च 2024 तक **कुल ऋण की तुलना में विदेशी मुद्रा भंडार का अनुपात 97.4%** रहा।
- **विदेशी ऋण-GDP अनुपात:** GDP के अनुपात के रूप में विदेशी ऋण मार्च 2024 के अंत तक **18.7% के निम्न स्तर पर रहा।**

मैक्रो-इकनॉमिक स्थिति पर जोखिमों में कमी

सरकार फिस्कल कंसोलिडेशन के मार्ग पर आगे बढ़ रही है। इस प्रतिबद्धता ने सॉवरेन ऋण को सहनीय सीमा तक बनाए रखने में मदद की है। इससे सॉवरेन बॉण्ड की यील्ड और स्प्रेड (दो अलग-अलग प्रकार के बॉण्ड्स यील्ड में अंतर) पर नियंत्रण बना हुआ है। **यह मैक्रो-इकनॉमिक वल्नरेबिलिटी इंडेक्स में स्पष्ट दिखाई देता है। यह इंडेक्स भारत के राजकोषीय घाटे, चालू खाता घाटा और मुद्रास्फीति को मिलाकर बनाया गया है।**

सांख्यिकी प्रणाली को मजबूत बनाना

राष्ट्रीय सांख्यिकी प्रणाली महत्वपूर्ण आंकड़े तैयार करती है। इससे पर्यवेक्षकों को यह समझने में मदद मिलती है कि कोई देश प्रति व्यक्ति आय, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि, गरीबी, स्कूली शिक्षा के औसत वर्ष जैसे प्रमुख सामाजिक-आर्थिक मापदंडों में कितना अच्छा प्रदर्शन कर रहा है।

- **मजबूत सांख्यिकीय प्रणाली का महत्व:** डेटा युक्त जागरूक नागरिक, डेटा-आधारित नीतियां एवं निर्णय प्रक्रिया वास्तव में सामाजिक चुनौतियों का समाधान करने और समावेशी विकास को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
- **नोडल एजेंसी**: केंद्रीय सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय (MoSPI) सकल घरेलू उत्पाद, कीमत एवं मात्रा सूचकांक तथा मैक्रो-इकोनॉमिक एवं क्षेत्रीय महत्व के देशव्यापी सर्वेक्षण प्रकाशित करके मुख्य सांख्यिकी के प्रसार में प्रमुख निभाता है।
- **सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय द्वारा उठाए गए कदम:**
  - **सर्वेक्षण**: MoSPI ने कई नए सर्वेक्षण शुरू किए हैं। जैसे कि गैर-निगमित क्षेत्र (अन-इंकॉर्पोरेटेड) के उद्यमों का वार्षिक सर्वेक्षण, टाइम-यूज सर्वेक्षण। साथ ही, मंत्रालय ने सेवा क्षेत्रक के उद्यमों के वार्षिक सर्वेक्षण के लिए पायलट स्टडी शुरू किया है।
  - **आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS)[1]:** मंत्रालय PLFS की संख्या बढ़ाने और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए भी तिमाही अनुमान जारी करने की दिशा में काम कर रहा है।
  - **सूचना प्रौद्योगिकी:** बेहतर तरीके से डेटा एकत्र करने और प्रोसेसिंग के लिए आधुनिक सूचना-प्रौद्योगिकी टूल्स को अपनाया जा रहा है।
  - **मेटाडेटा संरचना**: प्रशासनिक डेटा के अधिक उपयोग को बढ़ावा देने के लिए, एक राष्ट्रीय मेटाडेटा संरचना भी विकसित की जा रही है।

[1] Periodic Labour Force Survey

- **यूनीफाइड डेटा पोर्टल (UDP):** केंद्रीय सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय ने एक केंद्रीकृत डेटाबेस और भंडारण प्रणाली बनाने के उद्देश्य से यूनीफाइड डेटा पोर्टल (UDP) परियोजना की योजना बनाई है।

- **अन्य कदम जो सांख्यिकीय डेटाबेस को मजबूत कर सकते हैं**
  - **आधार वर्ष में संशोधन (बेस रिवीजन):** सांख्यिकी एवं कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय, उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक आंकड़ों के बेस रिवीजन के लिए व्यापक प्रयास कर रहा है।
    - वस्तुओं और सेवाओं के लिए **"उत्पादक मूल्य सूचकांक[2]"** तैयार करने के चल रहे प्रयासों में तेजी लाई जा सकती है।
  - **डेटा लिंकेज:** अलग-अलग विभागों द्वारा एकत्रित की गई आवश्यक खाद्य वस्तुओं के लिए हाई फ्रीक्वेंसी मूल्य निगरानी डेटा को जोड़ा जा सकता है ताकि प्रभावी निगरानी और प्रशासनिक कार्यों की प्रभावशीलता में सुधार लाया जा सके।
  - **GST आंकड़े की उपलब्धता:** यदि GST के विस्तृत आंकड़े उपलब्ध करा दिए जाएं, तो इसमें व्यवसायों की स्थिति का विश्लेषण करने, ऋण आवेदनों की जांच करने, नकदी प्रवाह आधारित ऋण के लिए सहायता प्रदान करने तथा अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्रों की अर्थव्यवस्थाओं को गहराई से समझने की सहायता मिलेगी।
  - **साझा राजकोषीय डेटा मानक:** CAG पहले से ही साझा राजकोषीय डेटा मानक स्थापित करने की प्रक्रिया में लगा हुआ है, जो पब्लिक वेब पोर्टल के माध्यम से राजकोषीय डेटा की उपलब्धता सुनिश्चित करेगा।
  - **MSME संकेतक:** MSME में उत्पादन और रोजगार की स्थिति में बदलाव को जानने के लिए नियमित संकेतक आवश्यक हैं।
  - **अवसंरचना में प्रगति की मैपिंग: अवसंरचना निर्माण में वित्तीय निवेश और इससे भौतिक प्रगति** (अलग-अलग सेक्टर्स और भौगोलिक क्षेत्रों के आधार पर) पर कम से कम वार्षिक आधार पर डेटा प्राप्त करने के लिए एक नियमित तंत्र की भी आवश्यकता है।

समावेशी विकास

कल्याण के प्रति एप्रोच में बदलाव

- **एप्रोच में बदलाव:** भारत की सामाजिक कल्याण एप्रोच अब इनपुट-आधारित एप्रोच से **आउटकम-आधारित सशक्तीकरण एप्रोच** में बदल गई है।
  - इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए **बुनियादी आवश्यकताओं की सम्पूर्ण पूर्ति** को अनिवार्य माना गया है, जिससे कई प्रमुख पहलों को बढ़ावा मिला है।
  - इस एप्रोच में **अंतिम व्यक्ति तक सेवा प्रदान करने के लिए लक्षित सुधारों को लागू करने पर ध्यान दिया जा रहा है**, ताकि "कोई भी व्यक्ति पीछे न छूटे" के सिद्धांत को सही मायने में साकार किया जा सके।

चार्ट 1.60: बेरोजगारी दर में गिरावट और श्रम बल भागीदारी दर और श्रमिक जनसंख्या अनुपात में सुधार

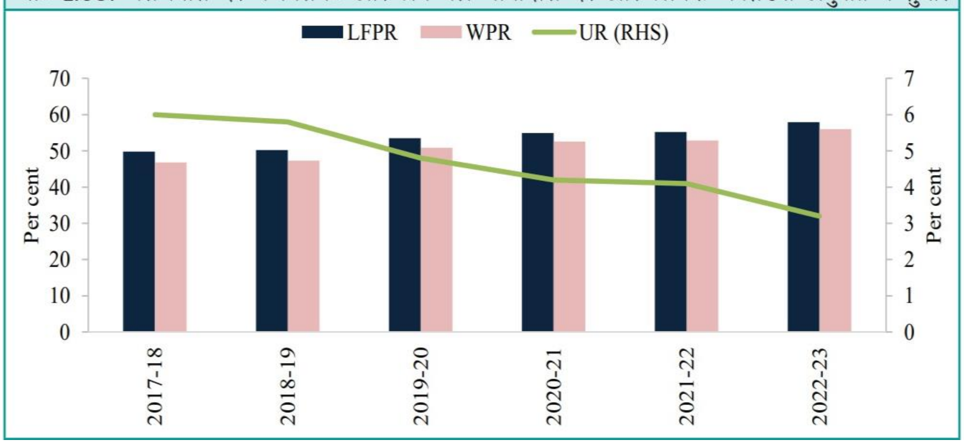

- **नई एप्रोच के अंतर्गत कार्यक्रम:** इनमें सबसे पिछड़े क्षेत्रों के लिए आकांक्षी जिला कार्यक्रम और आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम, सीमावर्ती क्षेत्रों के लिए वाइब्रेंट विलेज प्रोग्राम और विकसित भारत संकल्प यात्रा शामिल हैं।
- **प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT):** DBT योजना और **जन धन योजना-आधार-मोबाइल (JAM) ट्रिनिटी** राजकोषीय दक्षता को बढ़ावा देने और लीकेज को कम करने में सहायक रही है। 2013 में इसकी शुरुआत के बाद से डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर के माध्यम से 36.9 लाख करोड़ रुपये ट्रांसफर किए गए हैं।

---

[2] Producer price index

© Vision IAS

- **रोजगार**: वार्षिक आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) के अनुसार, **अखिल भारतीय वार्षिक बेरोजगारी दर** (सामान्य स्थिति के अनुसार 15 वर्ष और उससे अधिक आयु के व्यक्ति) महामारी के बाद से घट रही है।
    - इसके साथ ही **श्रम बल भागीदारी दर और श्रमिक-जनसंख्या अनुपात में भी वृद्धि हुई है।**
    - जेंडर दृष्टिकोण से, **महिला श्रम बल भागीदारी दर** छह वर्षों से बढ़ रही है। यह वित्त वर्ष 2017-18 की 23.3% से बढ़कर **2022-23 में 37% हो गई।** यह वृद्धि मुख्यतः ग्रामीण महिलाओं की बढ़ती भागीदारी की वजह से हुई है।
- **गरीबी में कमी:** व्यक्तिगत अभावों को दूर करने वाले व्यवस्थित तरीकों पर ध्यान देने से, गरीबी में उल्लेखनीय कमी आई है।
    - नीति आयोग की भारत में बहुआयामी गरीबी पर रिपोर्ट के अनुसार, वित्त वर्ष 2015-16 और 2022-23 के बीच **बहुआयामी गरीबों की संख्या के अनुपात में भारी गिरावट दर्ज की गई** है।
- **उपभोग व्यय:** वित्त वर्ष 2022-23 में **रियल टर्म्स में मासिक प्रति व्यक्ति उपभोग व्यय (MPCE)** 2011-12 की तुलना में ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों में बढ़ा है।

चार्ट 1.62: बहुआयामी गरीबी सूचकांक द्वारा दर्शाई गई जनसंख्या का प्रतिशत घट गया है

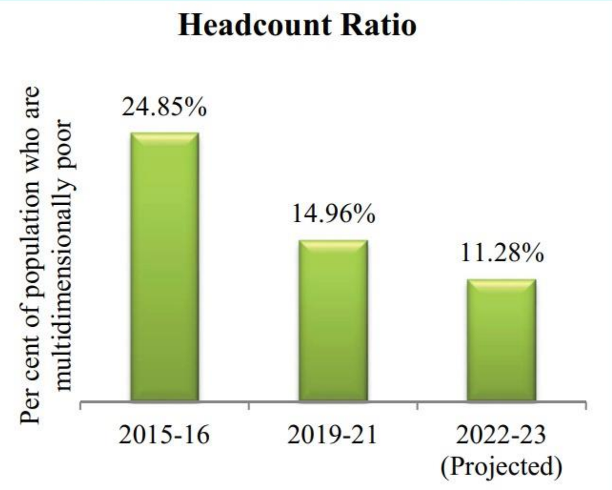

आर्थिक परिदृश्य

- **भारतीय अर्थव्यवस्था:** भारतीय अर्थव्यवस्था कोविड महामारी के संकट से तेजी से उबर रही है। **वित्त वर्ष 2024 में इसकी रियल GDP कोविड-पूर्व वित्त वर्ष 2020 के स्तर से 20% अधिक** रही है।
    - इसका तात्पर्य है कि वित्त वर्ष 2021 में 5.8% की गिरावट के बावजूद वित्त वर्ष 2020 से 4.6% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) हासिल हुई है।
- **वैश्विक अर्थव्यवस्था:** IMF का अनुमान है कि वित्त वर्ष 2024 में **वैश्विक अर्थव्यवस्था 3.2% की दर से बढ़ेगी,** जिसमें जोखिम मोटे तौर पर संतुलित होंगे। वित्त वर्ष 2020 में समाप्त दशक के दौरान औसत वार्षिक वैश्विक वृद्धि 3.7% थी।
    - **वैश्विक वस्तुओं की कीमतों में गिरावट** और आपूर्ति श्रृंखला दबावों में कमी के कारण अधिकांश अर्थव्यवस्थाओं में मुद्रास्फीति का दबाव कम हुआ है। हालांकि, **कोर मुद्रास्फीति उच्च बनी** हुई है और यह सेवा क्षेत्रक की उच्च मुद्रास्फीति की वजह से है।
- **प्रमुख जोखिम:** ऐसी संभावना है कि 2024 में भू-राजनीतिक संघर्षों में किसी भी तरह की वृद्धि से आपूर्ति में व्यवधान, कमोडिटी की कीमतों में वृद्धि, मुद्रास्फीति के दबाव में पुनः वृद्धि के साथ मौद्रिक नीति को सख्त रखने की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। इनका पूंजी प्रवाह पर असर पड़ सकता है। यह RBI की मौद्रिक नीति के रुख को भी प्रभावित कर सकता है।
    - **भू-राजनीतिक तनावों की वजह से देशों का समूहों में बंटना** और संरक्षणवाद पर नए सिरे से बल देना, वस्तु व्यापार में वृद्धि की दिशा में अवरोध ला सकते हैं, जिसका **भारत के वैदेशिक क्षेत्रक पर प्रभाव** पड़ सकता है।
    - वित्त वर्ष 2024 में **सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भर्ती में काफी कमी आई** है, तथा इसमें अधिक वृद्धि होने की संभावना नहीं है।
- **आर्थिक संवृद्धि के चालक:** अनिश्चित वैश्विक आर्थिक प्रदर्शन के बावजूद घरेलू विकास के चालकों ने वित्त वर्ष 24 में आर्थिक वृद्धि को सहारा दिया है। सर्वेक्षण में निम्नलिखित चालकों के कारण **6.5% से 7% की रियल GDP वृद्धि** का अनुमान लगाया गया है:
    - **बेहतर बैलेंस शीट** से **निजी क्षेत्रक** द्वारा निवेश बढ़ाने में मदद मिलेगी।
    - **निजी क्षेत्रक में पूंजी निर्माण जो** पिछले तीन वर्षों में अच्छी वृद्धि दर के बाद अतिरिक्त क्षमता वाले देशों से **सस्ते आयात की आशंका** के कारण थोड़ा अधिक स्थिर हो सकता है।
    - विकसित अर्थव्यवस्थाओं में बेहतर वृद्धि दर्ज होने की संभावनाओं में सुधार के साथ **वस्तु निर्यात में वृद्धि होने की संभावना** है, **वहीं सेवाओं के निर्यात में भी वृद्धि होने की संभावना है।**

- भारतीय मौसम विभाग द्वारा **मानसून के सामान्य रहने** के पूर्वानुमान से **कृषि क्षेत्रक के प्रदर्शन में सुधार** आने तथा ग्रामीण क्षेत्र में मांग बढ़ने की संभावना है।
- GST और इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड (IBC) जैसे संरचनात्मक सुधार भी मैच्योर हो चुके हैं और अपेक्षित परिणाम दे रहे हैं।

बजट में क्या कहा गया है?

आर्थिक संवृद्धि

- **वित्त वर्ष 2024 में** भारत की **संवृद्धि दर 8.2%** रही तथा **2024-25 में राजकोषीय घाटा सकल घरेलू उत्पाद का 4.9%** रहने का अनुमान है।
- **आर्थिक नीतिगत फ्रेमवर्क:** आर्थिक विकास के लिए समग्र दृष्टिकोण को रेखांकित करना तथा रोजगार के अवसरों को सुविधाजनक बनाने और उच्च विकास दर को बनाए रखने के लिए अगली पीढ़ी के सुधारों का दायरा निर्धारित करना।
- **FDI और विदेशी निवेश** के लिए नियम और विनियम को सरल बनाया जायेगा।

कराधान

- सरकार **GST फ्रेमवर्क को और सरल और तर्कसंगत बनाने का प्रयास करेगी**।
- घरेलू विनिर्माण को समर्थन प्रदान करने, स्थानीय मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देने, निर्यात प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने और कराधान को सरल बनाने के लिए **सीमा शुल्क में कमी** की जाएगी।
- संशोधित कर दर संरचना और मानक कटौती में वृद्धि के साथ **नई प्रत्यक्ष कर व्यवस्था** लागू की जाएगी।
- पूंजीगत लाभ कर (कैपिटल गेन टैक्स) को **सरल और तर्कसंगत बनाया** जाएगा।
- स्टार्ट-अप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए निवेशकों के सभी वर्गों के लिए **एंजल टैक्स** को समाप्त कर दिया गया है।

रोजगार

- **प्रधानमंत्री पैकेज** की घोषणा 5 योजनाओं के साथ की गई, जिनमें से तीन योजनाएं **रोजगार से संबंधित प्रोत्साहन योजनाओं** के लिए हैं।
- 5 वर्षों में 1 करोड़ युवाओं को 500 शीर्ष कंपनियों में इंटर्नशिप के अवसर प्रदान करने की योजना है।
- **मॉडल कौशल ऋण योजना** को संशोधित करके सरकार द्वारा समर्थित निधि से गारंटी के साथ 7.5 लाख रुपये तक के ऋण की सुविधा प्रदान की गई है।

समावेशी विकास

- **प्रधानमंत्री जनजातीय उन्नत ग्राम अभियान:** 63,000 ग्रामों को कवर करते हुए जनजातीय समुदायों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति में सुधार लाना, इससे 5 करोड़ जनजातीय लोगों को लाभ प्राप्त होगा।
- **नई पेंशन योजना (NPS):** नियोक्ताओं द्वारा NPS में योगदान के लिए कटौती को कर्मचारी के वेतन के 10% से बढ़ाकर 14% किया जाएगा।
- **पूर्णता दृष्टिकोण (Saturation Approach):** व्यक्तियों, विशेष रूप से किसानों, युवाओं, महिलाओं और गरीबों का सर्वांगीण, सर्वव्यापी और सर्व समावेशी विकास किया जाएगा।

अवसंरचना

- अवसंरचना के लिए 11,11,111 करोड़ रुपये (GDP का 3.4%) का प्रावधान किया गया है।
- संसाधन आवंटन को समर्थन देने के लिए राज्यों को **दीर्घकालिक ब्याज मुक्त ऋण** के रूप में 1.5 लाख करोड़ रुपये दिए जाएंगे।

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम (MSMEs)

- विनिर्माण क्षेत्रक में MSME के लिए ऋण गारंटी योजना।
- MSME ऋण के लिए नया मूल्यांकन मॉडल।
- संकट की अवधि के दौरान MSME को ऋण सहायता।
- MSME के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मोड के तहत ई-कॉमर्स निर्यात केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

आंकड़े

- **डेटा गवर्नेंस**, डेटा और सांख्यिकी के संग्रहण, प्रोसेसिंग और **प्रबंधन में सुधार करना।**

शब्दावली

शब्द/ पद	अर्थ
राजकोषीय घाटा	राजकोषीय घाटा किसी सरकार के व्यय की तुलना में उसके राजस्व में होने वाली कमी को दर्शाता है।
प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)	FDI किसी देश के एक फर्म या व्यक्ति द्वारा दूसरे देश के किसी व्यवसाय या कंपनी में किया गया निवेश है।
विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI)	FPI विदेशी वित्तीय परिसंपत्तियों में निवेश है। यह परिसंपत्तियों का प्रत्यक्ष स्वामित्व प्रदान नहीं करता है।
सकल घरेलू उत्पाद (GDP)	सकल घरेलू उत्पाद किसी तय अवधि के दौरान किसी देश में उत्पादित सभी अंतिम वस्तुओं और सेवाओं का मौद्रिक मूल्य है।
निजी अंतिम उपभोग व्यय (Private final consumption expenditure: PFCE)	PFCE को निवासी परिवारों तथा "हाउसहोल्ड की सेवा करने वाली गैर-लाभकारी संस्थाओं (NPISH)' द्वारा वस्तुओं और सेवाओं के अंतिम उपभोग पर किए गए व्यय के रूप में परिभाषित किया जाता है, चाहे वह आर्थिक क्षेत्र के भीतर या बाहर किया गया हो।
सकल स्थायी पूंजी निर्माण (GFCF)	GFCF से तात्पर्य अचल परिसंपत्तियों (फिक्स्ड एसेट्स) में सकल वृद्धि (स्थायी पूंजी निर्माण), इन्वेंटरी स्टॉक में वृद्धि तथा बहुमूल्य सम्पत्तियों की शुद्ध खरीद के योग से है।
सॉवरेन क्रेडिट रेटिंग	सॉवरेन क्रेडिट रेटिंग, रेटेड सरकारों द्वारा वाणिज्यिक ऋण के समय पर और संपूर्ण रूप में चुकाने की क्षमता और मंशा को दर्शाती है।
चालू खाता घाटा (CAD)	CAD किसी तय अवधि में किसी देश के कुल निर्यात और उसके द्वारा वस्तुओं, सेवाओं के सकल आयात, और ट्रांसफर के बीच के अंतर को मापता है। चालू खाता घाटे का अर्थ है कि कोई देश निर्यात की तुलना में अधिक वस्तुओं और सेवाओं का आयात कर रहा है।
विदेशी मुद्रा भंडार	भारत के विदेशी मुद्रा भंडार में शामिल हैं; भारतीय रिजर्व बैंक की विदेशी मुद्रा परिसंपत्तियां, RBI द्वारा रखा गया सोना और भारत सरकार के विशेष आहरण अधिकार (SDR)।
श्रम बल भागीदारी दर (LFPR)	LFPR जनसंख्या में श्रम बल (अर्थात् काम करने वाले, काम की तलाश करने वाले या काम के लिए उपलब्ध) में शामिल व्यक्तियों के प्रतिशत को प्रदर्शित करता है।

अध्याय 1: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. वित्त वर्ष 2024 में भारत के आर्थिक प्रदर्शन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वित्त वर्ष 2024 में भारत की रियल GDP में 8.2% की वृद्धि दर्ज हुई है।
2. वित्त वर्ष 2024 में केंद्र सरकार का राजकोषीय घाटा कम होकर GDP का 5.6% हो गया है।
3. खुदरा मुद्रास्फीति वित्त वर्ष 2023 की 6.7% से घटकर वित्त वर्ष 2024 में 5.4% हो गई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

2. भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. चालू मूल्यों पर कुल GVA में कृषि क्षेत्रक का हिस्सा वित्त वर्ष 24 में 17.7% था।
2. महिला श्रम बल भागीदारी दर 2017-18 की 23.3% से बढ़कर 2022-23 में 37% हो गई।
3. 13 वर्षों में पहली बार, S&P ग्लोबल रेटिंग्स ने मई 2024 में भारत की सॉवरेन क्रेडिट रेटिंग को 'स्थिर' से 'सकारात्मक' में अपग्रेड किया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

3. भारत के आर्थिक परिदृश्य के संदर्भ में, निम्नलिखित में से किसका उल्लेख संभावित जोखिम के रूप में ***नहीं*** किया गया है?

(a) भू-राजनीतिक संघर्षों में वृद्धि
(b) भू-राजनीतिक आधार पर समूहों में बंटने में वृद्धि
(c) सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भर्ती में कमी
(d) घरेलू उपभोग मांग में कमी

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वैश्विक अर्थव्यवस्था ने 2023 में 3.2% की वृद्धि दर्ज की, जो 2022 की तुलना में अधिक थी।
2. 2022 की तुलना में 2023 में वैश्विक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) इंफ्लो में वृद्धि दर्ज की गई।
3. पिछले वर्ष की तुलना में 2023 में वैश्विक सामान्य सरकारी राजकोषीय घाटा 1.6 प्रतिशत की वृद्धि हुई।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2
(b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3
(d) 1, 2 और 3

© Vision IAS

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए :
   1. भारत का सामाजिक कल्याण दृष्टिकोण इनपुट-आधारित दृष्टिकोण से आउटकम-आधारित सशक्तिकरण की ओर स्थानांतरित हो गया है।
   2. मासिक प्रति व्यक्ति उपभोग व्यय (MPCE) 2011-12 की तुलना में 2022-23 में ग्रामीण और शहरी, दोनों क्षेत्रों में रियल टर्म्स में बढ़ा है।
   3. 2015-16 और 2022-23 के बीच बहुआयामी गरीबों की संख्या में वृद्धि हुई है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

   (a) केवल 1 और 2

   (b) केवल 2 और 3

   (c) केवल 1 और 3

   (d) 1, 2 और 3

प्रश्न

1. वैश्विक चुनौतियों के बावजूद वित्त वर्ष 2024 में भारत की आर्थिक मजबूती में योगदान देने वाले प्रमुख कारकों पर चर्चा कीजिए। इस मजबूती को बनाए रखने में घरेलू विकास चालकों और सरकारी नीतियों की भूमिका का परीक्षण कीजिए। (250 शब्द)
2. भारत के सामाजिक कल्याण दृष्टिकोण का इनपुट-आधारित दृष्टिकोण से आउटकम-आधारित सशक्तिकरण मॉडल में हुए बदलाव का मूल्यांकन कीजिए। इस नए दृष्टिकोण के तहत की गई प्रमुख पहलों तथा समावेशी विकास और गरीबी उन्मूलन पर उनके प्रभावों पर चर्चा कीजिए। (250 शब्द)

ABHYAAS MAINS 2024

ALL INDIA MAINS (GS + ESSAY + OPTIONAL) MOCK TEST (OFFLINE)

OFFLINE IN 40+ CITIES

PAPER DATES

GS-I & II	GS-III & IV	ESSAY	OPTIONAL-I & II
24 AUG	25 AUG	31 AUG	1 SEPT

OPTIONAL SUBJECTS: ANTHROPOLOGY | GEOGRAPHY | HINDI | HISTORY | MATHS | PHILOSOPHY | PHYSICS | POLITICAL SCIENCE | PUBLIC ADMINISTRATION | SOCIOLOGY

- All India Percentile
- Comprehensive Evaluation
- Concrete Feedback & Corrective Measures
- Complete coverage of UPSC Mains syllabus
- Available in English/Hindi
- Live Test Discussion

Scan to Know More and Register

Register at: www.visionias.in/abhyaas

AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | BHUBANESWAR | CHANDIGARH | CHENNAI | CHHATARPUR (MP) COIMBATORE | DEHRADUN | DELHI - KAROL BAGH | DELHI - MUKHERJEE NAGAR | GHAZIABAD | GORAKHPUR GURUGRAM | GUWAHATI | HYDERABAD | INDORE | JABALPUR | JAIPUR | JAMMU | JODHPUR | KANPUR | KOCHI KOLKATA | KOTA | LUCKNOW | LUDHIANA | MUMBAI | NAGPUR | NOIDA | ORAI | PATNA | PRAYAGRAJ | PUNE RAIPUR RANCHI | ROHTAK | SHIMLA | THIRUVANANTHAPURAM | VARANASI | VIJAYAWADA VISAKHAPATNAM

अध्याय 2: मौद्रिक प्रबंधन और वित्तीय मध्यस्थता: स्थिरता ही मूलमंत्र (Monetary Management and Financial Intermediation: Stability is the Watchword)

परिचय

भारत के **बैंकिंग और वित्तीय क्षेत्रकों ने वित्त वर्ष 2024 में शानदार प्रदर्शन** किया है। बैंक ऋण में दोहरे अंकों की वृद्धि हुई है, सकल और निवल गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां (NPAs) कई वर्षों के निचले स्तर पर हैं। साथ ही, बैंक परिसंपत्तियों की गुणवत्ता में भी सुधार हुआ है।

पूंजीगत बाजार भारत की विकास गाथा में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं तथा प्रौद्योगिकी, नवाचार और डिजिटलीकरण के बल पर पूंजी निर्माण और निवेश परिदृश्य में उनकी हिस्सेदारी बढ़ रही है। भारतीय **शेयर बाजार सर्वोत्तम प्रदर्शन करने वाले बाजारों में से एक** रहा है, जिसका बाजार पूंजीकरण की तुलना में GDP अनुपात **विश्व में पांचवां सबसे अधिक** है।

विनियामक उपायों और **'2047 तक सभी के लिए बीमा'** के लक्ष्य को प्राप्त करने के दृष्टिकोण से समर्थित, भारतीय बीमा बाजार **अगले पांच वर्षों में सबसे तेजी से बढ़ते बीमा बाजारों में से एक** के रूप में उभरने के लिए तैयार है।

वित्तीय बाजारों में **खुदरा बिक्री की भागीदारी बढ़ने लगी है और वित्तीय उत्पादों से परिचय भी बढ़ने** लगा है। इसलिए बैंकिंग, बीमा और पूंजी बाजारों में कार्यरत फर्मों को **उपभोक्ताओं के हितों** को ध्यान में रखना चाहिए। साथ ही निष्पक्ष बिक्री, प्रकटीकरण, पारदर्शिता, विश्वसनीयता और जवाबदेही के माध्यम से **अपनी सेवा की गुणवत्ता में सुधार** करना चाहिए।

अध्याय का प्रीकैप

मौद्रिक विकास (Monetary Developments)	वित्तीय मध्यस्थता (Financial Intermediation)
• मौद्रिक नीति समिति (MPC) ने फरवरी 2023 से **नीतिगत रेपो दर को 6.5% पर अपरिवर्तित रखा।** • 2,000 रुपये के बैंक नोटों की जमा और सावधि जमा दरों में वृद्धि ने **समग्र जमा एवं व्यापक मुद्रा (M3) में बढ़ोतरी में योगदान दिया है।** • मार्च 2024 तक, **मनी मल्टीप्लायर (MM) एक वर्ष पहले 5.2 के मुकाबले 5.4** था। • **मध्य सितम्बर में बैंकिंग प्रणाली की तरलता में कमी** हो गई थी, जो वित्त वर्ष 2024 के दौरान बनी रही।	• मुख्यतः सेवाओं और व्यक्तिगत ऋणों के कारण **ऋण वृद्धि मजबूत बनी हुई** है। इसमें अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों द्वारा 164.3 लाख करोड़ रुपये का ऋण वितरण किया गया है। • **दोहरे अंकों की वृद्धि के साथ कृषि ऋण** वित्त वर्ष 2021 के 13.3 लाख करोड़ रुपये से लगभग 1.5 गुना बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 20.7 लाख करोड़ रुपये हो गया है। • TReDS योजना; MSME की परिभाषा में परिवर्तन; उद्यम पोर्टल; क्रेडिट गारंटी योजना जैसी पहलों के कारण **MSME के बैंक ऋण में वृद्धि** हुई है। • **अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (SCBs) के सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (GNPA) अनुपात में गिरावट** जारी रही। यह गिरावट वित्त वर्ष 2018 में 11.2% के अपने उच्चतम स्तर से मार्च 2024 के अंत में 12 वर्ष के निम्नतम स्तर 2.8% पर पहुंच गया।
भारतीय पूंजी बाजार में रुझान	**बीमा और पेंशन क्षेत्रक**
• वित्त वर्ष 2024 के दौरान **प्राथमिक बाजार मजबूत बने रहे।** इससे वित्त वर्ष 2023 के 9.3 लाख करोड़ रुपये की तुलना में वित्त वर्ष 2024 में 10.9 लाख करोड़ रुपये का पूंजी निर्माण हुआ। • भारत में कॉर्पोरेट ऋण बाजार मजबूत हुआ है। वित्त वर्ष 2024 के दौरान कॉरपोरेट बॉण्ड जारी करने का मूल्य बढ़कर 8.6 लाख करोड़ रुपये हो गया था।	• भारत में **समग्र बीमा पहुंच** वित्त वर्ष 2022 के 4.2% से थोड़ी कम होकर वित्त वर्ष 2023 में 4% हो गई। • **समग्र बीमा घनत्व** वित्त वर्ष 2022 के 91 अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 2023 में **92 अमेरिकी डॉलर** हो गया था। • सरकार और भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (IRDAI) ने **"2047 तक सभी के लिए बीमा" मिशन** शुरू किया है।

© Vision IAS

• वित्त वर्ष 2024 के दौरान, **रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स (REITs) और इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स (InvITs)** द्वारा ₹39,024 करोड़ जुटाए गए थे, जो वित्त वर्ष 2023 की तुलना में पांच गुना अधिक है। • भारतीय शेयर बाजार **सर्वोत्तम प्रदर्शन करने वाले बाजारों** में से एक था। भारत के निफ्टी 50 सूचकांक में वित्त वर्ष 2024 के दौरान **26.8% की वृद्धि** दर्ज की गई। • पिछले कुछ वर्षों में भारतीय पूंजी बाजारों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष (म्यूचुअल फंड्स के माध्यम से) **खुदरा गतिविधियों में उछाल** देखा गया है।	• 15वें वार्षिक मर्सर CFA इंस्टीट्यूट ग्लोबल पेंशन इंडेक्स (MCGPI) के अनुसार, भारत का **समग्र वैश्विक पेंशन सूचकांक मूल्य** 2022 के 44.5 से बढ़कर 2023 में 45.9 हो जाएगा। • **अटल पेंशन योजना (APY)** के ग्राहकों की संख्या पेंशन ग्राहकों की संख्या का लगभग **80%** है।

मूल्यांकन एवं परिप्रेक्ष्य

- **सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में निजी क्षेत्रक को प्रदान किया जाने वाला घरेलू ऋण** 2010 के 50.6 प्रतिशत से बढ़कर 2021 में 54.7 प्रतिशत हो गया था।
- **भारत की GDP में बीमा और पेंशन निधि परिसंपत्तियों का हिस्सा क्रमशः 19 प्रतिशत व 5 प्रतिशत है,** जबकि अमेरिका में यह क्रमशः 52 प्रतिशत एवं 122 प्रतिशत तथा ब्रिटेन में 112 प्रतिशत और 80 प्रतिशत है।
- **भारत के वित्तीय क्षेत्रक द्वारा पूंजी निर्माण का समर्थन करने** और MSME में निवेश, व्यापार व व्यवसाय को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें विस्तार करने में सक्षम बनाया जा सके।
- मध्यम अवधि में, विशेष रूप से छोटे व्यवसायों के लिए, **निर्णय-आधारित ऋण के स्थान पर डेटा-आधारित ऋण की ओर बढ़ने के प्रयास** किए जाने चाहिए।
- यह आवश्यक है कि **वैश्विक स्तर पर वित्तीय मध्यस्थता की लागत को कम** किया जाए।

मौद्रिक विकास (Monetary Developments)

मौद्रिक नीति **आर्थिक संवृद्धि, मुद्रास्फीति और निवेश** जैसे व्यापक आर्थिक संकेतकों पर अपने प्रभाव के माध्यम से किसी देश की आर्थिक स्थितियों को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मौद्रिक नीति का **प्राथमिक लक्ष्य संवृद्धि** के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए **मूल्य स्थिरता बनाए** रखना है। इस समग्र उद्देश्य की दिशा में केंद्रीय बैंक द्वारा मौद्रिक नीति के विविध साधन उपयोग किए जाते हैं। इन साधनों में बैंकों के **नकद आरक्षित अनुपात (CRR) और सांविधिक तरलता अनुपात (SLR); केंद्रीय बैंक की खुले बाजार की संक्रियाएं; क्रेडिट सीलिंग** आदि शामिल हैं।

- **मौद्रिक नीति:** मई 2022 और फरवरी 2023 के बीच की गई 250 आधार अंकों (bps) की संचयी नीतिगत रेपो दर वृद्धि के साथ, मौद्रिक नीति समिति (MPC) ने फरवरी 2023 से **नीतिगत रेपो दर को 6.5% पर अपरिवर्तित** रखा है।
  - MPC ने यह सुनिश्चित करने के लिए समायोजन वापस लेने पर ध्यान केंद्रित किया कि मुद्रास्फीति आर्थिक संवृद्धि का समर्थन करते हुए धीरे-धीरे लक्ष्य के साथ संरेखित हो।
- **मौद्रिक स्थितियों को प्रभावित करने वाले कारक:** 2,000 रुपए के बैंक नोटों को वापस लेना; HDFC बैंक के साथ एक गैर-बैंक HDFC (हाउसिंग फाइनेंस कंपनी) का विलय और वृद्धिशील नकद आरक्षित अनुपात (I-CRR) का अस्थायी अधिरोपण करना।
- **मौद्रिक परिस्थितियां:** 2,000 रुपए के बैंक नोटों के एक बड़े हिस्से (97.87%) को जमा के रूप में बैंकिंग प्रणाली में वापस किए जाने के कारण **आरक्षित मुद्रा और प्रचलन में मुद्रा (CIC)** का प्रसार कम हो गया।
- 2,000 रुपए के बैंक नोटों की जमा राशि और सावधि जमा दरों में वृद्धि ने **कुल जमा राशि एवं व्यापक मुद्रा (M3) में तेजी लाने में** योगदान दिया।
- मार्च 2024 तक, **मुद्रा गुणक (MM)** एक वर्ष पहले के 5.2 के मुकाबले 5.4 था।
- **तरलता की स्थिति: बैंकिंग प्रणाली की तरलता** सितंबर के मध्य में घट गई, जिसमें वित्त वर्ष 2024 के दौरान भी कमी बनी रही।

वित्तीय मध्यस्थता (Intermediation)

वित्तीय विकास और आर्थिक संवृद्धि एक दूसरे से अभिन्न रूप से संबद्ध हैं। साथ ही, वित्तीय मध्यस्थता वह उपाय है, जिसके माध्यम से वित्तीय विकास को आर्थिक संवृद्धि में परिवर्तित किया जाता है।

- **परिभाषा:** वित्तीय मध्यस्थता एक वित्तीय लेन-देन में दो पक्षों को जोड़ने की प्रथा है, विशेष रूप से **अधिशेष निधियों वाले आर्थिक अभिकर्ता को ऐसे आर्थिक अभिकर्ता से जोड़ना जिसे ऐसी निधियों की आवश्यकता** होती है।
- **महत्त्व:** वित्तीय मध्यस्थता **सीमित संसाधनों के कुशल आवंटन** में मदद करती है।
    - **वित्तीय मध्यस्थों द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं** तकनीकी नवाचार और आर्थिक विकास के लिए आवश्यक हैं। इन सेवाओं में शामिल हैं- **बचत जुटाना, ऋण देना, परिसंपत्तियों का भंडारण करना, जोखिम का प्रबंधन करना और लेन-देन को सुविधाजनक बनाना।**
    - यह **विदेशी पूंजी के अंतर्वाह** को भी सुगम और प्रोत्साहित करती है।
    - कमजोर समूहों और लघु एवं मध्यम आकार की फर्मों सहित समाज के **सभी वर्गों की वित्त तक पहुंच** सुनिश्चित करने में सहायता करती है।

बैंकिंग क्षेत्रक का प्रदर्शन और ऋण उपलब्धता

- **लचीलेपन के कारक:** परिसंपत्ति गुणवत्ता में किया जा रहा सुधार; अशोध्य ऋणों (Bad loans) के लिए प्रोविजनिंग में वृद्धि; निरंतर पूंजी पर्याप्तता और लाभप्रदता में वृद्धि आदि।
- **ऋण वृद्धि:** ऋण में व्यापक रूप से वृद्धि हुई है, जो मुख्य रूप से **सेवाओं को उधार देने और पर्सनल लोन्स** से प्रेरित है।
    - **अनुसूचित वाणिज्यिक बैंक (SCBs): SCBs** द्वारा ऋण वितरण 164.3 लाख करोड़ रुपये रहा, जो **मार्च 2024 के अंत में 20.2% की वृद्धि** दर्शाता है, जबकि मार्च 2023 के अंत में इसमें 15% की वृद्धि हुई थी।

चार्ट II.5: एससीबी द्वारा ऋण वितरण में दोहरे अंकों की वृद्धि

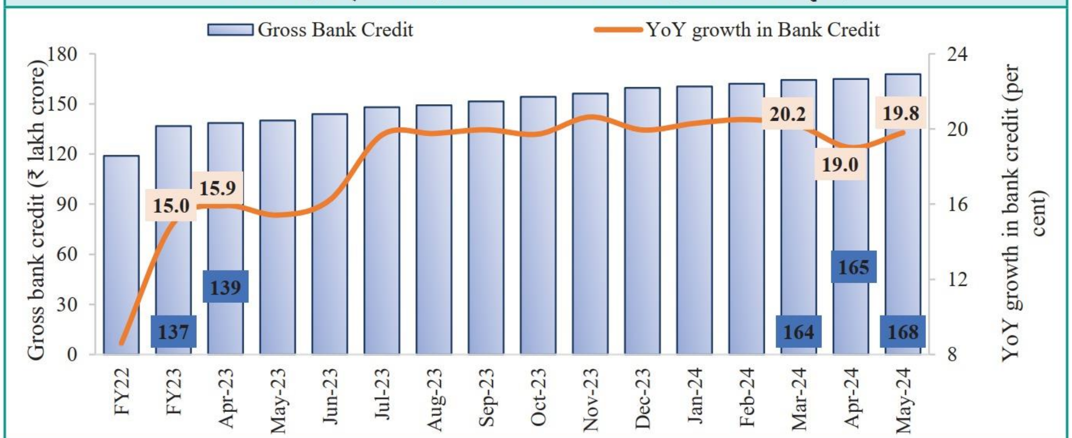

स्रोत: प्रमुख क्षेत्रों द्वारा बैंक ऋण की नियुक्ति, भारतीय अर्थव्यवस्था पर सांख्यिकी पुस्तिका, तालिका संख्या 170, आरबीआई
टिप्पणी: इन आंकड़ों में बैंकों के साथ नॉन बैंक के साथ विलय का प्रभाव शामिल है।

    - **गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनियां (NBFCs):** NBFCs द्वारा ऋण देने में तीव्रता आई है। इसका मुख्य कारण **पर्सनल लोन्स और उद्योगों को दिए जाने वाला ऋण** है। साथ ही, **NBFCs की परिसंपत्ति की गुणवत्ता में भी सुधार** हुआ है।
- **क्षेत्रकीय (Sectoral) ऋण वृद्धि:**
    - **कृषि और संबद्ध गतिविधियां: दोहरे अंकों की वृद्धि के साथ कृषि ऋण** वित्त वर्ष 2021 के 13.3 लाख करोड़ रुपये से लगभग 1.5 गुना बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 20.7 लाख करोड़ रुपये हो गया है।
    - **उद्योग: आपातकालीन ऋण से संबद्ध गारंटी योजना (ECLGS)** के तहत 100% ऋण गारंटी के साथ **जमानत मुक्त ऋण की उपलब्धता** से सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) को ऋण वितरण में वृद्धि का समर्थन किया गया है।
        - भविष्य में, **ओपन क्रेडिट इनेबलमेंट नेटवर्क (OCEN)** जैसी नई तकनीकों के विकास से MSME क्षेत्रक में ऋण प्रवाह को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।
    - **सेवाएं:** बैंकों द्वारा वितरित किए गए ऋण में **पर्सनल लोन्स और NBFCs का सबसे बड़ा हिस्सा है।**
        - **आवास ऋण** के लिए ऋण वितरण मार्च 2023 के 19.9 लाख करोड़ रुपए से बढ़कर मार्च 2024 में 27.2 लाख करोड़ रुपए हो गया था।
    - **पर्सनल लोन्स** में ऋण वृद्धि का श्रेय तेजी से निर्णय लेने, डेटा संग्रह व सत्यापन और **ई-कॉमर्स ट्रांजैक्शन के लिए क्रेडिट ब्यूरो के बढ़ते उपयोग** के साथ लोन इकोसिस्टम के **महत्वपूर्ण डिजिटलीकरण** को दिया जा सकता है।

© Vision IAS

MSMEs के लिए बैंक ऋण के प्रवाह को बढ़ाने हेतु शुरू की गई पहलें

- **व्यापार प्राप्य बट्टा प्रणाली (TReDS) की शुरुआत:** TReDS की शुरुआत भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने **2014** में की थी। यह एक **डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म** है। यह सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) के व्यापार प्राप्यों के वित्त-पोषण/ बट्टे की सुविधा प्रदान करता है। यह **तरलता और कार्यशील पूंजी आवश्यकताओं** को पूरा करने के लिए वित्त-पोषण करने वाले बैंकों एवं NBFCs के माध्यम से यह सुविधा प्रदान करता है।
- **MSMEs की परिभाषा में बदलाव:** 1 जुलाई 2020 से, MSMEs को **टर्नओवर, प्लांट और मशीनरी/ उपकरण में निवेश के समग्र मानदंड** के अनुसार परिभाषित किया गया है।
  - इसका उद्देश्य **बड़ी संख्या में उद्यमियों को औपचारिक बैंकिंग क्षेत्रक के दायरे में लाना है।** इससे उद्योग को रियायती दरों पर ऋण प्रवाह की सुविधा मिल सकेगी।
- **उद्यम पोर्टल पर MSMEs का पंजीकरण:** उद्यम पंजीकरण पोर्टल को **2020** में लॉन्च किया गया था। यह एक **निःशुल्क, सरल और ऑनलाइन** प्लेटफॉर्म है।
- **उद्यम सहायता प्लेटफॉर्म (UAP):** इसे **अनौपचारिक सूक्ष्म उद्यमों को औपचारिक बनाने के लिए** 2023 में लॉन्च किया गया था। इसकी शुरुआत **भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) के सहयोग से MSMEs मंत्रालय** द्वारा की गई है।
- **सूक्ष्म और लघु उद्यमों (MSEs) के लिए ऋण गारंटी योजना का पुनर्गठन (CGTMSE):** वित्त वर्ष 2023 के केंद्रीय बजट में, MSEs के लिए 2 लाख करोड़ रुपए के अतिरिक्त ऋण की सुविधा हेतु आवश्यक धनराशि के साथ MSEs के लिए CGS के पुनर्गठन की घोषणा की गई थी।
  - इसके बाद, **क्रेडिट सीमा को 2 लाख करोड़ रुपए से बढ़ाकर 5 लाख करोड़ रुपए** कर दिया गया था।

- **बैंकों की परिसंपत्ति गुणवत्ता:** RBI की जून 2024 की वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट से पता चलता है कि **अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों (SCB) की एसेट्स गुणवत्ता में सुधार हुआ** है। सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (GNPA) अनुपात मार्च 2024 में घटकर 2.8% हो गया है। यह 12 वर्षों में सबसे निचले स्तर पर है।
  - कृषि क्षेत्रक का **GNPA अनुपात मार्च 2024 के अंत में 6.5%** पर उच्च बना हुआ था, लेकिन वित्त वर्ष 2024 की दूसरी छमाही के दौरान इसमें **निरंतर सुधार** दर्ज किया गया है।
  - **SCBs** ने मार्च 2024 में अपने कर-पश्चात लाभ में 32.5% का उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की है।
  - **भारत की 56.9% जमा राशि सार्वजनिक क्षेत्रक के बैंकों (PSBs) के पास है।** कुल जमा राशि के 61.1% का स्वामित्व परिवारों के पास है।
- **परिसंपत्ति गुणवत्ता में सुधार करने वाले कारक:** उधारकर्ताओं के चयन में सुधार, अधिक प्रभावी ऋण वसूली और बड़े उधारकर्ताओं के बीच ऋण जागरूकता में वृद्धि।
  - **प्रकटीकरण में बढ़ोतरी, मजबूत आचार संहिता और पारदर्शी गवर्नेंस संरचनाओं** जैसे गुणात्मक मेट्रिक्स ने भी बैंकिंग क्षेत्रक के प्रदर्शन में सुधार किया है।
- **संकटग्रस्त परिसंपत्तियां:** मार्च 2016 तक, सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का **सकल गैर-निष्पादित परिसंपत्तियां (Gross Non-Performing Assets: GNPA) अनुपात** 14.5% था। बैंक ऋण के स्थिर होने से **कॉर्पोरेट ऋण में वृद्धि** हुई है, जिससे **ट्विन बैलेंस शीट की समस्या** पैदा हुई है।
- **किए गए उपाय:** बैंकिंग विनियामक ढांचे को मजबूत करना; ऋण वसूली कानूनों में संशोधन करना; व्यापक दिवाला और दिवालियापन विधान अधिनियमित करना, और एक सार्वजनिक क्षेत्रक की परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी का गठन करना।
- **संकटग्रस्त परिसंपत्तियों की वसूली के परंपरागत चैनल:** वित्त वर्ष 2023 के दौरान, SCBs के GNPAs में लगभग 45% की कमी ऋण वसूली और अपग्रेडेशन द्वारा हुई थी।
- **संकटग्रस्त परिसंपत्तियों के समाधान के लिए विनियामक उपाय:**
  - **वित्तीय आस्तियों का प्रतिभूतिकरण और पुनर्गठन तथा प्रतिभूति हित का प्रवर्तन (सरफेसी/ SARFAESI), 2002** के तहत विनियमित **परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनियां (ARCs)** विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (FPIs) सहित निवेशकों के लिए बैंकों द्वारा धारित NPAs/ संकटग्रस्त परिसंपत्तियों तक पहुंच हेतु एक **वैकल्पिक चैनल** के रूप में उभर रही हैं।

- भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड (SEBI) **ने FPIs को समाधान के दौर से गुजर रही कंपनियों द्वारा जारी ऋण लिखतों और ARCs द्वारा जारी प्रतिभूति रिसिप्ट में निवेश करने की अनुमति दी है।**
  - सेबी ने 2022 में संकटग्रस्त परिसंपत्ति बाजार में भाग लेने के लिए वैकल्पिक निवेश कोष के उप-घटक**, स्पेशल सिचुएशन फंड** के रूप में एक विशेष उपाय भी शुरू किया है।
- **सरकार ने 2021 में राष्ट्रीय परिसंपत्ति पुनर्निर्माण कंपनी लिमिटेड (NARCL) और इंडिया डेब्ट रेज़ोल्यूशन कंपनी लिमिटेड (IDRCL) की स्थापना की थी।**
  - NARCL बैंकों से परिसंपत्तियां प्राप्त करता है और IDRCL ने NARCL द्वारा अधिग्रहित परिसंपत्तियों के निपटान के लिए NARCL के साथ एक विशेष व्यवस्था की हुई है।
  - NARCL ने **अभी तक लगभग 92,000 करोड़ रुपए के ऋण जोखिम वाले 18 खातों का अधिग्रहण** किया है।
- **दिवालियापन समाधान (Insolvency Resolution):** दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता (IBC) को ट्विन-बैलेंस शीट की समस्या से निपटने के लिए एक प्रभावी समाधान के रूप में मान्यता दी गई है।
  - 2016 से मार्च 2024 तक 31,394 कॉर्पोरेट देनदारों के ₹13.9 लाख करोड़ मूल्य के मामलों (प्रक्रिया में प्रवेश-पूर्व मामलों के निपटान सहित) का निपटान किया गया है।
  - दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता **SCBs के लिए प्रमुख वसूली मार्ग है**, जिसमें वित्त वर्ष 2023 में SCBs द्वारा वसूल की गई कुल राशि का 43% हिस्सा है।
- वित्त वर्ष 2018 से, दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता ने SCBs के लिए 3 लाख करोड़ रुपए से अधिक की वसूली को सक्षम किया है।
  - दिवाला और शोधन अक्षमता संहिता के तहत समाधान के लिए RBI द्वारा संदर्भित **12 बड़े खातों में से 9 का निपटान** किया गया है।

वित्तीय समावेशन

- **प्रगति:** विश्व बैंक के **'वैश्विक वित्तीय समावेशन डेटाबेस' के अनुसार, भारत ने पिछले दस वर्षों में अपने वित्तीय समावेशन लक्ष्यों** में उल्लेखनीय प्रगति की है।
  - **औपचारिक वित्तीय संस्थानों** में खाता खुलवाने वाले **वयस्कों की संख्या** 2011 के 35% से बढ़कर **2021 में 77%** हो गई थी।
  - **समृद्ध और गरीब के बीच औपचारिक वित्तीय संस्थानों तक पहुंच संबंधी अंतराल में कमी** आई है। इसके अलावा, वित्तीय समावेशन के मामले में लैंगिक विभाजन भी कम हुआ है।
- **वित्तीय समावेशन रणनीति:** वित्तीय समावेशन रणनीति का ध्यान **'प्रत्येक परिवार' से "प्रत्येक वयस्क'** की ओर स्थानांतरित हो गया है।
- सरकार **प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT) प्रवाह को बढ़ाकर**, RuPay कार्ड, UPI आदि का उपयोग करके **डिजिटल भुगतान को बढ़ावा देकर** खाता उपयोग पर अतिरिक्त जोर दे रही है।
- भारत **राष्ट्रीय और सीमा-पार भुगतान प्रणालियों** में अधिक दक्षता लाने के लिए कई देशों के साथ सहयोग भी कर रहा है।
- RBI **प्रोजेक्ट नेक्सस** में शामिल हुआ है। यह घरेलू तीव्र भुगतान प्रणाली (FPS) को जोड़कर तत्काल सीमा-पार खुदरा भुगतान को सक्षम करने के लिए एक बहुपक्षीय अंतर्राष्ट्रीय पहल है।
  - इस नेक्सस का उद्देश्य **चार आसियान देशों (मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर और थाईलैंड) तथा भारत के FPS को जोड़ना** है, जो इसके संस्थापक सदस्य होंगे।

भारत में वित्तीय समावेशन संबंधी प्रगति

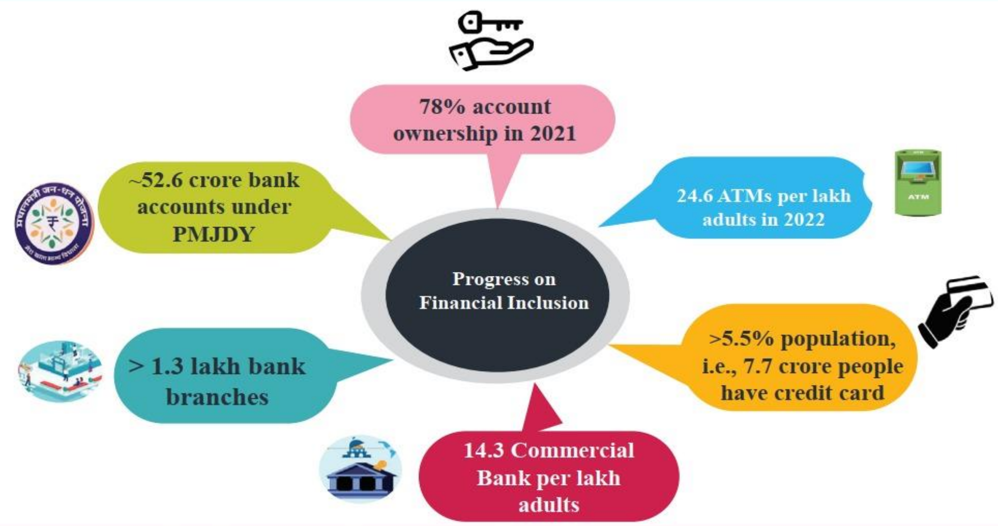

स्रोत: प्रधानमंत्री जनधन योजना (पीएमजेडीवाई) वेबसाइट, पीआईबी और आरबीआई
नोट: जुलाई 2024 तक का डेटा

- **डिजिटल वित्तीय समावेशन (DFI):** अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) के शोध के अनुसार, भुगतान में DFI में वृद्धि से **औसत आर्थिक संवृद्धि में 2.2% की वृद्धि** होती है, जो संभवतः **उपभोग चैनल और उच्च औपचारिकता** के माध्यम से संचालित होती है।
  - **सरकारी उपाय:** डिजिटल इंडिया मिशन, मेक-इन-इंडिया जैसी प्रमुख योजनाओं और आधार, ई-केवाईसी, आधार-सक्षम भुगतान प्रणाली, UPI, भारत क्यूआर, डिजीलॉकर, ई-साइन, अकाउंट एग्रीगेटर, डिजिटल कॉमर्स के लिए ओपन नेटवर्क जैसे DPI के निर्माण पर अधिक जोर दिया गया है।
  - **इंडिया स्टैक:** DFI में प्रगति **इंडिया स्टैक, एक व्यापक डिजिटल पहचान (आधार), भुगतान (UPI) और डेटा-प्रबंधन प्रणाली** पर आधारित है।

भारत की डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना: अर्थव्यवस्था के पहिये को गति देना

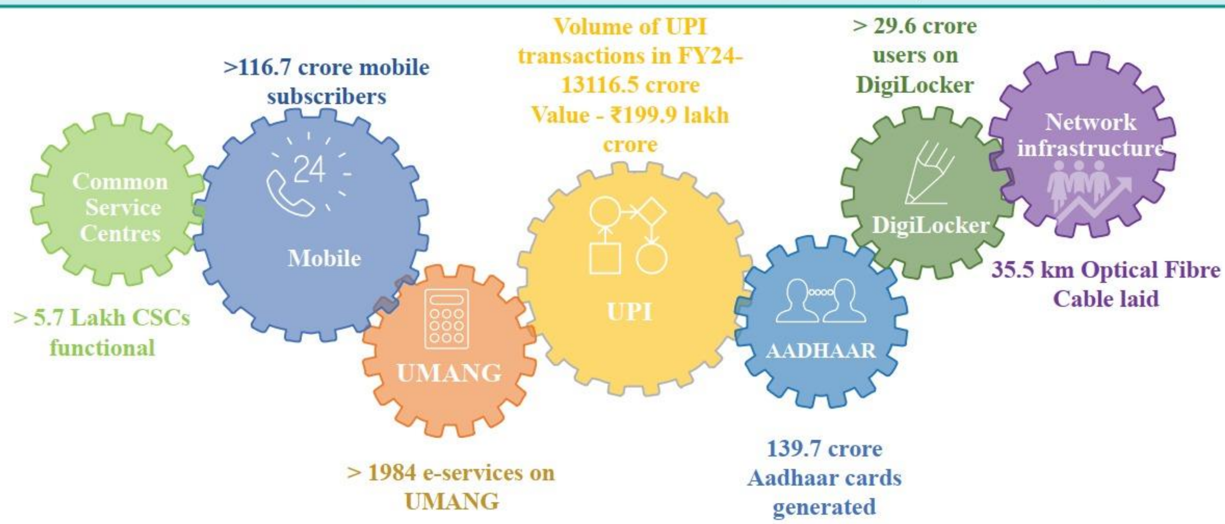

माइक्रोफाइनेंस (सूक्ष्म वित्त) संस्थाएं

- **माइक्रोफाइनेंस:** माइक्रोफाइनेंस का तात्पर्य **ऐसे परिवारों, छोटे व्यवसायों और उद्यमियों को वहनीय ऋण** सहित वित्तीय सेवाएं प्रदान करना है, जिनकी औपचारिक बैंकिंग सेवाओं तक पहुँच नहीं है।
  - यह **वित्तीय समावेशन के लिए एक प्रभावी साधन है।**

- **उपाय: RBI का विनियामक ढांचा** साधन (Sa-Dhan) और माइक्रोफाइनेंस इंस्टीट्यूशंस नेटवर्क (MFIN) जैसे **स्व-विनियामक संगठनों द्वारा उद्योग आचार संहिता** के निर्माण के साथ जुड़ा हुआ है।
- **वर्तमान स्थिति:** वैश्विक स्तर पर, भारत में उधार लेने वाले ग्राहकों की संख्या के मामले में **भारतीय माइक्रोफाइनेंस क्षेत्रक चीन के माइक्रोफाइनेंस क्षेत्रक के बाद विश्व का दूसरा सबसे बड़ा माइक्रोफाइनेंस क्षेत्रक है।**
- भारतीय माइक्रोफाइनेंस कवरेज में **{स्वयं सहायता समूह (SHGs) और संयुक्त देयता समूह (JLG)} 50% से अधिक परिवार** और भारतीय आबादी का 10% हिस्सा शामिल है।
- इंडिया माइक्रोफाइनेंस रिपोर्ट, 2023 के अनुसार, माइक्रोफाइनेंस इंस्टीट्यूशंस (MFI) भारत में **28 राज्यों, पांच केंद्र शासित प्रदेशों और 646 से अधिक जिलों में संचालित हैं।**
- वित्त वर्ष 2023 तक के आंकड़ों के अनुसार भारत में **213 MFIs संचालित हैं,** जिनकी 25,790 शाखाएं हैं। इनमें 2.2 लाख कर्मचारी कार्यरत हैं, तथा **माइक्रो-क्रेडिट के तहत कुल 1.8 लाख करोड़ रुपये का ऋण बकाया है।**
- **ग्रामीण अभिविन्यास:** MFIs ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के गरीबों को सेवाएं प्रदान करते हैं। हालांकि, ये **भारत में ग्रामीण क्षेत्रों (74%)** की ओर अधिक उन्मुख हैं।
- **लैंगिक प्रगति:** माइक्रोफाइनेंस ज्यादातर **महिला-केंद्रित गतिविधि है और MFIs के कुल ग्राहकों में से 98% महिलाएं** हैं। इसके अलावा, MFIs अन्य कमजोर और हाशिए पर रहे वर्गों को भी सेवाएं प्रदान करते हैं, जिनमें **SC/ ST उधारकर्ता ग्राहकों का 23% हिस्सा है।**

भारतीय पूंजी बाजार की प्रवृत्तियां

- **प्राथमिक बाजार:** वित्त वर्ष 2024 के दौरान **प्राथमिक बाजार मजबूत** रहे। इससे वित्त वर्ष 2023 में 9.3 लाख करोड़ रुपये की तुलना में वित्त वर्ष 2024 में **10.9 लाख करोड़ रुपये का पूंजी निर्माण** हुआ था। यह वित्त वर्ष 2023 के दौरान निजी और सार्वजनिक निगमों के **सकल स्थिर पूंजी निर्माण का लगभग 29%** है।
  - वित्त वर्ष 2024 में जुटाई गई कुल राशि में से **78.8% राशि ऋण प्रदायगी के माध्यम से जुटाई** गई थी।
  - वित्त वर्ष 2024 में **इनिशियल पब्लिक ऑफर (IPOs) की संख्या में 66% वृद्धि** हुई थी। वित्त वर्ष 2023 में 164 IPOs जारी किए गए थे। वित्त वर्ष 2024 में 272 IPOs जारी किए गए थे। साथ ही, IPOs के माध्यम से जुटाई गई राशि में **24% की वृद्धि** हुई है। वित्त वर्ष 2024 में IPOs के माध्यम से 67,995 करोड़ रुपये जुटाए गए थे, जबकि वित्त वर्ष 2023 में 54,773 करोड़ रुपये जुटाए गए थे।
- **सार्वजनिक ऋण निर्गम (Public Debt Issuance):** भारत में कॉर्पोरेट ऋण बाजार मजबूत हुआ है। वित्त वर्ष 2024 के दौरान, **कॉरपोरेट बॉण्ड निर्गम का मूल्य** पिछले वित्त वर्ष के ₹7.6 लाख करोड़ से बढ़कर **₹8.6 लाख करोड़** हो गया था।
  - वित्त वर्ष 2024 में कॉरपोरेट बॉण्ड सार्वजनिक निर्गमों की संख्या किसी भी वित्त वर्ष के मामले में अब तक की सबसे अधिक थी। इनके माध्यम से जुटाई गई राशि (₹19,167 करोड़) **चार वर्ष के उच्चतम स्तर** पर थी।
  - कॉरपोरेट्स के लिए **प्राइवेट प्लेसमेंट** पसंदीदा चैनल बना रहा, जो बॉण्ड मार्केट के माध्यम से जुटाए गए कुल संसाधनों का 97.8% था।
- **REITs और InvITs:** वित्त वर्ष 2024 के दौरान, रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स (REITs) और इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स (InvITs) द्वारा **₹39,024 करोड़** जुटाए गए थे। यह राशि **वित्त वर्ष 2023 की तुलना में पांच गुना से अधिक है,** जिसे अवसंरचना के विकास पर सरकार के बल का समर्थन प्राप्त है।
- **द्वितीयक बाजार:** वित्त वर्ष 2023 में अत्यधिक अशांत वैश्विक माहौल के बावजूद, वैश्विक शेयर बाजारों में सुधार देखा गया और वित्त वर्ष 2024 के दौरान इसने अच्छा प्रदर्शन किया।
  - भारतीय शेयर बाजार **सर्वोत्तम प्रदर्शन करने वाले बाजारों** में से एक था। भारत के निफ्टी 50 सूचकांक में वित्त वर्ष 2024 के दौरान **26.8% की वृद्धि** दर्ज की गई। इसके विपरीत, वित्त वर्ष 2023 के दौरान (-)8.2% की वृद्धि दर्ज की गई थी।

© Vision IAS

- **MSCI-EM सूचकांक** में भारत का भारांक वित्त वर्ष 2024 के अंत में 23 अप्रैल की समाप्ति पर 13.7% से बढ़कर 17.7% हो गया था, जो सूचकांक में **उभरते बाजारों (EM) में दूसरा सबसे बड़ा हिस्सा है।**
- आकर्षक निवेश गंतव्य और निरंतर IPO गतिविधि ने वित्त वर्ष 2024 में **बाजार पूंजीकरण के संदर्भ में भारतीय बाजार को विश्व में पांचवें स्थान** पर रखा है।
  - भारत के **GDP की तुलना में बाजार पूंजीकरण अनुपात** में पिछले पांच वर्षों में काफी सुधार हुआ है, जो कि वित्त वर्ष 2019 के 77% की तुलना में वित्त वर्ष 2024 में 124% हो गया है।

पूंजी बाजारों को मजबूत करने में प्रौद्योगिकी की भूमिका

- इंडिया स्टैक जैसी तकनीकी प्रगति और विनियामक उपायों ने **खुदरा निवेशकों की भागीदारी एवं गतिविधि में अभूतपूर्व वृद्धि** की है।
- उपयोगकर्ता-अनुकूल ट्रेडिंग ऐप्स के प्रचलन और प्रसार; मोबाइल-अनुकूल शैक्षिक संसाधनों और वित्तीय बाजार मार्गदर्शन ने **पूंजी बाजारों तक पहुंच को लोकतांत्रिक** बना दिया है।
- निवेशक शिकायत समाधान के लिए एक मंच **'सेबी शिकायत निवारण प्रणाली (SCORES)'** और निवेशक शिक्षा के लिए एक कार्यक्रम **'प्रतिभूति बाजार प्रशिक्षक (SMARTs)'** ने बाजार सहभागियों, विशेष रूप से पहली बार निवेश करने वाले निवेशकों के हितों की रक्षा करने में सहायक रहे हैं।
- भारत की अनूठी डिजिटल अवसंरचना ने पूंजी बाजार विनियामक को **"T+1 निपटान व्यवस्था"** को अनुकूल रूप से अपनाने का आत्मविश्वास दिया है। यह एक ऐसी उपलब्धि है, जिसका अनुसरण विश्व भर में बहुत कम देशों ने किया है।
- **समाशोधन निगमों के बीच "अंतर-संचालनियता"** की शुरूआत ने स्टॉक एक्सचेंजों और समाशोधन निगमों के बीच संबंध स्थापित किए हैं। इसने प्रतिभागियों के **बेहतर मार्जिन उपयोग और पूंजीगत संसाधनों के माध्यम से ट्रेडिंग लागत को कम** किया है।
- भारतीय पूंजी बाजारों ने द्वितीयक बाजार में **"ब्लॉक किए गए खाते द्वारा समर्थित एप्लीकेशन"** सुविधा को भी प्रायोगिक आधार पर अपनाया है। यह निवेशकों को ट्रेड की पुष्टि होने तक **अपने बैंक में धन को रोक कर रखने की अनुमति** देता है।
- NSCCL और ICCL जैसे **समाशोधन निगमों** ने अप्रत्याशित सॉफ़्टवेयर विफलताओं का प्रबंधन करने हेतु "SaaS" (सॉफ़्टवेयर ऐज़ ए सर्विस) मॉडल के रूप में संचालित होने के लिए दो-तरफ़ा पोर्टेबिलिटी पर काम किया है।
- **गोपनीयता संबंधी चिंताएं, साइबर सुरक्षा जोखिम और आबादी में बढ़ता डिजिटल डिवाइड** कुछ ऐसे मुद्दे हैं, जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

- **खुदरा भागीदारी:** पिछले कुछ वर्षों में भारतीय पूंजी बाजारों में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष (म्यूचुअल फंड्स के माध्यम से) **खुदरा गतिविधियों में उछाल** देखा गया है।
  - दोनों निक्षेपगारों (डिपॉजिटरी) के साथ डीमैट खातों की संख्या वित्त वर्ष 2023 के 1,145 लाख से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 1,514 लाख हो गई।
  - मार्च 2020 से मार्च 2024 तक नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) में पंजीकृत निवेशक आधार तिगुना होकर 9.2 करोड़ हो गया है। यह इस बात का संकेत है कि संभावित रूप से **20% भारतीय परिवार अब अपनी घरेलू बचत को वित्तीय बाजारों में लगा** रहे हैं।
  - म्यूच्यूअल फंड सेगमेंट में वर्तमान में लगभग **8.4 करोड़ 'व्यवस्थित निवेश योजना' (systematic investment plan: SIP) खाते** हैं। इनके माध्यम से निवेशक नियमित रूप से योजनाओं में निवेश करते हैं।
  - **संवृद्धि कारक:** बाधारहित तकनीकी एकीकरण; वित्तीय समावेशन की दिशा में सरकारी उपाय; डिजिटल अवसंरचना का विकास; स्मार्टफोन का तीव्र प्रसार; कम लागत वाली ब्रोकरेज का उदय; वैकल्पिक स्रोतों से आय अर्जित करने की खोज और पारंपरिक परिसंपत्ति वर्गों (जैसे कि रियल एस्टेट एवं सोने) से मिलने वाला कम रिटर्न।
  - **संरक्षण उपाय:** सेबी का ऑनलाइन विवाद समाधान तंत्र; निवेशक सुरक्षा कोष और निपटान गारंटी कोष में वृद्धि की गई है तथा निपटान चक्र को छोटा किया गया है।
- **सोशल स्टॉक एक्सचेंज (SSE):** वित्त वर्ष 2020 के केंद्रीय बजट में सामाजिक कल्याण के लिए कार्य करने वाले सामाजिक उद्यमों और स्वयंसेवी संगठनों को सूचीबद्ध करने के लिए **SEBI के विनियामक दायरे** में सोशल स्टॉक एक्सचेंज के शुभारंभ की घोषणा की गई थी।
  - **सोशल स्टॉक एक्सचेंज (SSE) की आवश्यकता:** सोशल स्टॉक एक्सचेंज का उद्देश्य सामाजिक-विकास लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए **धन जुटाने के वैकल्पिक साधन प्रदान करके वित्त-पोषण अंतराल को समाप्त** करना है।

- SSE गैर-लाभकारी संगठनों (NPOs) और गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) जैसे सामाजिक उद्यमों को स्टॉक एक्सचेंज तंत्र के माध्यम से **जनता से धन जुटाने** में मदद कर सकता है।
- SSE से पारदर्शी और विनियमित परिवेश में भारत में **परिणाम-संचालित परोपकार के इकोसिस्टम** को प्रोत्साहित करने की उम्मीद है।
- SSE स्वास्थ्य, शिक्षा, आजीविका सृजन आदि से संबंधित सामाजिक परियोजनाओं के क्षेत्र में कार्य करने वाले **गैर-सरकारी संगठनों की रचनात्मक भागीदारी** के लिए मंच भी प्रदान करता है, ताकि वे प्रत्यक्ष रूप से **निजी क्षेत्रक, कॉर्पोरेट संस्थाओं और व्यक्तियों** से धन जुटा सकें।

- **SSE का परिचालन:** SSE में सूचीबद्ध सामाजिक क्षेत्रक की परियोजनाओं के लिए **जीरो कूपन, जीरो प्रिंसिपल (ZCZP)** साधन के माध्यम से योगदान किया जाता है। **ZCZP कूपन के किसी भी भुगतान या मूलधन की वापसी का वादा नहीं** करता है।
  - **प्रगति:** नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज (BSE) ने **SSE का एक अलग खंड स्थापित करने के लिए SEBI की सैद्धांतिक मंजूरी प्राप्त की है।**
    - अप्रैल 2024 तक, **51 NPOs BSE पर पंजीकृत** हैं, और **50 (11 नवीकरण के दौर से गुजर रहे हैं) NSE** पर पंजीकृत हैं।

गुजरात इंटरनेशनल फाइनेंस टेक-सिटी (GIFT) – अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (IFSC)

- **अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (IFSC):** गुजरात की GIFT सिटी में IFSC को भारत के भीतर स्थित एक **विशिष्ट अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय क्षेत्राधिकार** माना जाता है।
  - **दोहरे उद्देश्य: IFSC के दोहरे उद्देश्य हैं:**
    - भारत केंद्रित अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा व्यवसाय का देश के भीतर (ऑनशोर) ही विस्तार करना; तथा
    - देश में और देश से बाहर वैश्विक पूंजी प्रवाह को चैनलाइज करने के लिए एक पसंदीदा प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करना।
- **विशिष्टता:** IFSC की एक विशिष्ट वित्तीय क्षेत्राधिकार के रूप में विशिष्टता **निम्नलिखित तीन मूलभूत कारकों से उत्पन्न होती है-**
  - IFSC विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम के तहत एक **अनिवासी क्षेत्र** के रूप में नामित है। इसका अर्थ है कि यहां स्थापित संस्थाएं **पूंजी नियंत्रण प्रतिबंधों से बाहर** हैं और **11 अधिसूचित विदेशी मुद्राओं** में से किसी में भी व्यवसाय कर सकती हैं।
  - इसे एक समर्पित और एकीकृत वित्तीय विनियामक, अर्थात **IFSCA (IFSC प्राधिकरण) के विनियामक दायरे** में लाया गया है। इसे संसद के एक अधिनियम के तहत स्थापित किया गया है।
  - सरकार ने IFSC के लिए एक **अलग कर व्यवस्था** का भी प्रावधान किया है।
- **बढ़ती व्यावसायिक गतिविधियां:** विदेशी और घरेलू बैंक; बाह्य वाणिज्यिक उधारियां; स्टार्ट-अप इकोसिस्टम में वैश्विक पूंजी का प्रवाह; विमान पट्टे पर देना; समुद्री व्यवसाय और विदेशी विश्वविद्यालयों की शुरुआत करना।

बीमा क्षेत्रक

- **चुनौतियां:** वैश्विक आर्थिक मंदी और मुद्रास्फीति ने बीमा क्षेत्रक के सामने चुनौतियां कड़ी कर दी हैं। बीमा क्षेत्रक को उच्च पूंजीगत लागत, भुगतान में देरी, विविध दायित्वों के कारण होने वाले जोखिम और व्यापार में अनुचित तरीकों का बढ़ना आदि समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।
- **स्थिति:** वर्ष 2021 की तुलना में 2022 में वैश्विक बीमा बाजारों में संकुचन की स्थिति देखी गई है।
  - भारत में **समग्र बीमा पैठ** वित्त वर्ष 2022 में 4.2% के स्तर पर थी, वित्त वर्ष 2023 में थोड़ी कम होकर **4%** के स्तर पर आ गई है। GDP के प्रतिशत के रूप में इसके **वित्त वर्ष 2023 के 3.8% के स्तर से बढ़कर वित्त वर्ष 2035 तक 4.3%** के स्तर तक पहुँचने का अनुमान लगाया गया है।
    - **बीमा पैठ (Insurance penetration):** किसी दिए गए वर्ष में कुल बीमा प्रीमियम का सकल घरेलू उत्पाद से अनुपात बीमा पैठ कहलाता है।

- समग्र बीमा घनत्व वित्त वर्ष 2022 के 91 अमेरिकी डॉलर से बढ़कर **वित्त वर्ष 2023 में 92 अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच गया है।
  - **बीमा घनत्व (Insurance density):** किसी दिए गए वर्ष में कुल बीमा प्रीमियम और उस देश की संपूर्ण जनसंख्या के बीच अनुपात बीमा घनत्व कहलाता है।

स्विस-री इंस्टीट्यूट द्वारा जनवरी 2024 में प्रस्तुत की गई एक रिपोर्ट में यह अनुमान लगाया गया है कि **अगले पांच वर्षों (2024-28) में भारत में कुल बीमा प्रीमियम वास्तविक रूप में 7.1% की वृद्धि** करेगा। यह वृद्धि **वैश्विक औसत (2.4%), उभरती अर्थव्यवस्थाओं (5.1%) और उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (1.7%) के बाजार औसत से अधिक** होगी। G20 देशों में इस दर पर वृद्धि करने वाला **सबसे तेज बीमा क्षेत्रक भारत** का होगा |

- **बीमा क्षेत्रक के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई पहलें:**
  - **सभी के लिए बीमा:** सरकार और भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (IRDAI) ने **"2047 तक सभी के लिए बीमा" मिशन** शुरू किया है। इसके माध्यम से **प्रत्येक नागरिक और उद्यम** के लिए उचित बीमा कवर सुनिश्चित किया जाएगा।
  - **स्वास्थ्य बीमा:** आयुष्मान भारत-प्रधान मंत्री जन आरोग्य योजना (AB-PMJAY) के अंतर्गत समस्त भारत में लोगों को **34.2 करोड़ आयुष्मान कार्ड** प्रदान किए जाने की उपलब्धि प्राप्त की गई है। इनमें से **49.3% कार्डधारक महिलाएं** हैं।
  - **फसल बीमा:** फसल बीमा से जुड़ी चिंताओं को दूर करने के लिए नई तकनीकी पहलों जैसे कि **येस-टेक मैनुअल (YES-TECH MANUAL), विंड्स (WINDS) पोर्टल, और नामांकन ऐप एआईडीई/ सहायक (AIDE/SAHAYAK)** की शुरुआत की गई है। इन **उपग्रह आधारित उन्नत तकनीकों** के माध्यम से फसल क्षति का आकलन किया जा सकेगा।
  - **अन्य पहलें:** अर्ध-शहरी क्षेत्रों, ग्रामीण कस्बों और गांवों में बीमा पहुंच बढ़ाने के विशेष उद्देश्य से **बीमा सुगम, बीमा वाहक और बीमा विस्तार** जैसी पहलों के प्रारंभ किए जाने की संभावना है।
  - **पुनर्बीमा:** IRDAI द्वारा भारत को **वैश्विक पुनर्बीमा केंद्र** के रूप में स्थापित करने के लिए **पुनर्बीमा विनियमों में संशोधनों** को मंजूरी प्रदान की गई है।
    - मूलभूत परिवर्तनों में **विदेशी पुनर्बीमा शाखाओं (FRB) की न्यूनतम पूंजी आवश्यकता को 12.2 मिलियन अमेरिकी डॉलर से घटाकर 6.1 मिलियन अमेरिकी डॉलर** करना शामिल है।

पेंशन क्षेत्रक

- **चुनौतियां:** पेंशन प्रणालियों के समक्ष मुख्य चुनौतियों में मुद्रास्फीति, व्यक्तियों पर जोखिम का बोझ कम करना, गिग वर्कर्स और अनौपचारिक कामगारों का समावेशन करना आदि शामिल हैं।
- **स्थिति:** 15वें वार्षिक मर्सर CFA इंस्टीट्यूट ग्लोबल पेंशन इंडेक्स (MCGPI) के अनुसार, भारत का **समग्र वैश्विक पेंशन सूचकांक मूल्य** 2022 के 44.5 से बढ़कर 2023 में 45.9 हो जाएगा।
  - **अटल पेंशन योजना (APY)** के ग्राहकों की संख्या पेंशन ग्राहकों की संख्या का लगभग **80%** है।
  - APY खातों में एक बड़ा भाग (लगभग 92%), **₹1,000 प्रति माह की पेंशन वाले खातों** का है, जो कि लक्षित आबादी के निम्न आय वाले परिवारों के कारण हो सकता है।
- **संवृद्धि के चालक:** संवृद्धि के चालकों में भारत की प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि, उच्च मध्यम आय वाले देश में परिवर्तन, युवा लोगों की महत्वपूर्ण आबादी के साथ जनसांख्यिकीय संरचना, जीवन प्रत्याशा में वृद्धि, पारंपरिक परिवार सहायता प्रणाली में बदलाव के कारण बढ़ता शहरीकरण आदि शामिल हैं।

वित्तीय स्थिरता

वित्तीय प्रणाली की स्थिरता सतत आर्थिक वृद्धि और समृद्धि के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है और एक वित्तीय रूप से स्थिर प्रणाली को व्यापक आर्थिक उथल-पुथल के प्रति मजबूत होना चाहिए।

- **वित्तीय क्षेत्र विकास परिषद (FSDC):** यह एक ऐसा मंच है, जो विविध वित्तीय क्षेत्रक के विनियामकों के बीच वार्ता की सुविधा प्रदान करता है।
    - इसका दायित्व वित्तीय स्थिरता, वित्तीय क्षेत्रक के विकास, अंतर-विनियामक समन्वय, वित्तीय साक्षरता व वित्तीय समावेशन, अर्थव्यवस्था की व्यापक-सावधानीपूर्ण निगरानी (जिसमें बड़े वित्तीय समूहों की कार्य-प्रणाली शामिल है) से संबंधित व्यापक मुद्दों से निपटना है।
    - यह परिषद वित्तीय क्षेत्रक से संबंधित निकायों जैसे **वित्तीय कार्रवाई कार्य बल (FATF), वित्तीय स्थिरता बोर्ड (FSB) आदि के साथ भारत के अंतर्राष्ट्रीय संपर्क का भी समन्वय** करती है।
- **RBI की भूमिका:** RBI वित्तीय संस्थाओं को विनियमित करता है। इसके साथ ही यह प्रणालीगत जोखिमों की निगरानी करके और मौद्रिक नीति को लागू करके वित्तीय क्षेत्रक के लचीलेपन को बढ़ावा भी देता है।
    - RBI की **छमाही वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (FSR)** में भारतीय वित्तीय प्रणाली की स्थिरता और मजबूती के समक्ष जोखिमों का सामूहिक आकलन किया जाता है।
- **वित्तीय क्षेत्रक मूल्यांकन कार्यक्रम (FSAP):** FSAP **अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक द्वारा संयुक्त रूप** से उन देशों में पांच-वर्षीय अभ्यास के रूप में शुरू किया जाता है, जिनके पास **'प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण'** वित्तीय क्षेत्रक हैं।
    - भारत के लिए पहला FSAP अभ्यास **2011-12** में और दूसरा **2017** में शुरू किया था। भारत के लिए तीसरा FSAP अभ्यास **2023-24** के लिए चल रहा है।
- **बेसल-III सुधारों का कार्यान्वयन:** भारत बेसल-III मानकों का उचित सीमा तक अनुपालन कर रहा है। ऐसा इस कारण, क्योंकि इसने निवल स्थिर वित्त-पोषण अनुपात (NSFR), तरलता कवरेज अनुपात (LCR), व्यवस्थित रूप से महत्वपूर्ण बैंकों के लिए आवश्यकताओं और बैंकों के बड़े एक्सपोजर्स को मापने एवं नियंत्रित करने के लिए पर्यवेक्षी ढांचे के प्रावधान निर्धारित किए हैं।
- **वित्तीय प्रणाली तनाव संकेतक (FSSI):** वित्तीय स्थिरता रिपोर्ट (FSR) जून 2024 से पता चलता है कि FSSI ने वित्त वर्ष 2024 की दूसरी छमाही के दौरान तनाव में धीरे-धीरे कमी आने के संकेत दिए हैं।
    - सरकारी ऋण बाजार के तनाव में कमी समग्र FSSI में सुधार का मुख्य योगदानकर्ता थी। इसमें लंबी अवधि के प्रतिफलों में गिरावट के साथ-साथ अस्थिरता और उच्च निवल विदेशी पोर्टफोलियो ऋण प्रवाह से सहायता प्राप्त हुई थी।

मूल्यांकन एवं परिप्रेक्ष्य

मूल्यांकन

- **ऋण: सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में निजी क्षेत्रक को प्रदान किया जाने वाला घरेलू ऋण** 2010 के 50.6 प्रतिशत से बढ़कर 2021 में 54.7 प्रतिशत हो गया था।
- **गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (NPA):** अनुसूचित वाणिज्यिक बैंकों के सकल और निवल NPAs में समय के साथ गिरावट आई है, साथ ही **CRAR, रिटर्न ऑन एसेट्स (ROA) और रिटर्न ऑन इक्विटी (ROE) में भी सुधार** हुआ है।
- **बीमा और पेंशन: भारत की GDP में बीमा और पेंशन निधि परिसंपत्तियों का हिस्सा क्रमशः 19 प्रतिशत व 5 प्रतिशत है,** जबकि अमेरिका में यह क्रमशः 52 प्रतिशत एवं 122 प्रतिशत तथा ब्रिटेन में 112 प्रतिशत और 80 प्रतिशत है। भारत में इनकी हिस्सेदारियों में और सुधार होने की संभावना है।
- ऋण हेतु बैंकों के समर्थन की प्रधानता कम हो रही है, तथा पूंजी बाजार की भूमिका बढ़ रही है।

परिप्रेक्ष्य

- **वित्तीय मध्यस्थता:** चूंकि भारत **2047 तक एक विकसित देश** बनने के लक्ष्य की ओर अग्रसर है, इसलिए यह आवश्यक है कि वैश्विक स्तर पर वित्तीय मध्यस्थता की लागत में कमी आए।
- **वित्तीय सेवाएं:** एक मजबूत वित्तीय सेवा क्षेत्रक के तत्वों में सम्मिलित हैं- अत्यधिक प्रतिस्पर्धी और व्यवहार्य बैंकिंग क्षेत्रक; सभी नागरिकों की बैंकिंग और अन्य वित्तीय सेवाओं तक सार्वभौमिक पहुंच; न्यूनतम मध्यस्थता लागत; लघु व्यवसायों की ऋण और इक्विटी वित्त-पोषण तक दक्ष एवं त्वरित पहुंच आदि। साथ ही अत्यधिक तरल, सक्षम और अच्छी तरह से विनियमित स्टॉक, बॉण्ड और कमोडिटी बाजार शामिल हैं।
- **वित्तीय क्षेत्रक: भारत के वित्तीय क्षेत्रक द्वारा पूंजी निर्माण का समर्थन करने** और MSME में निवेश, व्यापार व व्यवसाय को बढ़ावा देने की आवश्यकता है, ताकि उन्हें विस्तार करने में सक्षम बनाया जा सके।
  - इसके अलावा, सभी नागरिकों को **बीमा सुरक्षा और सेवानिवृत्ति सुरक्षा** भी प्रदान की जानी चाहिए।
- **फिनटेक:** अगला बड़ा कदम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस/ मशीन लर्निंग (AI/ML), विकेन्द्रीकृत वित्त, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IOT) आदि की ओर बढ़ने की संभावना है, जो कि डिजिटल भुगतान इकोसिस्टम को प्रभावित करने की व्यापक क्षमता रखता है।
  - भारत को एक **'फिनटेक राष्ट्र'** के रूप में विकसित करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इसमें फिनटेक फर्मों की संख्या सबसे अधिक हो तथा डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर के बल पर मौजूदा कंपनियों द्वारा फिनटेक अपनाने की दर सबसे अधिक हो।
  - मध्यम अवधि में, विशेष रूप से छोटे व्यवसायों के लिए, **निर्णय-आधारित ऋण के स्थान पर डेटा-आधारित ऋण की ओर बढ़ने के प्रयास** किए जाने चाहिए।

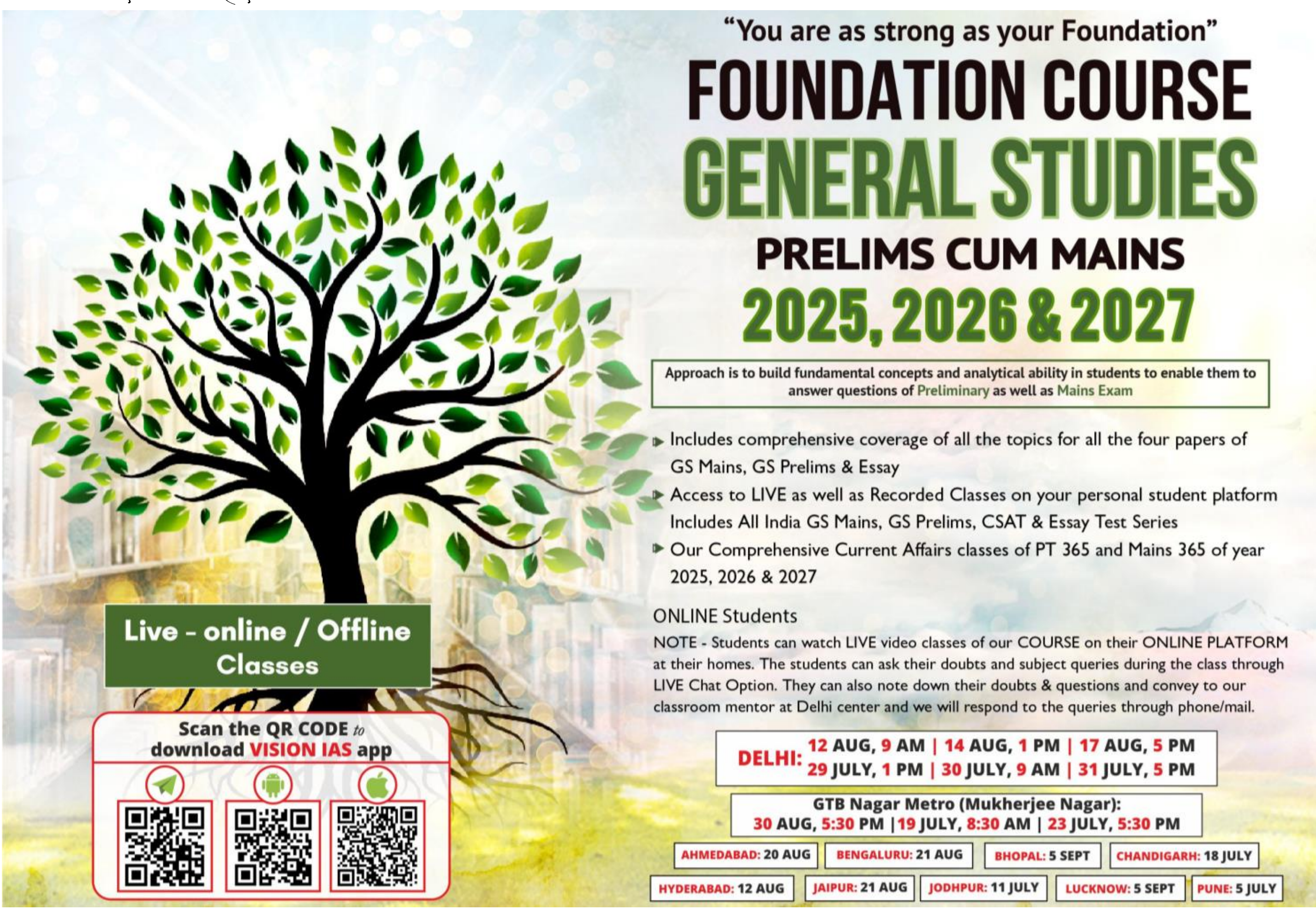

बजट में क्या कहा गया है?

बैंकिंग

- पूर्वोत्तर क्षेत्र में **इंडिया पोस्ट पेमेंट बैंक की 100 से अधिक शाखाएं** स्थापित की जाएंगी।
- **विनिर्माण क्षेत्रक में MSMEs के लिए ऋण गारंटी योजना और संकट की अवधि के दौरान MSMEs को ऋण सहायता** उपलब्ध कराई जाएगी।
- **तरुण' श्रेणी** के अंतर्गत मुद्रा ऋणों की अधिकतम सीमा को मौजूदा **10 लाख रुपये से बढ़ाकर 20 लाख रुपये** कर दिया गया है।
- **सिडबी** द्वारा सभी प्रमुख MSMEs क्लस्टरों तक पहुंच बढ़ाने के लिए नई शाखाएं खोली जाएंगी।
- **दिवाला एवं शोधन अक्षमता संहिता (IBC)** के अंतर्गत परिणामों में सुधार के लिए **एकीकृत तकनीकी मंच** स्थापित किया जाएगा।
- दिवाला समाधान में तेजी लाने के लिए IBC में उचित बदलाव; अधिकरण और अपीलीय अधिकरणों में सुधार तथा उन्हें मजबूत बनाने की पहल की जाएगी। अतिरिक्त अधिकरणों की स्थापना भी की जाएगी।
- ऋण वसूली अधिकरणों में सुधार लाने और उन्हें मजबूत बनाने के लिए कदम उठाए जाएंगे। ऋण वसूली में तेजी लाने के लिए अतिरिक्त अधिकरणों की स्थापना की जाएगी।
- **सीमित देयता भागीदारी को स्वैच्छिक रूप से बंद करना:** LLPs को स्वैच्छिक रूप से बंद करने में समापन समय की प्रक्रिया को कम करने हेतु **सेंटर फॉर प्रोसेसिंग एक्सीलेरेटेड कॉरपोरेट एग्जिट (C-PACE)** की सेवाओं का विस्तार किया जाएगा।

पूंजी बाजार

- अर्थव्यवस्था की वित्त-पोषण संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, केंद्र सरकार अलग-अलग क्षेत्रकों को उनके आकार, क्षमता और कौशल आवश्यकताओं के आधार पर सहायता प्रदान करने के लिए वित्तीय क्षेत्रक के लिए विजन और रणनीति आधारित डॉक्यूमेंट जारी करेगी।
- सरकार द्वारा जलवायु वित्त के लिए एक वर्गीकरण प्रणाली विकसित की जाएगी। इससे जलवायु अनुकूलन और शमन गतिविधियों के लिए पूंजी की उपलब्धता बढ़ाई जा सकेगी।

बीमा और पेंशन क्षेत्रक

- एक **सॉल्यूशन** विकसित किया जाएगा, जिसके तहत राजकोषीय समझदारी (fiscal prudence) बनाए रखते हुए आम नागरिकों के सुरक्षा संबंधी प्रासंगिक मुद्दों का समाधान किया जा सकेगा।
- नाबालिग बच्चों के लिए माता-पिता और अभिभावकों के अंशदान पर आधारित **NPS-वात्सल्य योजना** शुरू की जाएगी।

शब्दावली

शब्द/ पद	अर्थ
मौद्रिक नीति	मौद्रिक नीति से तात्पर्य केंद्रीय बैंक की उन गतिविधियों से है, जो किसी अर्थव्यवस्था में मुद्रा और ऋण की मात्रा को प्रभावित करने की दिशा में निर्देशित होती हैं।
नकद आरक्षित अनुपात (CRR)	CRR के अंतर्गत वाणिज्यिक बैंकों को केंद्रीय बैंक के पास आरक्षित निधि के रूप में एक निश्चित न्यूनतम राशि जमा रखनी पड़ती है।
सांविधिक तरलता अनुपात (SLR)	सांविधिक तरलता अनुपात जमा का न्यूनतम प्रतिशत है। इसे वाणिज्यिक बैंकों को तरल नकदी, सोना या अन्य प्रतिभूतियों के रूप में बनाए रखना होता है।
खुले बाजार की संक्रियाएं (OMO)	OMO में केंद्रीय बैंक प्राधिकरण द्वारा सरकारी प्रतिभूतियों की खरीद और बिक्री शामिल होती है।
रेपो दर	यह वह ब्याज दर है, जिस पर किसी देश का केंद्रीय बैंक वाणिज्यिक बैंकों को धन उधार देता है। रेपो एक मुद्रा बाजार साधन है, जो ऋण साधनों में बिक्री/ खरीद संचालन के माध्यम से जमानत आधारित अल्पकालिक उधार देने में सक्षम बनाता है।
आरक्षित धन	यह केंद्रीय बैंक द्वारा जारी की जाने वाली मुद्रा है तथा इसे जनता या वाणिज्यिक बैंकों द्वारा रखा जाता है।

 © Vision IAS

व्यापक मुद्रा (M3)	जनता के पास मुद्रा + कुल जमा (बैंकों के पास मांग जमा + बैंकों के पास सावधि जमा + रिजर्व बैंक के पास 'अन्य' जमा)। आम तौर पर, M3 का व्यापक मुद्रा के संकेतक के रूप में उपयोग किया जाता है।
धन गुणक	यह मुद्रा आपूर्ति का मौद्रिक आधार/ आरक्षित मुद्रा (बैंक तिजोरियों में रखा धन और प्रचलन में धन) से अनुपात है। यह मौद्रिक आधार और अर्थव्यवस्था की मुद्रा आपूर्ति के बीच संबंध को दर्शाता है। यह प्रदर्शित करता है कि बैंकों की ऋण गतिविधि से मुद्रा आपूर्ति कितनी तेजी से बढ़ेगी।
गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (NPA)	ऐसा ऋण या अग्रिम जिसके **मूलधन या ब्याज का भुगतान** निर्धारित तिथि से **90 दिनों** तक नहीं किया गया है, उसे **गैर-निष्पादित परिसंपत्ति (NPA)** कहा जाता है। NPA वह ऋण या अग्रिम है, जिसमें ब्याज और/या मूलधन की किस्त 90 दिनों से अधिक या अल्पावधि फसलों के लिए दो फसल मौसमों या दीर्घावधि फसलों के लिए एक फसल मौसम से अधिक समय तक बकाया रहती है।
प्राथमिक बाजार	प्राथमिक बाजार वह स्थान है, जहां नई प्रतिभूतियां (स्टॉक, बॉण्ड आदि) पहली बार जारी की जाती हैं और बेची जाती हैं।
द्वितीयक बाजार	द्वितीयक बाजार वह स्थान है, जहां पहले से जारी प्रतिभूतियों का व्यापार किया जाता है।
निजी प्लेसमेंट	निजी प्लेसमेंट, स्टॉक या बॉण्ड की खुले बाजार में सार्वजनिक रूप से बिक्री करने की बजाय पूर्व-चयनित निवेशकों और संस्थाओं को बिक्री है।
बीमा पैठ	किसी दिए गए वर्ष में कुल बीमा प्रीमियम का सकल घरेलू उत्पाद से अनुपात बीमा पैठ कहलाता है।
बीमा घनत्व	किसी दिए गए वर्ष में कुल बीमा प्रीमियम और उस देश की संपूर्ण जनसंख्या के बीच अनुपात बीमा घनत्व कहलाता है।

अध्याय 2: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. GIFT अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (IFSC) विशिष्ट है क्योंकि:
   1. इसे विदेशी मुद्रा प्रबंधन अधिनियम के तहत एक निवासी क्षेत्र के रूप में नामित किया गया है।
   2. यह एक समर्पित और एकीकृत वित्तीय विनियामक के विनियामक दायरे में है।
   3. इसकी एक अलग कर व्यवस्था है

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 2 और 3
   (c) केवल 1 और 3
   (d) 1, 2 और 3

2. भारत में सोशल स्टॉक एक्सचेंज (SSE):
   1. यह RBI के विनियामक दायरे में है।
   2. इसका लक्ष्य सामाजिक उद्यमों के लिए वित्त-पोषण के अंतर को समाप्त करना है।
   3. केवल लाभ-उन्मुख सामाजिक उद्यमों को सूचीबद्ध करने की अनुमति देता है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही हैं?
   (a) केवल 1 और 2
   (b) केवल 2
   (c) केवल 2 और 3
   (d) 1, 2 और 3

3. आर्थिक सर्वेक्षण के अनुसार, भारत के वित्तीय क्षेत्रक में निम्नलिखित में से कौन-सी प्रवृत्ति सही है?

(a) ऋण सहायता में पूंजी बाजारों की भूमिका घट रही है।

(b) जीडीपी में बीमा परिसंपत्तियों का हिस्सा अमेरिका से अधिक है।

(c) जीडीपी के प्रतिशत के रूप में निजी क्षेत्र का घरेलू ऋण 2010 से बढ़ा है।

(d) जीडीपी में पेंशन निधि परिसंपत्तियों का हिस्सा ब्रिटेन से अधिक है।

4. भारत में बीमा क्षेत्रक के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत में समग्र बीमा पैठ वित्त वर्ष 2022 की तुलना में वित्त वर्ष 2023 में बढ़ी है ।
2. एक अनुमान के अनुसार अगले पांच वर्षों में जी-20 देशों में से भारत का बीमा क्षेत्रक सबसे तेजी से बढ़ेगा।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

5. भारत में माइक्रोफाइनेंस के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(a) भारतीय माइक्रोफाइनेंस क्षेत्रक उधार लेने वाले ग्राहकों के मामले में विश्व स्तर पर सबसे बड़ा है।

(b) भारतीय माइक्रोफाइनेंस कवरेज में 25% से भी कम परिवार शामिल हैं।

(c) भारत में माइक्रोफाइनेंस ग्राहकों में पुरुषों की संख्या सबसे अधिक है।

(d) MFIs देश भर में 600 से अधिक जिलों में कार्यरत हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. भारत के आर्थिक विकास में डिजिटल वित्तीय समावेशन की भूमिका का मूल्यांकन कीजिये। समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए वित्तीय क्षेत्रक में तकनीकी प्रगति का लाभ कैसे उठाया जा सकता है? (250 शब्द)
2. भारत में सोशल स्टॉक एक्सचेंज की सामाजिक उद्यमिता को बढ़ावा देने और विकासात्मक चुनौतियों का समाधान करने की क्षमता का परीक्षण करें। इसकी सफलता सुनिश्चित करने के लिए क्या उपाय किए जा सकते हैं? (150 शब्द)

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

सिविल सेवा मुख्य परीक्षा के लिए उत्तर लेखन

UPSC मुख्य परीक्षा में सबसे ज्यादा उत्तर लेखन का कौशल मायने रखता है। इसका कारण यह है कि उत्तर लिखने की कला ही अभ्यार्थियों के लिए अपने ज्ञान, समझ, विश्लेषणात्मक क्षमता और टाइम मैनेजमेंट के कौशल को प्रदर्शित करने के एक प्राथमिक साधन के रूप में कार्य करती है। मुख्य परीक्षा में प्रभावी उत्तर लेखन, इन्फॉर्मेशन को सही तरीके से पेश करने, विविध दृष्टिकोणों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने और संतुलित तर्क प्रस्तुत करने की क्षमता प्रदर्शित करने में अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। कुशलतापूर्वक एवं समग्रता से लिखा गया उत्तर, परीक्षा में अधिकतम अंक प्राप्त करने एवं इस प्रतिस्पर्धी माहौल में अभ्यार्थियों को भीड़ से अलग करने में सहायक होता है, जो अंततः UPSC मुख्य परीक्षा में उनकी सफलता का निर्धारण करता है।

प्रभावशाली उत्तर लेखन के प्रमुख घटक

संदर्भ की पहचानः प्रश्न के थीम या टॉपिक को समझना एवं उस टॉपिक के संदर्भ में ही अपना उत्तर लिखना।

सटीक एवं प्रभावी इंट्रोडक्शनः उत्तर शुरू करने के लिए भूमिका को आकर्षित ढंग से लिखने से, परीक्षक का ध्यान आकर्षित होता है एवं इससे उत्तर के आगे होने वाली चर्चाओं का संक्षिप्त विवरण मिलता है।

संतुलित निष्कर्षः मुख्य बिंदुओं को संक्षेप में लिखने का प्रयास करना चाहिए। यदि प्रश्न में पूछा गया हो तो अंतर्दृष्टि या सिफारिशें प्रस्तुत करनी चाहिए। साथ ही, अपने तर्क या चर्चा को संतोषजनक निष्कर्ष तक पहुंचाना भी आवश्यक होता है।

कंटेंट की प्रस्तुतीः विषय–वस्तु की व्यापक समझ का प्रदर्शन करना भी जरूरी होता है। इसके लिए प्रश्न से संबंधित सटीक तथ्यों, प्रासंगिक उदाहरणों एवं व्यावहारिक विश्लेषण को उत्तर में शामिल करना चाहिए।

संरचना एवं प्रस्तुतीकरणः उत्तर को क्लियर हेडिंग के साथ, सब–हेडिंग या बुलेट पॉइंट के माध्यम से व्यवस्थित तरीके से लिखना आवश्यक होता है। इसके अलावा, आसान समझ के लिए जानकारी को तार्किक ढंग से एवं बेहतर रूप से प्रस्तुत करना जरूरी होता है।

भाषाः संदर्भ के अनुरूप सटीक और औपचारिक भाषा का उपयोग करना आवश्यक होता है। साथ ही, शब्दजाल, आम बोलचाल की भाषा के इस्तेमाल या अस्पष्टता से बचते हुए अभिव्यक्ति में प्रवाह एवं स्पष्टता का प्रदर्शन करना आवश्यक होता है।

Vision IAS के "ऑल इंडिया GS मेन्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" से जुड़कर प्रभावशाली उत्तर लेखन की कला एवं रणनीति में महारत हासिल कीजिए। इस प्रोग्राम में शामिल हैंः

- उत्तर लेखन पर 'मास्टर क्लासेज'
- विस्तृत मूल्यांकन
- व्यक्तिगत मेंटरिंग
- फ्लेक्सिबल टेस्ट शेड्यूल
- व्यापक फीडबैक
- पोस्ट–टेस्ट डिस्कशन

यह हमेशा ध्यान रखिए कि **सिविल सेवा मुख्य परीक्षा** UPSC CSE की यात्रा का एक चरण मात्र नहीं है, बल्कि यह सिविल सेवाओं में प्रतिष्ठित पद तक पहुंचने का एक डायरेक्ट गेटवे है। इस प्रकार, यह परीक्षा आपकी आकांक्षाओं को वास्तविकता में बदल देता है।

"ऑल इंडिया GS मेन्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" के लिए रजिस्टर करने और ब्रोशर डाउनलोड करने हेतु QR कोड को स्कैन कीजिए।

टॉपर्स के एप्रोच और तैयारी की रणनीतियों को जानने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

अहमदाबाद | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची | सीकर

अध्याय 3: कीमतें और मुद्रास्फीति: नियंत्रण में (Prices and Inflation: Under Control)

मुद्रास्फीति प्रबंधन में महामारी और उसके बाद के भू-राजनैतिक तनावों ने वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए काफी **चुनौतियां** पेश की है। इसके परिणामस्वरूप, **वित्त वर्ष 2022 और 2023 में कोर उपभोक्ता वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों में वृद्धि** देखी गई। पिछले दो वर्षों में प्रतिकूल मौसम के कारण खाद्य कीमतें प्रभावित हुई थीं। इन घटनाओं का निवल प्रभाव वित्त वर्ष 2023 और 2024 में उच्च मुद्रास्फीतिक के रूप में देखा गया।

विवेकपूर्ण मौद्रिक नीति संबंधी कार्रवाई और सरकार द्वारा व्यापार संबंधी संतुलित नीतिगत उपायों, उत्पादन में मजबूत वृद्धि ने वित्त वर्ष 2024 में कोर मुद्रास्फीति को चार वर्ष के निम्नतम स्तर तक कम करने में मदद की है। **डायनेमिक स्टॉक मैनेजमेंट, खुले बाजार के संचालन, आवश्यक खाद्य वस्तुओं के रियायती प्रावधान** और व्यापार नीति संबंधी उपायों सहित सुनियोजित प्रशासनिक कार्रवाई से खाद्य मुद्रास्फीति को काफी हद तक कम करने में मदद मिली है।

इसके अलावा, मध्यावधि से दीर्घावधिक मुद्रास्फीति परिदृश्य का निर्धारण मूल्य निगरानी तंत्रों और बाजार आसूचना के सुदृढ़ीकरण के साथ-साथ दालों एवं खाद्य तेलों (जिसके लिए भारत की आयात निर्भरता काफी हद तक है) जैसी आवश्यक खाद्य वस्तुओं के घरेलु उत्पादन को बढ़ाने के लक्षित प्रयासों द्वारा किया जाएगा।

अध्याय का प्रीकैप

परिचय

- उन्नत अर्थव्यवस्थाएं (AEs) और उभरते बाजार एवं विकासशील अर्थव्यवस्थाएं (EMDEs), दोनों **अपने मुद्रास्फीति संबंधी लक्ष्यों को हासिल करने की ओर बढ़** रही हैं।
- **भारत की मुद्रास्फीति दर, वैश्विक औसत से कम** है।
- **अंतर-देशीय मुद्रास्फीति और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के बीच एक स्पष्ट प्रतिकूल** संबंध है।

घरेलू खुदरा मुद्रास्फीति

- 2023 में **भारत की मुद्रास्फीति दर निर्धारित लक्ष्य सीमा** 2 से 6 प्रतिशत के भीतर थी।
- भारत की मुद्रास्फीति दर 2023 में **वैश्विक औसत से 1.4 प्रतिशत अंक कम** थी।
- वित्त वर्ष 2023 में, भारत में **उपभोक्ता मूल्य सूचकांक** (CPI) आधारित खुदरा मुद्रास्फीति **मुख्य रूप से उच्चतर खाद्य मुद्रास्फीति** से प्रभावित थी।

महामारी के बाद की दुनिया में कोर मुद्रास्फीति में उतार-चढ़ाव

- वित्त वर्ष 2024 में **कोर सेवाओं की मुद्रास्फीति** घटकर नौ साल के सबसे निचले स्तर पर आ गई। वहीं **कोर वस्तुओं की मुद्रास्फीति** भी घटकर चार साल के सबसे निचले स्तर पर आ गई।
- **उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक (CFPI) पर आधारित खाद्य मुद्रास्फीति** वित्त वर्ष 2022 में 3.8 प्रतिशत से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 7.5 प्रतिशत हो गई।

खुदरा मुद्रास्फीति में अंतर-राज्यीय अंतर

- 36 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में से 29 में **मुद्रास्फीति की दर 6 प्रतिशत से कम** रही है।
- **ग्रामीण उपभोग बास्केट में शहरी उपभोग बास्केट** (29.6%) की **तुलना में खाद्य वस्तुओं का भारांश (47.3%) काफी** अधिक है।
- **जिन राज्यों में खाद्य पदार्थों की कीमतें बढ़ीं**, वहां ग्रामीण मुद्रास्फीति में भी बढ़ोतरी हुई।
- **उच्च समग्र मुद्रास्फीति वाले राज्यों में ग्रामीण-से-शहरी मुद्रास्फीति में व्यापक अंतर देखा गया** है।

आउटलुक और आगे की राह

- मानसून के सामान्य रहने और आगे कोई बाह्य या नीतिगत आघात नहीं होने की स्थिति में RBI का अनुमान है की **हेडलाइन मुद्रास्फीति वित्त वर्ष 2025 में 4.5 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2026 में 4.1 प्रतिशत रहेगी।**
- **विश्व बैंक ने 2024 में कमोडिटी मूल्य सूचकांक में 3 प्रतिशत और 2025 में 4 प्रतिशत की गिरावट** का अनुमान लगाया है। यह गिरावट मुख्य रूप से ऊर्जा, खाद्य और उर्वरक की कम कीमतों के चलते होगी।
- सूरजमुखी, रेपसीड और सरसों जैसे **प्रमुख तिलहनों का उत्पादन बढ़ाना** जरूरी है।
- **दालों का रकबा बढ़ाने के लिए और अधिक प्रयासों** की आवश्यकता है।
- **अलग-अलग विभागों के मध्य बार-बार एकत्र किए जाने वाले आवश्यक खाद्य वस्तुओं के** डेटा के संबंध में तालमेल बिठा कर उसका बेहतर उपयोग किया जा सकता है।

Mains 365 : आर्थिक समीक्षा का सारांश

 © Vision IAS

परिचय

मौद्रिक नीति वस्तुतः आर्थिक संवृद्धि, मुद्रास्फीति और निवेश जैसे मैक्रोइकॉनॉमिक्स संकेतकों को प्रभावित करके किसी देश की आर्थिक स्थिति को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। मौद्रिक नीति का **प्राथमिक उद्देश्य** संवृद्धि के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए **मूल्य स्थिरता बनाए** रखना है।

केंद्रीय बैंक समग्र उद्देश्य को हासिल करने की दिशा में **मौद्रिक नीति के विभिन्न उपायों** जैसे बैंकों का नकद आरक्षित अनुपात (CRR), वैधानिक तरलता अनुपात (SLR), केंद्रीय बैंक के खुले बाजार संचालन और ऋण सीमा लागू करना इत्यादि का इस्तेमाल करता है।

- **मुद्रास्फीति प्रबंधन:** आर्थिक संवृद्धि को बनाए रखने के लिए कम और स्थिर मुद्रास्फीति अनिवार्य होती है। **सरकारों और केंद्रीय बैंकों को वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करते हुए मुद्रास्फीति को मध्यम स्तर पर बनाए रखने में चुनौतियों** का सामना करना पड़ता है।
  - इस नाजुक संतुलन को बनाए रखने के लिए **आर्थिक संकेतकों की सावधानीपूर्वक निगरानी** तथा उचित एवं समय पर सुधारात्मक कार्रवाई करने की आवश्यकता होती है।
  - मूल्य स्थिरता के लक्ष्य के प्रति भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) की प्रतिबद्धता और केंद्र सरकार की नीतिगत कार्रवाइयों के चलते **वित्त वर्ष 2024 में खुदरा मुद्रास्फीति को 5.4 प्रतिशत पर बनाए रखने में सफलता मिली है।** यह प्रतिशत कोविड-19 महामारी अवधि के बाद का सबसे निचला स्तर है।
- **वैश्विक अर्थव्यवस्था के लिए चुनौतियां:** महामारी के बाद, वैश्विक अर्थव्यवस्था को वित्त वर्ष 2023 की पहली छमाही में **रूस-यूक्रेन युद्ध** के चलते आपूर्ति श्रृंखला में और अधिक व्यवधान का सामना करना पड़ा।
  - हालांकि, वर्ष के उत्तरार्ध और वित्त वर्ष 2024 में **वैश्विक मुद्रास्फीति में गिरावट** आयी थी। यह कीमतों में वृद्धि संबंधी आघातों के कम होते प्रभाव, खासकर ऊर्जा की कीमतों के साथ-साथ कम कोर मुद्रास्फीति एवं मौद्रिक सख्ती के कारण हुआ है।

चार्ट III.1: 2023 में भारत की मुद्रास्फीति ईएमडीईएस से कम

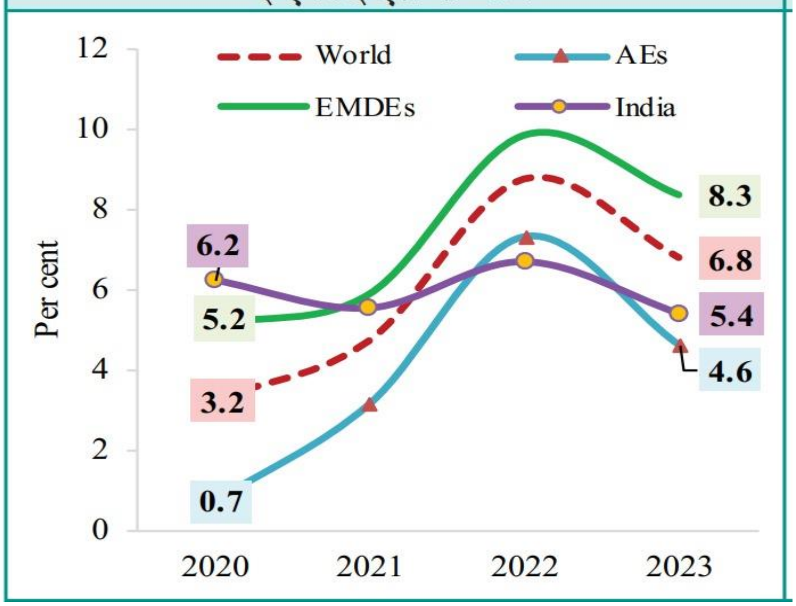

- **मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण:** मूल्य स्थिरता को बनाए रखने के लिए अधिकांश केंद्रीय बैंकों द्वारा **मौद्रिक नीति को समन्वित रूप से सख्त करने के बावजूद**, वैश्विक अर्थव्यवस्था ने **2023 में अप्रत्याशित लचीलापन/** दिखाया है।
  - यह उन्नत अर्थव्यवस्थाओं (AEs) और उभरते बाजारों और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं (EMDEs) दोनों में स्पष्ट है, क्योंकि वे अपने **मुद्रास्फीति संबंधी लक्ष्य की ओर वापस लौट** रहे हैं। यह प्रवृत्ति भारत में भी देखी गई है।
  - IMF के आंकड़ों के अनुसार, जहां 2022 और 2023 में भारत की मुद्रास्फीति दर **वैश्विक औसत और EMDEs की तुलना में कम** थी।
- **मुद्रास्फीति और सकल घरेलू उत्पाद: अंतर-देशीय मुद्रास्फीति और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद** के बीच एक स्पष्ट प्रतिकूल संबंध रहा है।
- **प्रभावी मुद्रास्फीति प्रबंधन के लिए कारक:** आपूर्ति और मांग को संतुलित करने में सक्षम स्थापित मौद्रिक नीतियां, आर्थिक स्थिरता, सुविकसित और कुशल बाजार एवं स्टेबल करेंसी मुद्रास्फीति के प्रभावी प्रबंधन में योगदान देती हैं।

© Vision IAS

घरेलू खुदरा मुद्रास्फीति

- **मुद्रास्फीति संबंधी लक्ष्य को प्रभावित करने वाले कारक:** आर्थिक विकास का स्तर, अर्थव्यवस्था की संरचना, वित्तीय प्रणाली की स्थिति तथा मुद्रास्फीति का बेहतर प्रबंधन एवं अन्य आर्थिक उद्देश्य आदि कारक इसे प्रभावित करते है।
- **भारत की मुद्रास्फीति:** 2023 में, भारत की मुद्रास्फीति दर **अपने लक्ष्य सीमा 2 से 6 प्रतिशत के भीतर** थी।
    - संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी और फ्रांस जैसी उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में, **भारत 2021-2023 तक त्रिवार्षिक औसत मुद्रास्फीति में अपने मुद्रास्फीति संबंधी लक्ष्य से सबसे कम विचलन प्रदर्शित करने** वाले देशों में से एक था।
    - भारत की मुद्रास्फीति दर 2023 में **वैश्विक औसत से 1.4 प्रतिशत अंक कम** थी।

चार्ट III.6: हेडलाइन और कोर मुद्रास्फीति में गिरावट की प्रवृत्ति

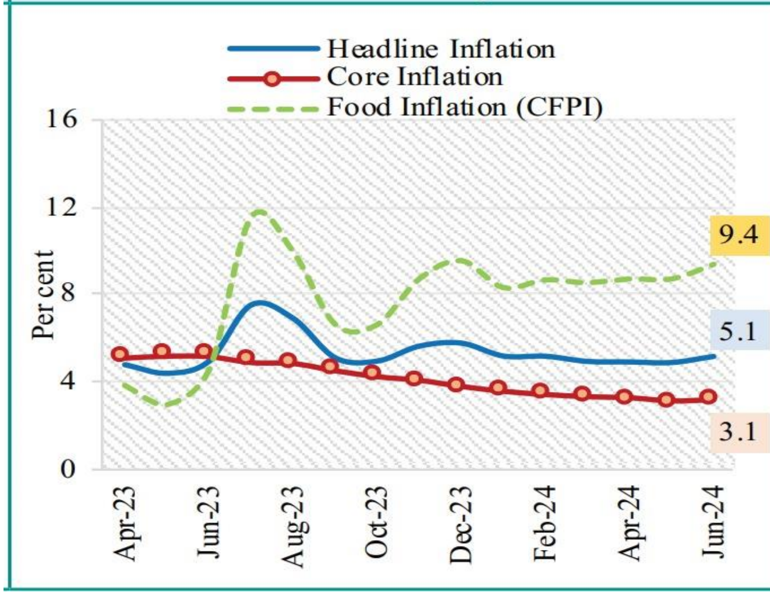

- **खुदरा मुद्रास्फीति:** वित्त वर्ष 2023 में, भारत में उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) आधारित **खुदरा मुद्रास्फीति मुख्य रूप से उच्च खाद्य मुद्रास्फीति** से प्रभावित थी। हालांकि इस दौरान कोर मुद्रास्फीति मध्यम रही।
    - एक तरफ जहां बाह्य आघातों के रूप से, **रूस-यूक्रेन युद्ध** के कारण कीमतों पर दबाव पड़ा, वहीं दूसरी तरफ घरेलू स्तर पर, गर्मियों में **प्रचंड गर्मी** और असमान वर्षा ने खाद्य कीमतों पर दबाव डाला।
- **मौद्रिक नीति: मई 2022 से, मौद्रिक नीति मोटे तौर पर प्रणाली में अतिरिक्त तरलता को अवशोषित करने पर केंद्रित रही है। इसके लिए** सख्त मौद्रिक नीति अपनाकर नीतिगत रेपो दर को **मई 2022 में 4 प्रतिशत से 250 आधार अंकों की वृद्धि करके** फरवरी 2023 में 6.5 प्रतिशत तक बढ़ाया गया।
    - इसके बाद, विकास को बढ़ावा देने के साथ-साथ **मुद्रास्फीति को लक्ष्य के अनुरूप रखने के उद्देश्य से समायोजन** की क्रमिक रूप को हटाने पर ध्यान केंद्रित करके नीति दर को अपरिवर्तित रखा गया था।
    - परिणामस्वरूप, वित्त वर्ष 2023 में देखी गई **लगातार मौजूद और स्थायी सी लगने वाली कोर मुद्रास्फीति** जून 2024 में घटकर 3.1 प्रतिशत हो गई।
- **हेडलाइन मुद्रास्फीति:** वित्त वर्ष 2024 में खाद्य कीमतों में अस्थिरता के बावजूद, कम ईंधन और कोर मुद्रास्फीति ने **हेडलाइन मुद्रास्फीति में गिरावट** सुनिश्चित की है।
    - मुद्रास्फीति में गिरावट वस्तुतः केंद्र सरकार द्वारा **LPG, पेट्रोल और डीजल की कीमतों में कटौती करने** और 2023 में **वैश्विक कमोडिटी कीमतों में गिरावट** के चलते आयी थी। इस प्रकार आयातित मुद्रास्फीति मार्ग के माध्यम से ऊर्जा, धातु, खनिज और कृषिगत वस्तुओं के मामले में मूल्य संबंधी दबाव कम हो गया।

महामारी के बाद की दुनिया में कोर मुद्रास्फीति में उतार-चढ़ाव

- **कोर मुद्रास्फीति:** कोर मुद्रास्फीति को CPI हेडलाइन मुद्रास्फीति में से **खाद्य और ऊर्जा वस्तुओं को पृथक** करके मापा जाता है। कोर वस्तुओं को उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं (consumer durables goods) और उपभोक्ता गैर-टिकाऊ वस्तुओं (consumer non-durables goods) में विभाजित किया गया है।

चार्ट III.11: कोर मुद्रास्फीति का इसके घटकों में विभाजन

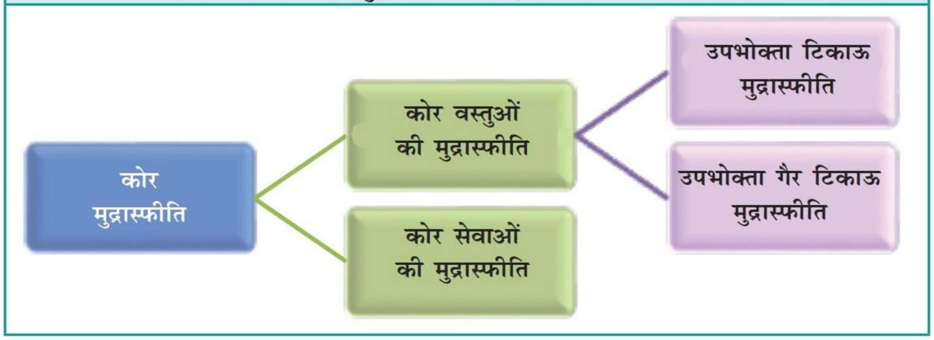

  - **कोर सेवाओं की मुद्रास्फीति** वित्त वर्ष 2024 में **नौ साल के निचले स्तर पर** आ गई। इसके लिए आवास के किराये से संबंधी मुद्रास्फीति में कमी या नरमी ने भी अपना योगदान दिया। वहीं कोर वस्तुओं की मुद्रास्फीति भी घटकर **चार साल के निचले स्तर पर** आ गई।
  - मौद्रिक नीति समिति द्वारा **रेपो दर में कटौती के परिणामस्वरूप** अप्रैल 2022 और जून 2024 के बीच कोर **मुद्रास्फीति में लगभग 4 प्रतिशत अंक की गिरावट** दर्ज की गई।
  - **उपभोक्ता टिकाऊ वस्तुओं की मुद्रास्फीति** वित्त वर्ष 2020 और 2023 के बीच उत्तरोत्तर 5 प्रतिशत से अधिक बढ़ी। इसका मुख्य कारण स्वर्ण और वस्त्रों की कीमतों में वृद्धि थी।
  - उपभोक्ता गैर-टिकाऊ वस्तुओं (CND) मुद्रास्फीति वित्त वर्ष 2022 में अब तक के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई। यद्यपि वित्त वर्ष 2023 और वित्त वर्ष 2024 में इसमें तेजी से गिरावट आयी। यह गिरावट मुख्य रूप से परिवहन लागत में बदलाव के चलते आयी थी।

चार्ट III.12: वित्त वर्ष 2024 में कोर मुद्रास्फीति 4 साल के निचले स्तर पर आ गई

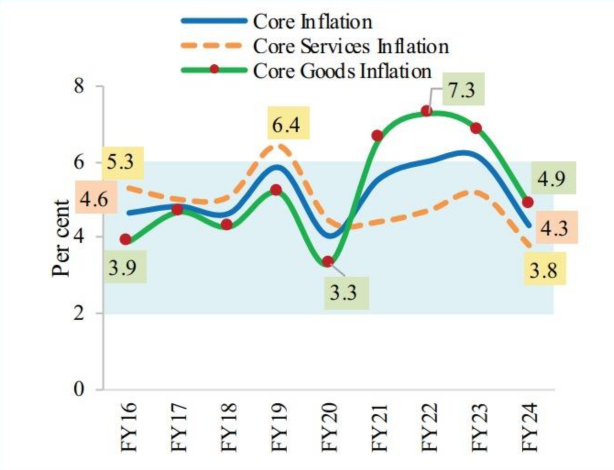

खाद्य मुद्रास्फीति

पिछले दो वर्षों में खाद्य मुद्रास्फीति एक वैश्विक परिघटना रही है।

- अनुसंधान में यह बात सामने आयी है कि **जलवायु परिवर्तन के कारण उत्पन्न संकटों** यथा- हीटवेव, असमान मानसून वितरण, बेमौसम बारिश, ओलावृष्टि, मूसलाधार बारिश और अत्यंत शुष्क स्थिति आदि से **खाद्य कीमतों में वृद्धि होती** है।
- वित्त वर्ष 2023 और वित्त वर्ष 2024 में, कृषि क्षेत्रक **चरम मौसमी घटनाओं, जलाशय में घटते जल स्तर और फसलों के क्षतिग्रस्त होने से प्रभावित** हुआ। इससे कृषि उत्पादन और खाद्य कीमतों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। इसलिए, उपभोक्ता खाद्य मूल्य **सूचकांक (CFPI) पर आधारित** खाद्य मुद्रास्फीति वित्त वर्ष 2022 में 3.8 प्रतिशत से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 7.5 प्रतिशत हो गई।
- **प्रमुख खाद्य वस्तुओं की कीमत बढ़ने के कारण:**
  - **टमाटर:** इसकी कीमतों में वृद्धि फसल उत्पादन में मौसमी बदलाव, सफेद मक्खी जैसे क्षेत्र-विशिष्ट फसल रोगों का संक्रमण और उत्तर भारत में मानसूनी वर्षा का जल्दी आगमन के कारण आयी थी।
  - **प्याज:** प्याज की कीमतों में तेजी कई कारकों के कारण आयी। इसके लिए पिछले कटाई सत्र के दौरान बारिश का रबी मौसम की प्याज की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ना, खरीफ मौसम के दौरान बुवाई में देरी, लंबे समय तक सूखे की अवधि से खरीफ उत्पादन प्रभावित होना और अन्य देशों द्वारा किए गए व्यापार संबंधी उपाय जिम्मेदार रहे हैं।

- दलहन: पिछले दो वर्षों में प्रतिकूल मौसमी दशाओं के कारण कम उत्पादन, दालों की कीमतों में वृद्धि की वजह रही है।

- **खाद्य मुद्रास्फीति को कम करने के लिए सरकारी कार्रवाई:** इसमें आवश्यक खाद्य वस्तुओं की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए खुले बाजार में बिक्री, निर्दिष्ट दुकानों में खुदरा बिक्री और समय पर आयात सहित त्वरित कार्रवाई करना शामिल है।
  - **प्रधान मंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना** को जनवरी 2024 से पांच साल की अवधि के लिए बढ़ा दिया गया है। इस योजना के तहत 81 करोड़ से अधिक लाभार्थियों को मुफ्त अनाज दिया जा रहा है।
- **वित्त वर्ष 2024 में खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए प्रशासनिक उपाय:**
  - गेहूं के आटे, टूटे चावल, गैर-बासमती चावल और प्याज जैसी **खाद्य वस्तुओं के निर्यात को प्रतिबंधित श्रेणी** में रखा गया।
  - बासमती चावल और प्याज की विशिष्ट किस्मों के लिए **न्यूनतम निर्यात मूल्य** तय किया गया।
  - **उसना चावल (Parboiled rice) पर निर्यात शुल्क** लगाया गया।
  - जमाखोरी और बेईमान को रोकने के लिए गेहूं का स्टॉक रखने पर सीमा लगाई गई। व्यापारियों/ थोक विक्रेताओं, खुदरा विक्रेताओं और प्रोसेसर/ मिलर्स द्वारा चावल/ धान के **स्टॉक की स्थिति के बारे में बताना अनिवार्य** किया गया।
  - रियायती कीमतों पर **भारत आटा, भारत चावल, भारत दाल बेचने की शुरुआत की** गई।
  - खुले बाजार में बिक्री के तहत केंद्रीय पूल से समय-समय पर गेहूं और चावल को निकाला जाता है।
  - दालों और प्याज के बफर स्टॉक से सूझबूझ के साथ इनकी मात्रा निकाली जा रही है।
  - तूर और उड़द और रिफाइंड पाम तेल के आयात को **मार्च 2025 तक 'मुक्त श्रेणी'** के तहत रखा गया है। इसके अलावा, मसूर, कच्चे पाम तेल, कच्चे सोयाबीन तेल और कच्चे सूरजमुखी तेल पर बेसिक इम्पोर्ट ड्यूटी को शून्य कर दिया गया है।
- **वैश्विक खाद्य कीमतें:** भारत में, खाद्य तेल बाजार काफी हद तक आयात पर निर्भर करता है। कुल खाद्य तेल आवश्यकता का 50 प्रतिशत से अधिक आयात किया जाता है। यह बात इसे वैश्विक कीमतों के प्रति संवेदनशील बनाती है। इस संदर्भ में, खाद्य तेलों पर राष्ट्रीय मिशन- ऑयल पाम का लक्ष्य आयात बोझ को कम करने के लिए घरेलू कच्चे पाम तेल उत्पादन को बढ़ाना है।

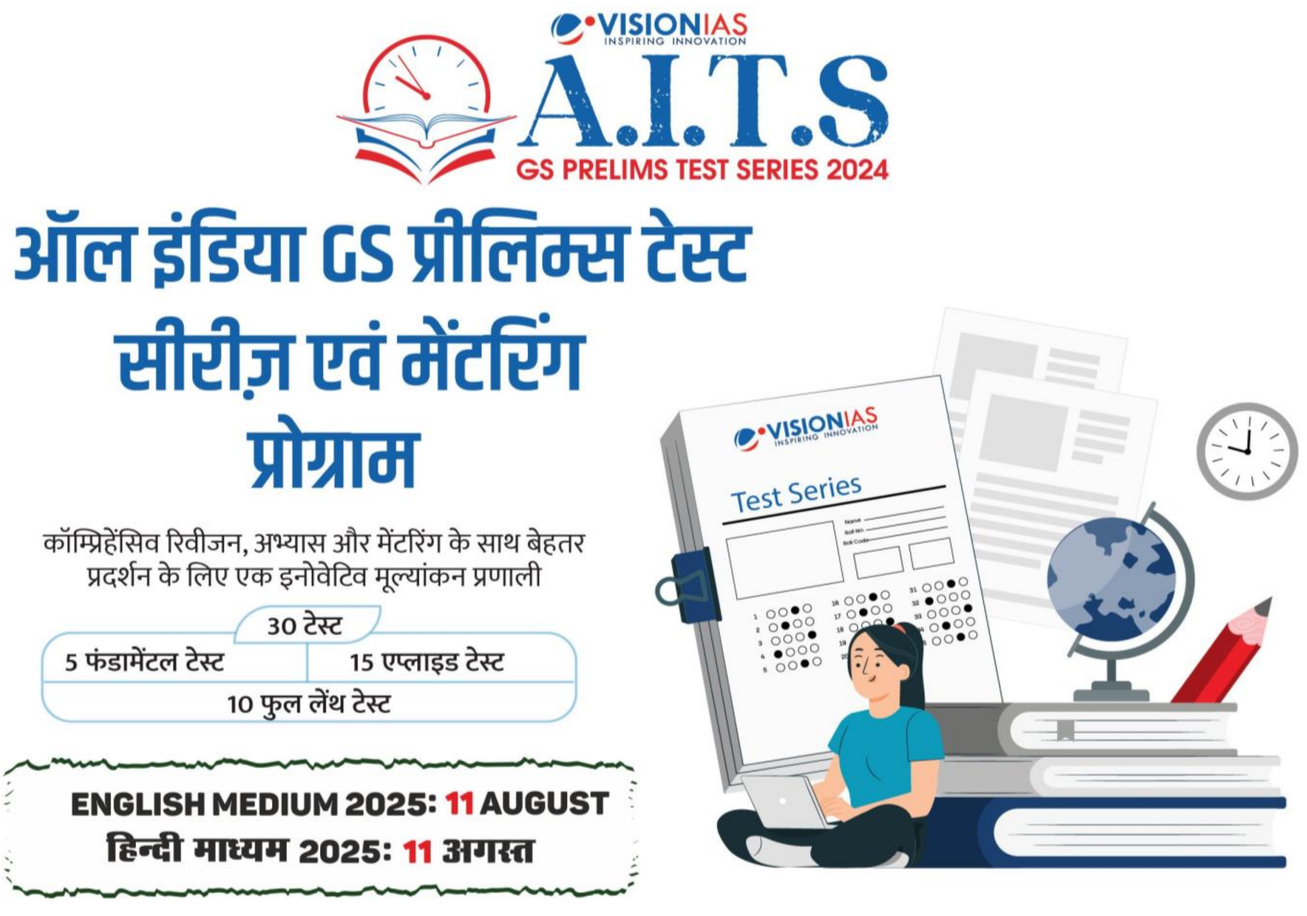

खुदरा मुद्रास्फीति में अंतर-राज्यीय अंतर

- **सामान्य रुझान:** वित्त वर्ष 2023 की तुलना में वित्त वर्ष 2024 में **अखिल भारतीय औसत खुदरा मुद्रास्फीति दर में गिरावट के अनुरूप, अधिकांश राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों** में मुद्रास्फीति में कमी आई है। **36 राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों में से 29 में मुद्रास्फीति की दर 6 प्रतिशत** से कम थी।
- **ग्रामीण मुद्रास्फीति:** ग्रामीण उपभोग बास्केट में **शहरी उपभोग बास्केट (29.6%) की तुलना में खाद्य वस्तुओं का भारांश (47.3%) बहुत अधिक** है। इसलिए, पिछले दो वर्षों में, जिन राज्यों में खाद्य वस्तुओं की कीमतें बढ़ीं, उनमें ग्रामीण मुद्रास्फीति भी अधिक देखी गई है।
  - शहरी मुद्रास्फीति की तुलना में **ग्रामीण क्षेत्रों में अंतर-राज्यीय अंतर अधिक** है। साथ ही, उच्च समग्र मुद्रास्फीति वाले राज्यों में **ग्रामीण मुद्रास्फीति, शहरी मुद्रास्फीति से अधिक** है और ग्रामीण-से-शहरी मुद्रास्फीति अंतर भी व्यापक है।

आउटलुक और आगे की राह

आउटलुक

- **उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति:** RBI और IMF ने अनुमान लगाया है कि भारत की उपभोक्ता मूल्य मुद्रास्फीति वित्त वर्ष 2026 में उत्तरोत्तर मुद्रास्फीति लक्ष्य के अनुरूप होगी।
  - मानसून के सामान्य रहने और आगे कोई बाह्य या नीतिगत आघात नहीं होने की स्थिति में RBI का अनुमान है की **हेडलाइन मुद्रास्फीति वित्त वर्ष 2025 में 4.5 प्रतिशत और वित्त वर्ष 2026 में 4.1 प्रतिशत रहेगी।**
- **कमोडिटी मूल्य सूचकांक: विश्व बैंक का अनुमान** है कि **औद्योगिक गतिविधि और व्यापार वृद्धि में सुधार के कारण** वस्तुओं की **वैश्विक आपूर्ति बढ़ेगी और उनकी मांग में भी वृद्धि** होगी।
  - इसके अलावा, **विश्व बैंक ने 2024 में कमोडिटी मूल्य सूचकांक में 3 प्रतिशत और 2025 में 4 प्रतिशत की गिरावट** का अनुमान लगाया है। यह गिरावट मुख्य रूप से ऊर्जा, खाद्य और उर्वरक की कम कीमतों के चलते होगी।
  - इस वर्ष **कोयले और प्राकृतिक गैस की कीमतों में उल्लेखनीय गिरावट** के कारण ऊर्जा मूल्य सूचकांक में गिरावट होने की संभावना है।
  - **मजबूत मांग और निर्यात संबंधी प्रतिबंधों के कारण** उर्वरक की कीमतों में कमी होने की संभावना है, परन्तु कीमतें 2015-2019 के स्तर से ऊपर ही रहेंगी।

आगे की राह

- **तिलहन उत्पादन में वृद्धि करना:** खाद्य तेलों की घरेलू खपत इसके उत्पादन की तुलना में तेजी से बढ़ रही है, जिससे आयात पर निर्भरता बढ़ रही है।
  - **घरेलू खाद्य तेल की कीमतों को संतुलित बनाए रखने के लिए,** सूरजमुखी और रेपसीड तथा सरसों जैसे **प्रमुख तिलहनों का उत्पादन बढ़ाना** होगा और धान की भूसी का तेल (राइस ब्रान ऑयल) एवं मकई के तेल जैसे गैर-पारंपरिक तेलों जैसे विकल्पों की संभावना को तलाशना होगा।
- **दालों के उत्पादन में सुधार:** भारत में **दालों की लगातार कमी** और इसके परिणामस्वरूप इनकी कीमतों में वृद्धि का सामना करना पड़ता है। **दालों का उत्पादन देश के कुछ राज्यों और जिलों में केंद्रित** है और ये जैविक एवं अजैविक दबावों के प्रति संवेदनशील हैं।
  - धान की कटाई के बाद खाली खेतों में एवं अधिक जिलों में दालों, खासकर मसूर, अरहर और उड़द के तहत खेती के **क्षेत्र का विस्तार करने के लिए काफी प्रयास करने** की आवश्यकता है।
- **सब्जियों के लिए भंडारण सुविधा:** टमाटर और प्याज जैसी सब्जियों की कीमतों में होती मौसमी वृद्धि के आलोक में ऐसी विशिष्ट फसलों के लिए **अनुकूल आधुनिक भंडारण सुविधाओं के विकास में प्रगति का आकलन** किया जाना चाहिए।
- **मूल्य-निगरानी: अलग-अलग विभागों के मध्य बार-बार एकत्र किए जाने वाले आवश्यक खाद्य वस्तुओं के** डेटा के संबंध में तालमेल बिठा कर उसका बेहतर उपयोग किया जा सकता है। इससे खेत से लेकर अंतिम उपभोक्ताओं तक के प्रत्येक चरण में कीमतों **के निर्धारण को मापने और ट्रैक करने में आसानी होगी।**

 © Vision IAS

- लागत-प्रेरित मुद्रास्फीति की घटनाओं को बेहतर ढंग से समझने हेतु वस्तुओं और सेवाओं के लिए **उत्पादक मूल्य सूचकांक के सृजन** के लिए चल रहे प्रयासों में तेजी लाई जा सकती है।
- यह ध्यान में रखते हुए कि MoSPI के घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण, 2022-23 के परिणाम उपलब्ध हैं, ऐसे में नए भारांश और बास्केट में नई वस्तुओं को शामिल करके **CPI को शीघ्रता से संशोधित** करना उचित हो सकता है।

बजट में क्या कहा गया है?

मुद्रास्फीति

- **परिसंपत्ति की ऊंची कीमतें, राजनीतिक अनिश्चितताएं और पोत-परिवहन में व्यवधान** संवृद्धि पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रही हैं और **मुद्रास्फीति के जोखिम को भी बढ़ा रही** हैं।
- भारत की **मुद्रास्फीति कम, स्थिर और 4 प्रतिशत के लक्ष्य** की ओर बढ़ रही है। वर्तमान में कोर मुद्रास्फीति (गैर-खाद्य, गैर-ईंधन) 3.1 प्रतिशत है।
- जल्दी खराब होने वाली वस्तुओं की बाजार में पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए कदम उठाए जा रहे हैं

दलहन और तिलहन:

- सरसों, मूंगफली, तिल, सोयाबीन और सूरजमुखी जैसे तिलहनों के लिए आत्मनिर्भरता हासिल करने के लिए रणनीति बनाई जा रही है।

सब्जी उत्पादन:

- **प्रमुख उपभोग केंद्रों** के करीब सब्जी उत्पादन के लिए **बड़े पैमाने पर क्लस्टर** विकसित किए जाएंगे।
- सरकार उपज के संग्रह, भंडारण और विपणन सहित सब्जी आपूर्ति श्रृंखलाओं के लिए किसान-उत्पादक संगठनों, सहकारी समितियों और स्टार्ट-अप को बढ़ावा देगी।

शहरी आवास

- पी.एम. आवास योजना शहरी 2.0 के तहत 10 लाख करोड़ रुपये के निवेश से 1 करोड़ शहरी गरीबों और मध्यम वर्ग के परिवारों की आवास जरूरतों को पूरा किया जाएगा।

शब्दावली

शब्द/पद	अर्थ
खुदरा मुद्रास्फीति या उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (CPI) मुद्रास्फीति	• CPI परिवार द्वारा उपभोग के लिए इस्तेमाल की जाने वाली **वस्तुओं और सेवाओं की कीमतों के सामान्य स्तर** में समय के साथ बदलाव को मापा जाता है। CPI का उपयोग मुख्यतः मुद्रास्फीति के मैक्रोइकोनॉमिक संकेतक के रूप में, मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण के लिए सरकारों और केंद्रीय बैंकों द्वारा एक टूल के रूप में किया जाता है।
कोर मुद्रास्फीति	• कोर मुद्रास्फीति को CPI हेडलाइन मुद्रास्फीति में से खाद्य और ऊर्जा वस्तुओं को हटाकर मापा जाता है।
हेडलाइन मुद्रास्फीति	• हेडलाइन मुद्रास्फीति एक समग्र माप है जिसमें कोर और गैर-कोर मुद्रास्फीति इनपुट्स दोनों शामिल होते हैं।
मौद्रिक नीति	• मौद्रिक नीति किसी अर्थव्यवस्था में धन और ऋण की मात्रा को प्रभावित करने वाली केंद्रीय बैंक की गतिविधियों से है।
समायोजनकारी रुख	• समायोजनकारी रुख का मतलब है कि केंद्रीय बैंक आर्थिक संवृद्धि को बढ़ावा देने के लिए धन आपूर्ति का विस्तार करने हेतु तैयार है।

अध्याय 3: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. भारत के मुद्रास्फीति प्रबंधन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

   1. 2023 में भारत की मुद्रास्फीति दर, वैश्विक औसत से अधिक थी।
   2. अंतर-देशीय मुद्रास्फीति और प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद के बीच एक धनात्मक संबंध है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1

   (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों

   (d) न तो 1, न ही 2

2. भारत में कोर मुद्रास्फीति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है?

   (a) वित्त वर्ष 24 में कोर सेवाओं की मुद्रास्फीति नौ साल के उच्चतम स्तर पर पहुंच गई।

   (b) वित्त वर्ष 24 में कोर वस्तुओं की मुद्रास्फीति घटकर चार साल के निम्नतम स्तर पर आ गई।

   (c) कोर मुद्रास्फीति को CPI हेडलाइन मुद्रास्फीति में से खाद्य और ऊर्जा वस्तुओं को शामिल करके मापा जाता है।

   (d) वित्त वर्ष 2020 और 2023 के बीच उपभोक्ता टिकाऊ मुद्रास्फीति में उत्तरोत्तर कमी आयी है।

3. भारत में खाद्य मुद्रास्फीति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

   1. उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक (CFPI) पर आधारित खाद्य मुद्रास्फीति वित्त वर्ष 2022 से वित्त वर्ष 2024 तक घटी है।
   2. सरकार ने खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए रियायती कीमतों पर भारत आटा, भारत चावल और भारत दाल की शुरुआत की।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1

   (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों

   (d) न तो 1, न ही 2

4. खुदरा मुद्रास्फीति में अंतर-राज्य भिन्नता के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा सही है?

   (a) सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में मुद्रास्फीति की दर 6 प्रतिशत से कम थी।

   (b) शहरी उपभोग बास्केट में ग्रामीण उपभोग बास्केट की तुलना में खाद्य वस्तुओं का भारांश अधिक है।

   (c) उच्च समग्र मुद्रास्फीति वाले राज्यों में ग्रामीण-से-शहरी मुद्रास्फीति में व्यापक अंतर देखा गया है।

   (d) ग्रामीण मुद्रास्फीति की तुलना में शहरी मुद्रास्फीति में अंतर-राज्य भिन्नता अधिक है।

© Vision IAS

5. भारत में मौद्रिक नीति के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. मौद्रिक नीति का प्राथमिक उद्देश्य विकास के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए मूल्य-स्थिरता बनाए रखना है।
2. मई 2022 से नीतिगत रेपो रेट में 250 आधार अंकों की कमी की गई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और, न ही 2

प्रश्न

1. हाल के वर्षों में मुद्रास्फीति प्रबंधन में भारत के सामने आने वाली चुनौतियों पर चर्चा कीजिए। मुद्रास्फीति, विशेषकर खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के लिए सरकार और RBI द्वारा उठाए गए विभिन्न उपायों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन कीजिए। (250 शब्द)
2. भारत का लक्ष्य दलहन और तिलहन उत्पादन में आत्मनिर्भरता हासिल करना है। खाद्य सुरक्षा और मुद्रास्फीति प्रबंधन के संदर्भ में इस लक्ष्य के महत्व पर चर्चा कीजिए। इन फसलों का घरेलू उत्पादन बढ़ाने के लिए रणनीतियां सुझाइये। (250 शब्द)

VISION IAS
INSPIRING INNOVATION

न्यूज़ टुडे

"न्यूज टुडे" डेली करेंट अफेयर्स की एक संक्षिप्त प्रस्तुति है। इस डॉक्यूमेंट की मदद से न्यूज-पेपर को पढ़ना काफी आसान हो जाता है और इससे अभ्यर्थी दैनिक घटनाक्रमों के बारे में अपडेट भी रहते हैं। इससे अभ्यर्थियों को कई अन्य तरह के लाभ भी मिलते हैं, जैसे:

किसी भी न्यूज़ से जुड़े घटनाक्रमों के बारे मे बेहतर समझ विकसित करने के लिए

न्यूज पढ़ने का एक ऐसा नजरिया विकसित करने के लिए, जिससे अभ्यर्थी आसानी से समझ सकें हैं कि न्यूज पेपर्स में से कौन-सी न्यूज पढ़नी है

टेक्निकल टर्म्स और न्यूज़ से जुड़े जटिल कॉन्सेप्ट्स के बारे में सरल समझ विकसित करने के लिए

न्यूज़ टुडे डॉक्यूमेंट की मुख्य विशेषताएं

- स्रोत: इसमें द हिंदू, इंडियन एक्सप्रेस, PIB, न्यूज़ ऑन ए.आई.आर., इकोनॉमिक टाइम्स, हिंदुस्तान टाइम्स, द मिंट जैसे कई स्रोतों से न्यूज को कवर किया जाता है।
- भाग: इसके तहत 4 पेज में दिन-भर की प्रमुख सुर्ख़ियों, अन्य सुर्ख़ियों और सुर्ख़ियों में रहे स्थल एवं व्यक्तित्व को कवर किया जाता है।
- प्रमुख सुर्ख़ियां: इसके तहत लगभग 200 शब्दों में पूरे दिन की प्रमुख सुर्ख़ियों को प्रस्तुत किया जाता है। इसमें हालिया घटनाक्रम को विस्तार से कवर किया जाता है।
- अन्य सुर्ख़ियां और सुर्ख़ियों में रहे स्थल/ व्यक्तित्व: इस भाग के तहत सुर्ख़ियों में रहे व्यक्तित्व, महत्वपूर्ण टर्म, संरक्षित क्षेत्र और प्रजातियों आदि को लगभग 90 शब्दों में प्रस्तुत किया जाता है।

न्यूज़ टुडे वीडियो की मुख्य विशेषताएं

- प्रमुख सुर्ख़ियां: इसमें दिन की छह सबसे महत्वपूर्ण सुर्ख़ियों को संक्षेप में प्रस्तुत किया जाता है। इससे आप एग्जाम के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण न्यूज को खोजने में आपना कीमती समय बर्बाद किए बिना मुख्य घटनाक्रमों को बेहतर तरीके से समझ सकते हैं।
- सुर्ख़ियों में रहे स्थल/ व्यक्तित्व: इसमें सुर्ख़ियों में रहे एक महत्वपूर्ण स्थल या मशहूर व्यक्तित्व के बारे में बताया जाता है।
- स्मरणीय तथ्य: इस भाग में चर्चित विषयों को संक्षेप में कवर किया जाता है, जिससे आपको दुनिया भर के मौजूदा घटनाक्रमों की जानकारी मिलती रहती है।
- प्रश्नोत्तरी: प्रत्येक न्यूज टुडे वीडियो बुलेटिन के अंत में MCQs भी दिए जाते हैं। इसके जरिए हम न्यूज पर आपकी पकड़ का परीक्षण करते हैं। यह इंटरैक्टिव चरण आपकी लर्निंग को ज्ञानवर्धक के साथ-साथ मज़ेदार भी बनाता है। इससे आप घटनाक्रमों से जुड़े तथ्यों आदि को बेहतर तरीके से याद रख सकते हैं।
- रिसोर्सेज: वीडियो के नीचे डिस्क्रिप्शन में "न्यूज़ टुडे" के PDF का लिंक दिया जाता है। न्यूज़ टुडे का PDF डॉक्यूमेंट, न्यूज टुडे वीडियो के आपके अनुभव को और बेहतर बनाता है। साथ ही, MCQs आधारित प्रश्नोत्तरी आपकी लर्निंग को और मजबूत बनाती है।

रोजाना 9 PM पर न्यूज टुडे वीडियो बुलेटिन देखिए

न्यूज टुडे डॉक्यूमेंट को डाउनलोड करने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

न्यूज़ टुडे क्विज़ के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

अहमदाबाद | बेंगलूरू | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

अध्याय 4: बाह्य क्षेत्र: समृद्धि के बीच स्थिरता (External Sector: Stability Amid Plenty)

परिचय

मौजूदा भू-राजनीतिक उथल-पुथल और मुद्रास्फीति के बावजूद, भारत का बाह्य क्षेकत्र मजबूत बना रहा। विदेशी मुद्रा भंडार, स्थायी ऋण संकेतक और बाजार-निर्धारित विनिमय दर भारत के बाह्य क्षेत्रक के लिए सुरक्षा कवच के रूप में काम करते हैं।

अध्याय का प्रीकैप

वैश्विक ट्रेड डायनेमिक में बदलाव • हाल के समय में **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में डिकपलिंग** और **वैश्वीकरण में कमी** एक महत्वपूर्ण प्रवृत्ति रही है। • इस बदलाव के बावजूद, **2024 में विश्व व्यापार में 2.6% की वृद्धि होने का अनुमान** है। • हालाँकि, दुनिया के प्रमुख **समुद्री मार्गों में व्यवधान** महत्वपूर्ण चुनौतियों का कारण बन रहे हैं। • अधिक सकारात्मक बात यह है कि भारत मौजूदा वैश्विक ट्रेड डायनेमिक का लाभ उठा रहा है और इन परिवर्तनों से लाभान्वित होने की स्थिति में भी है।	**भारत का व्यापार: वैश्विक उथल-पुथल के बीच लचीलापन** • भारत के समग्र व्यापार ने बदलती वैश्विक ट्रेड डायनेमिक के बीच **लचीलापन** दिखाया है। • **वैश्विक निर्यात** में इसकी हिस्सेदारी **बढ़** रही है। • **सेवा क्षेत्रक एक बेहतरीन प्रदर्शनकर्ता** के रूप में उभर रहा है। • **वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVC) में भारत की भागीदारी बढ़** रही है। • भारत की **वैश्विक व्यापार व्यवस्थाएं लंबे समय के बाद विस्तारित हो रही हैं।**
चालू खाता शेष • भारत का **चालू खाता घाटा (CAD) 1% से कम** हो गया है। • भारत दुनिया में **सबसे ज़्यादा विप्रेषण** प्राप्त करने वाला देश है। • भविष्य के क्षेत्रों (Futuristic sector) में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI) बढ़ रहा है। • भारत को **चीन प्लस वन रणनीति** से फ़ायदा मिल रहा है।	**पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार** • **भारत का विदेशी मुद्रा भंडार (FER)** प्रमुख देशों में सबसे ज़्यादा है। • भारतीय रुपये ने अमेरिकी डॉलर के मुकाबले **सापेक्ष स्थिरता का प्रदर्शन** किया है। • भारत का **व्यापार चैनल वित्तीय चैनल से अधिक मजबूत है।** • भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने भी **विनिमय दर की अस्थिरता को कम करने में सक्रिय भूमिका** निभाई है।
स्थिर बाह्य ऋण की स्थिति • भारत अपने **बाह्य ऋण का विवेकपूर्ण प्रबंधन** कर रहा है। • **बाह्य ऋण-GDP अनुपात** कम हुआ है। • भारत का कुल ऋण अपेक्षाकृत कम स्तर पर है।	**चुनौतियाँ** • प्रमुख व्यापारिक साझेदारों की ओर से **मांग में गिरावट आई है।** • **वस्तुओं की कीमतों में उतार-चढ़ाव** एक बड़ी बाधा रही है। • **व्यापार लागत में वृद्धि** हुई है।

वैश्विक ट्रेड डायनेमिक में बदलाव

- **अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में डिकपलिंग:** वैश्विक व्यापार पैटर्न में नए बदलाव, जैसे 'डिकपलिंग', 'डीरिस्किंग', 'रीशोरिंग', 'नियरशोरिंग' और 'फ्रेंड शेयरिंग', अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में नई प्रथाओं को दर्शाते हैं।
  - उदाहरण के लिए- यूरोपीय अर्थव्यवस्थाएं रूस से हटकर नॉर्वे और अमेरिका से ऊर्जा आयात बढ़ा रही हैं।
- **डी-ग्लोबलाइजेशन:** देशों में डी-ग्लोबलाइजेशन अत्यधिक विषम है। जहां अमेरिका और चीन धीरे-धीरे वैश्विक बाजारों पर अपनी निर्भरता कम कर रहे हैं, वहीं दुनिया के बाकी हिस्सों के लिए ऐसा नहीं कहा जा सकता।
  - इसके अलावा, संसाधित महत्वपूर्ण खनिजों और एनर्जी ट्रांजिशन के लिए सामग्रियों की आपूर्ति में चीन के प्रभुत्व के कारण, दोनों देशों के बीच डीकपलिंग न तो सरल है और न ही इसकी सम्भावना है।

 © Vision IAS

- **2024-2025 के लिए वैश्विक व्यापार परिदृश्य:** विश्व में वस्तु व्यापार के 2024 में 2.6% और 2025 में 3.3% की दर से बढ़ने की उम्मीद है, क्योंकि व्यापारिक वस्तुओं की मांग में वृद्धि हुई है।
    - हालांकि, भू-राजनीतिक तनाव, नीतिगत अनिश्चितता, प्रतिबंधात्मक व्यापार व्यवहार आदि व्यापार के दायरे को सीमित और आपूर्ति श्रृंखलाओं को प्रभावित कर सकती हैं।
- **दुनिया के प्रमुख समुद्री मार्गों पर व्यवधान:** पनामा नहर ताजे पानी की कमी के कारण अपनी आंशिक क्षमता पर काम कर रही है, जबकि यहां से वैश्विक व्यापार के 6% हिस्से का संचालन होता है। दूसरी ओर, लाल सागर से दूरी बनाने और केप ऑफ गुड होप की ओर यातायात के मुड़ने से एशिया-यूरोप की यात्रा में 10 दिन की वृद्धि हुई है और इससे ईंधन की लागत भी बढ़ गई है।
- **मौजूदा भू-राजनीतिक उथल-पुथल के दौर में भारत को अपने मजबूत व्यापार संबंधों से लाभ होने की उम्मीद है:** भारत के एशिया, यूरोप और अमेरिका के साथ व्यापक और विविध व्यापारिक संबंध हैं।

भारत का व्यापार: वैश्विक उथल-पुथल के बीच लचीलापन

व्यापार सुधारों के कारण सकल घरेलू उत्पाद में व्यापार (वस्तुओं एवं सेवाओं) के हिस्से में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ट्रेड ओपननेस इंडिकेटर वित्त वर्ष 2005 के 37.5 से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 45.9 हो गया। इसने आर्थिक वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

- **सकल घरेलू उत्पाद में व्यापार की हिस्सेदारी (पेट्रोलियम उत्पादों को छोड़कर)** वित्त वर्ष 2005 के 32.3% से बढ़कर वित्त वर्ष 2023 में 40.8% हो गई।
- **भारत की वैश्विक निर्यात हिस्सेदारी में भी वृद्धि** हुई है। वैश्विक वस्तुओं के निर्यात में इसकी हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2024 में 1.8% तक पहुँच गई, जो वित्त वर्ष 2016 से वित्त वर्ष 2020 के दौरान औसतन 1.7% थी।
    - इसी तरह, वैश्विक सेवाओं के निर्यात में इसकी हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2016 से वित्त वर्ष 2020 के दौरान औसतन 3.3% से बढ़कर वित्त वर्ष 2023 में 4.3% हो गई।
- **भारत का समग्र व्यापार:** वैश्विक चुनौतियों के बावजूद, **वित्त वर्ष 2024 में भारत के निर्यात में 0.23% की वृद्धि हुई, जबकि आयात में 4.9% की गिरावट आई।**
    - वित्त वर्ष 2017 से वित्त वर्ष 2020 तक, भारत के समग्र निर्यात में स्थिर वृद्धि देखी गई, लेकिन वैश्विक महामारी ने इस प्रवृत्ति को बाधित कर दिया था।
- **भारत का पण्य या वस्तु निर्यात (वित्त वर्ष 2023-24):** वित्त वर्ष 2023 की तुलना में वित्त वर्ष 2024 में निर्यात और आयात, दोनों में कमी आई। **निर्यात में गिरावट मुख्य रूप से प्रमुख निर्यात भागीदारों** (विशेष रूप से यूरोपीय संघ) **में मंदी और वैश्विक मौद्रिक सख्ती के कारण हुई।**
    - वैश्विक कमोडिटी कीमतों में कमी के कारण आयात मूल्य में गिरावट आई।

चार्ट IV.5: भारत का वस्तु व्यापार प्रदर्शन

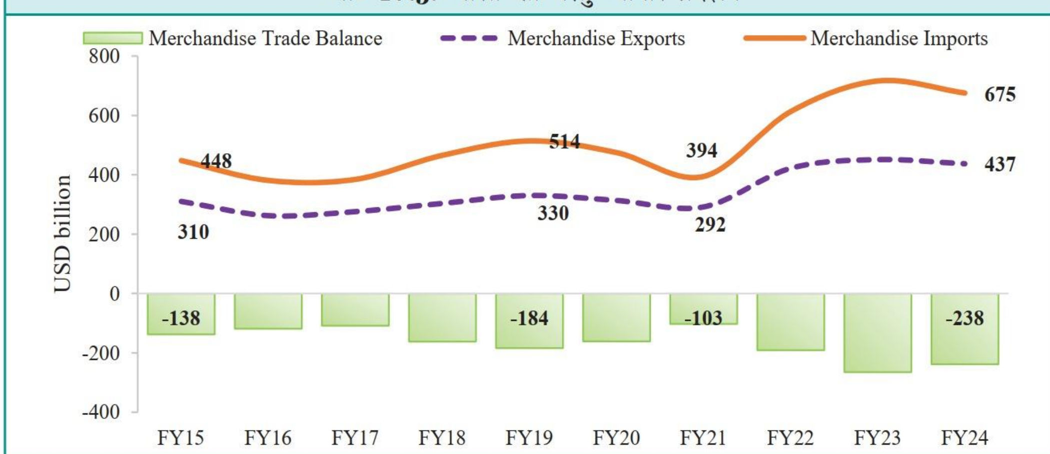

स्रोत: निर्यात आयात डेटा बैंक (वार्षिक), व्यापार सांख्यिकी, वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय

- **वैश्विक मांग ने वित्त वर्ष 2024-25 की शुरुआत में भारत के निर्यात को बढ़ावा दिया:** भारत का वस्तु निर्यात अप्रैल-मई 2024 के दौरान बढ़कर 73.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जो अप्रैल-मई 2023 में 69.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर था।

- **भारत की निर्यात संरचना में बदलाव (वित्त वर्ष 23-वित्त वर्ष 24):** वस्तु निर्यात में पूंजीगत वस्तुओं की हिस्सेदारी वित्त वर्ष 23 के 16.3% से बढ़कर वित्त वर्ष 24 में 18.9% हो गई, जो बेहतर औद्योगिक क्षमताओं का संकेत है। हालांकि, उपभोक्ता वस्तुओं और मध्यवर्ती वस्तुओं के निर्यात में मामूली गिरावट आई है।

निर्यात बढ़ाने की उत्पाद-विशिष्ट सफलता की कहानियाँ

खिलौना निर्यात

- भारत के खिलौनों के निर्यात में **वृद्धि** हो रही है। वित्त वर्ष 2013 और वित्त वर्ष 2024 के बीच इसकी चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) 15.9% रही है।
  - बढ़ते निर्यात के साथ-साथ घटते आयात ने भारत को **खिलौनों के व्यापार में घाटे से अधिशेष वाले देश में बदल दिया है।**
- खिलौना उद्योग के लिए सरकार द्वारा किए गए उपायों में **राष्ट्रीय एक्शन प्लान तैयार करना, खिलौनों पर बेसिक सीमा शुल्क में वृद्धि,** खिलौनों के लिए **गुणवत्ता नियंत्रण आदेश** जारी करना, संयुक्त अरब अमीरात और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में **शुल्क रहित बाजार पहुंच आदि** शामिल हैं।

रक्षा निर्यात

- वर्ष 2015 से वर्ष 2019 के बीच भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा हथियार आयातक देश बन गया था और **अब शीर्ष 25 हथियार निर्यातकों देशों में से एक बन गया है।**
  - भारत की **लगभग 100 कंपनियां अब विभिन्न प्रकार के रक्षा उपकरणों का निर्यात** कर रही हैं। पिछले साल (1,414) की तुलना में इस साल रक्षा उत्पादों के निर्यात के लिए **1,507 अनुमतियां** जारी की गई हैं।
- निर्यात प्रक्रियाओं को उद्योग के अनुकूल बनाने के लिए सरल बनाया गया है, और **आत्मनिर्भर भारत** जैसी पहल स्वदेशीकरण को प्रोत्साहित कर रही है, जिससे अंततः आयात पर निर्भरता कम हो रही है।

फुटवियर निर्यात

- भारत **दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा फुटवियर उत्पादक** और **नौवां सबसे बड़ा वैश्विक फुटवियर निर्यातक** है, जिसका वित्त वर्ष 24 में कुल निर्यात 2.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। यह वैश्विक उत्पादन का 13% और निर्यात का 2.2% है।
  - भारतीय फुटवियर बाजार का वर्तमान मूल्य 26 बिलियन अमेरिकी डॉलर है और 2030 तक इसके 90 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँचने का अनुमान है।
- इस उद्योग को समर्थन देने के लिए कई उपाय अपनाए गए हैं, जैसे- **तीन गुणवत्ता नियंत्रण आदेश जारी करना, भारतीय फुटवियर और चमड़ा विकास कार्यक्रम, बाजार पहुँच इनिशिएटिव स्कीम** के तहत लाभ और **विदेश व्यापार नीति 2023** में उल्लिखित नीतियाँ, आदि।

स्मार्टफोन निर्यात

- **वित्त वर्ष 2024** में **स्मार्टफोन के निर्यात में 42.2% की उल्लेखनीय वृद्धि** हुई है, जिससे यह **छह अंकों वाली HS उत्पाद श्रेणियों** में भारत के **शीर्ष पांच निर्यातित उत्पादों में शामिल** हो गया है।
- भारत 2014 में 23वें सबसे बड़े स्मार्टफोन निर्यातक से 2022 में **दुनिया का छठा सबसे बड़ा स्मार्टफोन निर्यातक** बन गया।

- **निर्यात गंतव्य का विविधीकरण:** भारत के वस्तु निर्यात में शीर्ष 10 देशों की हिस्सेदारी में गिरावट की प्रवृत्ति दर्ज की गई है, जो वित्त वर्ष 2000 के 61.9% से घटकर वित्त वर्ष 2024 में 50.5% हो गई।
  - वित्त वर्ष 2000 के बाद, **एशियाई, अफ्रीकी और मध्य पूर्वी देश यू.के., जर्मनी और बेल्जियम** जैसे पारंपरिक भागीदारों की जगह नए निर्यात गंतव्य बन गए हैं।
- **वित्त वर्ष 24 में POL[3] और गैर-POL दोनों उत्पादों के निर्यात में गिरावट आई है**
  - हालांकि पेट्रोलियम उत्पादों के **निर्यात मूल्य में 13.7% की कमी** आई है, फिर भी वित्त वर्ष 2024 में इनका निर्यात **मात्रा के हिसाब से 80.8% बढ़कर 84.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया। इस दौरान भारत की वैश्विक बाजार हिस्सेदारी 2018 से 2022 के बीच 4.3% से बढ़कर 4.8% हो गई।

[3] Petroleum, oils, and lubricants/ पेट्रोलियम तेल और लुब्रिकेंट

- **गैर-POL उत्पादों के तहत, इंजीनियरिंग व इलेक्ट्रॉनिक उत्पाद** और **ड्रग्स और फार्मास्यूटिकल्स के निर्यात** में वृद्धि हुई, साथ ही उनके वैश्विक बाजार शेयरों में भी वृद्धि देखी गई।

- **भारत का पण्य या वस्तु आयात:** वित्त वर्ष 2024 में पण्य आयात 5.7% घटकर 675.4 बिलियन डॉलर रह गया, जो वित्त वर्ष 23 में 716 बिलियन डॉलर था। यह गिरावट पेट्रोलियम, क्रूड उत्पादों, उर्वरकों, मोतियों और कीमती पत्थरों के कम आयात के कारण हुई।
- **पूंजीगत वस्तुओं के आयात में वृद्धि** हुई, जो औद्योगिक बुनियादी ढांचे या तकनीकी उन्नयन में संभावित निवेश का संकेत है।
- इसके अतिरिक्त, **उपभोक्ता वस्तुओं और मध्यवर्ती वस्तुओं के आयात में मामूली वृद्धि हुई,** जो अर्ध-तैयार उत्पादों की निरंतर मांग को दर्शाती है।

चार्ट IV.12: विभिन्न वर्गीकरणों में व्यापारिक वस्तुओं के आयात की संरचना

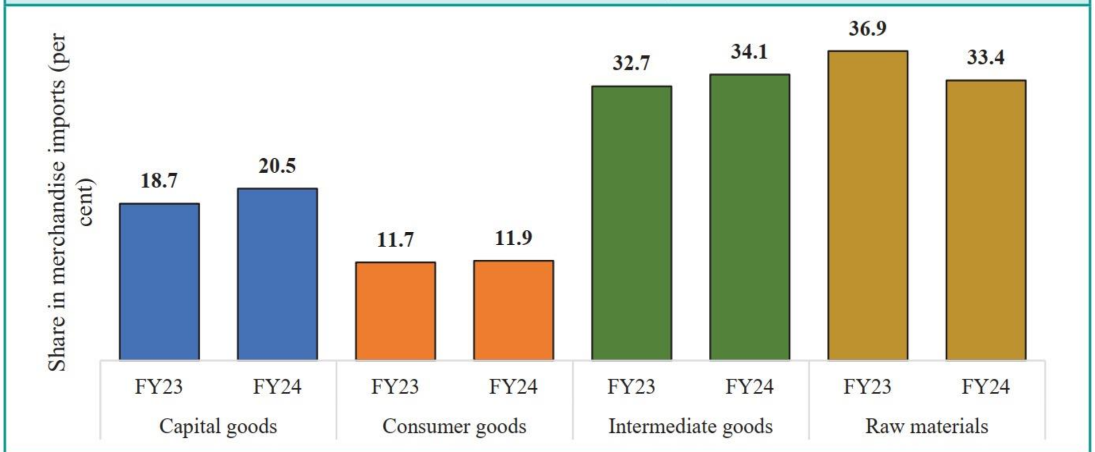

Source: DGCI&S[32]

निर्यात में चमकते सितारे के रूप में सेवाएँ

- **भारत का सेवा निर्यात: पिछले 30 वर्षों (1993-2022)** में सालाना **14% की वृद्धि** हुई है, जो **वस्तु निर्यात (10.7%)** और **वैश्विक सेवा निर्यात (6.8%)** की वृद्धि से कहीं ज़्यादा है।
- **वैश्विक स्तर पर सेवा निर्यात में भारत की हिस्सेदारी:** यह **1993 के 0.5%** से बढ़कर **2022 में 4.3%** हो गई है।
  - भारत अब **वैश्विक स्तर पर 7वाँ सबसे बड़ा सेवा निर्यातक देश** बन गया है।
- **सेवा निर्यात बास्केट की संरचना में परिवर्तन:** यह वृद्धि सॉफ्टवेयर उद्योग की वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में भारत के गहन एकीकरण के कारण है, जो कम लागत वाली बैक-ऑफ़िस सेवाओं से उच्च-मूल्य की पेशकशों में बदल रही है।
  - वित्त वर्ष 2020 से सालाना 18% की दर से बढ़ रहे **वैश्विक क्षमता केंद्रों** ने सेवा निर्यात में इस वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारत में वैश्विक क्षमता केंद्र (Global Capability Centres: GCC)

GCC बहुराष्ट्रीय निगमों द्वारा रणनीतिक कार्यों की एक श्रृंखला को निष्पादित करने के लिए स्थापित अपतटीय यूनिट्स हैं।

भारत में GCC

- भारत में GCC बैंकिंग, सॉफ्टवेयर, दूरसंचार, अर्धचालक और एयरोस्पेस जैसे प्रमुख उद्योगों पर ध्यान केंद्रित करते हुए IT, BPO, इंजीनियरिंग और सॉफ्टवेयर उत्पाद विकास में विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- **2023 तक, भारत में 1,600 से अधिक GCC** होने का अनुमान था, और **2028 तक, यह संख्या 2100 तक पहुँचने की उम्मीद है** और बाजार का आकार 90 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच जाएगा।
  - भारत में GCC के विकास को **डिजिटल इंडिया**, व्यापार सुगमता के लिए नीतियों, **सुव्यवस्थित कर विनियमन, लचीले श्रम कानूनों और सिंगल विंडो मंजूरी** जैसी पहलों द्वारा सुगम बनाया गया है। इसके अतिरिक्त, **बेहतर डिजिटल बुनियादी ढाँचा** GCC के विकास को और अधिक समर्थन देता है।

अर्थव्यवस्था में योगदान:

- GCC **32 लाख लोगों को रोजगार** देता है, मुख्य रूप से इंजीनियर और वैज्ञानिक।
- इसने **2023 में 46 बिलियन अमेरिकी डॉलर का संयुक्त राजस्व** उत्पन्न किया।

- देश के **सकल घरेलू उत्पाद में इसका योगदान 1% से अधिक** है और 2030 तक कुल 121 बिलियन अमेरिकी डॉलर का राजस्व उत्पन्न करने का अनुमान है, जो भारत के सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 3.5% है।

वैश्विक क्षमता केंद्र (GCC) का टियर-II शहरों में विस्तार

- महामारी के दौरान देखे गए **रिवर्स माइग्रेशन** और **अपेक्षाकृत कम पैठ वाले बाजारों द्वारा पेश की जाने वाली लागत मध्यस्थता से प्रभावित होकर** वैश्विक क्षमता केंद्र (GCC) टियर-II शहरों में तेजी से विस्तार कर रहे हैं।
  - 2023 की पहली छमाही के दौरान, **लगभग 22% GCC केंद्र टियर-II शहरों में स्थापित** किए गए थे।

वैश्विक मूल्य श्रृंखला (GVC) में भारत की बढ़ती भागीदारी

- **वैश्विक प्रवृत्ति के अनुरूप:** भारत की GVC भागीदारी 1995 के 10% से बढ़कर 2009 में 22% हो गई। वैश्विक वित्तीय संकट (2009) के बाद, GVC में भागीदारी धीमी हो गई, लेकिन हाल ही में PLI और डिस्ट्रिक्ट्स ऐज एक्सपोर्ट्स हब (DEH) पहल जैसी सरकारी पहलों के कारण इसमें उछाल आया है।
  - अगस्त 2019 में शुरू की गई **DEH** पहल का उद्देश्य घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय, दोनों बाजारों में प्रत्येक जिले से **उत्पादों का चयन, ब्रांडिंग और प्रचार** करना है।
- **भारत की वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला भागीदारी:** 2022 में भारत की GVC भागीदारी 40.3% है, जो अभी भी USA (47.3%), UK (47.8%), दक्षिण कोरिया (56.2%) और मलेशिया (60%) से कम है।
- **बदलती आपूर्ति श्रृंखलाओं से एशिया को सबसे अधिक लाभ मिल रहा है:** अपनी उत्पादन सुविधाओं का विस्तार करने की इच्छुक कम्पनियों के लिए भारत पहली पसंद है।
- **GVC से संबंधित भारत का व्यापार:** भारत की भागीदारी 2010 के 62.9 बिलियन अमेरिकी डॉलर से लगभग चार गुना बढ़कर 2022 में 233.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गई है।
- **क्षेत्रीय संरचना में बदलाव:** विनिर्माण क्षेत्र के भीतर, कम-प्रौद्योगिकी विनिर्माण की हिस्सेदारी घट रही है, जबकि मध्यम और उच्च-प्रौद्योगिकी विनिर्माण की हिस्सेदारी बढ़ रही है।
  - **सेवाओं में वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVCs) में भागीदारी** निम्न-मूल्य वाली बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (BPO) सेवाओं से आगे **बढ़कर उच्च-मूल्य वाली सेवाओं तक** पहुंच गई है, जैसे कि वैश्विक क्षमता केंद्रों (GCCs) द्वारा प्रदान की जाने वाली सेवाएं।
- **आगे की राह:** वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVCs) में भागीदारी बढ़ाने के लिए, भारत को गुणवत्तापूर्ण व्यापार अवसंरचना विकसित करने, MSMEs को एकीकृत करने, एग्जिट और निकास प्रक्रियाओं को सरल बनाने तथा व्यापार सुविधा उपायों को लागू करने की आवश्यकता है।

भारत की वैश्विक व्यापार व्यवस्थाओं का बदलता परिदृश्य

लगभग 10 वर्षों के अंतराल के बाद, भारत ने 2021 और 2024 के बीच **चार FTAs (मॉरीशस, यू.ए.ई., ऑस्ट्रेलिया और EFTA)** पर हस्ताक्षर किए। **EFTA** को छोड़कर, ये सभी FTA लागू हो गए हैं।

भारत-मॉरीशस CECPA	
• भारत और मॉरीशस ने 2021 में व्यापक आर्थिक सहयोग और भागीदारी समझौते (CECPA)[4] पर हस्ताक्षर किए। यह **भारत द्वारा किसी अफ्रीकी देश के साथ हस्ताक्षरित पहला व्यापार समझौता है।** • इस समझौते में भारत के लिए खाद्य और कृषि उत्पादों सहित 310 निर्यात वस्तुएं शामिल हैं।	• वित्त वर्ष 2023 में, **भारत का निर्यात 462.7 मिलियन अमेरिकी डॉलर** तक पहुंच गया, जबकि मॉरीशस का निर्यात 91.8 मिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंच गया। • **पिछले 17 वर्षों में दोनों देशों के बीच व्यापार में 168% की वृद्धि** हुई है, जिसमें **पेट्रोलियम उत्पाद सबसे बड़ी निर्यात वस्तु** है। मॉरीशस को किए जाने वाले अन्य भारतीय निर्यात में फार्मास्यूटिकल्स, अनाज, कपास, झींगा और झींगा शामिल हैं।

[4] Comprehensive Economic Cooperation and Partnership Agreement

© Vision IAS

भारत-UAE व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौता (CEPA)[5]	
• CEPA का लक्ष्य 5 वर्षों के भीतर वस्तुओं में **द्विपक्षीय व्यापार** को **100 बिलियन डॉलर** और **सेवाओं में व्यापार को 15 बिलियन डॉलर** तक बढ़ाना है। • इस समझौते में फार्मास्यूटिकल्स (भारतीय फार्मास्युटिकल उत्पादों की पहुँच बढ़ाने के लिए), **डिजिटल व्यापार** और ई-कॉमर्स सेवाओं सहित अन्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने वाला **एक अलग अनुलग्नक (Annex)** शामिल है।	• वित्त वर्ष 2024 में, भारत और UAE के बीच द्विपक्षीय व्यापार 83.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुँच गया। **UAE भारत का दूसरा सबसे बड़ा निर्यात गंतव्य** है और भारत में आठवां सबसे बड़ा निवेशक भी है। • **UAE पिछले दो दशकों से लगातार भारत के शीर्ष तीन व्यापार भागीदारों में से एक रहा है** तथा रत्न और आभूषण, अनाज और ईंधन के लिए भारत का सबसे बड़ा निर्यात बाजार रहा है।
भारत-ऑस्ट्रेलिया आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (ECTA)[6]	
• यह समझौता भारत के श्रम-प्रधान क्षेत्रों के लिए फायदेमंद है क्योंकि इससे 98% टैरिफ लाइनों को शून्य शुल्क पर तत्काल बाजार पहुंच प्रदान किया गया है। यह ऑस्ट्रेलिया को भारत के निर्यात का 96.4% है। • ECTA कंप्यूटर से संबंधित सेवाओं, दूरसंचार, निर्माण, स्वास्थ्य और पर्यावरण सेवाओं में निवेश के अवसर भी खोलता है।	**भारत-ऑस्ट्रेलिया व्यापार** • व्यापार के संदर्भ में, भारत-ऑस्ट्रेलिया **द्विपक्षीय वस्तु व्यापार वित्त वर्ष 2022 के 25 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 2023 में 26 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया। • वित्त वर्ष 24 में **ऑस्ट्रेलिया भारत का 13वाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार** था, और भारत **2023 में ऑस्ट्रेलिया का 5वाँ सबसे बड़ा व्यापारिक साझेदार** था।
भारत-EFTA व्यापार और आर्थिक भागीदारी समझौता (India-EFTA TEPA)	
• भारत-EFTA TEPA[7] **यूरोपीय देशों के साथ भारत का पहला FTA** है, जो व्यापार उदारीकरण के प्रति भारत की प्रतिबद्धता को दर्शाता है। • इस समझौते में **वस्तुओं और सेवाओं में दोतरफा व्यापार के साथ-साथ द्विपक्षीय निवेश** शामिल है।	

व्यापार सुविधा उपायों और लॉजिस्टिक लागत में कमी के लिए सरकार द्वारा की गई पहलें

- **लॉजिस्टिक लागत में कमी: विश्व बैंक के लॉजिस्टिक्स पर्फामेंस इंडेक्स** में भारत ने 6 पायदान की छलांग लगाकर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया है। 2018 के 44वें रैंक से आगे बढ़कर 2023 में यह 139 देशों में 38वें स्थान पर पहुंच गया है।
- **राज्य स्तर पर भारत का लॉजिस्टिक प्रदर्शन:** लॉजिस्टिक्स ईज एक्रॉस डिफरेंट स्टेट (LEADS) 2019 की तुलना में 2023 की रिपोर्ट लॉजिस्टिक प्रदर्शन के सभी तीन स्तंभों: सेवा, बुनियादी ढांचे और विनियामकीय परिवेश में हितधारकों की धारणा में सकारात्मक बदलाव को दर्शाती है।
- **भारत ने लॉजिस्टिक लागत को कम करने के लिए कई उपाय किए:** इसमें निर्यात लक्ष्य निर्धारित करना, बैंकों को MSME निर्यातकों को किफायती और पर्याप्त निर्यात ऋण प्रदान करने के लिए प्रोत्साहित करना, व्यापार की सुविधा के लिए सिंगल विंडो इंटरफेस स्थापित करना, पी.एम. गतिशक्ति को लागू करना और राष्ट्रीय लॉजिस्टिक नीति विकसित करना शामिल हैं।
    - **सागरमाला योजना:** सागरमाला योजना ने भारत की लगभग 7,500 किलोमीटर लंबी तटरेखा का उपयोग करके बंदरगाह आधारित विकास को बढ़ावा दिया है। सरकार का लक्ष्य 2030 तक 23 जलमार्गों को चालू करना भी है।
    - **वस्तु एवं सेवा कर (GST):** यात्रा के समय को 30% तक कम कर दिया गया है, जिससे लॉजिस्टिक लागत में कमी आई है और ट्रकों द्वारा यात्रा की जाने वाली औसत दूरी 300-325 कि.मी. तक बढ़ गई है।

[5] Comprehensive Economic Partnership Agreement

[6] Economic Cooperation and Trade Agreement

[7] India-EFTA Trade and Economic Partnership Agreement/ भारत-EFTA व्यापार और आर्थिक भागीदारी समझौता

अनुकूल चालू खाता शेष (Current Account Balance)

भारत का **चालू खाता घाटा (CAD)** वित्त वर्ष 2024 में **GDP के 0.7%** पर आ गया, जो वित्त वर्ष 2023 में 2% था। यह वस्तु व्यापार घाटे में कमी, सेवा निर्यात में वृद्धि और धन प्रेषण में वृद्धि के कारण हुआ।

चार्ट IV.20: वित्त वर्ष 24 के दौरान सीएडी में सुधार

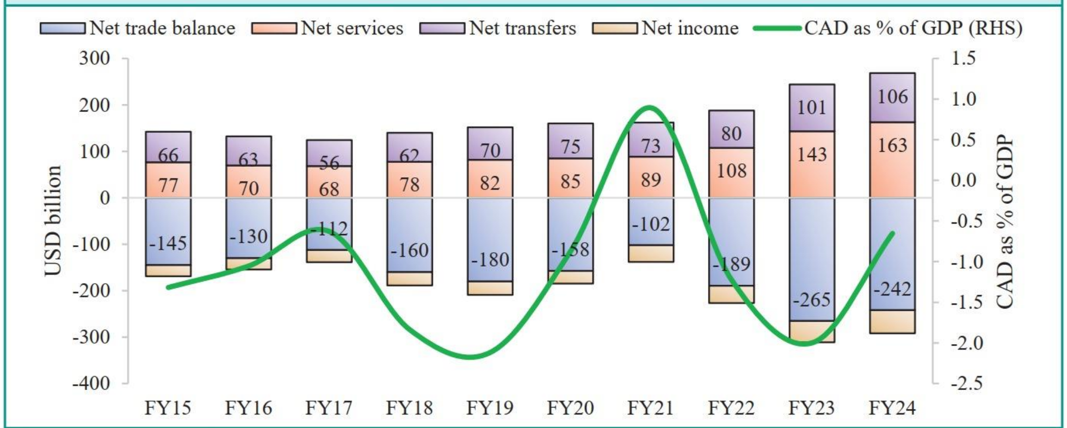

स्रोत: चार्ट संख्या 196, भारत का समग्र भुगतान संतुलन -त्रैमासिक-अमेरिकी डॉलर', बाहरी क्षेत्र, भारतीय अर्थव्यवस्था से संबंधी सांख्यिकी पुस्तिका, आरबीआई

अदृश्य (Invisibles)

- **निवल सेवा प्राप्तियाँ:** सॉफ्टवेयर, यात्रा और व्यावसायिक सेवाओं के मजबूत प्रदर्शन के कारण, भारत की निवल सेवा प्राप्तियाँ **वित्त वर्ष 23 के 143.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर** से बढ़कर **वित्त वर्ष 24 में 162.8 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गईं।
- **विप्रेषण (Remittances):** यह **वित्त वर्ष 24 में बढ़कर 106.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया। विप्रेषण **भारत में वित्त-पोषण का दूसरा सबसे बड़ा बाहरी स्रोत** है।
  - विश्व में भारत की **प्रवासी आबादी सर्वाधिक** है और यह **शीर्ष विप्रेषण प्राप्तकर्ता देश** है, जिसे 2023 में 120 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्राप्त होने का अनुमान लगाया गया था। भारत के बाद मैक्सिको और चीन (विश्व बैंक) का स्थान है।
  - **विप्रेषण में वृद्धि** अमेरिका और यूरोप (भारत के कुशल प्रवासियों के लिए सबसे बड़े गंतव्य) तथा अन्य देशों में मुद्रास्फीति में कमी और मजबूत श्रम बाजारों के कारण हुई है।

देश में विप्रेषण को प्रभावित करने वाले कारक

- **वैश्विक तेल की कीमतों में वृद्धि:** वैश्विक तेल की कीमतों में वृद्धि से तेल उत्पादक देशों में निवेश और आर्थिक संवृद्धि बढ़ती है। इसके कारण प्रवासी श्रमिकों की मांग में वृद्धि होती है और परिणामस्वरूप **विप्रेषण का बहिर्वाह** बढ़ जाता है।
- **विनिमय दर मूल्यह्रास (Depreciation):** जब विदेशी मुद्राओं के संदर्भ में रुपये का मूल्यह्रास होता है, तो बाहर से पैसा भेजने वाले यानी प्रेषक को रुपये के संदर्भ में बेहतर मूल्य प्राप्त होता है।
- **रुपये में सीमा पार लेनदेन:** सीमा पार लेनदेन के लिए दिरहम और रुपये के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए UAE के साथ समझौता।
- **संभावना:** भारत में विप्रेषण **2024 में 3.7% बढ़कर 124 बिलियन अमेरिकी डॉलर** और **2025 में 4% बढ़कर 129 बिलियन अमेरिकी डॉलर** तक पहुंचने का अनुमान है।

पूंजी खाता शेष (Capital Account Balance)

- **चालू खाते में निवल पूंजी प्रवाह:** वित्त वर्ष 2024 में **चालू खाते का पूंजीगत प्रवाह बढ़कर 86.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर** हो गया, जो मुख्य रूप से FPI अंतर्वाह और बैंकिंग पूंजी (NRI जमा सहित) के स्थिर प्रवाह के कारण हुआ।
- **वित्त वर्ष 24 में निवल विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI) अंतर्वाह:** यह **वित्त वर्ष 24 में 44.1 बिलियन अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच गया, जो वित्त वर्ष 15 के बाद से उच्चतम स्तर को दर्शाता है। वित्तीय सेवाओं, ऑटोमोबाइल घटकों और स्वास्थ्य सेवा क्षेत्रों में सबसे अधिक इक्विटी प्रवाह देखा गया।
- **जेपी मॉर्गन गवर्नमेंट बॉण्ड इंडेक्स** - इमर्जिंग मार्केट्स में भारत के सॉवरेन बॉण्ड को शामिल करने से ऋण प्रवाह को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।
- **UNCTAD वर्ल्ड इन्वेस्टमेंट रिपोर्ट 2024:** इसके अनुसार 2023 में वैश्विक FDI में 2% की गिरावट आई और यह 1.3 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर रह गया। यह गिरावट मुख्य रूप से धीमी आर्थिक वृद्धि, व्यापार तनाव और आपूर्ति श्रृंखला में बदलाव के कारण हुई है।

© Vision IAS

- **भारत में FDI अंतर्वाह वित्त वर्ष 23 के 42 बिलियन अमेरिकी डॉलर से घटकर वित्त वर्ष 24 में 26.5 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।** हालांकि, सकल FDI अंतर्वाह लगभग 71 बिलियन अमेरिकी डॉलर पर स्थिर रहा, जो निवेशकों की निरंतर रुचि को दर्शाता है।
    - **विकसित देशों में उच्च ब्याज दरों** के कारण निवेशकों की जोखिम रहित रिटर्न के प्रति आकर्षण बढ़ा है और भारतीय शेयर बाजार में उछाल के कारण **घरेलू देश में लाभ स्थानांतरण** में वृद्धि हुई है। इन सबके परिणामस्वरूप निवल FDI अंतर्वाह में कमी आई है।

FDI अंतर्वाह की प्रवृत्ति और संरचना में परिवर्तन की जाँच

- **उद्योग बनाम सेवा क्षेत्रक में FDI:** हाल के वर्षों में **उद्योग और सेवा क्षेत्रक में FDI इक्विटी अंतर्वाह में गिरावट** आई है, जिससे FDI की तुलना में GDP अनुपात महामारी-पूर्व स्तरों से नीचे चला गया है।
    - **GDP में उद्योग क्षेत्रक की FDI हिस्सेदारी वित्त वर्ष 2024 में घटकर 0.39 प्रतिशत** रह गई, जो वित्त वर्ष 2023 में 0.62 प्रतिशत थी। इसी अवधि में GDP में सेवा क्षेत्रक की FDI हिस्सेदारी 0.87 प्रतिशत से घटकर 0.69 प्रतिशत हो गई।
- **वास्तविक FDI बनाम डिजिटल FDI:** वित्त वर्ष 2014 में, भौतिक FDI डिजिटल FDI के मूल्य से तीन गुना अधिक था।
    - हालाँकि, **संरक्षणवाद, भू-राजनीतिक तनाव** और **उत्पादन के गैर-इक्विटी मोड ने भौतिक FDI को धीमा कर दिया** है।
    - **महामारी के दौरान, घर से काम करने की संस्कृति और कुशल डिजिटल** बुनियादी ढाँचे के कारण डिजिटल FDI में वृद्धि हुई है।
- **वास्तविक FDI बनाम लक्ष्य:** भारत का वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात में वैश्विक बाजार हिस्सेदारी बढ़ने के बावजूद देश में FDI का अंतर्वाह कम हो रहा है, जो एक विरोधाभासी स्थिति है।
    - **नए और भविष्य के क्षेत्रों** जैसे कि नवीकरणीय, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा सेंटर, EVs और बैटरी, ग्रीन हाइड्रोजन, सेमीकंडक्टर आदि में में निवेश के लक्ष्य तेजी से बढ़े हैं।
    - **भारत 2022 में AI से संबंधित FDI के लिए एक प्रमुख गंतव्य था।**
    - भारत में कम परिचालन लागत और दुनिया में कुशल AI, मशीन लर्निंग व बिग डेटा कर्मियों का दूसरा सबसे बड़ा पूल इसे AI से जुड़े निवेश के लिए एक आकर्षक गंतव्य बनाते हैं।
    - भारत में कुछ क्षेत्रों में FDI को आकर्षित करने के लिए पहले से ही एक मजबूत नींव तैयार है। अब, देश को एक व्यापक FDI अनुकूल वातावरण बनाने के लिए सभी क्षेत्रों में व्यापार सुगमता को बढ़ावा देने और FDI के लिए नए क्षितिज खोलने की दिशा में काम करना चाहिए।

चीन प्लस वन रणनीति

- चीन प्लस वन रणनीति के तहत कंपनियां अपनी आपूर्ति श्रृंखला को चीन पर केंद्रित करने के बजाय, अन्य देशों के साथ भी साझेदारी करके जोखिम को कम करने का प्रयास करती हैं। अर्थात् इसमें **आपूर्ति श्रृंखला के विविधीकरण** के माध्यम से **चीन पर निर्भरता को कम करके आपूर्ति श्रृंखला जोखिम को कम करने का प्रयास** किया जाता है।
- **अपने बड़े घरेलू उपभोक्ता बाजार** और स्मार्टफोन विनिर्माण एवं असेंबली पर ध्यान केंद्रित करने से भारत इस रणनीति से लाभान्वित हो सकता है।

चीन प्लस वन रणनीति का लाभ उठाने के लिए भारत का प्रयास

- भारत सरकार की **PLI योजना** कंपनियों को आकर्षित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- भारत **पश्चिम के साथ अपनी मूल्य श्रृंखला को एकीकृत करने** पर भी ध्यान केंद्रित कर रहा है, विशेष रूप से नवीकरणीय ऊर्जा और उन्नत प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों में।
    - **भारत का इलेक्ट्रॉनिक निर्यात** वित्त वर्ष 2017 के 0.6 बिलियन अमेरिकी डॉलर के व्यापर घाटे से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 8.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर के व्यापार अधिशेष में बदल गया।
- इन क्षेत्रों में व्यापार पैटर्न विकसित करने के लिए **ऑस्ट्रेलिया-भारत मुक्त व्यापार समझौता** और **अमेरिका-भारत स्वच्छ ऊर्जा पहल** जैसे समझौतों पर काम किया जा रहा है।

आगे की राह

- भारत के पास **चीन प्लस वन रणनीति से लाभ उठाने** के लिए दो विकल्प हैं: यह चीन की आपूर्ति श्रृंखला में एकीकृत हो सकता है या चीन से प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा दे सकता है।
- चीन से FDI को आकर्षित करने पर ध्यान केंद्रित करके, भारत पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं की तरह अमेरिकी बाजार में अपने निर्यात को बढ़ा सकता है।

पर्याप्त विदेशी मुद्रा भंडार (Foreign Exchange Reserves: FER)

- वित्त वर्ष 24 के दौरान भारत का FER 68 बिलियन अमेरिकी डॉलर बढ़कर **653.7 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया, जो प्रमुख विदेशी मुद्रा भंडार रखने वाले देशों में सबसे अधिक वृद्धि है।**
- यह बफर **वैश्विक प्रभाव से घरेलू आर्थिक गतिविधि की रक्षा करता है** तथा **तरलता प्रदान करता है, जो 10 महीने के आयात** तथा अंत में कुल विदेशी ऋण के 98% को कवर करने के लिए पर्याप्त है।

विनिमय दरें

- **भारतीय रुपये में कम अस्थिरता:** वित्त वर्ष 24 में अमेरिकी अर्थव्यवस्था में लचीलापन दिखा और **अमेरिकी डॉलर में प्रमुख करेंसी के मुकाबले बढ़त दर्ज की गई। हालांकि, भारतीय रुपये में सबसे कम अस्थिरता देखी गई।**
  - रुपया-अमेरिकी डॉलर विनिमय दर वित्त वर्ष 24 में 82 से 83.5 अमेरिकी डॉलर की सीमा में थी।इस प्रकार, रुपया-अमेरिकी डॉलर विनिमय दर में केवल 2.9% का नुकसान हुआ।
- **भारतीय रुपये की स्थिरता:** इसका श्रेय **मजबूत मैक्रोइकनॉमिक आधार** और बेहतर बाह्य व्यापार आदि को जाता है।
  - भविष्य में, **मजबूत विदेशी निवेश और कमतर व्यापार घाटे से रुपये का विनिमय दर उचित सीमा में** रहने की उम्मीद है।
- **आगे की राह:** RBI ने विदेशी मुद्रा वित्तपोषण स्रोतों में विविधता लाने तथा विनिमय दर की अस्थिरता को कम करने के लिए **भारतीय ऋण साधनों में विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने के उपायों की घोषणा की है।**

विनिमय दर संबंधी ट्रेड और वित्तीय चैनल

- **मार्शल लर्नर की शर्तें:** मुद्रा अवमूल्यन **निर्यात लागत को कम** करके और आयात कीमतों को बढ़ाकर निवल **निर्यात में वृद्धि को प्रोत्साहित करता है।**
  - हालांकि, **विनिमय दर का वित्तीय चैनल संभावित रूप से ट्रेड चैनल के माध्यम से प्राप्त लाभ (या हानि) को संतुलित कर सकता है।**
- **भारत में: ट्रेड चैनल वित्तीय चैनल की तुलना में अधिक मजबूत है,** तथा प्रतिस्पर्धी रुपया भुगतान संतुलन (BoP) को बढ़ावा दे रहा है, क्योंकि ट्रेड चैनल के माध्यम से प्राप्त लाभ, वित्तीय चैनल में होने वाली लागत से अधिक है।
  - यह ब्राजील और फिलीपींस जैसी अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं से अलग है, जहां वित्तीय चैनल का प्रभाव ट्रेड इफ़ेक्ट से अधिक है।

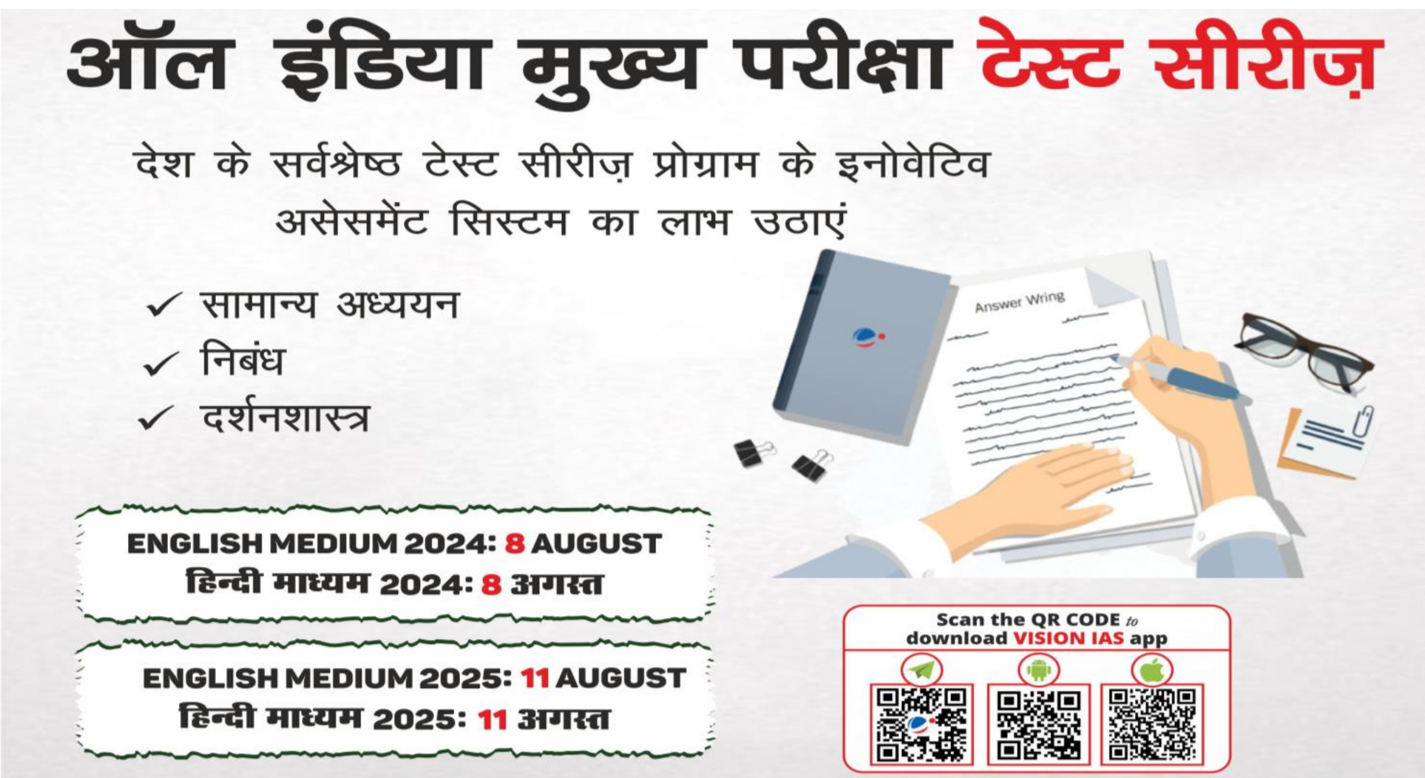

अंतर्राष्ट्रीय निवेश की स्थिति (International Investment Position: IIP)

- **निवल IIP:** निवल IIP स्थिति यह निर्धारित करती है कि कोई देश अपनी बाह्य परिसंपत्तियों और देनदारियों के बीच अंतर को मापकर **निवल लेनदार या देनदार राष्ट्र है या नहीं।** साधारण भाषा में, निवल IIP एक देश की बाहरी संपत्ति और देनदारी के बीच अंतर को मापता है, यह दर्शाता है कि वह निवल ऋणदाता या ऋणी है।
  - मार्च 2024 के अंत तक, **भारतीय निवासियों की विदेशी वित्तीय परिसंपत्तियों में 11.9% की वृद्धि** हुई, जो मुख्य रूप से आरक्षित परिसंपत्तियों, विदेशी मुद्रा और निवेश में वृद्धि के कारण हुई। उसी अवधि में, **भारत की अंतर्राष्ट्रीय देनदारियां 8.1% बढ़कर 1,390 अरब अमेरिकी डॉलर** हो गईं, जो मुख्य रूप से पोर्टफोलियो निवेश, ऋण और प्रत्यक्ष निवेश में वृद्धि के कारण हुई।
- **ऋण देयताएँ:** मार्च 2024 तक, भारत की **कुल विदेशी देनदारियों का 51.1% हिस्सा ऋण के रूप में था।** इसी अवधि में, गैर-निवासियों के भारत पर निवल दावों में 5.5 बिलियन डॉलर की गिरावट देखी गई। इसके अतिरिक्त, भारत की अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय परिसंपत्तियां मुख्य रूप से अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय देनदारियों से वित्तपोषित थीं, जो कुल परिसंपत्तियों का 74% हिस्सा थी।

स्थिर बाह्य ऋण की स्थिति

- **विवेकपूर्ण प्रबंधन:** भारत ने **अपने बाह्य ऋण का विवेकपूर्ण प्रबंधन किया है, चालू खाते के घाटे को संधारणीय सीमाओं के भीतर रखा है** तथा बाह्य वित्त के लिए गैर-ऋण सृजन को प्रोत्साहित किया है।
  - **बाह्य ऋण का अनुपात घटकर 18.7% रह गया,** तथा कुल बाह्य ऋण में अल्पकालिक ऋण का हिस्सा घटकर 18.5% हो गया।
- **कुल ऋण का निम्न स्तर:** वर्ष 2022 के आंकड़े बताते हैं कि भारत की ऋण स्थिति अन्य देशों की तुलना में अधिक मजबूत है। भारत का सकल राष्ट्रीय आय के प्रतिशत के रूप में कुल ऋण कम है, जिसका अर्थ है कि भारत पर ऋण का बोझ कम है। इसके अलावा, भारत का कुल विदेशी ऋण में अल्पकालिक विदेशी ऋण का हिस्सा भी कम है, जो यह दर्शाता है कि भारत अल्पकालिक भुगतानों के लिए कम दबाव में है।

संभावनाएं और चुनौतियां

चुनौतियां

- **प्रमुख व्यापारिक भागीदारों की मांग में गिरावट:** भारत के प्रमुख व्यापारिक साझेदारों, विशेष रूप से अमेरिका, ने वर्ष 2023 में आयात में कमी दर्ज की, जिसका भारत के निर्यात वृद्धि पर प्रभाव पड़ा।
- **व्यापार लागत में वृद्धि:** लाल सागर में शिपिंग पर हमलों और पनामा नहर में सूखे के कारण व्यापर का मार्ग बदल गया है, जिससे यात्रा का समय और लागत बढ़ गई है। इसलिए प्रमुख पोत परिवहन मार्गों में गड़बड़ी भारत की अर्थव्यवस्था को प्रभावित कर सकती है।
- **कमोडिटी की कीमत में अस्थिरता:** कमोडिटी विशेष रूप से तेल, धातु जैसे महत्वपूर्ण आयातों की कीमतों में उतार-चढ़ाव, भारत के व्यापार संतुलन और मुद्रास्फीति के स्तर को प्रभावित कर सकते हैं।
- **व्यापार नीति में बदलाव:** प्रमुख व्यापारिक साझेदारों द्वारा व्यापार नीतियों में परिवर्तन या भू-राजनीतिक घटनाक्रम भारत के निर्यात अवसरों और बाजार पहुंच को प्रभावित कर सकते हैं।

संभावनाएं

भारत का **व्यापार घाटा कम हुआ** है। भारत के व्यापर घाटे में और गिरावट आने की उम्मीद है क्योंकि PLI योजना का विस्तार किया गया है और भारत कई उत्पाद श्रेणियों में **प्रतिस्पर्धी विनिर्माण आधार तैयार कर रहा है।** इसके अतिरिक्त, हाल ही में हस्ताक्षरित EFTA से देश के निर्यात में वृद्धि होने की उम्मीद है।

बजट में क्या कहा गया है?

प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के उपाय

- **ई-कॉमर्स निर्यात केंद्र:** ये केंद्र MSMEs और पारंपरिक कारीगरों को अपने उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बेचने में सक्षम बनाने के लिए सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मोड में स्थापित किए जाएंगे।
- **पूंजीगत वस्तुओं को सीमा शुल्क से छूट:** बजट में सौर पैनलों के विनिर्माण के लिए पूंजीगत वस्तुओं को सीमा शुल्क से छूट देने का प्रस्ताव किया गया है।
- **बेसिक सीमा शुल्क (BCD) में कमी:** भारत के समुद्री उत्पादों के निर्यात को बढ़ावा देने के लिए, ब्रूडस्टॉक, पॉलीचेट वर्म्स, झींगा और मछली के चारे पर BCD घटाकर 5% कर दिया गया है।
- **अन्य:** झींगा पालन, प्रसंस्करण और निर्यात के लिए नाबार्ड के माध्यम से वित्तपोषण की सुविधा प्रदान की जाएगी।
  - बजट में भारतीय चमड़ा और वस्त्र निर्यात को प्रोत्साहित करने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध कराया गया है।

शब्दावली

पद	अर्थ
अंतर्राष्ट्रीय व्यापार में डिकपलिंग	इसमें मौजूदा व्यापार और निवेश संबंधों को समाप्त करना, आपूर्ति श्रृंखलाओं को खत्म करना और अन्य जगहों पर नई आर्थिक साझेदारी स्थापित करना शामिल है।
डी-ग्लोबलाइजेशन	यह वैश्वीकरण के विपरीत स्थिति है। विशेष रूप से व्यापार और वित्तीय प्रवाह के संदर्भ में देशों के बीच परस्पर निर्भरता और एकीकरण को कम करने की प्रक्रिया डी-ग्लोबलाइजेशन कहलाती है।
विप्रेषण	विप्रेषण का अर्थ है किसी दूसरे देश में रह रहे या कार्य कर रहे व्यक्ति द्वारा अपने देश में पैसा भेजना। यह प्रक्रिया आमतौर पर बैंक, पोस्ट ऑफिस या ऑनलाइन ट्रांसफर के माध्यम से की जाती है।
चालू खाता घाटा	चालू खाता घाटा यह दर्शाता है कि कोई देश अपने निर्यात की तुलना में आयात अधिक कर रहा है।
विदेशी पोर्टफोलियो निवेश (FPI)	विदेशी पोर्टफोलियो निवेश के तहत विदेशी निवेशक किसी दूसरे देश के शेयर बाजार में शेयर, बॉण्ड या अन्य प्रतिभूतियां खरीदते हैं। ये निवेशक व्यक्ति हो सकते हैं, कंपनियां हो सकती हैं या फिर म्यूचुअल फंड भी हो सकते हैं।
प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI)	FDI के जरिए कोई कंपनी किसी अन्य देश में किसी व्यावसायिक इकाई में नियंत्रणकारी स्वामित्व ले लेती है।
अदृश्य	अर्थशास्त्र में **अदृश्य का तात्पर्य** भौतिक वस्तुओं (दृश्यमान) के विपरीत, देशों के बीच **सेवाओं के व्यापार से है।**

अध्याय 4: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. वित्त वर्ष 24 में भारत के वस्तु निर्यात के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   1. वस्तु निर्यात में पूंजीगत वस्तुओं की हिस्सेदारी में वृद्धि हुई है।
   2. उपभोक्ता वस्तुओं और मध्यवर्ती वस्तुओं के निर्यात में मामूली वृद्धि देखी गई।

   नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए।

   (a) केवल 1

   (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों

   (d) न तो 1, न ही 2

 © Vision IAS

2. भारत के फुटवियर उद्योग के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत विश्व का दूसरा सबसे बड़ा फुटवियर उत्पादक है।
2. भारत नौवां सबसे बड़ा वैश्विक फुटवियर निर्यातक है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही ***नहीं*** है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

3. भारत द्वारा हस्ताक्षरित मुक्त व्यापार समझौतों के संदर्भ में, निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए।

1. भारत-ऑस्ट्रेलिया: आर्थिक सहयोग और व्यापार समझौता (ECTA)
2. भारत-यू.ए.ई.: व्यापार और आर्थिक साझेदारी समझौता
3. भारत-मॉरीशस: व्यापक आर्थिक साझेदारी समझौता
4. भारत-EFTA: व्यापक आर्थिक सहयोग और साझेदारी समझौता

उपर्युक्त युग्मों में से कितने सही सुमेलित है/हैं?

(a) केवल एक

(b) केवल दो

(c) केवल तीन

(d) सभी चार

4. भारत में इनवार्ड विप्रेषण को प्रभावित करने वाले कारकों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. वैश्विक तेल की कीमतों में वृद्धि से भारत में विप्रेषण अंतर्वाह में वृद्धि हो सकती है।
2. विदेशी मुद्राओं की तुलना में भारतीय रुपये का अवमूल्यन विप्रेषण को हतोत्साहित करता है।
3. भारत ने सीमा पार लेनदेन के लिए दिरहम और रुपये के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए संयुक्त अरब अमीरात के साथ एक समझौता किया है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2, और 3

5. भारतीय रुपये के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारतीय रिजर्व बैंक सीधे तौर पर रुपये की विनिमय दर तय करता है।
2. भारतीय रुपये ने वित्त वर्ष 24 में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले प्रमुख मुद्राओं में सबसे कम अस्थिरता दिखाई।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

प्रश्न

1. भारत के एक विकासशील राष्ट्र से विकसित राष्ट्र बनने में बाधा डालने कारकों की विवेचना कीजिए। इन चुनौतियों का समाधान करने और समावेशी एवं सतत विकास सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक नीतिगत उपायों पर चर्चा कीजिए। (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)
2. "चीन प्लस वन" रणनीति के प्रमुख लाभार्थी के रूप में उभरने की भारत की क्षमता का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

 © Vision IAS

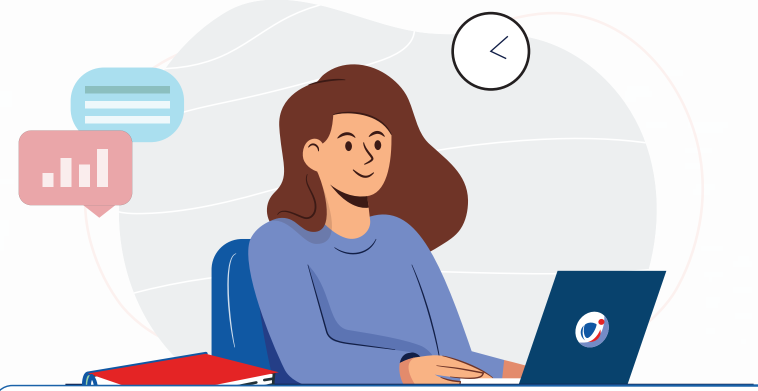

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

CSAT में महारत: UPSC प्रीलिम्स के लिए एक रणनीतिक रोडमैप

UPSC प्रीलिम्स सिविल सेवा परीक्षा का पहला एवं अत्यधिक प्रतिस्पर्धी चरण है। प्रीलिम्स एग्जाम में ऑब्जेक्टिव प्रकार के दो पेपर होते हैं: सामान्य अध्ययन (GS) और सिविल सर्विसेज एप्टीट्यूड टेस्ट (CSAT)। ये दोनों पेपर अभ्यर्थियों के ज्ञान, समझ और योग्यता का आकलन करते हैं।

पिछले कुछ सालों में CSAT पेपर के कठिन हो जाने से इसमें 33% का क्वालीफाइंग स्कोर प्राप्त करना भी कई अभ्यर्थियों के लिए चुनौतीपूर्ण हो गया है। अतः इस पेपर को क्वालीफाइ करने के लिए अभ्यर्थियों को टाइम मैनेजमेंट के साथ-साथ CSAT में कठिनाई के बढ़ते स्तर के साथ सामंजस्य बिठाना और GS पेपर के साथ संतुलन बनाए रखना बहुत जरूरी है। साथ ही, इसमें गुणवत्तापूर्ण प्रैक्टिस मटेरियल से भी काफी मदद मिलती है। ये सारी बातें एक सुनियोजित रणनीति के महत्त्व को रेखांकित करती हैं।

इंस्टेंट पर्सनलाइज्ड मेंटरिंग के लिए **QR कोड को स्कैन करें**

CSAT की तैयारी के लिए रणनीतिक रोडमैप

शुरुआत में स्व-मूल्यांकन: सर्वप्रथम पिछले वर्ष के CSAT के पेपर को हल करके हमें अपना मूल्यांकन करना चाहिए। इससे हमें अपने मजबूत एवं कमजोर पक्षों की पहचान हो सकेगी और हम उसी के अनुरूप अपनी तैयारी में सुधार कर सकेंगें।

स्टडी प्लान: अधिकतम अंक प्राप्त कर सकने वाले टॉपिक पर फोकस करते हुए एवं विश्वसनीय अध्ययन स्रोतों का चयन कर, एक व्यवस्थित स्टडी प्लान तैयार करें।

रेगुलर प्रैक्टिस एवं पोस्ट-टेस्ट एनालिसिस: पिछले वर्ष के पेपर एवं मॉक टेस्ट को हल करके तथा उनका विश्लेषण करके हम एग्जाम के पैटर्न एवं किस प्रकार के प्रश्न पूछे जा रहे हैं, इससे परिचित हो सकते हैं। इस अप्रोच से CSAT के व्यापक सिलेबस को प्रभावी ढंग से कवर करने के लिए एक बेहतर रणनीति तैयार करने में मदद मिलेगी।

व्यक्तिगत मेंटरशिप प्राप्त करें: CSAT की बेहतर तैयारी के लिए अपने अनुरूप रणनीति विकसित करने हेतु मेंटर से जुड़ें। इससे आप अपने स्ट्रेस को दूर कर सकेंगे और साथ ही फोकस्ड एवं संतुलित तैयारी कर पाएंगे।

रीजनिंग: क्लॉक, कैलेंडर, सीरीज एंड प्रोग्रेशन, डायरेक्शन, ब्लड-रिलेशन, कोडिंग-डिकोडिंग एवं सिलोगिज़्म जैसे विभिन्न प्रकार टॉपिक के प्रश्नों का अभ्यास करके अपने तार्किक और विश्लेषणात्मक क्षमताओं को बेहतर बनाएं।

एग्जाम के पैटर्न को समझने एवं प्रश्नों को हल करने के लिए स्टेप-बाय-स्टेप अप्रोच को विकासित करने पर ध्यान केंद्रित करें।

गणित एवं बेसिक न्यूमेरेसी: बेसिक कॉन्सेप्ट के रिवीजन एवं रेगुलर प्रैक्टिस के जरिए मूलभूत गणितीय अवधारणाओं पर अपनी पकड़ को मजबूत करें।

तेजी से कैल्कुलेशन करने के लिए शॉर्टकट और मेंटल मैथ टेक्निक का उपयोग करें।

रीडिंग कॉम्प्रिहेंशन: नियमित रूप से अखबार पढ़कर अपनी पढ़ने की गति और समझ में सुधार करें। समझ बढ़ाने के लिए पैराग्राफ को संक्षेप में लिखने का अभ्यास करें और उसमें निहित मुख्य विचारों का पता लगाएं।

VisionIAS के CSAT क्लासरूम प्रोग्राम से जुड़कर अपनी CSAT की तैयारी को मजबूत बनाएं। इस कोर्स को अभ्यर्थियों में बेसिक कॉन्सेप्ट विकसित करने और उनकी प्रॉब्लम-सॉल्विंग क्षमताओं एवं क्रिटिकल थिंकिंग को बढ़ावा देने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस कोर्स की मुख्य विशेषताएं हैं- ऑफ़लाइन/ ऑनलाइन और रिकॉर्ड की गई कक्षाएं, वन-टू-वन मेंटरिंग सपोर्ट और ट्यूटोरियल्स के जरिए नियमित प्रैक्टिस। यह आपको CSAT में महारत हासिल करने की राह पर ले जाएगा।

रजिस्टर करने और ब्रोशर डाउनलोड करने के लिए **QR कोड को स्कैन करें**

हमारे **ऑल इंडिया CSAT टेस्ट सीरीज एवं मेंटरिंग प्रोग्राम** के साथ अपनी तैयारी को और बेहतर बनाएं, जिसमें शामिल हैं:

- UPSC CSAT के सिलेबस का विस्तार से कवरेज
- वन-टू-वन मेंटरिंग
- फ्लेक्सिबल टेस्ट शेड्यूल और इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम
- प्रत्येक टेस्ट पेपर की विस्तार से व्याख्या
- लाइव ऑनलाइन/ ऑफ़लाइन टेस्ट डिस्कशन एवं पोस्ट टेस्ट एनालिसिस

VisionIAS से जुड़कर सिविल सेवाओं में शामिल होने की अपनी यात्रा शुरू करें, जहां हमारी विशेषज्ञता और सपोर्ट सिस्टम से आपके सपने पूरे हो सकते हैं।

अहमदाबाद | बैंगलोर | भोपाल | चंडीगढ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

अध्याय 5: मध्यम अवधि परिदृश्य: नए भारत के लिए विकास का विजन (Medium Term Outlook: A Growth Vision for New India)

परिचय

पिछले दशक के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था ने लचीलापन या रेसिलिएंस दर्शाया है। सरकार द्वारा किए गए **संरचनात्मक सुधारों** ने **अर्थव्यवस्था को मजबूती से विकास के पथ पर** आगे बढ़ाया है। भारत **7% से अधिक की मध्यम अवधि की वृद्धि दर** के साथ दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की राह पर है।

अध्याय का प्रीकैप

संक्षिप्त पृष्ठभूमि • वर्ष 1993 से भारत की अर्थव्यवस्था में काफी बढ़ोतरी हुई है। • भारत का लक्ष्य **2047 तक एक विकसित राष्ट्र** बनना है। • **भू-राजनीतिक संघर्ष, जलवायु परिवर्तन** आदि जैसी वैश्विक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। • भारत का विकास और समृद्धि इन्हीं चुनौतियों के बीच हुए हैं।	**अल्पावधि से मध्यम अवधि में भारत का मुख्य फोकस** • उत्पादक रोजगार सृजन करना • कौशल सम्बन्धी अंतर को पाटना • कृषि क्षेत्रक की पूरी क्षमता का दोहन करना • भारत के ग्रीन ट्रांजिशन का प्रबंधन करना • भारत की युवा आबादी के स्वास्थ्य की गुणवत्ता में सुधार करना
अमृतकाल के लिए छह-आयामी विकास रणनीति • निजी क्षेत्रक निवेश को बढ़ावा देना • भारत के मिटेलस्टैंड का विकास और विस्तार करना • कृषि क्षेत्रक में विकास के समक्ष बाधाओं को दूर करना • भारत में ग्रीन ट्रांजिशन के वित्त-पोषण को सुनिश्चित करना • राज्य की क्षमता और सामर्थ्य का निर्माण करना	**मध्यम अवधि में संभावनाएं** • भारतीय अर्थव्यवस्था लचीला रही और वैश्विक संकटों का सफलतापूर्वक सामना कर रही है • IMF ने भारत की वृद्धि दर संबंधी पूर्वानुमान को बढ़ाया है • भारत **निम्न आय वाले देश** से **निम्न-मध्यम आय वाले देश** में तब्दील हो चुका है। • **2047 तक विकसित भारत**

संदर्भ स्थापित करना

- **भारत का प्रदर्शन: 1993 से भारत की अर्थव्यवस्था** में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। रुपये में 3% वार्षिक गिरावट के बावजूद **भारत की अर्थव्यवस्था 3.6 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** तक पहुँच गई है।
  - भारत का प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (GDP) 2023 में बढ़कर 2,484.8 डॉलर हो गया है। 1993 में प्रति व्यक्ति GDP 301.5 डॉलर थी। यह जीवन स्तर में पर्याप्त सुधार का संकेत है।
  - भारत का लक्ष्य चीन से एक दशक पहले 2047 तक एक विकसित राष्ट्र बनना है।
- **चुनौतियाँ:**
  - **वैश्विक उतार-चढ़ाव :** इस समय विश्व प्रमुख संकटों का सामना कर रहा है। इसमें एक बहुध्रुवीय विश्व, **वैश्विकतावादी अभिजात वर्ग और अन्य लोगों के बीच सांस्कृतिक प्राथमिकताओं को लेकर टकराव**, आर्थिक ठहराव और भू-राजनीतिक संघर्ष शामिल हैं।
  - **कोविड महामारी** ने असमानता, गरीबी और ऋणग्रस्तता को बढ़ा दिया है, जिसके चलते हस्तक्षेपकारी नीतियों को बढ़ावा मिला है।
  - **जलवायु परिवर्तन और ग्लोबल वार्मिंग:** विकसित देश ग्रीनहाउस गैस में कमी लाने के लिए दबाव बना रहे हैं, जिसके लिए विकासशील देशों पर दबाव डाला जा रहा है।
    - विकासशील देश आर्थिक विकास को बहाल करने तथा गरीबी और कर्ज को कम करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। महामारी के कारण इन समस्याओं में और बढ़ोतरी हुई है।

- **आगे की राह:**
  - **भारत के विकास के लिए विशिष्ट मार्ग पर आगे बढ़ना:** भारत के विकास और समृद्धि सम्बन्धी आकांक्षाओं के समक्ष उपर्युक्त चुनातियाँ एक बाधा हैं। भारत की आकांक्षाओं को प्राप्त करने के लिए, बदलते परिदृश्य को स्वीकार करना और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में काम करना महत्वपूर्ण है।
  - **संधारणीय विकास और मानव पूंजी विकास:** भारत के लिए 25 वर्षों तक अपने आर्थिक विकास को संधारणीय रूप से बनाए रखना आवश्यक है। इस दौरान जल प्रदूषण एवं अभावग्रस्तता, वायु प्रदूषण, ठहरी हुयी जीवन प्रत्याशा में सुधार करते हुए और युवाओं को शिक्षित करना महत्वपूर्ण होगा।
  - **विकास के लिए घरेलू संसाधन जुटाना:** भू-राजनीति जनित बाह्य घाटे से बाह्य स्रोतों से वित्त-पोषण पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इसलिए भारत के लिए अपने निवेश और विकास संबंधी प्राथमिकताओं हेतु घरेलू संसाधन जुटाना महत्वपूर्ण हो जाता है।

इस आलोक में भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए मध्यम अवधि का विकास दृष्टिकोण निम्नलिखित प्रमुख सिद्धांतों पर आधारित है

- **भू-आर्थिक विखंडन और संसाधन राष्ट्रवाद:** दोनों ही विकास को सीमित करते हैं। इससे कार्यकुशलता और लचीलेपन के बीच एक संतुलन पैदा होता है।
- **जलवायु परिवर्तन रणनीतियां:** जलवायु परिवर्तन सामाजिक-आर्थिक स्थिरता, लोक स्वास्थ्य, बैंकिंग और वित्त को प्रभावित करता है। इसलिए अनुकूलन और उत्सर्जन शमन के बीच संतुलन की आवश्यकता होती है।
- **प्रौद्योगिकी:** यह सामाजिक प्रभाव तथा श्रमिकों की तुलना में पूंजी मालिकों को अधिक लाभ पहुंचाने के साथ आर्थिक समृद्धि को निर्धारित करने वाले एक रणनीतिक टूल के रूप में उभरी है।
- **सीमित नीतिगत गुंजाइश और ट्रेड-ऑफ:** वैश्विक आर्थिक संकटों के कारण, नीति निर्माता देशों के पास सीमित नीतिगत गुंजाइश के कारण ट्रेड-ऑफ को तेजी से मान्यता और स्वीकृति प्रदान कर रहे हैं।
- **सुधारों का सहयोगात्मक कार्यान्वयन:** भारत ने पिछले दशक में बड़े पैमाने पर सुधार किए हैं; हालांकि, इसके कार्यान्वयन के लिए राज्य सरकारों, निजी क्षेत्रक और नागरिक समाज के साथ जुड़ाव की आवश्यकता है।
- **ऊर्ध्वगामी सुधार (Bottom-up Reform):** संधारणीय, संतुलित और समावेशी विकास के लिए ऊर्ध्वगामी सुधार तथा गवर्नेंस को मजबूत करने पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए।

अल्प से मध्यम अवधि में नीतिगत फोकस के प्रमुख क्षेत्र

- **उत्पादक रोजगार का सृजन:** भारत की कार्यशील आयु वाली जनसंख्या (15-59 वर्ष) 2044 तक बढ़ेगी (संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या अनुमान)। इनकी मांग को पूरा करने के लिए प्रतिवर्ष लगभग 78.51 लाख गैर-कृषि नौकरियों के सृजन की आवश्यकता होगी।
  - भारत का कार्यबल लगभग 56.5 करोड़ होने का अनुमान है। इसमें से 45% से अधिक कृषि, 11.4% विनिर्माण, 28.9% सेवा क्षेत्रक आदि में कार्यरत हैं।
- **कौशल अंतराल संबंधी चुनौती:** 65% आबादी 35 वर्ष से कम आयु की है और कई लोगों में आधुनिक अर्थव्यवस्था के लिए आवश्यक कौशल की कमी है (संयुक्त राष्ट्र)। **लगभग 51.25% युवा अभी भी रोजगार योग्य नहीं हैं।**
  - कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्रालय (MSDE) की रिपोर्ट के अनुसार 15-59 आयु वर्ग के केवल 2.2% लोगों ने औपचारिक पेशेवर प्रशिक्षण प्राप्त किया है।
    - **कौशल विकास और उद्यमिता के समक्ष** कम प्रशिक्षुता कवरेज, कौशल और उच्चतर शिक्षा से जुड़े कोर्सों के बीच सीमित गतिशीलता, संकीर्ण और अक्सर अप्रचलित कौशल पाठ्यक्रम आदि **जैसी चुनौतियाँ व्याप्त हैं।**
- **कृषि क्षेत्रक की पूरी क्षमता का दोहन:** भारत का कृषि क्षेत्रक आर्थिक विकास को प्रभावित करने वाले संरचनात्मक मुद्दों का सामना कर रहा है। मुख्य चिंता किसानों को उत्पादन बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित करते हुए खाद्य मूल्य मुद्रास्फीति के बिना विकास को बनाए रखना है।
  - अन्य चुनौतियों में बेहतर कीमत प्राप्त करने संबंधी प्रणाली में सुधार, दक्षता में वृद्धि, छिपी हुई बेरोजगारी को कम करना, भू-जोत के विखंडन को हल करना आदि शामिल हैं।

- **MSMEs के समक्ष अनुपालन संबंधी अनिवार्यताओं और वित्त-पोषण संबंधी बाधाओं को कम करना:** MSMEs आर्थिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं, लेकिन अत्यधिक विनियमन, जटिल अनुपालन और वित्त तक सीमित पहुंच उनकी क्षमता में बाधा डालती है।
  - **मुद्रा योजना** और **क्रेडिट गारंटी फंड** जैसी सरकारी पहलों ने मदद की है, लेकिन ऋण प्रदान करने में काफी अंतराल अभी बना हुआ है।
- **भारत के ग्रीन ट्रांजिशन का प्रबंधन:** भारत जलवायु परिवर्तन अनुकूलन और शमन के मामले में वित्त-पोषण के अधिक अभाव का सामना कर रहा है। भारत को 2070 तक निवल-शून्य उत्सर्जन लक्ष्य प्राप्त करने के लिए प्रति वर्ष औसतन 28 बिलियन अमेरिकी डॉलर के हिसाब से 1.4 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर के कुल निवेश-समर्थन की आवश्यकता होगी।
  - भारत का लक्ष्य 2030 तक अपने ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को 33-35% तक कम करना है। साथ ही, गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित बिजली को 40% तक बढ़ाना और 2.5-3 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करने के लिए वन क्षेत्र को बढ़ाना है।
- **चीन:** भारत-चीन आर्थिक संबंध जटिल और आपस में जुड़े हुए हैं। चीन वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं पर प्रभुत्व बनाए हुए है और भारत के नवीकरणीय ऊर्जा कार्यक्रम को प्रभावित कर रहा है।
  - भारत के सामने चीन की आपूर्ति श्रृंखला को प्रभावित किए बिना वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में एकीकृत होने तथा माल और पूंजीगत आयात में संतुलन बनाने के संबंध में चुनौतियां हैं।
- **कॉर्पोरेट बॉण्ड बाजार को मजबूत करना:** भारत के आर्थिक विकास के लिए बैंक वित्त-पोषण और पूंजी बाजारों से परे कई वित्त-पोषण विकल्पों से निवेश की आवश्यकता है।
  - दीर्घकालिक निधियों के लिए एक सक्रिय कॉर्पोरेट बॉण्ड बाजार महत्वपूर्ण है। हालांकि, भारत का बाजार अन्य एशियाई उभरते बाजारों की तुलना में छोटा है और इसमें उच्च रेटिंग वाले जारीकर्ताओं का वर्चस्व है, जिसके कारण कॉर्पोरेट बॉण्ड बाजार में मजबूती का अभाव है।
- **असमानता से निपटना:** भारत के शीर्ष 1% आबादी की कुल आय में 6-7% हिस्सेदारी है। सरकार के हस्तक्षेप रोजगार सृजन, अनौपचारिक क्षेत्रक का एकीकरण और महिला श्रम शक्ति विस्तार पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इनका उद्देश्य असमानता को प्रभावी ढंग से संबोधित करना है।
  - पूंजीगत और श्रम संबंधी आय पर कर नीतियाँ महत्वपूर्ण होंगी, खासकर रोजगार और आय पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के प्रभाव को देखते हुए।
- **भारत की युवा आबादी के स्वास्थ्य की गुणवत्ता में सुधार करना:** भारत में 56.4% बीमारियां अस्वास्थ्यकर आहार के कारण होती हैं। इस वजह से सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी और अधिक वजन/ मोटापे की समस्याएं बढ़ रही हैं।
  - यदि भारत को अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाना है, तो यह महत्वपूर्ण है कि इसकी आबादी के स्वास्थ्य मापदंडों को संतुलित और विविध आहार की ओर ले जाया जाए।

भारत की बढ़ती मोटापे की चुनौती {राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण (NFHS-5), 2019-2021}

- भारत की वयस्क आबादी में मोटापा एक गंभीर चिंता का विषय बन गया है। इससे जूझ रहे 18-69 आयु वर्ग के पुरुषों में 22.9% और महिलाओं में 24.0% की वृद्धि देखी गई है।
- यह ग्रामीण भारत की तुलना में शहरी भारत में काफी अधिक है (पुरुषों के लिए 29.8% बनाम 19.3% और महिलाओं के लिए 33.2% बनाम 19.7%)।

अमृत काल के लिए विकास रणनीति: मजबूत, संधारणीय और समावेशी

इसमें **छह-आयामी विकास रणनीति** शामिल है जो आगे बढ़ने वाली ऊर्ध्वगामी सुधार प्रक्रिया का मार्गदर्शन कर सकती है।

छह-आयामी विकास रणनीति

- **निजी क्षेत्रक के निवेश को बढ़ावा देना:** भारत को गुणवत्तापूर्ण नौकरियां सृजित करने के लिए मशीनरी और बौद्धिक संपदा में निजी निवेश को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। सरकार को बुनियादी ढांचे, कार्यबल कौशल और संसाधन उपलब्धता में सुधार करना चाहिए।
  - **आत्मनिर्भर भारत** और **उत्पादन से संबद्ध प्रोत्साहन** जैसी पहल सतत निजी निवेश के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **भारत के मिटेलस्टैंड का विकास और विस्तार:** इसमें **अविनियमन/ डिरेगुलेशन**, राज्य संवाद, **भौतिक और डिजिटल कनेक्टिविटी, बुनियादी ढांचे का उन्नयन,** उद्यम प्रबंधन यानी प्रबंधन, वित्तीय प्रबंधन एवं प्रौद्योगिकी आदि में प्रशिक्षण तथा 'मेक इन इंडिया' जैसी निर्यात रणनीतियां शामिल हैं।

- मिटेलस्टैंड (MIIM) कार्यक्रम विकास, उत्पादकता बढ़ाने और भारत की अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- भारत का MSME क्षेत्रक सकल घरेलू उत्पाद में 30%, विनिर्माण उत्पादन में 45% का योगदान दे रहा है और देश की 11 करोड़ आबादी को रोजगार प्रदान कर रहा है।

- **कृषि क्षेत्रक में विकास के समक्ष बाधाओं को दूर करना:** कृषि को खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करने, जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूल तथा जल, ऊर्जा और भूमि जैसे संसाधनों का संधारणीय उपयोग करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।
    - भारत के आर्थिक विकास के लिए कृषि से उद्योग और सेवाओं की ओर स्थानांतरण की आवश्यकता है। हालांकि राष्ट्रीय सुरक्षा और खाद्य आपूर्ति के लिए कृषि महत्वपूर्ण बनी हुई है।

किसान-हितैषी नीतिगत ढांचा

- **खाद्य घाटे वाला देश से निवल निर्यातक:** भारत के कृषि क्षेत्रक ने साठ के दशक में खाद्य घाटे की स्थिति से कृषि उपज का निवल निर्यातक बनने तक महत्वपूर्ण प्रगति की है।
    - हालांकि, देश को अभी भी मूल्य संवर्धन को बढ़ावा देने और कृषि-मूल्य श्रृंखलाओं में रोजगार को युवाओं के बीच आकर्षक बनाने की आवश्यकता है।
- **पूरी क्षमता का अभी भी उपयोग करना बाकि:** पूर्वी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं और पश्चिम के विकसित देशों के विपरीत, भारत ने अभी तक आर्थिक विकास और रोजगार सृजन में योगदान देने हेतु कृषि की क्षमता का पूरी तरह से दोहन नहीं किया है।
- **संरचनात्मक परिवर्तन की आवश्यकता:** क्योंकि आने वाले समय में जलवायु परिवर्तन और जल की कमी एक बड़ी चुनौती है।
- **किसानों को सब्सिडी:** भारत अपने किसानों को जल, बिजली और उर्वरकों के संबंध में सब्सिडी प्रदान करता है। किसानों को 23 चयनित फसलों के लिए न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP) और PM-KISAN योजना के माध्यम से मासिक नकद सहायता प्रदान की जाती है।
- **बाजार की शक्तियों का परस्पर प्रभाव:** बाजार की शक्तियों के परस्पर प्रभाव के कारण अर्थव्यवस्था में कृषि का हिस्सा समय के साथ घटता जाता है।
    - किसानों को मूल्य संबंधी झटकों और अन्य जोखिमों जैसे कि अत्यधिक जल खपत, भूजल की कमी, मृदा की गुणवत्ता का क्षरण और स्वास्थ्य लागत से बचाया जाना चाहिए।
- **मूल्य-समर्थन:** मूल्य-समर्थन या आय-समर्थन के रूप बीमा एक सहायक विकल्प हो सकता है, जैसे कि फ्लोर प्राइज का निर्धारण, मूल्य-अंतर समर्थन, प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (DBT), या फसल बीमा।
- **हितों को संतुलित करना:** सरकारों को किसानों के समर्थन और कम आय वाले उपभोक्ताओं के हितों के बीच संतुलन बनाना चाहिए। इसका कारण यह है कि कम आय वाले उपभोक्ताओं को लक्षित करने वाली नीतियों का अक्सर किसानों के लिए आय-समर्थन करने वाली नीतियों के साथ टकराव होता है।
- **आगे की राह:**
    - प्रत्यक्ष नकद अंतरण, जो बाजारों के संचालन में सहायक है, बीमा और मूल्य समर्थन के अन्य रूपों की तुलना में अधिक प्रभावी है।
    - किसानों और उपभोक्ताओं दोनों के हितों की रक्षा करने वाली नीतियों के एक सम्मुचय को लागू करना चाहिए।

बाजार संबंधी कारकों के माध्यम से किसानों को सशक्त बनाना: सरकार की भूमिका				
कीमतों में उछाल के पहले संकेत पर **वायदा या विकल्प बाजार पर प्रतिबंध न लगाकर**	केवल **असाधारण परिस्थितियों में ही निर्यात प्रतिबंध** लगाया जाना	कुल **निवल सिंचित क्षेत्र में वृद्धि करना**	भारत के मुद्रास्फीति लक्ष्यीकरण फ्रेमवर्क में **खाद्य को छोड़कर मुद्रास्फीति को लक्षित करने** पर विचार किया जाना चाहिए	खेती को जलवायु के अनुकूल बनाकर

- **भारत में ग्रीन ट्रांजिशन के लिए वित्त-पोषण सुनिश्चित करना:** भारत को अपने ग्रीन ट्रांजिशन को वित्त-पोषित करने के लिए संप्रभु धन निधि, पेंशन, निजी इक्विटी और अवसंरचना निधि से वैश्विक हरित पूंजी का लाभ उठाने की आवश्यकता है।
    - यह लक्ष्य निवेश बाधाओं को दूर करके, एक संधारणीय वित्त पारित्र को बढ़ावा देकर, तथा वित्त-पोषण स्रोतों में विविधता लाकर, मिश्रित वित्त जैसे नवीन दृष्टिकोण अपनाकर, बहुपक्षीय विकास बैंकों के साथ जुड़कर प्राप्त किया जा सकता है।
- **शिक्षा-रोजगार के अंतर को पाटना:** भारत की युवा आबादी की औसत आयु 28 वर्ष है। देश रोजगार योग्य कौशल से लैस कार्यबल का पोषण करके अपने जनसांख्यिकीय लाभांश का दोहन कर सकता है।
    - स्कूली शिक्षा में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। सरकार को नई कौशल पहलों को प्राथमिकता देनी चाहिए और मौजूदा पहलों को नया रूप देना चाहिए।
- **राज्य की क्षमता और सामर्थ्य का निर्माण करना:** भारत ने 2014 से बुनियादी ढांचे और प्रत्यक्ष लाभ योजनाओं में महत्वपूर्ण प्रगति की है, जिसमें सिविल सेवा महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। प्रगति को बनाए रखने के लिए, राज्य मशीनरी में आवश्यक बदलाव लाने और जवाबदेही तंत्र की स्थापना करने की आवश्यकता है।

 © Vision IAS

भारत में राज्य की क्षमता निर्माण के लिए मिशन कर्मयोगी का समग्र दृष्टिकोण

- **सिविल सेवाओं में मुद्दे:** इसमें नीतियों का अलग-अलग ढंग से क्रियान्वयन, निम्नस्तरीय परस्पर संचार, सूचना साझाकरण संबंधी सीमाएँ और सहयोग की कमी आदि शामिल हैं (प्रथम और द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग)।
    - प्रदर्शन प्रबंधन प्रणालियां मूल्यांकन, पुरस्कृत करने और प्रदर्शन में सुधार करने तथा अधिकारियों की क्षमताओं को प्रणाली की आवश्यकताओं के अनुरूप करने के लिए उचित तंत्र से लैस नहीं थीं।
- **मिशन कर्मयोगी:** 'वर्कफोर्स टू वर्क-वर्कप्लेस' फ्रेमवर्क का उपयोग करके राज्य की क्षमता बढ़ाने के लिए मिशन कर्मयोगी की शुरुआत की गई।
    - **यह एक बहुआयामी समाधान प्रदान करता है जिसमें शामिल हैं -**
        - **कार्यबल का क्षमता-निर्माण वस्तुतः** कैरियर के कई चरणों में सिविल सेवकों की भूमिकाओं और योग्यता संबंधी अनिवार्यताओं पर केंद्रित होगा।
        - भूमिका-आधारित मानव संसाधन प्रबंधन और निर्णय लेने के माध्यम से **कार्य की गुणवत्ता में सुधार** करना।
        - मार्गदर्शन, बेहतर प्रबंधकीय प्रथाओं और बेहतर भौतिक बुनियादी ढांचे के माध्यम से कार्यस्थल को बेहतर बनाना।
- **iGOT कर्मयोगी:** इस प्लेटफ़ॉर्म की मदद से सिविल सेवक टेलर्ड मॉड्यूल को एक्सेस कर सकते हैं, उनकी योग्यता अनिवार्यताओं को ट्रैक और ज्ञान को साझा किया जाता है।

मध्यम अवधि में दृष्टिकोण

- पिछले दशक में भारत की विकास की कहानी लचीली रही है, तथा उसने पुनर्बहाली रणनीति और संरचनात्मक सुधारों के माध्यम से वैश्विक संकटों का सामना किया है।
- विश्व आर्थिक परिदृश्य में, IMF ने मजबूत घरेलू मांग और बढ़ती कामकाजी आयु वाली आबादी के आधार पर 2024-25 के लिए भारत की वृद्धि दर अनुमान को 6.5% से बढ़ाकर 6.8% कर दिया है। इससे भारत सबसे तेजी से बढ़ती G-20 अर्थव्यवस्था बन गया है।
- भारत निम्न आय वाले देश से निम्न-मध्यम आय वाले देश में तब्दील हो गया है।
    - जैसे-जैसे देश मध्यम और उच्च-मध्यम आय की स्थिति की ओर आगे बढ़ रहा है, लोगों की आकांक्षाएं भी बढ़ती जा रही हैं।
- हमारे ज्ञान और दृष्टिकोण को निरंतर विकसित करना होगा ताकि **'विकसित भारत @2047'** के सपने को साकार करने संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

शब्दावली

शब्द/ पद	अर्थ
मिटेलस्टैंड	• जर्मनी, ऑस्ट्रिया और स्विट्जरलैंड में मजबूत व्यावसायिक उद्यमों के एक समूह को संदर्भित करता है जो आर्थिक परिवर्तन और अशांति को सहन करने में सफल साबित हुए हैं। • इसे आमतौर पर लघु एवं मध्यम आकार के उद्यमों की श्रेणी के रूप में परिभाषित किया जाता है, जिनका वार्षिक राजस्व 50 मिलियन यूरो तक होता है तथा अधिकतम 500 कर्मचारी होते हैं।
ग्रीन ट्रांजिशन	• यह जीवाश्म ईंधन पर निर्भर अर्थव्यवस्था से नवीकरणीय ऊर्जा स्रोतों द्वारा संचालित तथा संधारणीय प्रथाओं पर आधारित अर्थव्यवस्था की ओर वैश्विक स्थानांतरण को संदर्भित करता है।
कॉर्पोरेट बॉण्ड	• कॉर्पोरेट बॉण्ड एक ऋण प्रतिभूति है जिसे किसी निगम द्वारा पूंजी जुटाने के लिए जारी किया जाता है।
जनसांख्यिकीय लाभांश	• यह जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न आर्थिक विकास की संभावना को संदर्भित करता है। यह स्थिति तब उत्पन्न होती है जब कार्यशील आयु जनसंख्या, गैर-कार्यशील आयु वाली जनसंख्या से अधिक हो जाता है।

अध्याय 5: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. 1993 से भारत की आर्थिक संवृद्धि की विशेषता रही है:

   (a) रुपये के मूल्यह्रास के बावजूद सकल घरेलू उत्पाद में उल्लेखनीय वृद्धि

   (b) प्रति व्यक्ति आय में ठहराव

   (c) बाह्य ऋण पर अत्यधिक निर्भरता

   (d) नगण्य विदेशी निवेश

2. भारतीय कार्यबल के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

   1. भारत का 50% से कम कार्यबल कृषि में कार्यरत है।

   2. भारतीय कार्यबल का अधिकांश भाग सेवा क्षेत्रक में कार्यरत है।

   उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

   (a) केवल 1

   (b) केवल 2

   (c) 1 और 2 दोनों

   (d) कोई नहीं

3. "जनसांख्यिकीय लाभांश" पद निम्नलिखित में से किसको संदर्भित करता है?

   (a) जन्म दर में कमी

   (b) युवा आबादी से होने वाला संभावित आर्थिक लाभ

   (c) आबादी में वृद्धजनों की संख्या में वृद्धि

   (d) श्रम बल भागीदारी दर में कमी

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत के रोगों से ग्रस्त आबादी के लिए अस्वास्थ्यकर आहार संबंधी आदतें मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं।

2. भारत की वयस्क आबादी में मोटापा एक बढ़ती हुई चिंता है

3. ग्रामीण भारत की तुलना में शहरी भारत में मोटापे की समस्या काफी अधिक है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) केवल तीन
(d) कोई नहीं

5. iGOT कर्मयोगी प्लेटफ़ॉर्म को डिजाइन करने का उद्देश्य है:

(a) प्रौद्योगिकी के माध्यम से बेहतर शासन की सुविधा प्रदान करना
(b) सरकारी डेटा के लिए एक केंद्रीय भंडार प्रदान करना
(c) सिविल सेवकों को अपनी दक्षता बढ़ाने और ज्ञान साझा करने में सक्षम बनाना
(d) लोक शिकायत निवारण तंत्र में सुधार करना

प्रश्न

1. जनसांख्यिकीय लाभांश का पूरी तरह से दोहन करने की भारत की क्षमता के समक्ष बाधक कारकों का विश्लेषण कीजिए। साथ ही, चुनौतियों का समाधान करने के लिए नीतिगत उपाय सुझाएँ।
2. भारत में समावेशी विकास और रोजगार सृजन को बढ़ावा देने में कृषि क्षेत्रक की क्षमता पर चर्चा कीजिए।

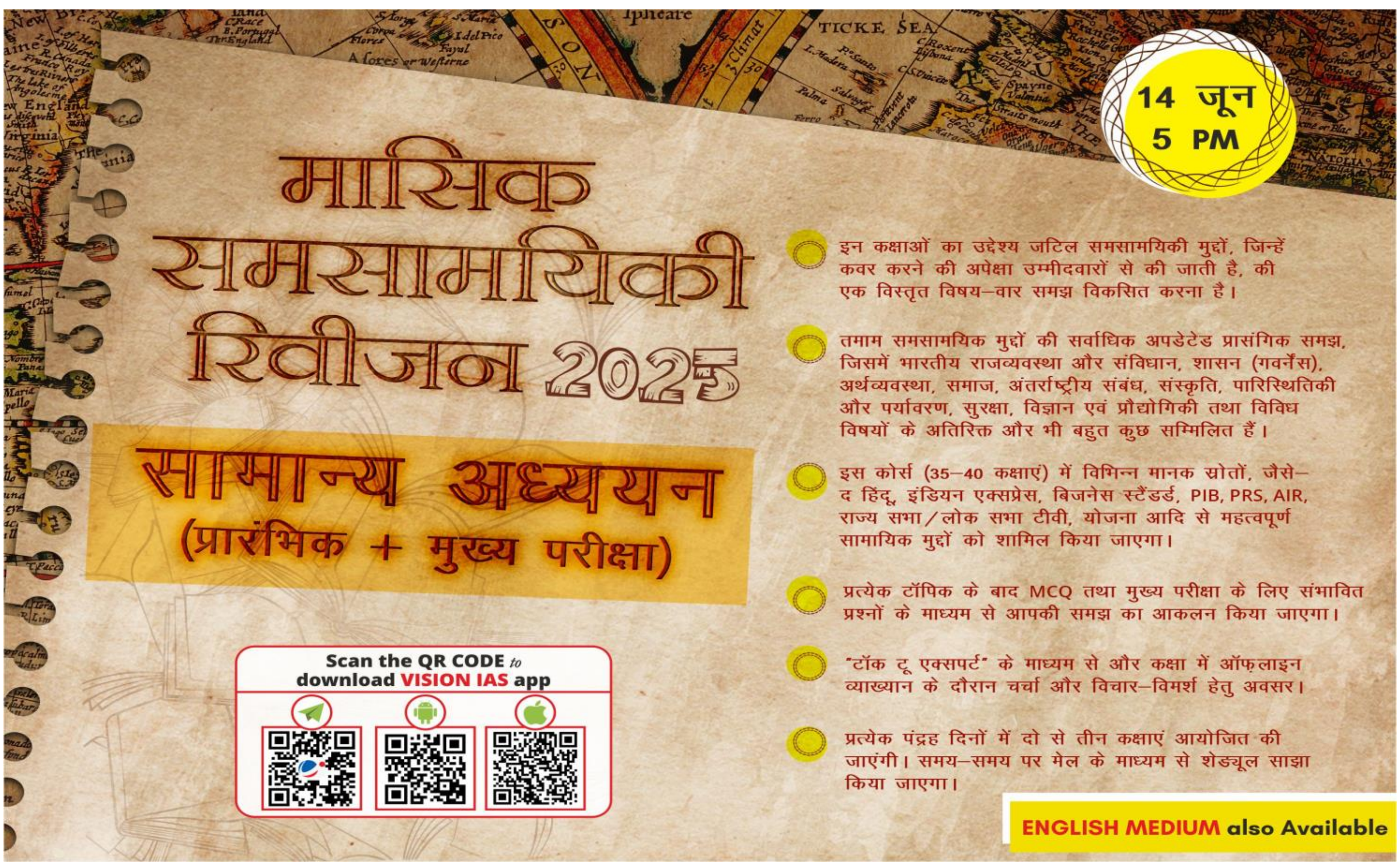

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

समसामयिकी त्रैमासिक रिवीजन

सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी करने वाले अभ्यर्थियों की **पृष्ठभूमि, आयु, वर्किंग शेड्यूल और पारिवारिक जिम्मेदारियां अलग-अलग होती हैं।**

इसे ध्यान में रखते हुए हमने **समसामयिकी: त्रैमासिक रिवीजन** डॉक्यूमेंट को तैयार किया है। इससे उन अभ्यर्थियों को तैयारी में काफी सहायता मिलेगी, जिनका शेड्यूल अधिक व्यस्त होता है, जिन्हें मासिक समसामयिकी मैगजीन को पढ़ने व रिवीजन करने के लिए कम समय मिलता है और सिलेबस के बारे में बुनियादी एवं थोड़ी बहुत समझ होती है।

त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट को काफी सावधानीपूर्वक और बारीकी से तैयार किया गया है। इससे आपको **सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी के लिए आवश्यक लर्निंग एवं रिवीजन के लिए मजबूत आधार मिलेगा।**

इस डॉक्यूमेंट में हमने विगत तीन माह की मासिक समसामयिकी मैगजीन से सभी महत्वपूर्ण आर्टिकल्स को कवर किया है। इससे महत्वपूर्ण टॉपिक्स का रिवीजन करने के लिए आपको एक समग्र और सटीक रिसोर्स मिलेगा।

डॉक्यूमेंट को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट की कुछ मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

कम समय में रिवीजन करने के लिए: इसे पिछले तीन महीने के करेंट अफेयर्स को कवर करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, ताकि कम समय में भी रिवीजन किया जा सके।

और अधिक जानकारी के लिए अवश्य पढ़ें: इससे आपको करेंट अफेयर्स को स्टैटिक मटेरियल से जोड़कर समझने तथा टॉपिक के बारे में अपनी समझ को और बेहतर बनाने में मदद मिलेगी। इसमें NCERTs सहित बेसिक रीडिंग मटेरियल से संबंधित अध्याय के बारे में बताया गया है।

प्रश्नोत्तरी: हर भाग के अंत में 5 MCQs और मुख्य परीक्षा के लिए प्रैक्टिस हेतु 2 प्रश्न दिए गए हैं। ये प्रश्न आपको अपनी समझ का आकलन करने और प्रमुख अवधारणाओं/तथ्यों को प्रभावी ढंग से याद रखने में मदद करेंगे।

संक्षिप्त पृष्ठभूमि: प्रत्येक आर्टिकल से संबंधित एक संक्षिप्त पृष्ठभूमि दी गई है, जिससे आपको संबंधित आर्टिकल को समझने और उसका विश्लेषण करने के लिए एक मजबूत आधार मिलेगा।

विश्लेषण और महत्वपूर्ण तथ्य: इससे आपको महत्वपूर्ण नज़रिए और अलग-अलग पहलुओं से जुड़ी जानकारी तथा तथ्यों के बारे में पता चलेगा।

स्पष्ट एवं संक्षिप्त जानकारी: इसमें इन्फॉर्मेशन को सुव्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत किया गया है, जिससे क्विक और इफेक्टिव रिवीजन में मदद मिलेगी।

हमें पूरी उम्मीद है कि यह त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट समसामयिकी घटनाक्रमों के लिए काफी फायदेमंद होगा। PT 365 और Mains 365 डाक्यूमेंट्स के साथ-साथ इसे पढ़कर UPSC CSE की तैयारी की राह में आपका आत्मविश्वास काफी बढ़ जाएगा।

स्मार्ट तरीके से तैयारी कीजिए। "त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट" कुशल, टार्गेटेड और प्रभावी रिवीजन के लिए सबसे बेहतर साथी है। इसकी मदद से अपनी सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की राह में आगे बढ़िए।

अध्याय 6: जलवायु परिवर्तन और ऊर्जा संक्रमण: समझौताकारी सामंजस्य (Climate Change and Energy Transition: Dealing with Trade Offs)

परिचय

- दुनिया भर में यह स्वीकार किया जाने लगा है कि **जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए अपनाया जाने वाला मौजूदा तरीका दोषपूर्ण** है, क्योंकि इसमें **समझौताकारी सामंजस्य की अनदेखी** की जा रही है। इसके कारण देशों को अपने जलवायु शमन संबंधी लक्ष्यों के लिए निर्धारित समय-सीमा को टालना पड़ रहा है। उदाहरण के लिए, यूनाइटेड किंगडम ने पेट्रोल और डीजल ऑटोमोबाइल की बिक्री को पाँच साल के लिए प्रतिबंधित करने की अपनी योजना को स्थगित कर दिया है; जर्मनी ने जीवाश्म ईंधन से चलने वाले बॉयलर्स पर प्रतिबंध लगाने के अपने कानूनों को उदार बना दिया है आदि।
- इस अध्याय में जलवायु कार्रवाई, वित्त से जुड़े प्रावधानों, प्रभावों आदि के संदर्भ में विकसित और विकासशील देशों के बीच असमानता के बारे में विस्तार से चर्चा की गई है। साथ ही, इसमें अक्षय ऊर्जा तथा इलेक्ट्रिक वाहनों को अपनाने की दिशा में आने वाली कठिनाइयों पर भी प्रकाश डाला गया है।
- इस अध्याय में बताया गया है कि जलवायु लक्ष्यों को व्यवहार्यता और स्वीकार्यता के दायरे में लाने के लिए वैश्विक स्तर पर **समझौताकारी सामंजस्य को मान्यता देना कितना महत्वपूर्ण है।** इसमें जलवायु परिवर्तन से निपटने में भारत के प्रदर्शन और पहलों का भी आकलन किया गया है। साथ ही, इसमें एनर्जी ट्रांजीशन (ऊर्जा संक्रमण) से जुड़ी चुनौतियों के बारे में भी चर्चा की गई है। इसके अलावा, वैश्विक वार्ता की मौजूदा स्थिति के साथ-साथ भविष्य की कार्रवाई हेतु भारत के लिए सुलभ विकल्पों का भी अध्ययन किया गया है।

अध्याय का प्रीकैप

भारत द्वारा की जा रही जलवायु कार्रवाई की वर्तमान स्थिति

- **राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदानों (NDCs) के पहले सेट के तहत निर्धारित 2 लक्ष्य काफी पहले ही हासिल** किए जा चुके हैं।
- **अगस्त 2022 में NDCs को अपडेट** किया गया था।
  - भारत ने **2005 के स्तर से 2030 तक अपने सकल घरेलू उत्पाद (GDP) की उत्सर्जन तीव्रता को 45% तक कम** करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है।
  - इसी प्रकार, **2030 तक कुल विद्युत स्थापित क्षमता के 50% हिस्से को गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित संसाधनों से उत्पादित** करने का लक्ष्य रखा गया है।
- **अपडेट किए गए लक्ष्यों पर हुई प्रगति**
  - मई 2024 तक स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता में **गैर-जीवाश्म स्रोतों की हिस्सेदारी 45.4%** तक पहुंच गई है।
  - भारत, 2030 तक वृक्ष और वन आवरण के जरिए **2.5 से 3.0 बिलियन टन के अतिरिक्त कार्बन सिंक के सर्जन** की राह पर अग्रसर है।

ऊर्जा संघटन और दक्षता

- **भारत में ऊर्जा उपयोग पैटर्न की 3 प्रमुख विशेषताएं हैं-**
  - कुल प्राथमिक ऊर्जा आपूर्ति में बायोमास का अधिक उपयोग;
  - जीवाश्म ईंधन (मुख्य रूप से पेट्रोलियम) के आयात की प्रधानता; तथा
  - विद्युत उत्पादन के लिए घरेलू कोयले के उपयोग को प्राथमिकता।
- **ऊर्जा दक्षता के लिए सरकारी पहल:** ऊर्जा संरक्षण भवन संहिता; पर्यावरण के लिए जीवन शैली (LiFE) पहल; प्रदर्शन, उपलब्धि और व्यापार (PAT) योजना; आदि।
- **ऊर्जा संक्रमण की चुनौतियां:** नवीकरणीय ऊर्जा की रुक-रुक कर और असतत आपूर्ति; वैश्विक नेट जीरो उत्सर्जन के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकियां वर्तमान में व्यावसायिक रूप से अनुपलब्ध हैं, किफायती वित्त की उपलब्धता और उस तक पहुंच का अभाव आदि।

© Vision IAS

भारत द्वारा सतत वित्त सुनिश्चित करने के लिए किए गए उपाय

- 2022 में **'सॉवरेन ग्रीन बॉण्ड के लिए रूपरेखा'** जारी की गई थी।
- **बिज़नेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्ट (BRSR)** के तहत SEBI की संधारणीयता से संबंधित नई अनिवार्यताएं लागू की गई हैं।
- **विनियमित संस्थाओं के लिए ग्रीन डिपॉजिट की स्वीकृति हेतु** RBI का फ्रेमवर्क लागू किया गया है।
- **कार्बन मार्केट फ्रेमवर्क**
  - **कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग स्कीम (CCTS):** इसके तहत **एक टन कार्बन डाइऑक्साइड के समतुल्य उत्सर्जन के लिए मूल्य के निर्धारण** की अनुमति दी गई है।
  - **स्वैच्छिक कार्बन मार्केट:** भारत इस बाजार में कार्बन ऑफसेट का दूसरा सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता है।
  - **ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम:** यह ग्रीन क्रेडिट जारी करके पर्यावरण की दृष्टि से सकारात्मक कार्यों को प्रोत्साहित करता है। ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम में भागीदारी, स्वैच्छिक भागीदारी पर आधारित होगी।

वित्त तक पहुंच प्राप्त करने में विकासशील देशों के सामने आने वाली चुनौतियां

- UNFCCC की वित्त पर स्थायी समिति के अनुसार विकासशील देशों द्वारा अपने NDC में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए 2030 तक अनुमानित रूप से **5.8 ट्रिलियन से 11.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर** की आवश्यकता होगी।
- संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम (UNEP) की "ऐडेप्टेशन गैप रिपोर्ट 2023" के अनुसार- अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनुकूलन संबंधी उपायों के लिए जो वित्त उपलब्ध करवाया जा रहा है, **विकासशील देशों को उससे लगभग 10-18 गुना ज्यादा वित्त की आवश्यकता है।**

COP-28 के मुख्य परिणाम

- **फर्स्ट GST:** इस दशक के अंत से पहले वैश्विक जलवायु महत्वाकांक्षा को बढ़ाने का प्रयास करता है।
- **हानि और क्षति कोष** का गठन तथा इसके लिए वित्त-पोषण व्यवस्था का संचालन किया जाएगा।
- **ग्लोबल क्लाइमेट रेजिलिएंस के लिए अमीरात फ्रेमवर्क** को अंतिम रूप दिया गया।

जलवायु परिवर्तन की समस्या का समाधान करने के लिए भारत की अंतर्राष्ट्रीय पहलें

- **अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन: इथियोपिया और सोमालिया में सौर प्रौद्योगिकी एवं अनुप्रयोग संसाधन केंद्र (STAR-C)** की सफलतापूर्वक स्थापना की गई है।
- **वन वर्ल्ड, वन सन, वन ग्रिड:** सौर ऊर्जा प्रणालियों को आपस में जोड़ने के लिए **भारत और यूनाइटेड किंगडम** के नेतृत्व में इस पहल की शुरुआत की गई है।
- **आपदा-रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन:** इसे नवीन और मौजूदा अवसंरचना प्रणालियों के लचीलेपन को बढ़ावा देने के लिए शुरू किया गया है।
- **इंफ्रास्ट्रक्चर फॉर रेजिलिएंट आइलैंड स्टेट्स प्रोग्राम:** इसका उद्देश्य लघु द्वीपीय विकासशील देशों को तकनीकी समर्थन प्रदान करना और SIDS में अवसंरचना परिसंपत्तियों की आपदा और जलवायु संकट प्रतिरोधकता को बढ़ावा देना है।
- **लीडरशिप ग्रुप फॉर इंडस्ट्री ट्रांजिशन:** पेरिस समझौते के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कार्रवाई करने हेतु प्रतिबद्ध देशों और कंपनियों को एक साथ लाना।

भारत की जलवायु कार्रवाई की वर्तमान स्थिति

- **पहलें**
  - **जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPCC):** इसमें सौर, जल, ऊर्जा दक्षता, वन, संधारणीय आवास, संधारणीय कृषि, हिमालयी पारिस्थितिकी-तंत्र को बनाए रखना, जलवायु परिवर्तन के लिए रणनीतिक ज्ञान और हाल ही में मानव स्वास्थ्य से जुड़ा मिशन शामिल किया गया है।
    - राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों (UTs) को **जलवायु परिवर्तन पर राज्य स्तरीय कार्य योजना (SAPCC)** तैयार करने के लिए प्रोत्साहित किया गया है। अब तक, कुल 34 SAPCCs को लागू की जा चुकी हैं।
  - 2023-24 से 2025-26 तक की अवधि के लिए **प्रदर्शन, उपलब्धि और व्यापार (PAT) योजना** का आठवां चक्र अधिसूचित किया गया है।
    - **PAT के तहत कुल ऊर्जा बचत लक्ष्य:** 0.3370 MTOE (मिलियन टन तेल के समतुल्य)।

- **भारत के राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs)**
  - **राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDCs) के पहले सेट के लक्ष्य को काफी पहले ही हासिल कर लिया गया है-**
    - गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा स्रोतों से **40% संचयी विद्युत शक्ति क्षमता** स्थापित करने का लक्ष्य 2021 में (लक्ष्य के लिए निर्धारित वर्ष 2030 से 9 साल पहले) ही हासिल किया जा चुका है।
    - 2019 में (लक्ष्य के लिए निर्धारित वर्ष 2030 से 11 साल पहले) भारत के सकल घरेलू उत्पाद की **उत्सर्जन तीव्रता को 2005 के स्तर से 33% तक कम** किया जा चुका है।
  - **अगस्त 2022 में NDCs को पुनः अपडेट किया गया**
    - 2030 तक भारत के **सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता को 2005 के स्तर से 45%** (पहले के 33-35% से) **तक कम करने का लक्ष्य** रखा गया है।
    - **गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा संसाधनों से संचयी विद्युत शक्ति क्षमता स्थापित करने के लक्ष्य में संशोधन** किया गया है। अब **2030 तक कुल विद्युत स्थापित क्षमता के 50% हिस्से (पहले 40%) को गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित संसाधनों से उत्पादित** करने का लक्ष्य रखा गया है।
  - **अपडेटेड लक्ष्यों पर की गई प्रगति**
    - (मई 2024 तक) स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता में गैर-जीवाश्म स्रोतों की हिस्सेदारी **45.4% तक पहुंच** गई है।
    - भारत, **2030** तक वृक्ष और वन आवरण के जरिए **2.5 से 3.0 बिलियन टन के अतिरिक्त कार्बन सिंक के सर्जन** की राह पर अग्रसर है।
    - 2005 से 2019 तक **1.97 बिलियन टन CO2 के समतुल्य कार्बन सिंक** पहले ही सृजित किया जा चुका है।
- **थर्ड नेशनल कम्युनिकेशन (NC):** इसे UNFCCC के समक्ष प्रस्तुत किया गया था और **इसमें भारत का पहला अनुकूलन संचार** शामिल है। थर्ड नेशनल कम्युनिकेशन की मुख्य विशेषताएं-
  - **समग्र मानव जनित उत्सर्जन में क्षेत्रकवार योगदान:** ऊर्जा क्षेत्रक (75.81%), कृषि क्षेत्रक (13.44%), औद्योगिक प्रक्रिया और उत्पाद उपयोग (IPPU) (8.41%) तथा अपशिष्ट (2.34%)।
  - **भूमि उपयोग, भूमि-उपयोग में परिवर्तन और वानिकी (LULUCF) क्षेत्रक में 2019 में नेट सिंक** की स्थिति रही।
  - **भारत का निवल राष्ट्रीय उत्सर्जन (2019):** 26,46,556 GgCO2e रहा।

भारत के लिए अनुकूलन क्यों महत्वपूर्ण है?

- कई अध्ययनों के मेटा-विश्लेषण के अनुसार, 2.5 डिग्री सेल्सियस ग्लोबल वार्मिंग के कारण **कल्याण-समतुल्य आय** का नुकसान निम्न-आय वाले देशों के लिए काफी अधिक है।
  - **उच्च आय वाले देशों की स्थिति:** अनुकूलनशील अवसंरचना, पर्याप्त स्वास्थ्य सेवा कवरेज, अनुकूल प्रौद्योगिकियों तक पहुंच आदि।
  - **संसाधनों की कमी निम्न आय वाले देशों** को बढ़ती सुभेद्यता और संभावित आर्थिक व्यवधान के प्रति अधिक असुरक्षित बनाती है।
- विकासशील देशों के दृष्टिकोण से **निरंतर आर्थिक संवृद्धि जलवायु परिवर्तन के खिलाफ सबसे अच्छा बीमा** है।
- भारत के **इनिशियल अडैप्टेशन कम्युनिकेशन** के अनुसार भारत का **अनुकूलन गतिविधियों के लिए किया गया कुल व्यय 2021-2022 में सकल घरेलू उत्पाद का 5.60%** था, जो 2015-16 के 3.7% से अधिक है।

© Vision IAS

सुभेद्य क्षेत्र	अनुकूलनशीलता के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम
प्राकृतिक पर्यावास, वनस्पति और जैव संसाधन।	• **NAPCC के 9 में से 7 मिशन** अनुकूलनशीलता पर केंद्रित रहे हैं। • **प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY)** के तहत सूक्ष्म सिंचाई को बढ़ावा दिया जा रहा है। • भारतीय कृषि में लचीलापन बढ़ाने के लिए **जलवायु अनुकूल कृषि पर राष्ट्रीय नवाचार (NICRA)** अपनाया गया है।
तटीय क्षेत्र	• **2014 से, देश भर में 56 नई आर्द्रभूमियों** को रामसर साइट्स (कुल 82) के रूप में सूचीबद्ध किया गया है। • संरक्षित रामसर साइट्स में प्रकृति आधारित पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए **'अमृत धरोहर' पहल** शुरू की गई है। • समुदायों की अग्रणी भूमिका सुनिश्चित करने के साथ सामाजिक स्वामित्व दृष्टिकोण को सक्षम बनाने के लिए **मिशन सहभागिता** की शुरुआत की गई है।

निम्न कार्बन उत्सर्जन आधारित विकास और ऊर्जा संरचना

ऊर्जा संरचना/ संघटन तथा दक्षता

- **2047 तक** भारत की ऊर्जा आवश्यकता में **2 से 2.5 गुना की वृद्धि होने की उम्मीद है।**
- **2022-23 में भारत का प्राथमिक एनर्जी मिक्स:** इसमें जीवाश्म ईंधन प्रमुख है, जिसकी लगभग 84% आपूर्ति कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस से होगी। (नीचे चित्र देखें)

2022-23 में भारत का प्राथमिक ऊर्जा आपूर्ति मिक्स

चार्ट VI.1: ईंधन स्रोतों के संदर्भ में 2022-23 में भारत का प्राथमिक ऊर्जा आपूर्ति मिश्रण और 2024 में स्थापित विद्युत क्षमता

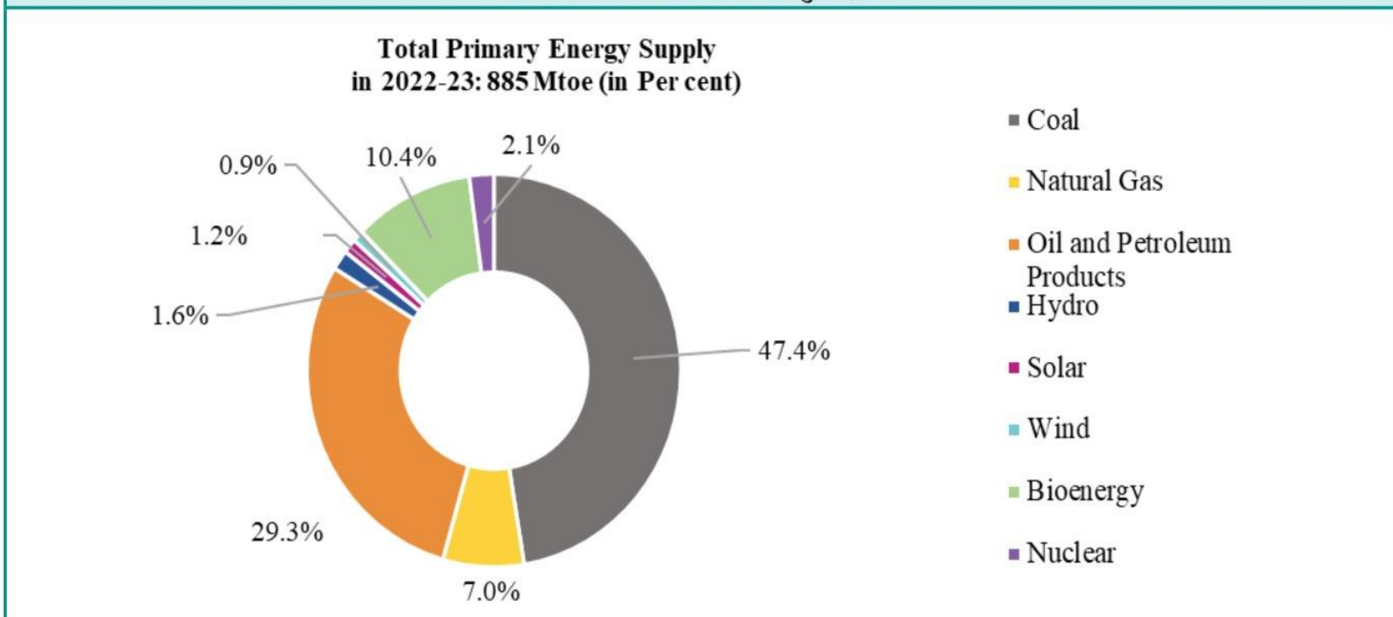

- **विद्युत क्षेत्रक में नवीकरणीय ऊर्जा को चरणबद्ध तरीके से बढ़ाना:** (मई 2024 तक) स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता में गैर-जीवाश्म स्रोतों की हिस्सेदारी **45.4% तक पहुंच** गई है।

ईंधन स्रोत के आधार पर 2024 में कुल स्थापित विद्युत क्षमता

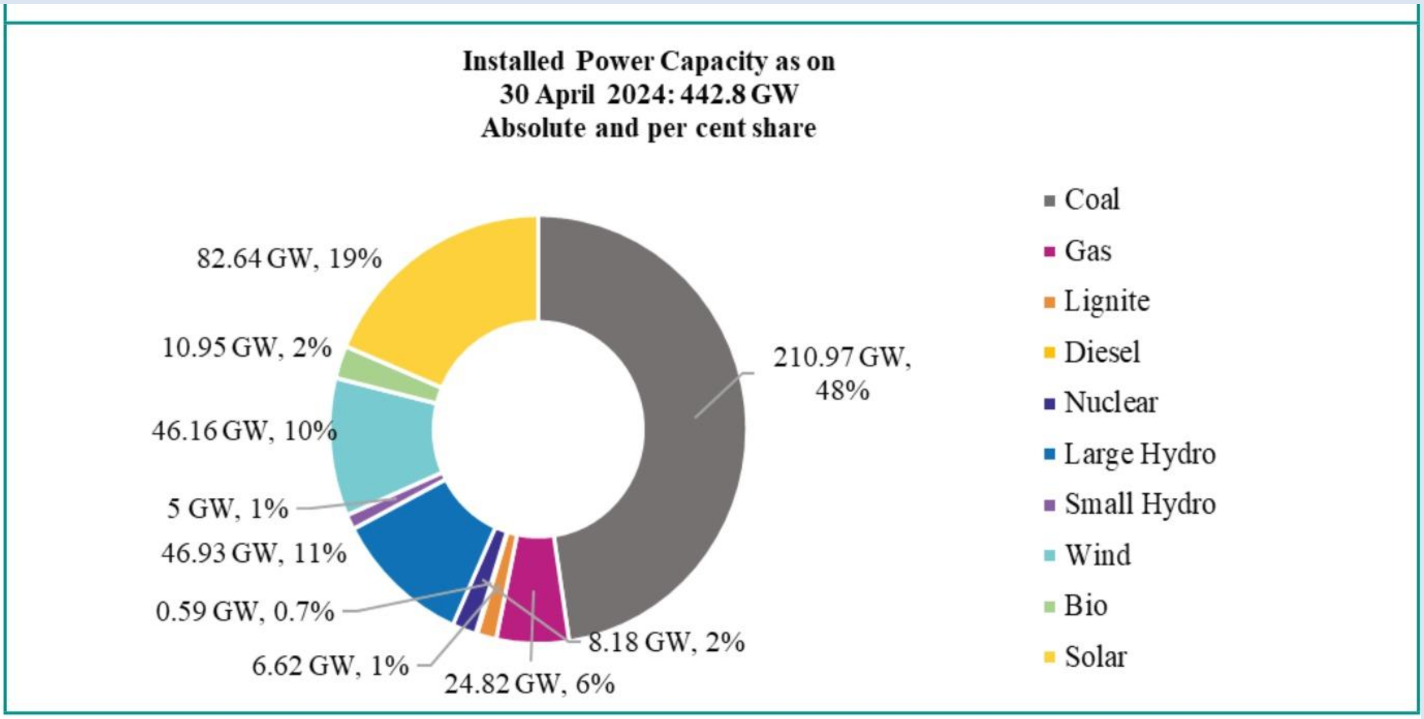

- **नवीकरणीय ऊर्जा के उत्पादन को बढ़ाने के लिए हाल ही में शुरू की गई पहलें**
  - **पीएम-सूर्य घर योजना से 30 गीगावाट** सौर ऊर्जा क्षमता स्थापित करने और 720 मिलियन टन CO2 के समतुल्य उत्सर्जन के कम होने की संभावना है। इससे सौर मूल्य श्रृंखला में लगभग 17 लाख प्रत्यक्ष रोजगार सृजित होंगे।
  - **राष्ट्रीय अपतटीय पवन ऊर्जा नीति और अपतटीय पवन ऊर्जा पट्टा नियम, 2023** को अधिसूचित किया गया है। साथ ही, **1 गीगावाट** की प्रारंभिक क्षमता के लिए **व्यवहार्यता अंतराल वित्त-पोषण** की घोषणा की गई है।
  - **ग्रीन हाइड्रोजन मिशन** के तहत **2030 तक 5 MMT ग्रीन हाइड्रोजन** उत्पादित की जा सकेगी।
- **भारत के ऊर्जा उपयोग की तीन प्रमुख विशेषताएं हैं-**
  - **कुल प्राथमिक ऊर्जा आपूर्ति के हिस्से के रूप में बायोमास का अधिक उपयोग: सोलर रूफटॉप्स की स्थापना, सौर उपकरणों के प्रसार और LPG-आधारित खाना पकाने की पद्धति** को बढ़ावा देने के साथ ही इसमें महत्वपूर्ण बदलाव आने वाला है।
  - **जीवाश्म ईंधन (मुख्य रूप से पेट्रोलियम) के आयात की प्रधानता: पेट्रोलियम** (जिसका **85% हिस्सा आयात** किया जाता है) का परिवहन, औद्योगिक क्षेत्रक तथा आवासीय और वाणिज्यिक क्षेत्रकों में अलग-अलग तरह से उपयोग किया जाता है।
  - **विद्युत उत्पादन के लिए घरेलू स्तर पर उत्पादित कोयले का उपयोग: कुल विद्युत उत्पादन में कोयले की हिस्सेदारी लगभग 70%** है। कोयले का पर्यावरण के अनुकूल उपयोग सुनिश्चित करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम-
    - **कोयला गैसीकरण मिशन:** इसका लक्ष्य सतही कोयला/ लिग्नाइट गैसीकरण परियोजनाओं के जरिए **2030 तक 100 मिलियन टन कोयले** को गैसीकृत करना है।
    - **कोल बेड मीथेन (CBM) गैसें,** कोयले से हाइड्रोजन की प्राप्ति, **कार्बन कैप्चर और स्टोरेज (CCS) तथा** धावनशालाओं के जरिए कोयले का लाभकारी उपयोग सुनिश्चित करना आदि।
    - कोयला विद्युत संयंत्रों को **सुपर-क्रिटिकल और अल्ट्रा-सुपर-क्रिटिकल प्रौद्योगिकियों** को अपनाने के लिए प्रोत्साहन प्रदान किया जा रहा है।

ऊर्जा दक्षता में सुधार के लिए उठाए गए कदम

- **भारत का लक्ष्य:** 2005 के स्तर से **2030 तक उत्सर्जन तीव्रता (EI) में 45% की कमी लाना।**
  - अर्थव्यवस्था में समग्र उत्सर्जन को **3753 MtCO2e** (आधारभूत परिदृश्य पर) तक कम करना।
- **बिल्डिंग सेक्टर में उत्सर्जन तीव्रता** में कमी लक्ष्य को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी।
  - वर्तमान में, **कुल विद्युत खपत का लगभग 33%** उपभोक्ताओं की वाणिज्यिक और आवासीय श्रेणियों से संबंधित है।

चित्र VI.3: 2030 तक एनडीसी प्रतिबद्धता को प्राप्त करने के लिए उत्सर्जन में कटौती का लक्ष्य (MtCO2e esa)

- **ऊर्जा दक्षता के लिए सरकार द्वारा शुरू की गई पहलें**
  - **बिल्डिंग सेक्टर के लिए:** ऊर्जा संरक्षण भवन संहिता, नेट जीरो एनर्जी बिल्डिंग, नेट पॉजिटिव एनर्जी बिल्डिंग, मानक और लेबलिंग (S&L) कार्यक्रम, उपभोक्ताओं को उच्च दक्षता वाले AC प्रदान करने के लिए स्टार-रेटेड कार्यक्रम आदि।
  - **संधारणीय जीवन शैली:** पर्यावरण के लिए जीवन शैली (LiFE) पहल, BEE का AC @ 24 आदि।
    - IEA के विश्लेषण के अनुसार दुनिया भर में LiFE कार्रवाइयों को अपनाने से उपभोक्ताओं को लगभग **440 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक की बचत होगी और यह 2030 तक उत्सर्जन कमी के लक्ष्य का पांचवाँ हिस्सा** होगा।
  - **औद्योगिक क्षेत्रक के लिए:** प्रदर्शन, उपलब्धि और व्यापार (PAT) योजना, कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना (CCTS) आदि।
  - **परिवहन क्षेत्रक के लिए:** कारों, हैवी ड्यूटी वाहनों (HDVs) और अन्य के लिए ईंधन खपत मानक एवं मानदंड निर्धारित किए गए हैं।
  - **मांग-पक्ष प्रबंधन (DSM):** कृषि में ऊर्जा दक्षता पंप सेट, स्थानीय निकायों की पेयजल और सीवेज जल पंपिंग प्रणालियों की दक्षता में सुधार, वितरण ट्रांसफॉर्मर नेटवर्क की दक्षता में सुधार और उपकरणों एवं व्हाइट गुड्स के लिए स्टार रेटिंग आदि।

एनर्जी ट्रांजीशन में मौजूद चुनौतियां

- **नवीकरणीय ऊर्जा की निरंतर आपूर्ति में व्यवधान होता है और असतत आपूर्ति होती है:** बैटरी भंडारण की अनुपस्थिति में ग्रिड से विद्युत की संधारणीय आपूर्ति प्रभावित होती है।
  - अनुमानों के अनुसार भारत, ब्राजील, ऑस्ट्रेलिया और इटली सहित **कई देशों में सौर ऊर्जा जैसी नवीकरणीय ऊर्जा की विद्युत की स्तरीय लागत (LCOE) जीवाश्म ईंधन से कम** हो गई है।
    - लेकिन यह **अर्थव्यवस्था द्वारा सामना की जाने वाली कुल लागत को नहीं** दर्शाता है। ऐसा इस कारण, क्योंकि इसमें **रुक-रुक कर होने वाली आपूर्ति और डिस्पैचबिलिटी** से जुड़ी लागतों की अनदेखी की गई है।
  - **संभावित समाधान: चौबीसों घंटे (RTC) नवीकरणीय ऊर्जा आपूर्ति अनुबंध,** जो रुक-रुक कर आपूर्ति और डिस्पैचबिलिटी से संबंधित जोखिमों के आंतरिक रूप से प्रबंधन की सुविधा प्रदान करता है।

नवीकरणीय ऊर्जा (RE) की चौबीसों घंटे (RTC) आपूर्ति

- चौबीसों घंटे (RTC) आपूर्ति करने का उद्देश्य **नवीकरणीय ऊर्जा विद्युत परियोजनाओं** के माध्यम से खरीदारों के ऊर्जा मांग वक्र को **ऊर्जा भंडारण प्रणालियों के साथ** सुमेलित करना है।
- विद्युत मंत्रालय ने चौबीसों घंटे आपूर्ति के लिए विद्युत खरीद समझौतों (PPA) हेतु एक रूपरेखा तैयार करने के लिए 2023 में **'ऊर्जा भंडारण प्रणालियों के साथ ग्रिड कनेक्टेड नवीकरणीय ऊर्जा विद्युत परियोजनाओं से फर्म और डिस्पैचेबल विद्युत की खरीद के लिए टैरिफ आधारित प्रतिस्पर्धी बोली प्रक्रिया के लिए दिशा-निर्देश'** जारी किए थे।
- **RTC-RE के समक्ष चुनौतियां:** जन-उपयोगिताओं की गतिशील आवश्यकताएं और बढ़ती ऊर्जा मांगें; उच्च अग्रिम लागत; प्रौद्योगिकी जोखिम; दीर्घकालिक पेबैक अवधि; बैटरी भंडारण प्रौद्योगिकी के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण व दुर्लभ भू-खनिजों तक सीमित पहुंच आदि।
- इस संदर्भ में, प्रणाली की लागत को कम करने के लिए **पंप स्टोरेज-आधारित ऊर्जा भंडारण सुविधाओं** का उपयोग किया जा सकता है। इसका कारण यह है कि **पंप स्टोरेज-आधारित ऊर्जा भंडारण प्रणालियों की उपयोग अवधि बैटरी ऊर्जा भंडारण प्रणालियों की तुलना में लंबी** होती है।

- **वैश्विक नेट जीरो उत्सर्जन के लिए आवश्यक कई प्रौद्योगिकियां वर्तमान में व्यावसायिक रूप से उपयोग करने के लिए अनुपलब्ध हैं:** जैसे हाइड्रोजन-ईंधन वाले स्टील/ सीमेंट, CCUS के साथ स्टील और एल्यूमीनियम उत्पादन आदि।
- **समाधान:** विशेष रूप से **वितरित नवीकरणीय ऊर्जा, अपतटीय पवन ऊर्जा, भूतापीय ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, जैव ईंधन, कंप्रेस्ड बायोगैस, हरित हाइड्रोजन, ऊर्जा भंडारण, इलेक्ट्रोलाइजर और परमाणु ऊर्जा {स्मॉल मॉड्यूलर रिएक्टर्स (SMR) सहित}** के क्षेत्रों में अनुसंधान एवं विकास में अंतर्राष्ट्रीय सहयोग बढ़ाने की आवश्यकता है।
- **भूमि और जल की मांग में वृद्धि:** उदाहरण के लिए, एक अध्ययन के अनुसार लगभग **1 मेगावाट सोलर फोटोवोल्टिक (PV) के लिए लगभग 1-1.5 हेक्टेयर भूमि की आवश्यकता** हो सकती है।
  - **भूमि की उपलब्धता भारत के लिए एक बड़ी चुनौती है,** भारत की प्रति व्यक्ति भूमि उपलब्धता G-20 देशों में सबसे कम है।
- **नवीकरणीय अपशिष्ट पुनर्चक्रण:** वैश्विक स्तर पर, **सौर फोटोवोल्टिक (PV) अपशिष्ट 2050 तक लगभग 78 मिलियन टन** होने का अनुमान है।
  - स्क्रैप के रूप में पुनर्चक्रित PV अपशिष्ट, विषाक्त धातुओं के कारण **पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए जोखिम पैदा** करता है। इस कारण PV अपशिष्ट के प्रबंधन के लिए एक व्यापक नीति बनाने की आवश्यकता है।
  - भारत के संशोधित **ई-अपशिष्ट (प्रबंधन) नियम, 2022** निपटान पद्धतियों को लेकर चिंताओं को दूर करने का प्रयास करते हैं।
- **खनन और प्रसंस्करण में दुर्लभ भू-खनिजों एवं महत्वपूर्ण (क्रिटिकल) खनिजों की सांद्रता:** नवीकरणीय ऊर्जा और बैटरी भंडारण प्रौद्योगिकियों के लिए महत्वपूर्ण खनिजों की आवश्यकता होती है।
  - ऐसे खनिजों के स्रोत भौगोलिक रूप से कुछ देशों में ही केंद्रित हैं, विशेष रूप से **ग्रेफाइट (चीन- 79%), कोबाल्ट (डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो- 70%), दुर्लभ भू-खनिज (चीन- 60%) और लिथियम (ऑस्ट्रेलिया- 55%)।**
  - प्रसंस्करण के लिए सांद्रता का स्तर और भी अधिक है, जिसमें **चीन हर जगह अग्रणी भूमिका** में है।

महत्वपूर्ण खनिजों की वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं का भौगोलिक वितरण, 2023

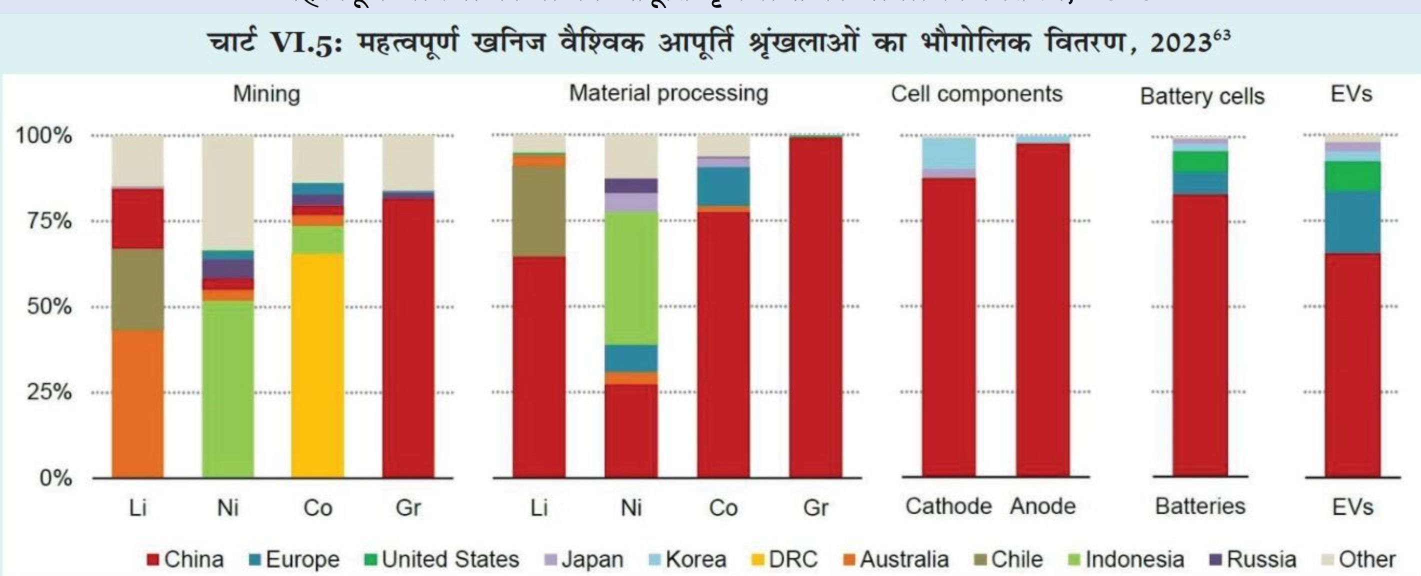

स्रोत: IEA का 'ग्लोबल क्रिटिकल मिनरल्स आउटलुक 2024'

- **महत्वपूर्ण खनिजों तक पहुंच के लिए भारत द्वारा उठाए गए कदम**
  - हरित प्रथाओं को अपनाने की प्रक्रिया को सुचारू बनाने के लिए भारत महत्वपूर्ण खनिजों तक पहुंच को सक्षम बनाने हेतु **खनिज सुरक्षा भागीदारी (MSP)** में शामिल हुआ।
    - **MSP में 14 देश शामिल हैं**। इनमें केवल **भारत ही विकासशील** देश है।
  - सरकार ने **देश के लिए 30 महत्वपूर्ण खनिजों की सूची** जारी की है।
  - घरेलू स्तर पर महत्वपूर्ण खनिजों पर शुरू की गई परियोजनाओं की कुल संख्या **2020 की 59 से बढ़कर 2023 में 123** हो गई है।
  - **खनिज बिदेश इंडिया लिमिटेड (KABIL):** इसका गठन भारत में महत्वपूर्ण खनिजों की आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए **विदेशों में सामरिक खनिज भंडारों की पहचान, प्राप्ति, प्रसंस्करण और व्यावसायिक उपयोग** के लिए किया गया है।

- **किफायती वित्त की उपलब्धता और उस तक पहुंच का अभाव:** नीति (NITI) आयोग के IESS 2047 मॉडल के अनुसार, नेट-ज़ीरो के लक्ष्य को हासिल करने के लिए **भारत को 2047 तक कुल 250 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रति वर्ष निवेश की आवश्यकता** होगी, ताकि अपनी ऊर्जा आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

"सिंक्रनाइज़िंग एनर्जी ट्रांजिशंस टूवर्ड पॉसिबल नेट ज़ीरो फॉर इंडिया: अफोर्डेबल एंड क्लीन एनर्जी फॉर ऑल" रिपोर्ट

- यह रिपोर्ट **भारतीय प्रबंधन संस्थान, अहमदाबाद द्वारा भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के कार्यालय और भारतीय परमाणु ऊर्जा निगम लिमिटेड के सहयोग** से तैयार की गई है।
- इस रिपोर्ट में **2070 तक नेट ज़ीरो उत्सर्जन के लक्ष्य की प्राप्ति** के लिए विद्युत के सभी स्रोतों हेतु एक **इष्टतम मिक्स तैयार करने** के तरीकों का व्यापक अध्ययन किया गया है। साथ ही, सभी के लिए स्वच्छ व किफायती ऊर्जा की पृष्ठभूमि में एनर्जी मिक्स की योजना शामिल की गई है।
- **रिपोर्ट के मुख्य बिंदुओं पर एक नजर**
  - **सतत ऊर्जा प्रणालियों को अपनाने के लिए कई ऊर्जा स्रोतों के सह-अस्तित्व की आवश्यकता है।**
  - रिपोर्ट में यह अनुमान लगाया गया है कि **कोयला अगले दो दशकों तक भारतीय ऊर्जा प्रणाली का मुख्य आधार** बना रहेगा।
  - पर्याप्त **परमाणु ऊर्जा और नवीकरणीय ऊर्जा (RE) उत्पादन के बिना 2070** तक **नेट-ज़ीरो लक्ष्य प्राप्त करना संभव नहीं** है।
  - **कोयले के उपयोग में चरणबद्ध तरीके से कमी लाने** की योजना काफी सीमा तक नवीकरणीय ऊर्जा और बैटरी भंडारण के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण खनिजों के आयात पर निर्भर करेगी।

सतत विकास के लिए वित्त

भारत द्वारा किए गए उपाय

- **2022 में 'सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड के लिए फ्रेमवर्क' जारी किया गया था:** सरकार ने जनवरी-फरवरी 2023 में 16,000 करोड़ रुपए के सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड जारी किए थे। उसके बाद अक्टूबर-दिसंबर 2023 में 20,000 करोड़ रुपए के सॉवरेन ग्रीन बॉन्ड जारी किए गए थे।
- **सेबी (SEBI) ने बिजनेस रिस्पॉन्सिबिलिटी एंड सस्टेनेबिलिटी रिपोर्टिंग (BRSR) के तहत नई स्थिरता रिपोर्टिंग अनिवार्यताएं जारी की हैं-**
  - सेबी ने BRSR को **2022-23 से शीर्ष 1,000 सूचीबद्ध कंपनियों (बाजार पूंजीकरण के आधार पर) के लिए अनिवार्य** कर दिया है।
  - जुलाई 2023 में, SEBI ने **मूल्य श्रृंखलाओं के लिए पर्यावरण, सामाजिक और गवर्नेंस (ESG) प्रकटीकरण हेतु BRSR कोर (BRSR का एक उप-समूह)** भी पेश किया था।
- **RBI ने विनियमित संस्थाओं के लिए ग्रीन डिपॉजिट की स्वीकृति हेतु फ्रेमवर्क लागू किया था:** इसे भारत के ग्रीन फाइनेंस इकोसिस्टम को बढ़ावा देने और विकसित करने के लिए लागू किया था।
- **RBI के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रक को ऋण (PSL) नियम:** इसमें शामिल परियोजनाओं के उदाहरण हैं- सौर-आधारित विद्युत जनरेटर, बायोमास-आधारित विद्युत जनरेटर, पवन चक्कियां, माइक्रो-हाइड्रल प्लांट, स्ट्रीट लाइटिंग सिस्टम, दूरदराज के गांवों में विद्युतीकरण आदि।

कार्बन की कीमत तय करने के लिए बाजार फ्रेमवर्क: भारतीय कार्बन बाजार (ICM)

कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग स्कीम (CCTS) (जिसे भारतीय कार्बन बाजार भी कहा जाता है)

- इसके लिए नियमों को 2023 में **विद्युत मंत्रालय** द्वारा अधिसूचित किया गया था।
- **उद्देश्य: एक टन कार्बन डाइऑक्साइड के समतुल्य उत्सर्जन के लिए मूल्यों का निर्धारण** करना।
- **मौजूदा PAT योजना को शामिल करना:** PAT योजना के तहत नामित उपभोक्ता (DC) धीरे-धीरे **2028-30 तक CCTS** में शामिल होते जाएंगे।
  - सरकार मौजूदा PAT योजना के तहत विशिष्ट ऊर्जा खपत लक्ष्यों के स्थान पर पर आउटपुट उत्सर्जन सीमा (यानी, GHG उत्सर्जन तीव्रता संबंधी लक्ष्य) को बढ़ावा देने के लिए इकाई-वार GHG उत्सर्जन तीव्रता आधारित लक्ष्य निर्धारित करेगी।

- **अनुपालन तंत्र:** बड़ी कंपनियों (जिन्हें हम बाध्यकारी संस्थाएं कहते हैं) को हर साल अपने कारखाने से निकलने वाली हानिकारक गैसों (ग्रीनहाउस गैसें) की मात्रा कम करने के लिए एक लक्ष्य दिया जाता है। यह लक्ष्य एक निश्चित समय के लिए होता है जिसे प्रक्षेप-वक्र अवधि कहते हैं। इन कंपनियों को हर साल बताया जाता है कि उन्हें कितनी गैस कम करनी है।
    - **अधिसूचित लक्ष्यों से अधिक प्रगति करने वाली बाध्यकारी संस्थाओं को अधिसूचित किया जाएगा:** वास्तविक स्थिति और लक्ष्य के बीच के अंतर से **कार्बन क्रेडिट प्रमाण-पत्र (CCC)** जारी किए जा सकते हैं।
        - CCCs को कार्बन बाजार में बेचा जा सकता है या बाध्यकारी संस्था द्वारा बैंक में जमा किया जा सकता है।
    - **लक्ष्यों को पूरा करने में विफल रहने वाली बाध्यकारी संस्थाओं को** भारतीय कार्बन बाजार से CCCs खरीदने होंगे या अनुपालन के लिए अपने बैंकों में जमा CCCs का उपयोग करना होगा।

भारत में कार्बन बाजार की संस्थागत संरचना	
कार्य	**संस्थाएं**
गवर्नेंस, निरीक्षण और कार्य प्रणाली	भारतीय कार्बन बाजार के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति का गठन किया गया है।
नीति और प्रशासक	ऊर्जा दक्षता ब्यूरो
लक्ष्यों का कार्यान्वयन	बाध्यकारी इकाइयां
व्यापार विनियामक	केंद्रीय विद्युत विनियामक आयोग
रजिस्ट्री	ग्रिड कंट्रोलर ऑफ इंडिया लिमिटेड (GCIL)
व्यापारिक प्लेटफॉर्म	पावर एक्सचेंज – IEX, PXIL और HPX

स्वैच्छिक कार्बन बाजार (Voluntary Carbon Market: VCM)

- VCM वे बाजार होते हैं, जो **सरकारों द्वारा विनियमित नहीं** किए जाते हैं और **पूरी तरह से स्वैच्छिक** होते हैं।
- वैश्विक स्वैच्छिक कार्बन बाजार का **मूल्य 1.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक है, और भारत कार्बन ऑफसेट का दूसरा सबसे बड़ा आपूर्तिकर्ता** है।
- **तंत्र:** कार्बन ऑफसेटिंग
- **चिंताएं:**
    - **दोहरी गिनती-** जब विक्रेता और खरीदार, दोनों ही कार्बन कटौती का दावा करते हैं।
    - यह स्पष्ट नहीं है कि जब कोई **विदेशी संस्था** किसी देश में उत्पन्न कार्बन क्रेडिट को ऑफसेट के रूप में खरीदती है, तो **क्या मूल उत्सर्जन देश भी उसी क्रेडिट का दावा कर सकता है।** यह स्थिति कार्बन बाजारों में जटिलताएं पैदा करती है और दोहरे दावों की संभावना को बढ़ाती है।

कार्बन बाजारों का विकास
• **1970 का दशक:** संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा **सल्फर डाइऑक्साइड (SO2) अलाउंस** ट्रेडिंग प्रोग्राम।   • **1987:** उत्सर्जन परमिट व्यापार का विचार मॉन्ट्रियल प्रोटोकॉल के बाद उभरा, हालांकि यह प्रोटोकॉल मुख्य रूप से ओजोन क्षरणकारी पदार्थों के उत्पादन और उपयोग पर सीधे प्रतिबंध लगाने पर केंद्रित था।   • **UNFCCC (कन्वेंशन) के अनुच्छेद 4.2 (a)** में पक्षकारों को संयुक्त रूप से उत्सर्जन में कमी लाने वाली नीतियों को लागू करने की अनुमति देकर प्रारंभिक कार्बन बाजारों की नींव रखी गई।   • **1997: UNFCCC के पक्षकारों के सम्मेलन (COP)** में क्योटो प्रोटोकॉल को अपनाया गया (2020 में समाप्त), जिसके अंतर्गत अनुलग्नक-B पक्षकारों, जिनमें 38 औद्योगिक देश और EIT (इकोनॉमी इन ट्रांजिशन) देश शामिल थे, के लिए ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में कमी के कानूनी रूप से बाध्यकारी लक्ष्य निर्धारित किए गए।

- इसमें तीन तंत्र दिए गए थे
  - **स्वच्छ विकास तंत्र (CDM):** क्योटो प्रोटोकॉल में गैर-अनुलग्नक I देशों (परियोजनाओं) से 'क्योटो यूनिट्स' को खरीद कर देश अपने घरेलू उत्सर्जन में कमी के लक्ष्यों को पूरा कर सकते हैं,
  - **संयुक्त कार्यान्वयन,** कोई भी अनुलग्नक देश घरेलू रूप से उत्सर्जन को कम करने के विकल्प के रूप में किसी अन्य अनुलग्नक I देश में उत्सर्जन में कमी से संबंधित परियोजनाओं (जिन्हें "संयुक्त कार्यान्वयन परियोजनाएं" कहा जाता है) में निवेश कर सकता है, और
  - **अंतर्राष्ट्रीय उत्सर्जन व्यापार (IET):** यह पक्षकारों को उनके घरेलू उत्सर्जन में कमी के लक्ष्यों को पूरा करने में सहायता करने के लिए अन्य देशों से 'क्योटो यूनिट्स' को खरीदने की अनुमति देता है।
- **2005: यूरोपीय संघ उत्सर्जन व्यापार योजना (European Union Emission Trading Scheme: EU-ETS)**
  - क्योटो प्रोटोकॉल की पहली प्रतिबद्धता अवधि (2008-2012) के दौरान, EU-ETS के माध्यम से कार्बन क्रेडिट्स का व्यापार शुरू हुआ। इसने कार्बन उत्सर्जन की कीमत को निर्धारित करने में मदद की और ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करने के लिए एक प्रोत्साहन प्रदान किया।
- **2013: क्योटो प्रोटोकॉल के कार्बन बाजारों का दूसरा चरण (2013-2020)** कुछ प्रमुख विकसित अर्थव्यवस्थाओं की गैर-भागीदारी और EU-ETS के साथ क्योटो क्रेडिट की गैर-विनिमेयता के कारण विफल रहा।
- **2015: पेरिस समझौता** देशों को एकीकृत वैश्विक कार्बन बाजार के जरिए अपने NDCs में उच्च महत्वाकांक्षा के लिए स्वैच्छिक रूप से सहयोग करने का **विकल्प प्रदान करता है।**
  - **आर्टिकल 6.2** NDCs को पूरा करने में अंतर्राष्ट्रीय रूप से हस्तांतरित शमन परिणामों के उपयोग को शामिल करते हुए द्विपक्षीय स्तर पर **'स्वैच्छिक सहकारी दृष्टिकोण'** का आह्वान करता है।
  - **आर्टिकल 6.4** शमन परिणामों के विरुद्ध उत्सर्जन क्रेडिट जारी करने के लिए एक **अंतर्राष्ट्रीय तंत्र को परिभाषित करता है।**
  - **आर्टिकल 6.2 और 6.4 के कार्यान्वयन** पर विचार-विमर्श अभी भी जारी है।

ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम (GCP)

- **उद्देश्य:** GCP का उद्देश्य एक ऐसा अभिनव तंत्र स्थापित करना है जो व्यक्तियों, समुदायों और निजी क्षेत्र को पर्यावरण संरक्षण के प्रयासों में स्वेच्छा से भाग लेने के लिए प्रेरित करे। यह ग्रीन क्रेडिट जारी करके किया जाएगा, जो पर्यावरणीय सकारात्मक कार्यों के लिए एक तरह का पुरस्कार होगा।
- **GCP का कार्यान्वयन और प्रशासन:** 2023 में अधिसूचित ग्रीन क्रेडिट नियम, 2023 के अनुसार-
  - **चरणबद्ध और पुनरावृत्त आधारित दृष्टिकोण[8]:** प्रारंभिक चरण में वन विभागों के नियंत्रण और प्रबंधन के तहत बंजर भूमि, वाटरशेड आदि पर **स्वैच्छिक वृक्षारोपण** पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा।
  - **संचालन समिति:** संबंधित मंत्रालयों, विशेषज्ञों और संस्थानों के सदस्य।
  - **प्रशासक: भारतीय वानिकी अनुसंधान और शिक्षा परिषद (ICFRE)** इसके कार्यान्वयन और प्रबंधन के लिए जिम्मेदार है।
  - संचालन को सुव्यवस्थित बनाने के लिए **समर्पित वेब प्लेटफॉर्म और एक ग्रीन क्रेडिट रजिस्ट्री की स्थापना।**
- ग्रीन क्रेडिट रूल्स, 2023 के तहत **ग्रीन क्रेडिट का सृजन, कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग स्कीम, 2023** के तहत कार्बन क्रेडिट से स्वतंत्र है।
- COP-28 के दौरान भारत और UAE द्वारा एक **'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम'** की सह-मेजबानी की गई।

जलवायु वित्त पर अंतर्राष्ट्रीय प्रतिबद्धताएं: घटनाक्रम

- **वित्त प्राप्त करने में विकासशील देशों के सामने आने वाली चुनौतियां**
  - एक अनुमान के अनुसार, विकासशील देशों द्वारा अपने NDC में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए 2030 तक 5.8 ट्रिलियन से 11.5 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता है। **{वित्त संबंधी स्थायी समिति (UNFCCC के तहत एक निकाय)}**
  - विकासशील देशों में अनुमानित अनुकूलन लागत वर्तमान **अंतर्राष्ट्रीय अनुकूलन वित्त प्रवाह से 10 से 18 गुना अधिक** है। (2023 संयुक्त राष्ट्र अनुकूलन अंतर रिपोर्ट)
  - **विकसित देशों से वित्त प्रवाह बहुत कम** रहा है।

[8] Phased and iterative approach

- उपलब्ध अधिकांश अंतर्राष्ट्रीय वित्त **अनुदान के रूप में न होकर ऋण के रूप में है।**
- जलवायु कार्रवाई - शमन और अनुकूलन - के लिए **संसाधन प्रवाह का अधिकांश हिस्सा मुख्य रूप से घरेलू संसाधनों से** प्राप्त होता है।
- वित्तीय बाजारों की सीमित गहराई और कमजोर ऋण प्रोफाइल के कारण **विकासशील देशों में निजी पूंजी की जरूरतों को पूरा करने की सीमित क्षमता** है।

- **भारत की अनुमानित वित्तीय जरूरतें:**
    - **दीर्घकालिक कम-उत्सर्जन विकास रणनीति (LT-LEDS)[9]:** भारत को निम्न कार्बन उत्सर्जन आधारित अर्थव्यवस्था की ओर आगे बढ़ने के लिए **2050 तक 10 ट्रिलियन डॉलर से भी अधिक वित्त की आवश्यकता** है।
    - **UNFCCC में प्रस्तुत पहला अनुकूलन संचार (Adaptation Communication: AC):** अनुकूलन के लिए 2030 तक व्यय के लिए कुल 56.68 ट्रिलियन रुपये के वित्तपोषण की आवश्यकता होगी।
    - **पहला ग्लोबल स्टॉकटेक (GST):** विकासशील देशों की वर्तमान जरूरतों और विकासशील देशों को सहायता करने के लिए नए और अतिरिक्त, अनुदान-आधारित, अत्यधिक रियायती वित्त और गैर-ऋण साधनों की आवश्यकता को रेखांकित किया गया है।

CoP 28 और ग्लोबल स्टॉकटेक (GST)

- **मुख्य बिंदु:**
    - **फर्स्ट ग्लोबल स्टॉकटेक:** इसके तहत इस दशक के अंत से पहले तक **वैश्विक जलवायु महत्वाकांक्षा** को बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा, जिसे पेरिस समझौते और उनकी विभिन्न राष्ट्रीय परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित तरीके से लागू किया जाता है। मुख्य बिंदु-
        - इसके तहत विकसित देश, विकासशील देशों को शमन और अनुकूलन से संबंधित अपने दायित्वों को पूर्ण करने में सहायता के लिए वित्तीय संसाधन प्रदान करेंगे।
        - इसमें यह स्वीकार किया गया है, कि **अनुकूलन संबंधी वित्त को विकासशील देशों में अनुकूलन गतिविधियों में तेजी लाने और लचीलापन बढ़ने की तत्काल और उभरती हुई आवश्यकता** का समर्थन करने के लिए महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाया जाना चाहिए।
        - वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा क्षमता को तीन गुना करने, निरंतर कोयला आधारित विद्युत उत्पादन को कम करने, अकुशल जीवाश्म ईंधन सब्सिडी को समाप्त करने आदि के प्रयासों में तेजी लाने के लिए पक्षकारों से योगदान करने का आह्वान करता है।
        - इस बात पर भी ध्यान दिया गया है, कि **जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए उठाए गए कदम**, जिसमें एकतरफा उपाय भी शामिल हैं, **मनमाना या अनुचित भेदभाव या अंतर्राष्ट्रीय व्यापार पर एक प्रच्छन्न प्रतिबंध नहीं होना** चाहिए।
- **हानि एवं क्षति कोष का संचालन तथा इसके वित्तपोषण की व्यवस्था।**
- **पेरिस समझौते के तहत वैश्विक जलवायु रिलायंस के लिए अमीरात रूपरेखा को अंतिम रूप देना**, ताकि वैश्विक अनुकूलन लक्ष्य (GGA) विकसित किया जा सके।
    - निर्णय में सभी देशों से **2030 तक अनुकूलन योजनाएं बनाने** का आह्वान किया गया है।

नवीन सामूहिक परिमाणित लक्ष्य (NCQG)

- **UNFCCC के तहत जलवायु वित्त पर NCQG** पर चर्चा की जा रही है, जिसका उद्देश्य **2025 से विकासशील देशों के लिए विकसित देशों से जलवायु वित्त जुटाना** है।
- इसका उद्देश्य विकासशील देशों की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं पर विचार करते हुए प्रति वर्ष **100 बिलियन अमेरिकी डॉलर की न्यूनतम सीमा से अधिक एक नया परिमाणित लक्ष्य** निर्धारित करना है।
- **विकासशील देश क्या चाहते हैं?-**
    - **महत्वाकांक्षी वित्तीय लक्ष्य,** जो उनकी आवश्यकताओं को पर्याप्त रूप से पूरा करता हो।
    - अनुदान-आधारित या **अत्यधिक रियायती और सुलभ वित्तीय संसाधन** उपलब्ध कराना।
    - शमन और अनुकूलन गतिविधियों के **वित्त-पोषण के बीच संतुलन** स्थापित करना।

---

[9] Long-Term Low Emission Development Strategy

© Vision IAS

जलवायु परिवर्तन से जुड़ी चिंताओं का समाधान करने के लिए भारत की अंतर्राष्ट्रीय पहल

पहल	विशेषताएं
अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन	• सौर ऊर्जा समाधानों को लागू करने के लिए **2015 में भारत और फ्रांस** की संयुक्त पहल। • 119 सदस्य और हस्ताक्षरकर्ता देशों के साथ संधि-आधारित अंतर-सरकारी संगठन। • इथियोपिया और सोमालिया में **सोलर टेक्नोलॉजी एंड एप्लिकेशन रिसोर्स सेंटर (STAR-C)** की सफलतापूर्वक स्थापना।
एक विश्व, एक सूर्य, एक ग्रिड (OSOWOG)	• यह भारत और ब्रिटेन के नेतृत्व में शुरू की गई एक महत्वाकांक्षी परियोजना है, जिसमें बड़े पैमाने पर सौर ऊर्जा प्रणालियों को आपस में जोड़ा जाएगा। • **इसे तीन चरणों में पूरा किया जाएगा** ○ **पहला चरण:** भारतीय ग्रिड को मध्य-पूर्व, दक्षिण-एशिया और दक्षिण-पूर्व एशिया ग्रिड से जोड़ा जाएगा। ○ **दूसरा चरण:** कार्यात्मक प्रथम चरण को **अफ्रीका में नवीकरणीय संसाधनों के पूल से जोड़ना**, और ○ **तीसरा चरण:** 2050 तक **वैश्विक इंटरकनेक्शन** प्राप्त करना।
आपदा रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन (CDRI)	• **संयुक्त राष्ट्र जलवायु कार्रवाई शिखर सम्मेलन, 2019** के दौरान भारत द्वारा लॉन्च किया गया। • राष्ट्रीय सरकारों, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों और कार्यक्रमों, बहुपक्षीय विकास बैंकों और वित्तपोषण तंत्रों, निजी क्षेत्र और शैक्षणिक और ज्ञान आधारित संस्थानों की **वैश्विक भागीदारी**। • सतत विकास के समर्थन में जलवायु और आपदा जोखिमों के लिए **नई और मौजूदा अवसंरचना प्रणालियों की तन्यकता को बढ़ावा देने का लक्ष्य।**
रेजिलिएंट द्वीपीय देशों के लिए अवसंरचना (IRIS)	• **CDRI और छोटे द्वीपीय विकासशील देशों (SIDS)** की एक प्रमुख रणनीतिक पहल, भारत द्वारा 2021 में लॉन्च की गई। • SIDS के लिए **रेजिलिएंट और जलवायु अनुकूलन समाधान** प्राप्त करने और उपलब्ध कराने के लिए डिज़ाइन किया गया।
लीडरशिप ग्रुप फॉर इंडस्ट्री ट्रांजिशन (LeadIT)	• **2019 में भारत और स्वीडन** द्वारा लॉन्च किया गया। • पेरिस समझौते के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रतिबद्ध देशों और कंपनियों को एक साथ लाता है। • COP 28 में, भारत और स्वीडन ने **2024-26 के लिए दूसरा LeadIT (LeadIT 2.0) चरण** लॉन्च किया।

निष्कर्ष

महत्वाकांक्षी **NDC लक्ष्यों और ऊर्जा सुरक्षा सुनिश्चित करने** के उद्देश्य के आधार पर, यह स्पष्ट है कि भारत को ऊर्जा स्रोतों के विविध सेट को लक्षित करने की आवश्यकता है। इस तरह के विविधीकरण से राष्ट्रीय प्रतिबद्धताओं के अनुरूप कम उत्सर्जन वाले ऊर्जा संसाधनों को अपनाते हुए ऊर्जा प्रणालियों से जुड़े जोखिमों को कम करने में मदद मिलेगी। **परमाणु ऊर्जा और जैव ईंधन को अपनाने** के साथ-साथ **नवीकरणीय ऊर्जा का एकीकरण** इन उद्देश्यों को प्राप्त करने की दिशा में एक रास्ता प्रस्तुत करता है।

वित्तीय संसाधनों की **उपलब्धता, सामर्थ्य और पहुंच** हरित संसाधनों को बढ़ावा देगी। **दुनिया को जलवायु परिवर्तन के मुद्दे पर अधिक संतुलित दृष्टिकोण** अपनाने की आवश्यकता है। इसे वैश्विक जलवायु प्रबंधन के एक बड़े, दीर्घकालिक लक्ष्य के साथ अत्यधिक व्यस्त होने के बजाय मानव कल्याण में सुधार के अल्प-अवधि के नीतिगत लक्ष्यों पर भी ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

बजट में क्या कहा गया है?

कृषि में अनुकूलन

- किसानों को खेती के लिए 32 प्रकार की फसलों और बागवानी वाली फसलों की 109 नई किस्में दी जाएंगी। ये नई किस्में अधिक उपज देती हैं और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को भी सहन कर सकती हैं।

- **देश भर में 1 करोड़ किसानों** को अगले 2 वर्षों में प्रमाणन और ब्रांडिंग के साथ प्राकृतिक खेती की शुरुआत करने में मदद की जाएगी।
- प्राकृतिक खेती के लिए **10,000 आवश्यकता-आधारित जैव-इनपुट संसाधन केंद्र** स्थापित किए जाएंगे।

क्रिटिकल खनिज मिशन

- इसे घरेलू उत्पादन, **क्रिटिकल खनिजों के पुनर्चक्रण और विदेशी क्रिटिकल खनिज परिसंपत्तियों के अधिग्रहण** के लिए शुरू किया गया है।
- **25 क्रिटिकल खनिजों** को सीमा शुल्क से पूरी तरह छूट दी गई है।

ऊर्जा सुरक्षा

- **एनर्जी ट्रांजिशन**
  - रोजगार, विकास और पर्यावरणीय स्थिरता की अनिवार्यताओं को संतुलित करने के लिए '**एनर्जी ट्रांजिशन पाथवे**' पर नीतिगत दस्तावेज लाया जाएगा।
- **पंप स्टोरेज नीति**
  - विद्युत ऊर्जा भंडारण के लिए पंप स्टोरेज परियोजनाओं को बढ़ावा देने के लिए नीति लाई जाएगी।
- **छोटे और मॉड्यूलर परमाणु रिएक्टरों पर अनुसंधान और विकास**
  - सरकार **भारत लघु मॉड्यूलर रिएक्टर** और परमाणु ऊर्जा के लिए नई तकनीकों के अनुसंधान और विकास के लिए निजी क्षेत्रक के साथ साझेदारी करेगी और भारत लघु रिएक्टरों की स्थापना करेगी।
- **एडवांस अल्ट्रा सुपर क्रिटिकल (AUSC) थर्मल पावर प्लांट**
  - NTPC और BHEL ने एक संयुक्त उद्यम के माध्यम से 800 मेगावाट की AUSC आधारित थर्मल पावर प्लांट स्थापित करने का प्रस्ताव रखा है।
- **'हार्ट टू एबेट' उद्योगों के लिए रोडमैप**
  - 'हार्ट टू एबेट' उद्योगों को वर्तमान 'प्रदर्शन, उपलब्धि और व्यापार' मोड से **'इंडियन कार्बन मार्केट'** मोड में बदलने के लिए उचित नियम लागू किए जाएंगे।

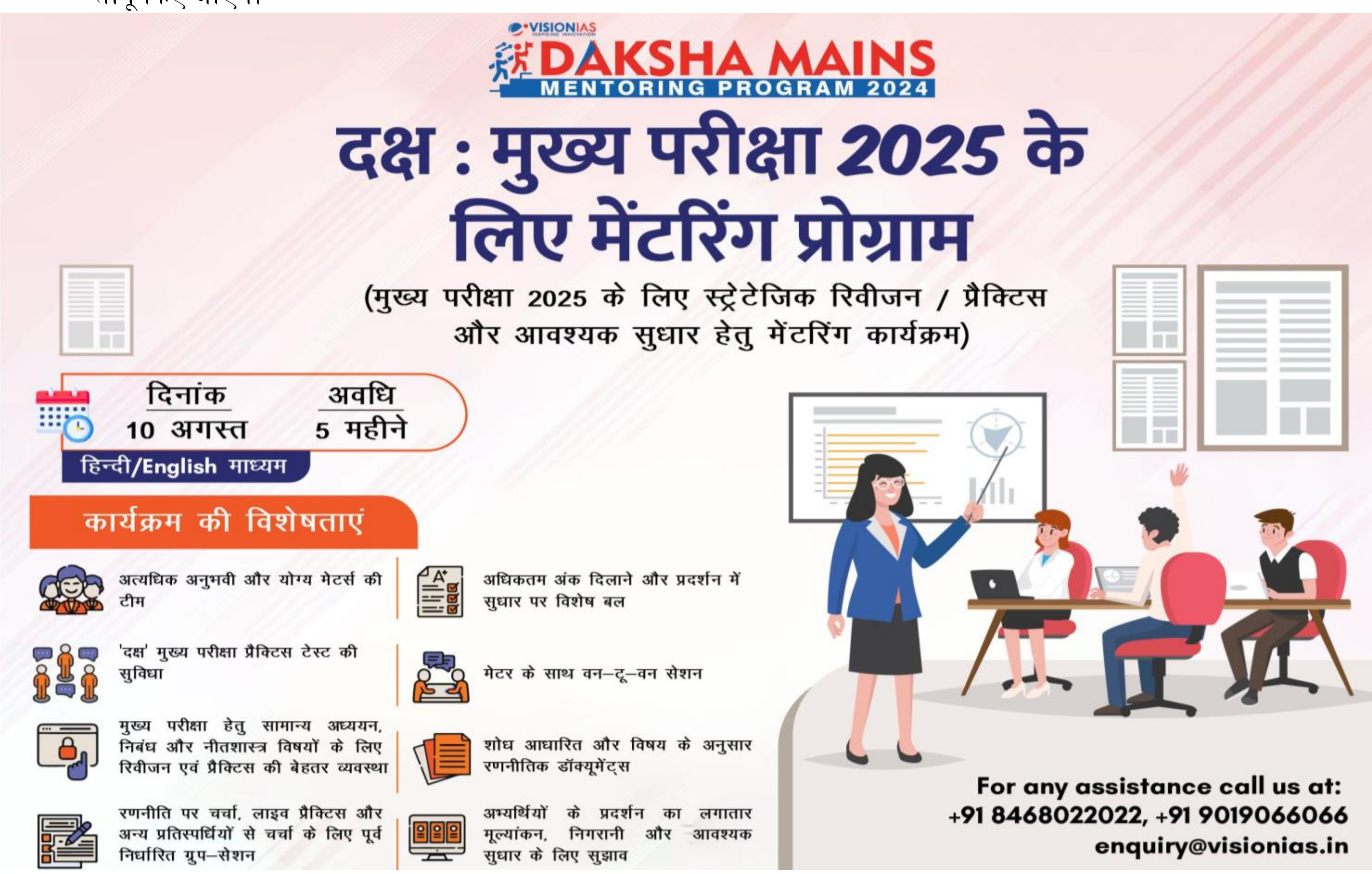

शब्दावली

शब्द/ पद	अर्थ
नेशनल कम्युनिकेशन (NC)	UNFCCC के तहत सभी देशों को राष्ट्रीय स्तर पर अपनी जलवायु कार्रवाई की जानकारी एकत्रित कर, उसे एक रिपोर्ट के रूप में प्रस्तुत करना होता है। इस रिपोर्ट में देश को अपनी **ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन की मात्रा, जलवायु परिवर्तन के कारण होने वाले संभावित नुकसान** और इन नुकसानों से बचने के लिए **किए जा रहे प्रयासों** के बारे में विस्तार से बताना होता है।
जलवायु परिवर्तन शमन	UNDP के अनुसार, यह उन कार्यों को संदर्भित करता है जो **जलवायु परिवर्तन के वर्तमान या अपेक्षित प्रभावों**, जैसे कि मौसम की चरम स्थितियों और खतरों, समुद्र-स्तर में वृद्धि, जैव विविधता की हानि या खाद्य और जल के अभाव जैसी निरंतर बढ़ने वाली घटनाओं के प्रति संवेदनशीलता को कम करने में मदद करते हैं।
विद्युत की स्तरीय लागत (LCOE)	यह कुल अनुमानित अवधि में उत्पादित विद्युत की प्रति यूनिट संपत्ति के निर्माण और संचालन की कुल लागत को दर्शाता है।
सॉवरेन ग्रीन बॉण्ड (SGRB)	यह एक प्रकार का सरकारी बॉण्ड है जो विशेष रूप से पर्यावरणीय रूप से संधारणीय परियोजनाओं को वित्त-पोषित करने के लिए जारी किया गया है।
कार्बन ऑफसेटिंग	कार्बन ऑफसेटिंग एक ऐसा तंत्र है जिसके माध्यम से कोई संगठन या व्यक्ति अपनी गतिविधियों से उत्सर्जित ग्रीनहाउस गैसों की मात्रा को कम करने के लिए अन्यत्र उत्सर्जन में कमी लाने वाली परियोजनाओं में निवेश करता है। इस तरह, वे अपने कार्बन फुटप्रिंट को कम करने और जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने में योगदान देते हैं।

अध्याय 6: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. निम्नलिखित पहलों पर विचार कीजिए:
   1. अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन
   2. आपदा रोधी अवसंरचना के लिए गठबंधन
   3. रेजिलिएंट द्वीपीय देशों के लिए अवसंरचना

   जलवायु परिवर्तन के मुद्दों का समाधान करने के लिए भारत द्वारा उपर्युक्त अंतर्राष्ट्रीय पहलों में से कितनी शुरू की गई हैं?
   (a) केवल एक
   (b) केवल दो
   (c) सभी तीन
   (d) कोई नहीं

2. भारत में 'ग्रीन क्रेडिट प्रोग्राम' का उद्देश्य है:
   (a) नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के लिए ऋण प्रदान करना
   (b) पर्यावरण की दृष्टि से सकारात्मक स्वैच्छिक कार्यों को प्रोत्साहित करना
   (c) कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग योजना में बदलाव करना
   (d) कार्बन कर प्रणाली को लागू करना

3. निम्नलिखित में से कौन-सा क्षेत्र भारत के समग्र मानवजनित उत्सर्जन में सबसे अधिक योगदान देता है?
   (a) कृषि क्षेत्र
   (b) ऊर्जा क्षेत्र
   (c) औद्योगिक प्रक्रिया और उत्पाद उपयोग (IPPU)
   (d) अपशिष्ट क्षेत्र

4. भारत की जलवायु कार्रवाई के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत ने 2021 में गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा स्रोतों से 40% संचयी विद्युत ऊर्जा क्षमता स्थापित करने का अपना पहला NDC लक्ष्य हासिल किया।
2. अपडेटेड NDC का लक्ष्य 2005 के स्तर से 2030 तक भारत के सकल घरेलू उत्पाद की उत्सर्जन तीव्रता को 45% तक कम करना है।
3. भारत में 2005 से 2019 तक पहले ही 1.97 बिलियन टन CO2 समतुल्य कार्बन सिंक सृजित किया जा चुका है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हिंं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 2 और 3

(c) केवल 1 और 3

(d) 1, 2 और 3

5. भारत में कार्बन क्रेडिट ट्रेडिंग स्कीम (CCTS) को विनियमित किया जाता है:

(a) केंद्रीय विद्युत विनियामक आयोग द्वारा

(b) भारतीय प्रतिभूति और विनिमय बोर्ड द्वारा

(c) भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा

(d) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय द्वारा

प्रश्न

1. जलवायु कार्रवाई में समझौताकारी सामंजस्य की पहचान करने की आवश्यकता है। भारत जैसे विकासशील देशों के संदर्भ में जलवायु शमन प्रयासों और आर्थिक विकास के बीच संतुलन का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए। (150 शब्द)
2. अंतर्राष्ट्रीय जलवायु पहलों में भारत की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए। ये पहल वैश्विक जलवायु कार्रवाई में कैसे योगदान देती हैं और वैश्विक मंच पर भारत की स्थिति को कैसे बेहतर बनाती है? (250 शब्द)

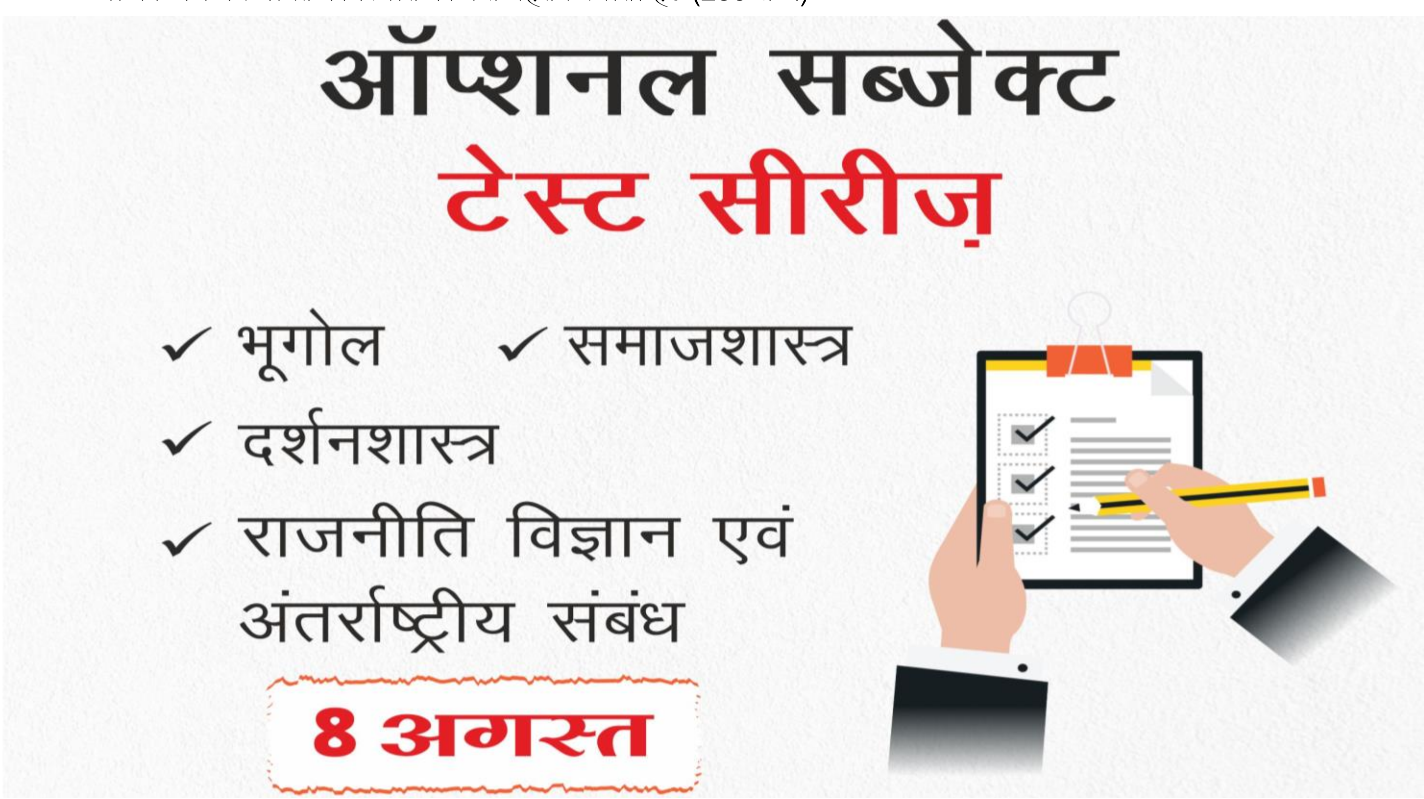

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

सरकारी योजनाएं

त्रैमासिक रिवीजन

सिविल सेवा परीक्षा में आपके ज्ञान, एनालिटिकल स्किल और सरकारी नीतियों तथा पहलों की गतिशील प्रकृति के साथ अपडेटेड रहने की क्षमता को जांचा जाता है। इसलिए इस चुनौतीपूर्ण परीक्षा के लिए एक व्यापक और सुनियोजित दृष्टिकोण काफी आवश्यक हो जाता है।

"सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिविजन" डॉक्यूमेंट के साथ सिविल सेवा परीक्षा में सफलता की अपनी यात्रा शुरू कीजिए। यह विशेष पेशकश आपको परीक्षा की तैयारी में एक परिवर्तनकारी अनुभव प्रदान करेगी। सावधानीपूर्वक तैयार किया गया हमारा यह डॉक्यूमेंट न केवल आपकी सीखने की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए बल्कि टाइम मैनेजमेंट और याद रखने की क्षमता को बढ़ाने के लिए भी डिज़ाइन किया गया है। इस डॉक्यूमेंट को त्रैमासिक आधार पर तैयार किया जाता है। यह डॉक्यूमेंट फाइनल परीक्षा के लिए निरंतर सुधार और तनाव मुक्त तैयारी हेतु अभ्यर्थियों के लिए एक आधार के रूप में कार्य करेगा।

यह सीखने की प्रक्रिया को बाधारहित और आसान यात्रा में बदल देता है। इसके परिणामस्वरूप, आप परीक्षा की तैयारी के साथ-साथ सरकारी योजनाओं, नीतियों और उनके निहितार्थों की गहरी समझ विकसित करने में सफल होते हैं।

डॉक्यूमेंट को पढ़ने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट की मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

1. सुर्ख़ियों में रहीं में योजनाएं: अपडेट रहिए, आगे रहिए!

इस खंड में **आपको नवीनतम घटनाक्रमों से अवगत** कराया जाता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि आपकी तैयारी न केवल व्यापक हो, बल्कि हालिया तिमाही के लिए प्रासंगिक भी हो। सुर्ख़ियों में रही योजनाओं के रियल टाइम एकीकरण से आप नवीनतम ज्ञान से लैस होकर आत्मविश्वास से परीक्षा देने में सक्षम बन पाएंगे।

2. सुर्ख़ियों में रहीं फ्लैगशिप योजनाएं: परीक्षा में आपकी सफलता की राह!

भारत सरकार की 'फ्लैगशिप योजनाएं' **सिविल सेवा परीक्षा के सिलेबस के कोर** में देखने को मिलती हैं। हम इस डॉक्यूमेंट में इन महत्वपूर्ण पहलों को गहराई से कवर करते हैं, जिससे सरकारी नीतियों के बारे में **आपकी गहरी समझ विकसित** हो। इन फ्लैगशिप योजनाओं पर ध्यान केंद्रित करके, हम आपको उन प्रमुख पहलुओं में महारत हासिल करने के लिए मार्गदर्शन करते हैं, जिन्हें परीक्षक सफल उम्मीदवारों में तलाशते हैं।

3. प्रश्नोत्तरी: पढ़िए, मूल्यांकन कीजिए, याद रखिए!

मटेरियल को समझने और मुख्य तथ्यों को याद रखने में काफी अंतर होता है। इस अंतर को खत्म करने के लिए, हमने इस डॉक्यूमेंट में एक 'प्रश्नोत्तरी' खंड शामिल किया है। इस डॉक्यूमेंट में **सावधानी से तैयार किए गए 20 MCQs** दिए गए हैं, जो आपकी **समझ को मजबूत करने के लिए चेकपॉइंट** के रूप में काम करते हैं। ये मूल्यांकन न केवल आपकी प्रगति का आकलन करने में मदद करते हैं बल्कि महत्वपूर्ण तथ्यों को प्रभावी ढंग से याद रखने में भी सहायक होते हैं।

'सरकारी योजनाएं त्रैमासिक रिवीजन' एक डॉक्यूमेंट मात्र नहीं है; बल्कि यह आपकी परीक्षा की तैयारी में एक रणनीतिक साथी भी है। यह आपकी लर्निंग एप्रोच में बदलाव लाता है, जिससे यह एक सतत और कुशल प्रक्रिया बन जाती है। परीक्षा की **तैयारी के आखिरी चरणों में आने वाले तनाव को अलविदा कहिए, प्रोएक्टिव लर्निंग एक्सपीरियंस** को आपनाइए और आत्मविश्वास के साथ सफलता की ओर आगे बढ़िए।

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

अध्याय 7: सामाजिक क्षेत्र: कल्याण जो सशक्त करे (Social Sector: Benefits That Empower)

इस अध्याय में भारत के नागरिकों पर आर्थिक विकास के कारण पड़ने वाले प्रभावों पर चर्चा की गई है। इसमें स्वास्थ्य, शिक्षा और महिला सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया है। साथ ही, इसमें ग्रामीण भारत के लिए सरकारी नीतियों पर चर्चा की गई है। जमीनी स्तर पर विकास और ग्रामीण भारत के लिए नीतियों और कार्यक्रमों की भूमिका पर भी प्रकाश डाला गया है।

अध्याय का प्रीकैप

कल्याण की बदलती प्रकृति • नया कल्याण आधारित दृष्टिकोण (खर्च किए गए प्रति रुपये के प्रभाव को बढ़ाना) • प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ प्रक्रिया में सुधारों पर जोर देना। • बजट के लिए लक्ष्य उन्मुख दृष्टिकोण • पूंजीगत व्यय में तेजी • डेटा गवर्नेंस	**सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा** • सरकारी स्वास्थ्य व्यय में वृद्धि • माइंडिंग द माइंड: मानसिक स्वास्थ्य की निगरानी करना • भारत में मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी पहलें • बच्चों और युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य का विकास • मानसिक स्वास्थ्य पर नीतिगत सिफारिशें
शिक्षा • शिक्षा क्षेत्र में विभिन्न योजनाएं • स्कूल की अवसंरचना में सुधार • नई शिक्षा नीति-2020-परिवर्तनकारी साधन • अनुसंधान एवं विकास में भारत की प्रगति	**महिलाओं का सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण** • लिंग आधारित बजट में लगातार वृद्धि • सामाजिक: शिक्षा, कौशल • आर्थिक: श्रम शक्ति भागीदारी, वित्तीय समावेशन • राजनीतिक: नारी शक्ति वंदन अभियान, 2023 • संपत्ति पर स्वामित्व की समानता
ग्रामीण अर्थव्यवस्था: विकास के इंजन को आगे बढ़ाना • ग्रामीण भारत में जीवन की गुणवत्ता में सुधार • MGNREGS के सुरक्षा जाल का आधुनिकीकरण • जमीनी स्तर पर ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देना	**सतत विकास** • SDG लक्ष्यों में प्रगति • नीति आयोग, SDG इंडिया इंडेक्स 2023-2024 में राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का प्रदर्शन

परिचय

- भारत को 2047 तक **"विकसित भारत" (विकसित भारत@2047)** बनाने के लिए प्रभावी सार्वजनिक नीति कार्यान्वयन के साथ-साथ सतत और न्यायसंगत आर्थिक विकास महत्वपूर्ण है। इसके लिए व्यापक क्षेत्र को कवर किया गया है। हालांकि विकास की यह यात्रा पुरानी और नई चुनौतियों के साथ-साथ केंद्रीकृत और स्थानीय समाधानों अपनाने के साथ निरंतर जारी है।
- पिछले दशक के बाद, भारतीय कल्याणकारी अवधारणा को महत्वपूर्ण रूप से एक **अधिक दीर्घकालिक उन्मुख, कुशल और सशक्त रूप में बदल** दिया गया है। इसने कल्याणकारी इकोसिस्टम को और मजबूत बनाया है और देश में मानव विकास के लिए एक ठोस नींव रखने में मदद की है।
- वित्त वर्ष 2016 से सामाजिक सेवाओं पर सरकारी व्यय में वृद्धि देखी गई है

सरकार द्वारा किए गए सामाजिक व्यय के रुझान (संयुक्त रूप से केंद्र और राज्य द्वारा) (GDP के प्रतिशत के रूप में)

क्षेत्र	2017-18	2021-22
सामाजिक सेवाओं पर व्यय	6.7	7.6
शिक्षा	2.8	2.7
स्वास्थ्य	1.4	1.9

  - वित्त वर्ष 2018 से वित्त वर्ष 2024 के बीच में, नाममात्र सकल घरेलू उत्पाद (GDP) लगभग 9.5% की चक्रवृद्धि वार्षिक वृद्धि दर (CAGR) से बढ़ा है।
  - कुल मिलाकर, **कल्याण पर किए गए व्यय** में **12.8%** की CAGR से वृद्धि हुई है
    - **शिक्षा** पर किए गए व्यय में **9.4%** के CAGR से वृद्धि हुई है
    - स्वास्थ्य पर किए गए व्यय में 15.8% के CAGR से वृद्धि हुई है।
- **सरकार द्वारा सामाजिक कल्याण पर किए गए व्यय का रुझान**
  - सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में सामाजिक सेवाओं पर किए गए व्यय में 2017-18 से 2021-22 तक की अवधि में वृद्धि की प्रवृत्ति देखी गई है।
  - सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में शिक्षा पर किए गए व्यय में 2017-18 से 2020-21 के बीच वृद्धि देखी गई है। हालांकि इसमें 2021-22 में गिरावट आयी।
  - सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में स्वास्थ्य पर किए गए व्यय में 2017-18 से 2021-22 तक की अवधि में वृद्धि दर्ज की गई है।

विकास को सशक्त कल्याण के साथ जोड़ना: एक आदर्श बदलाव

- भारत के **पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** बनने के साथ ही, विभिन्न पहलों के जरिए नागरिकों के जीवन स्तर में सुधार हुआ है:
  - लगभग 10.3 करोड़ महिलाओं को प्रधान मंत्री उज्ज्वला योजना के तहत गैस कनेक्शन प्रदान किए गए हैं।
  - स्वच्छ भारत मिशन के तहत 11.7 करोड़ शौचालय बनाए गए हैं।
  - 52.6 करोड़ जन धन खाते खोले गए हैं।
  - प्रधान मंत्री आवास योजना के तहत गरीब लोगों के लिए 3.47 पक्के घर बनाए गए हैं।
  - जल जीवन मिशन के तहत 11.7 करोड़ परिवारों को नल के पानी के कनेक्शन दिए गए हैं।
  - आयुष्मान भारत योजना के तहत अब तक 6.9 करोड़ लोगों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती हुए है।
- भारत का सामाजिक और आर्थिक परिदृश्य विभिन्न क्षमताएं, अवसर और चुनौतियां प्रस्तुत करता है:-
  - **क्षमता:** डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर (DPI) के जरिए लोगों का कल्याण किया जा रहा है।
  - **अवसर:** 18% जनसंख्या ((वैश्विक औसत 15.4%) 15 से 24 वर्ष की आयु वर्ग की है।
  - **चुनौतियां:** लर्निंग आउटकम्स में सुधार, कुपोषण को खत्म करना, क्षेत्रीय, जाति और लिंग के आधार पर मौजूद असमानताओं से निपटना, सीमित वित्तीय संसाधन।
  - इन चुनौतियों के लिए बुनियादी सुविधाओं तक सार्वभौमिक पहुंच, सामाजिक अवसंरचना के विकास और व्यक्तियों के जीवन स्तर में सुधार करने में सक्षम बनाने पर ध्यान केंद्रित करने वाले दीर्घकालिक उपायों की आवश्यकता है।

सफलता की कहानियां:

- **लेह के डेमचोक गांव** को **2022 में जल जीवन मिशन** के तहत पहली बार कार्यात्मक **नल जल कनेक्शन** मिले।
- 2018 में पहली बार **महाराष्ट्र** के **बुलुमगावन** गांव में **बिजली की आपूर्ति** की गई।

लोगों को 'कल्याण' के ट्रेडमिल से 'विकास' के ट्रेडमिल पर लाना न केवल वित्तीय स्थिरता का मामला है, बल्कि इससे नागरिकों के आत्मसम्मान और व्यक्तिगत गरिमा को बढ़ाने में भी मदद मिलती है।

नए कल्याणकारी दृष्टिकोण का आधार

- **नए कल्याणकारी दृष्टिकोण** में **प्रति रुपये व्यय के प्रभाव** को बढ़ाकर प्रभावशीलता लाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इस प्रकार, **प्रौद्योगिकी के उपयोग के साथ-साथ प्रक्रिया सुधार और जवाबदेही पर जोर** दिया गया है।

- **स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और शासन के डिजिटलीकरण** से **प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण तथा JAM ट्रिनिटी** का उपयोग करके भारत में कल्याणकारी कार्यक्रमों की प्रभावशीलता को बढ़ाया गया है। इसके चलते लीकेज में कमी आयी है और राजकोषीय दक्षता में सुधार हुआ है।

Constituents of Data Governance and Quality Index	
Data Analysis and Dissemination	Inter- Agency Collaboration
Data security and HR capability	Data Management
Action Plan	Data Quality
Intra M/D synergistic Data	Use of Technology
Data and Strategy Unit	Good Practices
Data Generation	Perspective Analytics

- **बजट के लिए लक्ष्योन्मुखी दृष्टिकोण, आउटपुट बजट, परिणाम निगरानी फ्रेमवर्क (नीति आयोग द्वारा)** को अपनाना इसी दिशा में उठाए गए कुछ प्रमुख कदम हैं।
- **पूंजीगत व्यय में वृद्धि** से उत्पादकता में वृद्धि होती है तथा सामाजिक परिसंपत्तियों का निर्माण भी होता है।
- **डेटा गवर्नेंस:** सरकार पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने तथा गवर्नेंस में डेटा के उपयोग को मुख्यधारा में शामिल करने के लिए रियल टाइम आधारित निगरानी के लिए विभिन्न पहलों का उपयोग कर रही है। उदाहरण के लिए- **नेशनल डेटा शेयरिंग एंड एक्सेसिबिलिटी पॉलिसी, जिला विकास समन्वय और निगरानी समिति (दिशा/ DISHA)**।
  - **डेटा गवर्नेंस गुणवत्ता सूचकांक (DGQI)** का लक्ष्य एक मानकीकृत फ्रेमवर्क पर मंत्रालयों/ विभागों की डेटा तैयारी का आकलन करना है। इस कदम के जरिए स्वस्थ प्रतिस्पर्धा और सहयोगियों से सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया जाएगा।
- **लास्ट माइल सर्विस डिलीवरी के लिए लक्षित सुधार:** इसके लिए सरकार कई कार्यक्रम चला रही है, उदाहरण के लिए- आकांक्षी जिला कार्यक्रम (ADP), आकांक्षी ब्लॉक कार्यक्रम, जीवंत गाँव कार्यक्रम, विकसित भारत संकल्प यात्रा इत्यादि।
- **स्वास्थ्य और स्वच्छता पर ध्यान देना:** NFHS-5 के अनुसार 12-23 माह की आयु के पूर्ण टीकाकरण वाले बच्चों का प्रतिशत 2015-16 में 77.9% से बढ़कर 2019-21 83.8% हो गया है।
- **वहनीय सामाजिक सुरक्षा योजनाएं:** अटल पेंशन योजना (APY), पी.एम. जीवन ज्योति योजना (PMJJY), और पी.एम. सुरक्षा बीमा योजना (PMSBY)।
- **निजी क्षेत्रक की भागीदारी में वृद्धि:**
  - **वित्त वर्ष 2017-18 से वित्त वर्ष 2021-22 के बीच कंपनियों के वार्षिक CSR व्यय में वृद्धि दर्ज की गई है।**
  - कुल कंपनियों में **सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयां** मात्र 2 प्रतिशत हैं, लेकिन ये कुल CSR राशि में लगभग 17 प्रतिशत का योगदान देती हैं।
  - **क्षेत्रवार CSR:** शिक्षा (32.4%), स्वास्थ्य सेवा और स्वच्छता (38.4%), ग्रामीण विकास (6.9%) आदि।

कुल CSR व्यय: शीर्ष 5 राज्य (वित्त वर्ष 2022)

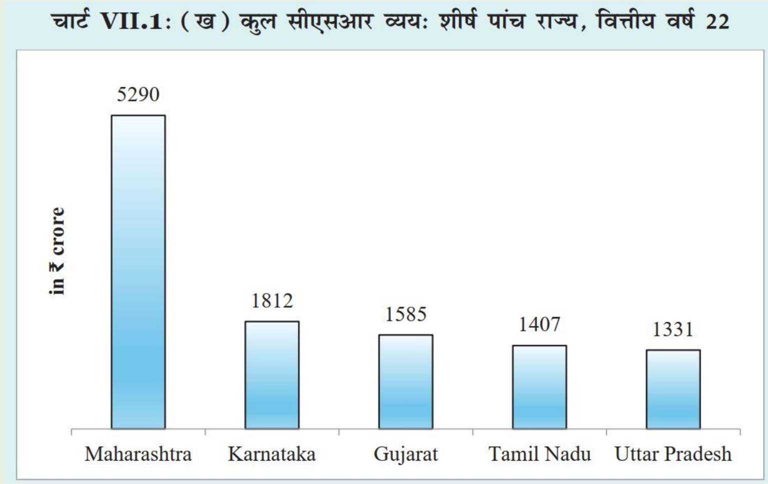

  - CSR का अधिकांश लाभ कॉर्पोरेट मुख्यालयों के आस-पास के क्षेत्रों को मिलता है, जबकि अविकसित क्षेत्र अपेक्षाकृत कम वित्त प्राप्त करते हैं।

केस स्टडी: आकांक्षा से परिवर्तन की ओर प्रगति

जम्मू और कश्मीर के बारामुला तथा झारखंड के गुमला को लोक प्रशासन में उत्कृष्टता के लिए प्रतिष्ठित प्रधानमंत्री पुरस्कार प्रदान किया गया है।

- बारामुला ने प्रसव प्रतीक्षा वार्ड स्थापित करके अपनी चुनौतीपूर्ण स्थलाकृति और प्रतिकूल मौसम संबंधी चुनौतियों का समाधान किया है। इसके चलते 20,000 गर्भवती महिलाओं को लाभ मिला तथा कुपोषण के मामलों में भी कमी आयी है।
- गुमला में रागी की खेती को बढ़ावा देकर एनीमिया और कुपोषण की समस्या को दूर किया गया। यह कार्य आजीविका के अवसरों के माध्यम से स्वयं सहायता समूहों (SHGs) में महिलाओं को सशक्त बनाकर किया गया।

समग्र प्रगति और परिणाम

- **MPI में भारत की प्रगति: 2019-21 बनाम 2015-16**
  - नीति आयोग के अनुसार, 2013-14 और 2022-23 के बीच 24.82 करोड़ लोग MDP से बाहर आ गए हैं।
  - उत्तर प्रदेश में गरीबों की संख्या में सबसे अधिक गिरावट दर्ज की गई है, उसके बाद बिहार का स्थान है।
- **घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण 2022-23:**
  - असमानता का मापन करने वाले सूचकांक गिनी गुणांक में ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों के मामले में कमी आई है।
  - ग्रामीण-शहरी विभाजन में भी कमी आई है।
  - 2011-12 से 2022-23 के बीच आबादी के सबसे निचले 5% वर्ग की खपत शीर्ष 5% की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ी है।

सभी के लिए गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवा

प्रमुख सरकारी योजनाएं:

योजनाएं	उद्देश्य
आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना	माध्यमिक और तृतीयक स्तरीय चिकित्सा के लिए अस्पतालों में भर्ती होने वाले वंचित परिवारों के लिए 5 लाख प्रति वर्ष का स्वास्थ्य बीमा कवर।
पीएम जन औषधि केंद्र	बाजार दरों की तुलना में 50-90% सस्ती गुणवत्ता वाली दवाइयां।
अमृत	उपचार के लिए सस्ती दवाइयां और विश्वसनीय उपचार।
आयुष्मान भव अभियान	हर गांव/ कस्बे में स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करना।
आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन	देशभर में एक राष्ट्रीय डिजिटल स्वास्थ्य इकोसिस्टम बनाना।
ई-संजीवनी (2019)	दूरदराज के क्षेत्रों में आभासी डॉक्टर परामर्श के लिए टेलीमेडिसिन सुविधा।

माइंडिंग द माइंड: मानसिक स्वास्थ्य परिदृश्य की निगरानी करना

मानसिक स्वास्थ्य **मानसिक स्वास्थ्य की वह स्थिति है जो लोगों को जीवन के तनावों से निपटने, अपनी क्षमताओं को पहचानने, अच्छी तरह से सीखने** और काम करने तथा अपने समुदाय में योगदान करने में सक्षम बनाती है।

मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं की प्रवृत्ति में वृद्धि

- **राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण (2015-16) के अनुसार**
  - **भारत में 10.6% वयस्क मानसिक विकारों से पीड़ित हैं**
  - **मानसिक विकारों के लिए उपचार अंतराल 70% से 92% के बीच है।**
  - ग्रामीण क्षेत्रों (6.9%) और शहरी गैर-मेट्रो क्षेत्रों (4.3%) की तुलना में **शहरी मेट्रो क्षेत्रों (13.5%) में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की दर उच्च है।**
- 25-44 वर्ष की आयु के व्यक्ति मानसिक बीमारियों से सबसे अधिक प्रभावित होते हैं।
- **WHO-2019 के अनुसार, दुनिया में प्रत्येक 8 में से 1 व्यक्ति** मानसिक विकार से पीड़ित था।

बच्चों और युवाओं में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं बढ़ रही हैं

- WHO-2021 के अनुसार, 10-19 वर्ष के हर 7 में से 1 युवा मानसिक विकार का अनुभव करता है।

© Vision IAS

- बच्चों और किशोरों में मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं में वृद्धि का कारण इंटरनेट, सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग करना है।
  - अतिशय और अनियंत्रित उपयोग एक समय बाद डूम स्क्रॉलिंग (सोशल मीडिया का जुनूनी उपयोग) का रूप ले लेता है।
  - स्क्रीन टाइम में वृद्धि और फ्री प्ले में कमी युवाओं को **'चिंतित पीढ़ी (The Anxious Generation)'** बना रही है।
  - **NCPCR के अनुसार,** 23.8% बच्चे बिस्तर पर लेटे हुए स्मार्टफोन का उपयोग करते हैं, और 37.2% बच्चों में स्मार्टफोन के उपयोग के कारण एकाग्रता की कमी देखने को मिलती है।
  - सोशल मीडिया तंबाकू के समान है और तकनीकी प्लेटफॉर्म पर चेतावनी लेबल लगाए जाने चाहिए (विवेक मूर्ति, U.S. सर्जन जनरल)

अर्थशास्त्र के नजरिए से मानसिक स्वास्थ्य का मुद्दा

- यह किसी व्यक्ति के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करता है और किसी व्यक्ति की क्षमता के विकास को बाधित करता है। यह अनुपस्थिति, उत्पादकता में कमी, अक्षमता के कारण उत्पादकता में महत्वपूर्ण हानि का कारण बनता है।
- गरीबी तनावपूर्ण जीवन स्थितियों, वित्तीय अस्थिरता, आर्थिक अवसरों में कमी, मानसिक स्वास्थ्य के लिए जोखिम के कारण मानसिक स्वास्थ्य को भी प्रभावित करती है।

भारत में मानसिक स्वास्थ्य के लिए की गई पहलें

पहलें	उद्देश्य
नीतियां	राष्ट्रीय मानसिक स्वास्थ्य नीति (2014), राष्ट्रीय युवा नीति (2014) और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)
जिला मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम	राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत जिलों को केंद्रीय निधि प्रदान करना
राष्ट्रीय टेली मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम	टोल-फ्री नंबर के जरिए मानसिक स्वास्थ्य परामर्श तक सार्वभौमिक पहुंच सुनिश्चित करना
राष्ट्रीय किशोर स्वास्थ्य कार्यक्रम	किशोरों की आबादी का समग्र विकास करना
आयुष्मान भारत स्कूल स्वास्थ्य एवं कल्याण कार्यक्रम	स्वास्थ्य और कल्याण राजदूतों (शिक्षकों) को संवेदनशील बनाना और प्रशिक्षित करना NCERT द्वारा विकसित "भावनात्मक कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य" मॉड्यूल
राज्यों द्वारा शुरू की गई अनूठी पहल	• **मेघालय (बच्चों और किशोरों को लक्षित सहायता प्रदान करना)** • **दिल्ली (नर्सरी से कक्षा 8 तक के छात्रों के लिए हैप्पीनेस पाठ्यक्रम)**

मानसिक स्वास्थ्य पर की गई नीतिगत सिफारिशें

- WHO के मानकों के अनुसार **प्रति एक लाख की जनसंख्या पर 3 मनोचिकित्सक होने चाहिए** जबकि 2021 में एक लाख की आबादी पर 0.75 मनोचिकित्सक थे।
- शिक्षकों और छात्रों के लिए **आयु के अनुसार उपयुक्त मानसिक स्वास्थ्य पाठ्यक्रम** तैयार किया जाना चाहिए।
- समुदायों को व्यापक रूप से शामिल करते हुए **बॉटम-अप रणनीति** का समर्थन करना चाहिए।

स्वास्थ्य सांख्यिकी में प्रभाव उत्पन्न होता है

- **राष्ट्रीय स्वास्थ्य व्यय, सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवा की बढ़ती भूमिका को दर्शाता हैं:**
  - कुल स्वास्थ्य व्यय के प्रतिशत के रूप में सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय **28.6%** (2013-14) से बढ़कर **41.4%** (2019-20) हो गया है।
  - प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा व्यय की हिस्सेदारी 51.3% (वित्त वर्ष 2015) से बढ़कर 55.9% (वित्त वर्ष 2020) हो गई है।
  - आउट-ऑफ-पॉकेट व्यय (OOPE) 64.2% (2013-14) से घटकर 47.1% (2019-20) हो गया है।
  - **शिशु मृत्यु दर** 39 (2013) से घटकर **28 (2020)** हो गई है
  - **मातृ मृत्यु दर** 167 (2014) से घटकर **97 (2020)** हो गई है

- स्वास्थ्य मंत्रालय के अनुमानों के अनुसार, यदि लाभार्थियों ने आयुष्मान भारत (PM-JAY) के दायरे से बाहर अपने पास से यही उपचार करवाया होता तो उपचार की कुल लागत 1.5 -2 गुना अधिक होती।
- **PMJAY** ने माइक्रोफाइनेंस ऋणों में **NPA दरों में उल्लेखनीय कमी** की है। यह स्वास्थ्य बीमा और वित्तीय स्थिरता के बीच परस्पर क्रिया को उजागर करता है।

शिक्षा

- **नई शिक्षा नीति (2020)** में SDG लक्ष्य 4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) को शामिल किया गया है और युवाओं को ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था के लिए तैयार करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- **स्कूली शिक्षा:** NEP का उद्देश्य प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE), आधारभूत साक्षरता, अनुभवात्मक शिक्षा और समग्र मूल्यांकन पर जोर देकर बेहतर शिक्षण परिणामों के लिए स्कूली शिक्षा में बदलाव लाना है। इस पहल का एक उदाहरण 2023 में शुरू किया गया **"पोषण भी पढ़ाई भी"** कार्यक्रम है।

कार्यक्रम	उद्देश्य
निष्ठा	एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम
जिला शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान (DIETs)	स्कूली शिक्षा और शिक्षकों की शिक्षा का मार्गदर्शन करने वाली जिला स्तरीय नोडल संस्थाएँ
कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय	वंचित समूहों की लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय
राष्ट्रीय मूल्यांकन केंद्र-परख/ PARAKH	स्कूली शिक्षा बोर्डों का मार्गदर्शन करना, उपलब्धि सर्वेक्षण, छात्र मूल्यांकन के लिए मानक मानदंड, मूल्यांकन के लिए क्षमता निर्माण।
ज्ञान साझाकरण के लिए डिजिटल अवसंरचना (DIKSHA)	NCERT द्वारा स्कूली शिक्षा के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म।
राज्यों के लिए शिक्षण-शिक्षण और परिणामों को मजबूत करना (STARS)	स्कूली शिक्षा के संचालन की गुणवत्ता में सुधार करना
उभरते भारत के लिए प्रधानमंत्री स्कूल (पीएम श्री)	आदर्श विद्यालयों की स्थापना करना
उल्लास -नव भारत साक्षरता कार्यक्रम	15 वर्ष से अधिक आयु के निरक्षरों के लिए बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान का प्रसार करना।
पी.एम. पोषण	इसके तहत सरकारी और सरकार द्वारा सहायता प्राप्त स्कूलों में कक्षा 1 से 8 तक के छात्रों के लिए गर्म पका हुआ भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है।
विद्यांजलि	यह कार्यक्रम स्वयंसेवकों (शैक्षणिक संस्थानों के पूर्व छात्र, सेवारत और सेवानिवृत्त शिक्षक, वैज्ञानिक) को सीधे उनकी पसंद के स्कूलों से जोड़ता है

स्कूल अवसंरचना निर्माण में प्रगति

- **स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF-SE) 2023:** यह प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ECCE) और आधारभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (FLN) के लिए एक व्यापक रोडमैप तैयार करता है।
- **व्यावसायिक शिक्षा:** समग्र शिक्षा योजना के तहत, स्कूलों की अवसंरचना को मजबूत करने के लिए राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों को फर्नीचर, कंप्यूटर सहित अन्य उपकरणों की खरीद के लिए एक गैर-आवर्ती अनुदान दिया जाता है। NEP 2020 सभी संस्थानों में व्यावसायिक शिक्षा को शामिल करने, कौशल अंतराल तथा स्थानीय नौकरियों में अवसरों को लक्षित करने पर बल देती है।

- **उच्चतर शिक्षा:** वित्त वर्ष 2015 से उच्चतर शिक्षा में नामांकन दर में 26.5% की वृद्धि देखी गई है।
    - उच्चतर शिक्षा में कुल छात्र नामांकन दर में 2014-15 से 2021-22 तक वृद्धि देखी गई है।
    - यह वृद्धि मुख्य रूप से वंचित समूहों (SC, ST, OBC) के नामांकन में वृद्धि के कारण हुई है, साथ ही महिला नामांकन दर में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जिसमें वित्त वर्ष 2015 और वित्त वर्ष 2022 के बीच 31.6% की वृद्धि हुई है (AISHE 2021-22)

वर्ष	2012-13	2021-22
लड़कियों के लिए शौचालय	88.1	97.5
लड़कों के लिए शौचालय	67.2	96.2
पुस्तकालय/पठन कक्ष	69.2	87.3
विद्युत	54.6	89.3
कंप्यूटर	22.2	47.5
इंटरनेट	6.2	33.9

- **डिजिटल प्रिज्म के जरिए आजीवन सीखने की फिर से कल्पना करना:** डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर का उपयोग डिजिटल समाधानों को बढ़ाने के लिए किया जाता है।
    - राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने आजीवन सीखने को प्रोत्साहित करने के लिए राष्ट्रीय क्रेडिट फ्रेमवर्क (NCrF) की शुरुआत की।
    - **ऑटोमैटेड परमानेंट एकेडमिक अकाउंट रजिस्ट्री (APAAR):** यह संस्थानों, छात्रों और अध्यापकों के लिए एक इलेक्ट्रॉनिक रजिस्ट्री के रूप में कार्य करती है।
    - **अकादमिक बैंक ऑफ क्रेडिट (ABC):** अकादमिक क्रेडिट का ऑनलाइन संग्रह, उच्च शिक्षा संस्थानों (HEI) में छात्रों के नामांकन या शिक्षा ग्रहण करने को सुविधाजनक बनाता है।
    - **भारत की ऑनलाइन शिक्षण अवसंरचना:**
        - **स्वयं/ SWAYAM (स्टडी वेब्स ऑफ एक्टिव लर्निंग फॉर यंग एस्पायरिंग माइंड्स):** यह एक ओपन लर्निंग मैसिव ओपन ऑनलाइन कोर्स प्लेटफॉर्म है।
        - **स्वयं प्रभा:** UG/PG स्तर की शैक्षिक सामग्री प्रदान करने वाली एक डायरेक्ट टू होम सैटेलाइट टेलीविजन आधारित सेवा।
        - **पीएम ई-विद्या:** यह दीक्षा और साथी प्लेटफॉर्म के जरिए विविध अध्ययन सामग्री प्रदान करके डिजिटल शिक्षा प्रयासों को एकीकृत करता है।

शिक्षा क्षेत्रक में आगे की राह

- **उद्देश्य के मामले में एकता:** केंद्र, राज्य और स्थानीय सरकारों के बीच सहयोग स्थापित किया जाना चाहिए।
- **लेंडिंग ए हैंड इंडिया (LAHI) मॉडल** के तहत व्यावसायिक शिक्षा प्रदान करनी चाहिए।
    - LAHI व्यावसायिक शिक्षा को मुख्य पाठ्यक्रम के रूप में शामिल करने के लिए सरकार और नागरिक समाज के बीच सहयोग पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **सार्वजनिक शिक्षा की लागत-प्रभावशीलता को बढ़ाना।**

भारत अनुसंधान और विकास में प्रगति कर रहा है

उपलब्धियां

- वित्त वर्ष 2024 में 1 लाख पेटेंट दिए गए।
- 2023 में **वैश्विक नवाचार सूचकांक (GII)** में भारत **40वें स्थान पर** रहा।
- वित्त वर्ष 2011 से 2021 के बीच **अनुसंधान एवं विकास (GERD) पर कुल व्यय पिछले कुछ वर्षों से लगातार बढ़कर** दोगुने से भी अधिक हो गया है।
- **भारत का अनुसंधान एवं विकास निवेश GDP का मात्र 0.64%** है, जो **चीन (2.41%), अमेरिका (3.47%) और इजरायल (5.71%)** जैसे देशों की तुलना में काफी कम है।
    - **भारत में निजी क्षेत्रक**, GERD में केवल **36.4% योगदान** देता है, जबकि **चीन में यह आंकड़ा 77% और अमेरिका में 75%** है।

- अनुसंधान एवं विकास परिवेश को मजबूत करने और बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन **'अनुसंधान'** शुरू किया गया है।
- सरकार ने वित्त वर्ष 2025 के अंतरिम बजट में **"जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान"** के नारे को अपनाते हुए देश में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए 1 लाख करोड़ रुपये आवंटित करने की घोषणा की हैं।

महिलाओं का सामाजिक और आर्थिक सशक्तिकरण

भारत महिलाओं के विकास से **महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास** की ओर बढ़ रहा है। 2023 में भारत की G-20 प्रेसीडेंसी ने भी अपनी छह प्राथमिकताओं में से एक के रूप में **महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास** को सूचीबद्ध किया है।

- **जेंडर बजट में लगातार वृद्धि:**
  - **वित्त वर्ष 2024 के बजट अनुमान की तुलना में वित्त वर्ष 2024 में जेंडर बजट विवरण (GBS) में 38.7% की वृद्धि की गई है।**
  - वित्त वर्ष 2025 के कुल बजट में जेंडर आधारित बजट का हिस्सा बढ़कर 6.5% हो गया है, यह वित्त वर्ष 2006 में GBS की शुरुआत के बाद से सबसे अधिक है
- **महिलाओं का सामाजिक सशक्तिकरण:**
  - **"बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ"** के तहत बालिकाओं के लालन-पालन, उन्हें शिक्षित करने और उनके लिए बचत करने (सुकन्या समृद्धि योजना के माध्यम से) के प्रति सामूहिक चेतना को संवेदनशील बनाया जा रहा है।
  - **जन्म के समय लिंगानुपात** (SRB) **918 (2014-15)** से बढ़कर **930 (2023-24)** हो गया है
  - **मातृ मृत्यु दर, 130/ लाख जीवित जन्म** (2014-16) से घटकर 97 (2018-20) हो गई है।
  - **संस्थागत प्रसव** 78.9% (2015-16) से बढ़कर 88.6% (2019-21) हो गया है।
- **आंगनबाड़ी केंद्रों के जरिए महिलाओं और बच्चों की पोषण सुरक्षा**
  - **सक्षम आंगनवाड़ी** और **पोषण 2.0 कार्यक्रम** का उद्देश्य महिलाओं और बच्चों की **पोषण सुरक्षा** सुनिश्चित करना है।
  - **बुनियादी आवश्यकताओं तक पहुंच:** यह कार्य स्वच्छ भारत मिशन (SBM), स्वच्छ रसोई गैस (उज्ज्वला), स्वच्छ जल (JJM) के माध्यम से किया जा रहा है।
  - **संबल के जरिए सुरक्षा:** वन स्टॉप सेंटर/ सखी केंद्र चिकित्सा और कानूनी सहायता प्रदान करते हैं।
- **शिक्षा और कौशल:**
  - सर्व शिक्षा अभियान (2000) और शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 की मदद से स्कूल में लैंगिक समानता हासिल की गई है। **जैसा कि सावित्रीबाई फुले ने कहा है"... शिक्षा के बिना एक महिला जड़ों या पत्तियों के बिना बरगद के पेड़ की तरह है।"**
  - **उच्चतर शिक्षा** में महिला GER लगातार पांच वर्षों से पुरुष GER से अधिक रही है।
  - प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY) के तहत प्रशिक्षित महिलाओं की भागीदारी 42.7% (वित्त वर्ष 2016) से बढ़कर 52.3% (वित्त वर्ष 2024) हो गई है।
- **विज्ञान में महिलाएं:**
  - विश्व बैंक की 2018 की रिपोर्ट के अनुसार, STEM में स्नातक महिलाएं 42.7% हैं।
    - 'विज्ञान और इंजीनियरिंग में महिलाएं- **किरण (WISE KIRAN)'** योजना STEM क्षेत्रक में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने पर केंद्रित है।
    - 2020 में शुरू किए गए **विज्ञान ज्योति कार्यक्रम** का उद्देश्य 9वीं से 12वीं कक्षा तक के विभिन्न विज्ञान और प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों में लड़कियों का प्रतिनिधित्व बढ़ाने पर केंद्रित है।
- **राजनीतिक सशक्तीकरण: नारी शक्ति वंदन अभियान, 2023 (NSVA)** महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

महिलाओं का आर्थिक सशक्तीकरण

- **श्रम बल में बढ़ती भागीदारी:** महिला LFPR 23.3% (2017-18) से बढ़कर 37% (2022-23) हो गई।

© Vision IAS

- **वित्तीय समावेशन:** प्रधानमंत्री जन धन योजना के तहत बैंक खाते खोले जा रहे है। योजना के तहत खोले गए कुल खातों में 55.6% खाते महिलाओं के नाम हैं।
- **ग्रामीण माइक्रोफाइनेंस:** दीनदयाल अंत्योदय योजना- NRLM 8.3 मिलियन SHG में 89 मिलियन महिलाओं को कवर करती है
- **उद्यमिता:**
    - प्रधानमंत्री मुद्रा योजना के तहत 68% ऋण महिलाओं को दिए गए हैं।
    - स्टैंड-अप इंडिया के तहत 77.7% लाभार्थी महिलाएं हैं।

परिसंपत्ति स्वामित्व की समानता की ओर

परिसंपत्ति स्वामित्व में पर्याप्त समानता महिलाओं की स्वतंत्र पहचान को साकार करेगी। महिलाओं द्वारा विकास का नेतृत्व करने के लिए, इसका स्वामित्व भी उनके पास होना चाहिए।

- नौ सैंपल आधारित राज्यों में केवल 14 प्रतिशत भूमि मालिक महिलाएं थीं
- प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत घरों का स्वामित्व किसी महिला को ही देने की अनिवार्यता लैंगिक समानता की दिशा में सामाजिक परिवर्तन को बढ़ावा देने का एक प्रयास है।

ग्रामीण अर्थव्यवस्था: विकास इंजन को आगे बढ़ाना

ग्रामीण भारत का एकीकृत और सतत विकास ग्रामीण भारत के लिए सरकारी रणनीति का केंद्र है।

ग्रामीण भारत में जीवन की गुणवत्ता को बढ़ावा देना

क्षेत्र	पहलें
बुनियादी सुविधाएं	स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण), जल जीवन मिशन, सौभाग्य
बैंकिंग और वित्तीय समावेशन	प्रधानमंत्री जन धन योजना, किसान क्रेडिट कार्ड, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंक
शिक्षा	समग्र शिक्षा अभियान।
स्वास्थ्य	आयुष्मान आरोग्य मंदिर

मनरेगा के सुरक्षा तंत्र को मजबूत करना और आधुनिकीकरण करना

- मनरेगा का लक्ष्य ग्रामीण परिवारों को प्रति वर्ष **कम-से-कम 100 दिन की गारंटीकृत मजदूरी आधारित रोजगार** प्रदान करना है, जिनके वयस्क सदस्य अकुशल मैनुअल काम के लिए स्वेच्छा से काम करते हैं।
- **इस योजना का पूर्ण लाभ उठाने के लिए इसकी दक्षता में सुधार के लिए कई उपाय पेश किए गए हैं:**
    - उदाहरण के लिए कार्यों की **जियो-टैगिंग, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण** (99.9% से अधिक भुगतान राष्ट्रीय इलेक्ट्रॉनिक निधि प्रबंधन प्रणाली के जरिए होता है) **सामाजिक लेखा परीक्षा** इकाइयों की स्थापना करना।
    - **बेयर फुट टेक्नीशियन और उन्नति कौशल परियोजना** जैसी पहलों के जरिए क्षमता विकास को बढ़ावा दिया जा रहा है।
- **मनरेगा के डेटा से प्राप्त जानकारी राज्यों में मनरेगा से जुड़े कार्यों की मांग में अंतर को दर्शाती है**
    - यद्यपि, तमिलनाडु में देश की गरीब आबादी का <1% हिस्सा है, फिर भी यहां जारी किए गए कुल मनरेगा फंड का ~ 15% हिस्सा है।
    - केरल, जिसमें गरीब आबादी का केवल 0.1% हिस्सा निवास करता है, वहां देश के मनरेगा फंड का ~ 4% उपयोग किया।
    - बिहार और उत्तर प्रदेश, जहां गरीब आबादी का लगभग 45% (क्रमशः 20% और 25%) निवास करता है, उन्हें मनरेगा फंड का केवल 17% (क्रमशः 6% और 11%) हिस्सा प्राप्त होता है।

ग्रामीण उद्यमिता को जमीनी स्तर पर बढ़ावा देना

सरकार ने किफायती वित्त तक निर्बाध पहुंच सुनिश्चित करने और आकर्षक बाजार अवसरों का सृजन करने पर एक अलग फोकस के साथ जीवंत योजनाबद्ध हस्तक्षेपों का एक सेट लागू किया है, जिसका उद्देश्य अंततः ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देना है।

ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए किफायती वित्त और बाजार के अवसरों पर ध्यान केंद्रित करने वाली कई पहलें:-

योजनाएं	**फोकस क्षेत्र**
योजना दीनदयाल अंत्योदय योजना-	स्वरोजगार और कुशल मजदूरी के अवसरों के जरिए गरीब परिवारों को सशक्त बनाना, सौर पैनल उत्पादन, सैनिटरी पैड निर्माण को बढ़ावा देना
राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM)	तीन साल के भीतर तीन करोड़ स्वयं सहायता समूह (SHG) परिवारों को न्यूनतम वार्षिक आय 1 लाख रुपए तक बढ़ाना।
लखपति दीदियों की पहल	SHG द्वारा बनाए गए प्रामाणिक हस्तनिर्मित उत्पाद, बाजार पहुंच को बढ़ाना।
सरस आजीविका पोर्टल स्टार्ट-अप ग्राम उद्यमिता कार्यक्रम (SVEP) और आजीविका ग्रामीण एक्सप्रेस योजना (AGEY)	DAY-NRLM के तहत गैर-कृषि आजीविका को बढ़ावा देना
ग्रामीण स्वरोजगार प्रशिक्षण संस्थान (RSETI) योजना	ग्रामीण उद्यमिता को बढ़ावा देने के लिए कौशल और उद्यमिता प्रशिक्षण
दीन दयाल उपाध्याय ग्रामीण कौशल्या योजना (DDU-GKY)	ग्रामीण युवाओं पर केंद्रित एक राज्य-नेतृत्व वाला, परिणाम-संचालित कौशल कार्यक्रम, जिसमें स्थायी रोजगार, तीसरे पक्ष के प्रमाणन पर जोर दिया गया है

ग्रामीण शासन: जमीनी स्तर पर डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन की कहानी

- ग्रामीण शासन, कार्यक्रम-आधारित प्रभाव और उभरते अवसरों के व्यक्तिगत उपयोग के लिए एक आधार और गुणक के रूप में कार्य करता है।
- ग्रामीण इंटरनेट सब्सक्रिप्शन (2015-2021) में 200% की वृद्धि के साथ, शासन के डिजिटलीकरण से गांवों और प्रशासनिक मुख्यालयों के बीच की दूरी कम हो सकती है जिससे क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा मिलेगा। ग्रामीण भारत के लिए कई डिजिटलीकरण पहलें की गई हैं:-

ग्रामीण भारत में डिजिटल पहलें	
ई-पंचायत मिशन मोड परियोजना	पंचायतों के आंतरिक कार्यप्रवाह को बेहतर बनाना, पंचायत खातों का ऑनलाइन ऑडिट करना।
ई-ग्राम स्वराज	ग्रामीण भारत के लिए डिजिटल पंचायतें बनाना।
भू-आधार	भौगोलिक निर्देशांक के आधार पर भूमि पार्सल को 14 अंकों की पहचान संख्या (ULPIN) दी गई।
स्वामित्व योजना	मैपिंग तकनीक के जरिए ग्रामीण परिवारों को 'अधिकारों का रिकॉर्ड' प्रदान करना।

सतत विकास की दिशा में

- भारत सरकार नागरिक कल्याण और जीवन की गुणवत्ता में सुधार करने के लिए **सतत विकास लक्ष्यों (SDGs)** को सक्रिय रूप से अपना रही है।
- **नीति आयोग की SDG इंडिया इंडेक्स प्रगति रिपोर्ट** के अनुसार, भारत ने वैश्विक चुनौतियों के बावजूद SDGs को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण प्रगति की है।

© Vision IAS

- 2018 से, भारत ने कई प्रमुख SDGs में पर्याप्त प्रगति देखी है जैसे:-
    - लक्ष्य 1 (गरीबी उन्मूलन)
    - लक्ष्य 3 (अच्छा स्वास्थ्य और कल्याण)
    - लक्ष्य 6 (स्वच्छ जल और स्वच्छता)
    - लक्ष्य 7 (किफायती और स्वच्छ ऊर्जा)
    - लक्ष्य 9 (उद्योग, नवाचार और अवसंरचना)
    - लक्ष्य 11 (संधारणीय शहर और समुदाय)

नीति आयोग के SDG इंडिया इंडेक्स 2023-2024 पर राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों का प्रदर्शन

- यह राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के प्रदर्शन में सकारात्मक रुझान को दर्शाता है।
- इस वर्ष 32 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों ने 65-99 के बीच स्कोर किया है, जबकि 2020-21 संस्करण में यह स्कोर 22 था।
- फ्रंट रनर श्रेणी में 10 नए राज्य और केंद्र शासित प्रदेश शामिल हैं
- 2018 और 2023-24 के बीच सबसे तेजी से प्रगति करने वाला राज्य उत्तर प्रदेश हैं, इसके बाद जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड सिक्किम, हरियाणा आदि का स्थान है।

चार्ट VII.16 वर्षों से नीति आयोग एसडीजी इंडिया इंडेक्सपर राज्य/संघ राज्य क्षेत्रवार प्रदर्शन

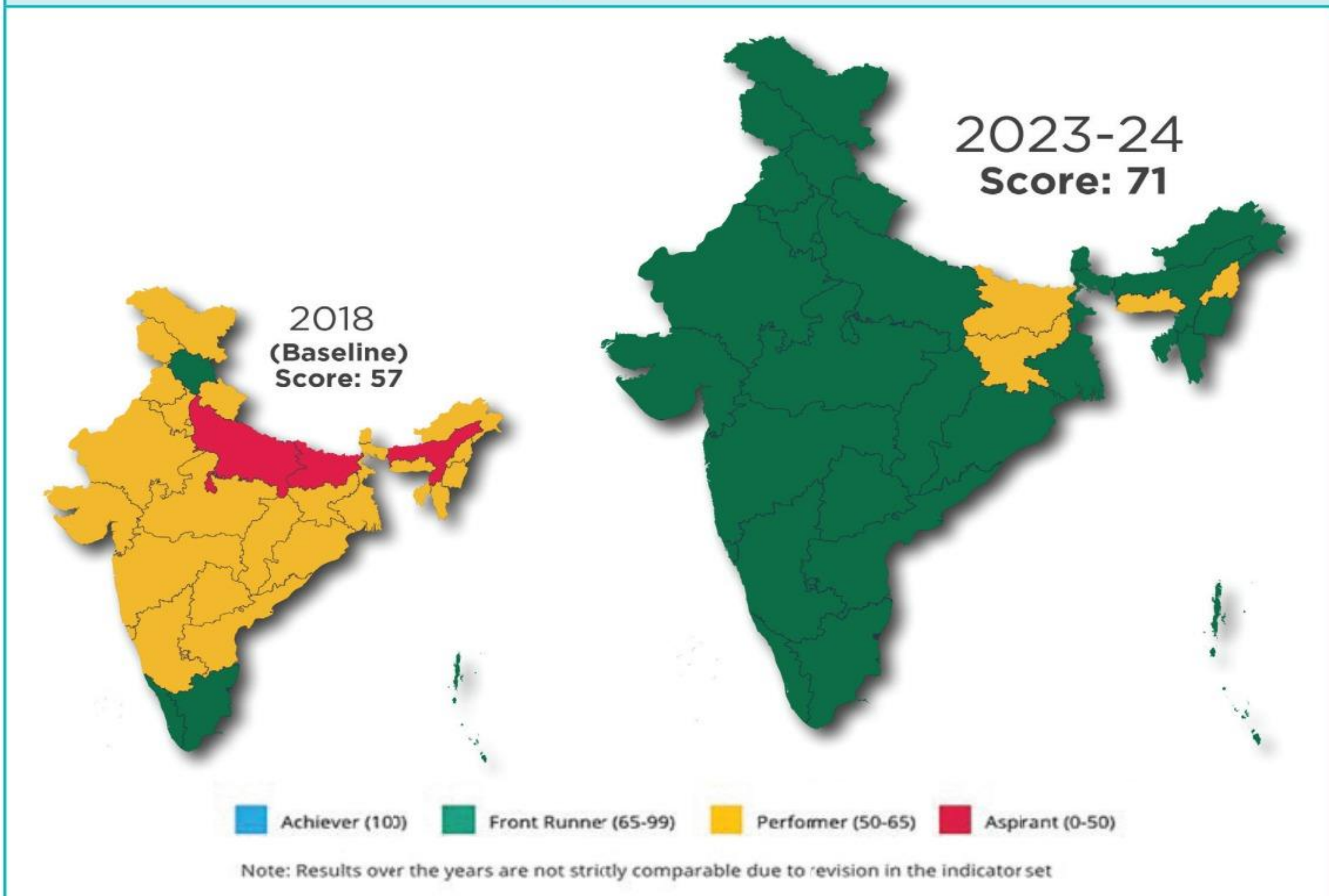

स्रोत: नीति आयोग का एसडीजी इंडिया इंडेक्स 2023-24

निष्कर्ष

- भारतीय अर्थव्यवस्था ने सशक्तीकरण, कुशल सेवा वितरण और निजी क्षेत्र तथा नागरिक समाज की भागीदारी पर ध्यान केंद्रित करते हुए **सुधारवादी कल्याण आधारित दृष्टिकोण** अपनाया है। **बुनियादी आवश्यकताओं की संतृप्ति को अर्थव्यवस्था में प्रत्येक नागरिक की उत्पादक भागीदारी के लिए पहला कदम माना गया है।**
- स्वास्थ्य सेवा, शिक्षा और शासन में डिजिटलीकरण से कल्याण व्यय की **दक्षता में वृद्धि** होती है।
- NEP 2020 से निकट भविष्य में तीसरी कक्षा उत्तीर्ण करने वाले प्रत्येक बच्चे को **मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान** प्राप्त होने की उम्मीद है।
- **आयुष्मान भारत** न केवल जीवन बचा रहा है, बल्कि पीढ़ियों को कर्ज के जाल से भी बचा रहा है
    - सोशल मीडिया और **द ग्रेट रेवइरिंग ऑफ चाइल्डहुड** इस के युग में, मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण सुनिश्चित करना आंतरिक और आर्थिक रूप से मूल्यवान है।
- यद्यपि, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सशक्तीकरण के मामले में **महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास** को बढ़ावा मिल रहा है, लेकिन संपत्ति के स्वामित्व को बढ़ाना देना अभी भी सुरक्षित नहीं है।
- दूरदराज के इलाकों में जीवन की बेहतर गुणवत्ता में सुधार करने के लिए, RSETI को कौशल विकास और उद्यम के जिला केंद्र के रूप में उपयोग किया जा सकता है।
- इसके अलावा, कोई योजना, चाहे कितनी भी अच्छी तरह से डिजाइन की गई हो और उसका निर्माण कितना भी बढ़िया क्यों न हो, उसका क्रियान्वयन उतना ही अच्छा होता है। खर्च को परिणामों में बदलने की दक्षता को अधिकतम करने के लिए, जमीनी स्तर पर कई चैनलों को खोलना होगा।
- **भारत के पास संतुष्ट होने के लिए बहुत कुछ है और इसके लिए अधीर होने के लिए भी बहुत कुछ है।**

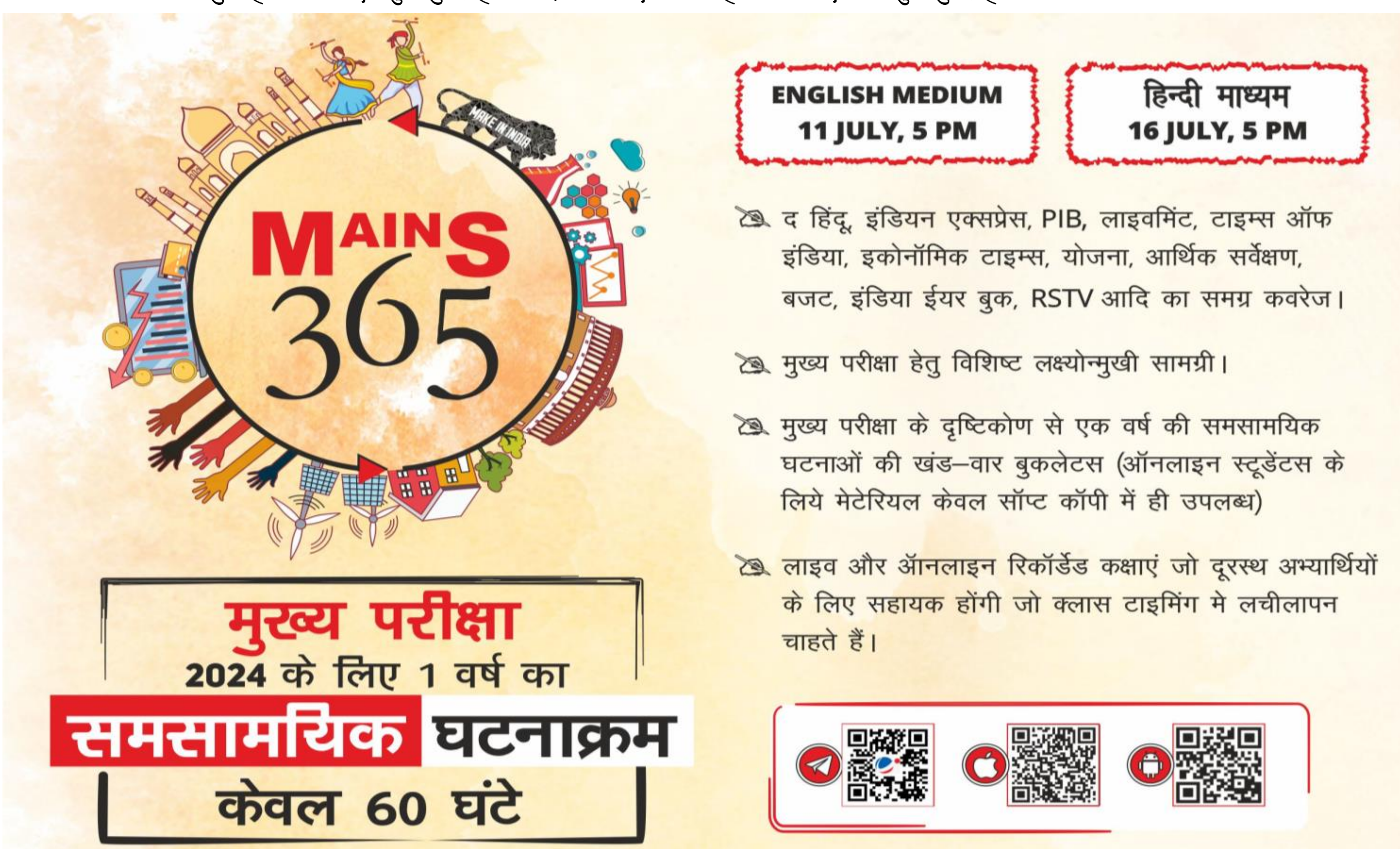

बजट में क्या कहा गया है?

व्यय:

- **सामाजिक कल्याण: 56,501 करोड़**
- **शिक्षा: 1,25,638 करोड़**
- **स्वास्थ्य: 89,287 करोड़**
- **ग्रामीण विकास: 2,65,808 करोड़**

शिक्षा:

- **शिक्षा व्यय:** 1,25,638 करोड़
- सरकार द्वारा प्रवर्तित निधि से गारंटी के साथ **7.5 लाख तक का ऋण।** हर साल **25000 छात्रों की मदद** की उम्मीद है।
- **उच्च शिक्षा:** घरेलू संस्थानों में **उच्च शिक्षा के लिए 10 लाख** तक के ऋण के लिए वित्तीय सहायता।
- **3% की वार्षिक ब्याज सहायता** के लिए **हर साल 1 लाख छात्रों** को सीधे ई-वाउचर दिए जाएंगे।

पीएम पैकेज: कौशल कार्यक्रम

- **बजट थीम:** रोजगार, कौशल, MSME, मध्य वर्ग।
- **5 साल की अवधि में 20 लाख युवाओं को कौशल** प्रदान किया जाएगा।
- **1,000 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों** को हब और स्पोक व्यवस्था में परिणाम उन्मुखीकरण के साथ उन्नत किया जाएगा।
- **पाठ्यक्रम सामग्री और डिजाइन** से उद्योगों की कौशल आवश्यकताओं के अनुसार संरेखित किया जाएगा।

महिलाएं

- बजट में **4 प्रमुख वर्गों** पर ध्यान केंद्रित किया गया है: **किसान, गरीब, महिलाएं और युवा।**
- **कामकाजी महिला छात्रावास:** कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी को सुविधाजनक बनाना
- महिलाओं और लड़कियों को लाभान्वित करने वाली योजनाओं के लिए **3 लाख करोड़ रुपये से अधिक आवंटित** किए गए।
- **शहरी विकास:** राज्यों को महिलाओं द्वारा खरीदी गई संपत्तियों के लिए **स्टाम्प शुल्क में कमी** करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

ग्रामीण

- **ग्रामीण विकास पर व्यय:** 2,65,808 करोड़
- **ग्रामीण अवसंरचना:PMGSY (चरण IV)** 25,000 ग्रामीण बस्तियों को **सभी मौसमों में कनेक्टिविटी** प्रदान करेगा।
- **भूमि:** सभी प्रकार की भूमि के लिए **विशिष्ट भूमि पार्सल पहचान संख्या** या **भू-आधार।**

शब्दकोश

शब्दावली	अर्थ
डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना	यह एक अवसंरचना आधारित दृष्टिकोण है जो जनहित में निर्मित पारिस्थितिकी तंत्र (जिसमें प्रौद्योगिकी, बाजार और शासन शामिल है) के जरिए सामाजिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करता है।
सामाजिक अवसंरचना	इसमें ऐसी संपत्तियां शामिल हैं जो शिक्षा, स्वास्थ्य, साफ-सफाई और स्वच्छता सुविधाएं, आवास जैसी सामाजिक सेवाएं प्रदान करती हैं।
डूम्स स्क्रॉलिंग	यह नकारात्मक जानकारी के लिए सोशल मीडिया पर एक हैबिचुअल और इमर्सिव स्कैनिंग है।

आउट ऑफ पॉकेट खर्च	यह एक मरीज द्वारा सीधे वहन किए जाने वाले व्यय को दर्शाता है, जब बीमा स्वास्थ्य वस्तु या सेवा की पूरी लागत को कवर नहीं करता है।
घरेलू उपभोग व्यय सर्वेक्षण	यह घरों द्वारा वस्तुओं और सेवाओं की खपत के बारे में जानकारी एकत्र करता है।

अध्याय 7: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. निम्नलिखित में से कौन सा अटल पेंशन योजना (APY) का उद्देश्य है?
   (a) वंचित परिवारों के लिए 5 लाख रुपये प्रति वर्ष का स्वास्थ्य बीमा कवर
   (b) किफायती सामाजिक सुरक्षा योजना
   (c) गंभीर बीमारियों के लिए सब्सिडी युक्त दवाएं
   (d) दूरदराज के क्षेत्रों में आभासी डॉक्टर परामर्श के लिए टेलीमेडिसिन

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय योजना का उद्देश्य है?
   (a) वंचित समूहों की लड़कियों के लिए आवासीय विद्यालय
   (b) आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों (EWS) के मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति प्रदान करना, ताकि वे पढ़ाई छोड़ न दें
   (c) सरकारी और सरकार द्वारा सहायता प्राप्त स्कूलों में कक्षा 1-8 के छात्रों के लिए गर्म पका हुआ भोजन
   (d) विशेष जरूरतों वाले बच्चों के लिए शिक्षा तक पहुंच

3. आयुष्मान भारत योजना के प्रभाव के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. इसका उद्देश्य निजी विकल्पों की तुलना में बहुत कम लागत पर उपचार प्रदान करना है।
   2. यह माध्यमिक और तृतीयक अस्पताल आधारित उपचार के लिए वंचित परिवारों के लिए 10 लाख रुपये प्रति वर्ष का स्वास्थ्य बीमा कवर प्रदान करता है।

   उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) दोनों 1 और 2
   (d) कोई नहीं

4. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए:
   1. SWAYAM - ऑनलाइन सीखने के लिए MOOC प्लेटफ़ॉर्म
   2. SWAYAM PRABHA - ऑनलाइन सीखने के लिए DTH चैनल
   3. PM e-VIDYA - NCERT द्वारा स्कूली शिक्षा के लिए डिजिटल प्लेटफ़ॉर्म

   उपर्युक्त युग्मों में से कितने युग्म सही सुमेलित हैं?
   (a) केवल एक
   (b) केवल दो
   (c) सभी तीनों
   (d) कोई नहीं

© Vision IAS

5. निम्नलिखित में से किस योजना का उद्देश्य 9वीं से 12वीं कक्षा तक विभिन्न विज्ञान और प्रौद्योगिकी पाठ्यक्रमों में लड़कियों के कम प्रतिनिधित्व का समाधान करना है?
   (a) विज्ञान ज्योति
   (b) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
   (c) सुकन्या समृद्धि योजना
   (d) नारी शक्ति वंदन अभियान, 2023

प्रश्न

1. भारत को "महिला विकास" के दृष्टिकोण से "महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास" और "महिलाओं के स्वामित्व वाले विकास" की ओर बढ़ना चाहिए। टिप्पणी कीजिए। (250 शब्द)
2. बच्चों की बड़ी संख्या में हो रही पुनर्रचना मानसिक बीमारी की महामारी का कारण बन रही है और वर्तमान पीढ़ी को "चिंतित पीढ़ी" में बदल रही है। बच्चों पर सोशल मीडिया के प्रभाव पर चर्चा कीजिए और नुकसान को कम करने के उपाय सुझाइए। (150 शब्द)

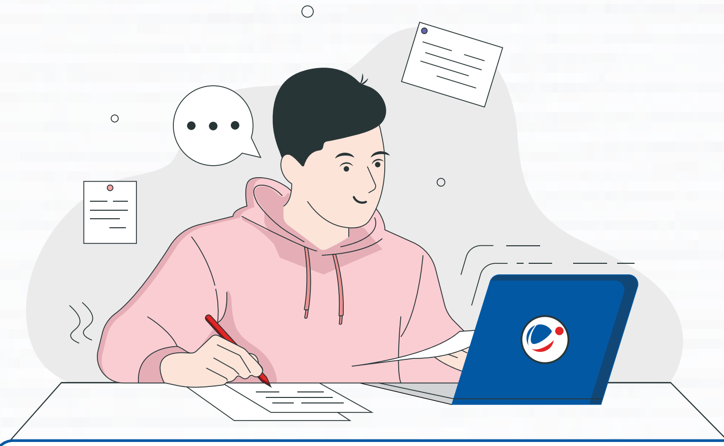

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

UPSC प्रीलिम्स की तैयारी की स्मार्ट और प्रभावी रणनीति

UPSC प्रीलिम्स सिविल सेवा परीक्षा का पहला और अत्यधिक प्रतिस्पर्धी चरण है। इसमें वस्तुनिष्ठ प्रकार के दो पेपर (सामान्य अध्ययन और CSAT) शामिल होते हैं, जो अभ्यर्थी के ज्ञान, उसकी समझ और योग्यता का परीक्षण करने के लिए डिज़ाइन किए जाते हैं।

यह चरण अभ्यर्थियों को व्यापक पाठ्यक्रम में महारत हासिल करने और बदलते पैटर्न के अनुरूप ढलने की चुनौती देता है। साथ ही, यह चरण टाइम मैनेजमेंट, इन्फॉर्मेशन को याद रखने और प्रीलिम्स की अप्रत्याशितता को समझने में भी महारत हासिल करने की चुनौती देता है।

इस परीक्षा में सफलता प्राप्त करने हेतु कड़ी मेहनत के साथ-साथ तैयारी के लिए एक समग्र और निरंतर बदलते दृष्टिकोण की भी आवश्यकता होती है।

तत्काल व्यक्तिगत मेंटरिंग के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

प्रीलिम्स की तैयारी के लिए मुख्य रणनीतियां

तैयारी की रणनीतिक योजना: पढ़ाई के दौरान सभी विषयों को बुद्धिमानी से समय दीजिए। यह सुनिश्चित कीजिए कि आपके पास रिवीजन और मॉक प्रैक्टिस के लिए पर्याप्त समय हो। अपने कमजोर विषयों पर ध्यान दीजिए।

अनुकूल रिसोर्सेज का उपयोग: ऐसी अध्ययन सामग्री चुनिए जो संपूर्ण और टू द पॉइंट हो। अभिभूत होने से बचने के लिए बहुत अधिक कंटेंट की जगह गुणवत्ता पर ध्यान दीजिए।

PYQ और मॉक टेस्ट का रणनीतिक उपयोग: परीक्षा के पैटर्न, महत्वपूर्ण विषयों और प्रश्नों के ट्रेंड्स को समझने के लिए विगत वर्ष के प्रश्न-पत्रों का उपयोग कीजिए। मॉक टेस्ट के साथ नियमित प्रैक्टिस और प्रगति का आकलन करने से तैयारी तथा टाइम मैनेजमेंट में सुधार होता है।

करेंट अफेयर्स की व्यवस्थित तरीके से तैयारी: न्यूज़पेपर और मैगजीन के जरिए करेंट अफेयर्स से अवगत रहिए। समझने और याद रखने में आसानी के लिए इस ज्ञान को स्टेटिक विषयों के साथ एकीकृत कीजिए।

स्मार्ट लर्निंग: रटने के बजाय अवधारणाओं को समझने पर ध्यान दीजिए, बेहतर तरीके से याद रखने के लिए निमोनिक्स, इन्फोग्राफिक्स और अन्य प्रभावी तरीकों का उपयोग कीजिए।

व्यक्तिगत मेंटरिंग: व्यक्तिगत रणनीतियों, कमजोर विषयों और मोटिवेशन के लिए मेंटर्स की मदद लीजिए। मेंटरशिप स्ट्रेस मैनेजमेंट में भी मददगार होता है, ताकि आप मेंटल हेल्थ को बनाए रखते हुए परीक्षा पर ठीक से ध्यान केंद्रित कर सकें।

UPSC प्रीलिम्स की जटिलताओं को ध्यान में रखते हुए, Vision IAS ने अपना बहुप्रतीक्षित "ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" शुरू किया है। इस प्रोग्राम में नवीनतम ट्रेंड्स के अनुरूप संपूर्ण UPSC सिलेबस को शामिल किया गया है।

इसकी प्रमुख विशेषताएं इस प्रकार हैं:

- UPSC सिलेबस का व्यापक कवरेज
- टेस्ट सीरीज का फ्लेक्सिबल शेड्यूल
- टेस्ट का लाइव ऑनलाइन/ ऑफ़लाइन डिस्कशन और पोस्ट-टेस्ट एनालिसिस
- प्रत्येक टेस्ट पेपर के लिए आंसर-की और व्यापक व्याख्या
- अभ्यर्थी के अनुरूप व्यक्तिगत मेंटरिंग
- ऑल इंडिया रैंकिंग के साथ इनोवेटिव अस्सेस्मेंट सिस्टम और परफॉरमेंस एनालिसिस
- क्विक रिविजन मॉड्यूल (QRM)

अंत में, एक स्मार्ट स्टडी प्लान, प्रैक्टिस, सही रिसोर्स और व्यक्तिगत मार्गदर्शन को मिलाकर बनाई गई रणनीतिक तथा व्यापक तैयारी ही UPSC प्रीलिम्स में सफलता की कुंजी है।

"ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज़ और मेंटरिंग प्रोग्राम" के लिए रजिस्टर करने और ब्रोशर डाउनलोड करने हेतु QR कोड को स्कैन कीजिए

अध्याय 8: रोजगार और कौशल विकास: गुणवत्ता की ओर (Employment and Skill Development: Towards Quality)

परिचय

रोजगार विकास और समृद्धि के बीच महत्वपूर्ण कड़ी है। भारत के युवाओं की वैध आकांक्षाओं के अनुरूप रोजगार के उपयुक्त अवसरों का सृजन भी जीवनकाल में एक बार मिलने वाले देश के जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने के लिए आवश्यक है।

अध्याय का प्रीकैप

वर्तमान रोजगार परिदृश्य • भारत में कम होती **बेरोजगारी दर** • **महिला श्रम शक्ति भागीदारी दर में वृद्धि** • **संगठित क्षेत्र के** रोजगार बाजार में **लगातार वृद्धि** • **रोजगार सृजन और श्रम कल्याण** के लिए शुरू की गई पहलें	**भारत में रोजगार का विकसित होता परिदृश्य** • **चौथी औद्योगिक क्रांति** और रोजगार बाजार पर जलवायु प्रभाव • **गिग इकॉनमी की ओर बढ़ना** • **2026 तक रोजगार सृजन** की आवश्यकता • **कृषि प्रसंस्करण क्षमता**
देखभाल अर्थव्यवस्था • एक अच्छी तरह से विकसित देखभाल अर्थव्यवस्था की बढ़ती आवश्यकता • बुजुर्गों की देखभाल की बढ़ती **आवश्यकता** • देखभाल अर्थव्यवस्था में **महिलाओं के लिए अवसर**	**विकास और प्रगति संबंधी कौशल** • भारत को **अपने युवा कार्यबल को उद्योग 4.0 से लैस** करना चाहिए • **कौशल बढ़ाने के लिए** कई पहल • **प्रशिक्षुता ढांचे का** पुनः समायोजन

वर्तमान रोजगार परिदृश्य

- **घटती बेरोजगारी:** आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण से पता चलता है कि **कोविड-19 महामारी के बाद से वार्षिक बेरोजगारी दर में गिरावट आई है।** साथ ही श्रम बल भागीदारी दर और श्रमिक-जनसंख्या अनुपात में वृद्धि हुई है।
  - मार्च 2024 में त्रैमासिक बेरोज़गारी दर घटकर 6.7% हो गई।
- **कार्यबल का आकार:** PLFS और स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय के जनसंख्या अनुमानों के आधार पर 2022-23 में भारत का कार्यबल लगभग **56.5 करोड़ होने का अनुमान है।**
- **कार्यबल वितरण:** PLFS के अनुसार, 45% से अधिक **कार्यबल कृषि में कार्यरत है,** इसके बाद सेवा क्षेत्रक (28.9%) और विनिर्माण (11.4%) का स्थान है।
  - **कुल कार्यबल का 57.3% स्व-रोजगार में संलग्न है।** महिला कार्यबल भी स्वरोजगार की ओर बढ़ रहा है। कुल कार्यबल में नैमित्तिक श्रमिक 21.8% और नियमित वेतनभोगी श्रमिक 20.9% हैं।

युवा एवं महिला रोजगार

- **युवाओं का बढ़ता रोजगार:** PLFS के अनुसार, युवा (15-29 वर्ष की आयु) बेरोजगारी दर 2017-18 में 17.8% से घटकर 2022-23 में 10% हो गई है।
  - **कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) के आंकड़ों के अनुसार, इसके नए अंशधारकों में से लगभग दो तिहाई 18-28 वर्ष की आयु की हैं।**
- **महिला श्रम बल भागीदारी दर (FLFPR) में वृद्धि:** FLFPR में पिछले छह वर्षों से बढ़ोतरी हो रही है। इसमें 2017-18 से 2022-23 तक ग्रामीण क्षेत्रों में उल्लेखनीय 16.9% की वृद्धि हुई है।

© Vision IAS

- इस वृद्धि का श्रेय सतत कृषि उत्पादन और बुनियादी सुविधाओं तक बेहतर पहुंच जैसे कारकों को दिया जाता है, जिससे महिलाओं के समय की बचत होती है।
- यह ग्रामीण उत्पादन में महिलाओं के बढ़ते योगदान का भी संकेत देता है।

चार्ट VIII.7: ग्रामीण महिला एलएफपीआर में वृद्धि

स्रोत: पीएलएफएस रिपोर्ट, एनएसओ
नोट: सामान्य स्थिति के लिए, 15 वर्ष और उससे अधिक

- **कारखानों में रोजगार:** 2021-22 में, छोटी फैक्ट्रियों (जिनमें 100 से कम लोग काम करते हैं) का वर्चस्व रहा। यह सभी कारखानों का 79.2% थे, लेकिन कुल नियोजित व्यक्तियों में से केवल 22.1% को ही रोजगार उपलब्ध कराते हैं। इसके विपरीत बड़ी फैक्ट्रियाँ अधिक रोजगार पैदा करती हैं और बेहतर वेतन देती हैं।
  - खाद्य उत्पाद उद्योग (11.1%) सबसे बड़ा नियोक्ता बना रहा, इसके बाद कपड़ा उद्योग का स्थान रहा।
- **EPFO में नामांकन:** EPFO के पेरोल डेटा द्वारा मापी गई संगठित क्षेत्र की नौकरी बाजार की स्थितियों से वित्त वर्ष 2019 के बाद से पेरोल वृद्धि में लगातार साल-दर-साल (YoY) वृद्धि का संकेत मिलता है।
  - EPFO में वार्षिक निवल पेरोल वृद्धि वित्त वर्ष 2019 में 61.1 लाख से दोगुनी से अधिक होकर वित्त वर्ष 2024 में 131.5 लाख हो गई।

रोजगार सृजन और श्रमिक कल्याण को बढ़ावा देने की पहल

रोजगार सृजन

- **उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजना:** भारत की विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ाने, पूंजीगत व्यय आदि में वृद्धि करने तथा श्रमिक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए।
- **राष्ट्रीय करियर सेवा (NCS):** 2015 में शुरू किया गया NCS पोर्टल रोजगार और करियर संबंधी सेवाएं प्रदान करता है। 31 मार्च 2024 तक इसका 4.1 करोड़ नौकरी चाहने वालों और 25.6 लाख नियोक्ताओं ने उपयोग किया है।
- **ई-श्रम पोर्टल:** यह असंगठित श्रमिकों का राष्ट्रीय डेटाबेस है। इसका उद्देश्य अलग-अलग केंद्रीय मंत्रालयों/विभागों के अन्य प्रासंगिक पोर्टल के साथ एकीकरण करना है ताकि असंगठित कामगारों को एक ही स्थान पर केंद्र सरकार की कई योजनाओं तक पहुँच की सुविधा मिल सके।
- **आत्मनिर्भर भारत रोजगार योजना (ABRY):** कोविड-19 के कारण रोजगार समाप्त होने के बाद सामाजिक सुरक्षा लाभों के साथ रोजगार को बढ़ावा देने के लिए इस योजना की शुरुआत की गई। 31 मार्च 2024 तक इस योजना से 60.5 लाख लोग लाभान्वित हुए।
- **प्रधान मंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम (PMEGP):** इसके तहत कारीगरों और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर प्रदान किए जाते हैं।
  - इसके तहत लगभग 37.46 लाख रोजगार सृजित किए गए हैं।
- **दीनदयाल अंत्योदय योजना - राष्ट्रीय शहरी आजीविका मिशन (DAY-NULM):** इसका उद्देश्य शहरी गरीब परिवारों को स्वरोजगार और कुशल मजदूरी रोजगार के अवसर प्राप्त करने में सक्षम बनाना है। साथ ही उनकी गरीबी और सुभेद्यता को कम करना है।
  - 2018-19 से 2024 तक लाभार्थियों की संख्या 5.48 लाख है।

सामाजिक सुरक्षा और कल्याण

- **पेंशन योजनाएँ:** 2015 में शुरू की गई अटल पेंशन योजना के 6.5 करोड़ से ज़्यादा लाभार्थी हैं। 2019 में 50 लाख से ज़्यादा कामगारों ने प्रधान मंत्री श्रम योगी मान-धन योजना के तहत नामांकन कराया।
- **किफायती बीमा कार्यक्रम:** प्रधान मंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधान मंत्री सुरक्षा बीमा योजना के माध्यम से केवल 436 रुपये और 20 रुपये के वार्षिक प्रीमियम पर 2 लाख रुपये का जीवन और विकलांगता कवर प्रदान किया जाता है।

- **नए श्रम संहिताएँ:** चार श्रम संहिताएँ; अर्थात् वेतन संहिता, 2019, औद्योगिक संबंध संहिता, 2020, सामाजिक सुरक्षा संहिता, 2020 तथा व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और कार्य स्थिति संहिता, 2020; अधिनियमित की गई हैं।
- **पीएम स्ट्रीट वेंडर्स आत्मनिर्भर निधि (PM SVANidhi):** जून 2020 में शुरू गई इस योजना के 64 लाख से अधिक लाभार्थी हैं।
- **वन नेशन वन राशन कार्ड:** इसे 2019 में लॉन्च किया गया। इसने पूरे भारत में पोर्टेबल खाद्य सुरक्षा प्रदान करके प्रवासी श्रमिकों के कल्याण को बढ़ावा दिया है।

उद्यमिता और कौशल विकास

- **प्रधान मंत्री मुद्रा योजना (PMMY):** इसके तहत सूक्ष्म/लघु व्यवसाय उद्यमों और व्यक्तियों को 10 लाख रुपये तक के कोलेट्रल फ्री ऋण दिए जाते हैं, ताकि वे अपनी व्यावसायिक गतिविधियों को स्थापित या विस्तार करने में सक्षम हो सकें। **इसके तहत 47.7 करोड़ ऋण स्वीकृत किए गए।**
- **स्टैंड अप इंडिया (2016):** इसके तहत अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों को नया व्यवसाय शुरू करने के लिए ऋण प्रदान किया जाता है।
- **स्टार्ट-अप इंडिया:** उद्योग एवं आंतरिक व्यापार संवर्धन विभाग (DPIIT) द्वारा मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स की संख्या वर्ष 2016 में 300 से बढ़कर 31 दिसंबर 2023 तक 1,17,254 हो गई।
- **ग्रामीण उद्यमिता कार्यक्रम:** DAY-NRLM, RSETIs.

रोजगार को बढ़ावा देने के लिए श्रम विनियमों का पुनर्संतुलन

परिचय

- वर्तमान श्रम विनियमों में सामान्य कार्यबल और विशेष रूप से महिलाओं दोनों के लिए अनपेक्षित प्रतिकूल परिणाम हैं।

रोजगार को प्रतिबंधित करने वाले नियम

- **उच्च ओवरटाइम वेतन प्रीमियम:** समकक्षों एवं उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में विनिर्माण क्षेत्र के विकास में संभावित रूप से बाधा उत्पन्न हो रही है।
- **महिलाओं के लिए रोजगार के अवसरों में व्यवस्थित बाधाएं:** 10 सबसे अधिक आबादी वाले राज्यों ने सामूहिक रूप से महिलाओं पर फैक्टरी प्रक्रियाओं जैसे इलेक्ट्रोप्लेटिंग, पेट्रोलियम उत्पादन, कीटनाशकों, रिचार्जेबल बैटरी आदि जैसे उत्पादों के विनिर्माण में भाग लेने पर 139 प्रतिबंध लगाए हैं।
- **कल्याण की मांग विकास को हतोत्साहित करती है:** भारत में अन्य देशों की तुलना में फैक्ट्री में प्रति कर्मचारी अधिक फ्लोर स्पेस निर्धारित है। स्थान संबंधी आवश्यकताओं में वृद्धि फैक्ट्रियों के विस्तार को हतोत्साहित कर सकती हैं
- **काम के घंटों में गैर-लचीलापन:** भारतीय श्रमिकों के लिए मौद्रिक समय को सीमित करना तथा उनके परिवारों और देश की समृद्धि को प्रभावित करना।

निष्कर्ष

नई श्रम संहिताएं उपर्युक्त टिप्पणियों में से कुछ में मामूली सुधार करती हैं। हालांकि, संहिताओं को अभी भी पूरी तरह से क्रियान्वित किया जाना बाकी है और कई राज्य नए कानूनों के तहत पुराने प्रतिबंधों को फिर से लागू करते हुए पाए गए हैं।

भारत में नौकरियों का विकसित होता परिदृश्य

प्रौद्योगिकी, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और भू-राजनीतिक बदलाव नौकरियों को नया आकार दे रहे हैं। **वर्ल्ड इकनोमिक फोरम की फ्यूचर ऑफ जॉब्स रिपोर्ट, 2023** के अनुसार, **अगले पांच सालों में वैश्विक स्तर पर 23% नौकरियों में बदलाव** होने की संभावना है। इसमें 69 मिलियन नई नौकरियां का सृजन और 83 मिलियन नौकरियों के समाप्त होने का अनुमान है, जिसके परिणामस्वरूप 14 मिलियन नौकरियों की शुद्ध कमी होगी।

चौथी औद्योगिक क्रांति

- साइबर-भौतिक प्रणाली, IoT, बिग डेटा, नैनो टेक्नोलॉजी आदि जैसी नई प्रौद्योगिकियों की विशेषता वाली चौथी अंतर्राष्ट्रीय औद्योगिक क्रांति **भारत और शेष विश्व में नौकरी बाजारों में बदलाव ला रही है।**
- **कोविड-19 महामारी ने बिग डेटा, AI, साइबर सुरक्षा** आदि जैसे उभरते क्षेत्रों में प्रशिक्षित तकनीकी पेशेवरों की मांग को बढ़ा दिया है। WEF के अनुसार, अगले पांच वर्षों में सबसे तीव्रता से बढ़ने वाली नौकरियां AI, मशीन लर्निंग विशेषज्ञों की होंगी।

© Vision IAS

AI को अपनाने के कारण व्यवधान

- AI में **उत्पादकता बढ़ाने की काफी क्षमता है**। हालांकि इसमें **कुछ क्षेत्रों में रोजगारों को बाधित करने की क्षमता भी है**, जैसे ग्राहक सेवा, रचनात्मक क्षेत्र, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा, इससे स्वचालन को बढ़ावा मिलेगा।

स्वचालन का प्रभाव
- स्वचालन **अच्छा या बुरा हो सकता है, यह इस बात पर निर्भर करता है कि हम** इसका उपयोग कैसे करते हैं, और प्रौद्योगिकी का क्रियान्वयन किस दिशा में किया जाता है।
- **नई प्रौद्योगिकी** श्रमिकों की सीमांत उत्पादकता को कम करके श्रमिक हितों को नुकसान पहुंचा सकती है जबकि इससे **समग्र उत्पादकता बढ़ सकती है**। इस प्रकार **मशीनों द्वारा श्रमिकों का प्रतिस्थापन हो सकता है**।
- साथ ही, स्वचालन श्रमिकों को दो तरह से लाभांवित कर सकता है।
  - यदि यह सही क्षेत्रकों में **श्रम की सीमांत उत्पादकता में उल्लेखनीय वृद्धि करता है, इससे गैर-स्वचालित कार्यों में** या पूरक उत्पाद बनाने वाले उद्योगों में श्रम की मांग बढ़ जाती है, जैसा कि जेनीज़ के मामले में होता है।
  - जब स्वचालन नए कार्यों के निर्माण और रेलवे के उदाहरण (ऐसमोग्लू और जॉनसन 2023) जैसी नई गतिविधियों में श्रम की सीमांत उत्पादकता में वृद्धि के साथ होता है।

- IMF के अनुसार **वैश्विक रोजगार का लगभग 40% हिस्सा AI से प्रभावित हो रहा है** और इनमें से लगभग आधे AI से नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकते हैं। साथ ही, शेष AI एकीकरण के माध्यम से बढ़ी हुई उत्पादकता से लाभांवित हो सकते हैं।
- **AI के क्रमिक प्रसार से उत्पादकता में वृद्धि होने का अनुमान है**। अर्थात्, डिजिटल स्वास्थ्य डेटा से स्वास्थ्य जोखिमों की पहचान करने, मौसम की भविष्यवाणी करने और ग्रेडिंग परीक्षणों में शिक्षकों की सहायता करने के लिए AI का उपयोग किया जाएगा।

भारत में AI का अधिकतम लाभ उठाना

- **AI शोध:** भारत (23,398) द्वारा प्रकाशित AI संबंधित शोध पत्रों की संख्या 2019 में चीन (102,161) द्वारा प्रकाशित शोध पत्रों से एक-चौथाई से भी कम है, जो भारत में AI अनुसंधान में अंतराल का संकेत देते हैं।
- AI ने भारत में कृषि-तकनीक, उद्योग और मोटर वाहन, स्वास्थ्य सेवा, BFSI और खुदरा क्षेत्रकों में महत्वपूर्ण वृद्धि की है। **उदाहरण के लिए - प्रमाण एक्सचेंज, जो दुनिया का सबसे बड़ा बागवानी एक्सचेंज है।**
- अमेरिका की तरह AI क्षेत्र को मजबूत करने के लिए **अच्छी तरह से परिभाषित रणनीतिक योजना की आवश्यकता है।**
  - विकासशील देशों के लिए अनुसंधान और सूचना प्रणाली (RIS) ने सुझाव दिया कि AI के लिए एक अंतर-एजेंसी समन्वय प्राधिकरण की आवश्यकता है।
- **शुरू की गई पहलें: फ्यूचर स्किल्स प्राइम, 'युवाई (YUVAi): AI के साथ उन्नति और विकास के लिए युवा', 'युवाओं के लिए जिम्मेदार AI',** भारत AI मिशन आदि।

गिग इकोनॉमी की ओर बढ़ना

- भारत में, गिग अर्थव्यवस्था **तकनीक-सक्षम प्लेटफार्मों, इंटरनेट पहुंच, डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे,** लचीली कार्य व्यवस्था और कौशल पर ध्यान केंद्रित करके संचालित होती है।
  - 2020-21 में **77 लाख श्रमिक गिग इकॉनमी में कार्यरत थे**, जो कुल कार्यबल का 1.5% है। **2029-30 तक इन श्रमिकों की संख्या बढ़कर 2.35 करोड़ होने की संभावना है।**
- **सामाजिक सुरक्षा संहिता (2020) में गिग और प्लेटफ़ॉर्म श्रमिकों को शामिल करने के लिए** सामाजिक सुरक्षा लाभों के दायरे का विस्तार करना **एक महत्वपूर्ण प्रगति है।**

जलवायु परिवर्तन का नौकरियों पर प्रभाव

- जलवायु परिवर्तन एक ज्वलंत मुद्दा है, तथा अनुमानों के अनुसार इससे **चरम मौसम की घटनाओं में वृद्धि होगी तथा नौकरियां जाने की संभावना है।**
- **गर्मी** स्वास्थ्य के लिए खतरनाक है, तथा भारत कृषि और निर्माण क्षेत्रक में रोजगार के उच्च हिस्से और उष्णकटिबंधीय अक्षांश के कारण **उत्पादकता हानि** के प्रति **सर्वाधिक संवेदनशील देशों में से एक है।**
- इसलिए जलवायु संबंधी खतरों से अपने स्वास्थ्य और आय की रक्षा के लिए उन्हें **उपयुक्त रूप से डिजाइन किए गए नीतिगत समर्थन और निजी बीमा उत्पादों की आवश्यकता है।**
    - **स्व-नियोजित महिला एसोसिएशन (SEWA)** द्वारा एक अभिनव पायलट कार्यक्रम, असंगठित श्रमिकों के लिए ताप-संबंधी पैरामीट्रिक बीमा प्रदान करता है, जिसके तहत तापमान 43.60 डिग्री सेल्सियस से अधिक होने पर आंशिक वेतन भुगतान प्रदान किया जाता है।
- **हालांकि भारत की हरित परिवर्तन** और **स्वच्छ ऊर्जा पहल से 2030 तक 3.4 मिलियन नौकरियां पैदा होने की संभावना है।**

2036 तक रोजगार सृजन की आवश्यकता

- **कार्यबल में वृद्धि:** पुरुषों के लिए स्थिर WPR (2023 में 54.4%) और महिलाओं के लिए बढ़ती WPR (2023 में 27.0% से 2036 में 40.0%) मानते हुए अनुमान लगाया गया है।
- **गैर-कृषि क्षेत्रकों में आवश्यक नौकरियाँ:** बढ़ते कार्यबल की आवश्यकता को पूरा करने के लिए **गैर-कृषि क्षेत्रक** में **2030 तक प्रति वर्ष औसतन लगभग 78.5 लाख नौकरियाँ सृजित करने की आवश्यकता है।**
- **संरचनात्मक परिवर्तन:** यह माना गया है कि कार्यबल में कृषि का हिस्सा 2023 में 45.8 प्रतिशत से धीरे-धीरे घटकर 2047 में एक-चौथाई रह जाएगा।

भारत में फ्लेक्सी जॉब मार्केट

- भारत में लगभग **5.4 मिलियन औपचारिक अनुबंध कर्मचारी या फ्लेक्सी श्रमिक संगठित** अनुबंध/अस्थायी स्टाफिंग कंपनियों के माध्यम से कार्यरत हैं।
- भारत में अधिकांश अनुबंध/फ्लेक्सी नौकरियां **कौशल स्पेक्ट्रम के निचले स्तर पर होती हैं,** जैसे **डेटा संचालन, लेखा, बिक्री, बैक-एंड संचालन।**
- **फ्लेक्सी कार्यबल 2023 में समाप्त होने वाले दशक में 13.2% की CAGR** से बढ़ा है। हालांकि, कुल कार्यबल के हिस्से के रूप में, अनुबंध स्टाफिंग कार्यबल केवल 1% है, जबकि यूरोप और एशिया प्रशांत में यह 2.2% है।

ग्रामीण रोजगार और विकास के लिए एक उभरते हुए क्षेत्रक के रूप में कृषि प्रसंस्करण

परिचय

कृषि प्रसंस्करण क्षेत्रक ग्रामीण विकास के लिए अनेक अवसर प्रदान करता है तथा खेत से कारखाने तक के परिवर्तन के लिए मध्यवर्ती के रूप में कार्य करता है। इससे यह भारत में रोजगार सृजन के लिए उपयुक्त बन जाता है।

कृषि प्रसंस्करण का महत्व

- **ग्रामीण नौकरियों की मांग:** कृषि प्रसंस्करण से उत्पादकता बढ़ सकती है, फसल विविधीकरण में तेजी आ सकती है, तथा नौकरियों और ग्रामीण विकास के लिए अनेक अवसर उपलब्ध हो सकते हैं।
- **कृषि में कम मूल्य संवर्धन:** भारत में खाद्य प्रसंस्करण का स्तर फलों के लिए 4.5%, सब्जियों के लिए 2.7%, दूध के लिए 21.1%, मांस के लिए 34.2% और मत्स्य पालन के लिए 15.4% है, जबकि चीन में यह 30% है।
- **विविध एवं स्थानीय खाद्य उत्पादों की बढ़ती मांग:** भारतीय खाद्य प्रसंस्करण बाजार के 2025 तक 15.2% की CAGR से बढ़ते हुए 535 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है।
- **पूर्व की स्थिति का उदाहरण:** कृषि-प्रसंस्करण के लिए बॉटम-उप दृष्टिकोण का अनुकरण करने के लिए कई सफलता की कहानियां हैं, जैसे महाराष्ट्र में सह्याद्री किसान उत्पादक कंपनी, आंध्र प्रदेश में अराकू कॉफी बागान आदि।

© Vision IAS

- **कृषि-संसाधित उत्पादन की नियत मांग के लिए अवसर:** स्थानीय इकाइयां स्कूलों में मध्याह्न भोजन की आपूर्ति कर सकती हैं, जबकि यह समूह शहरी उपभोक्ताओं को बढ़ती स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता और वोकल फॉर लोकल की भावना प्रदान कर सकते हैं।
- **कई मौजूदा कार्यक्रमों को एक साथ लाना:** यह क्षेत्रक श्रम, लॉजिस्टिक, क्रेडिट और विपणन के लिए मेगा फूड पार्क, स्किल इंडिया, मुद्रा, एक जिला-एक उत्पाद आदि के बीच तालमेल का उपयोग करके लाभान्वित हो सकता है।

आगे की राह

भारत एक कृषि संपन्न देश होने के नाते अपने अलग-अलग कृषि-जलवायु क्षेत्रों द्वारा प्रस्तुत उत्पादों की श्रृंखला का उपयोग कर सकता है तथा इस क्षेत्रक में बड़े पैमाने पर ग्रामीण कार्यबल को उत्पादक रूप से संलग्न कर सकता है।

विकास के लिए हमारा मार्ग प्रशस्त करना: भारत में एक सुविकसित देखभाल अर्थव्यवस्था की आवश्यकता और संभावनाएं

परिचय

देखभाल अर्थव्यवस्था में आर्थिक संवृद्धि और खुशहाली की संभावना है, खास तौर पर भारत में, जहाँ जनसांख्यिकी और लैंगिक दोनों तरह के लाभांश हैं। यह लैंगिक समानता, मानव विकास और आर्थिक संवृद्धि में योगदान देती है। यह मानव संसाधनों के सर्वोत्तम आवंटन को सुविधाजनक बनाने में एक महत्वपूर्ण दक्षता अंतराल को भर सकता है। यह दीर्घकालिक लाभ और समाधान प्रस्तावित करता है।

देखभाल कार्य को परिभाषित करना - देखभाल को 'कार्य' के रूप में स्वीकार करने की दिशा में पहला कदम

- देखभाल संबंधी कार्य में वयस्कों और बच्चों, वृद्धों और युवाओं, कमजोर और सक्षम (ILO) **की शारीरिक, मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक जरूरतों को पूरा करने से संबंधित गतिविधियां और संबंध** शामिल हैं।
- देखभाल संबंधी कार्य की दो श्रेणियां हैं:
  - **अवैतनिक या कम वेतन वाले कार्य:** देखभाल और सामाजिक सहायता प्रदान करने से संबंधित अवैतनिक या कम भुगतान वाले काम अक्सर महिलाओं द्वारा घरों के भीतर किये जाते हैं, जैसे कि बच्चों की देखभाल, बुजुर्गों की देखभाल, घरेलू काम आदि।
  - **सशुल्क देखभाल कार्य**: इसमें नर्सों, देखभालकर्ताओं आदि द्वारा पारिश्रमिक के लिए किया गया श्रम शामिल होता है।

सुविकसित देखभाल अर्थव्यवस्था की बढ़ती आवश्यकता

- **जनसांख्यिकीय परिगमन:** वर्तमान में, जनसंख्या का एक चौथाई (36 करोड़) हिस्सा 14 वर्ष से कम आयु का है, जबकि दसवां हिस्सा (14.7 करोड़) 60 वर्ष से अधिक आयु का है। वर्ष 2050 तक, 14 वर्ष से कम आयु वर्ग का हिस्सा घटकर 30 करोड़ होने का अनुमान है, जबकि बुजुर्गों की संख्या बढ़कर 34.7 करोड़ हो जाएगी। 2022 में 50.7 करोड़ व्यक्तियों की तुलना में, देश को 2050 में 64.7 करोड़ व्यक्तियों की देखभाल संबंधी कार्य करने की आवश्यकता होगी।
- **महिलाओं के लिए समान अवसर - जेंडर और अवैतनिक देखभाल संबंधी कार्य को अलग करना:** देखभाल अर्थव्यवस्था का विकास विशेष रूप से महिलाओं के लिए, भुगतान किए गए कार्यों के लिए समान अवसर प्रदान करके FLFPR को बढ़ा सकता है।
  - **महिलाएं अवैतनिक देखभाल कार्यों का असंगत बोझ उठाती हैं**, जो भारत सहित वैश्विक स्तर पर कम FLFPR में योगदान देता है।
  - **भारत में कामकाजी आयु वर्ग की महिलाएं प्रतिदिन 5.6 घंटे अवैतनिक कार्य पर खर्च करती हैं जबकि पुरुषों के लिए यह समय 30 मिनट है।**
  - **दोहरा बोझ:** यहां तक कि वेतनभोगी रोजगार में कार्यरत महिलाएं भी पुरुषों की तुलना में अवैतनिक देखभाल कार्यों पर लगभग 6 गुना अधिक समय व्यतीत करती हैं, जिसके परिणामस्वरूप **'दोहरा बोझ' उत्पन्न होता है।**
  - **मातृत्व दंड:** बच्चे पैदा करने और उनकी देखभाल करने का महिलाओं के करियर पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है, जिसे 'मातृत्व दंड' कहा जाता है।

- **आर्थिक संभावना:** अनुमान है कि देखभाल सेवा क्षेत्रक में निवेश से 2030 तक वैश्विक स्तर पर 475 मिलियन नौकरियां पैदा होंगी। भारत के मामले में, सकल घरेलू उत्पाद के 2% के बराबर प्रत्यक्ष सार्वजनिक निवेश से 11 मिलियन नौकरियां पैदा होने की संभावना है, जिनमें से लगभग 70% महिलाओं को मिलेंगी।

केस स्टडी: क्रेच का बहुआयामी प्रभाव

- **मेक्सिको में अध्ययन:** मेक्सिको में सार्वजनिक बाल देखभाल सेवाओं की उपलब्धता का श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी पर दोहरा प्रभाव पड़ा।
  - सबसे पहले, कम आय वाली माताओं को सवेतन नौकरी पाने में सहायता मिली। दूसरा, इस पहल से देखभाल करने वालों और उनके सहायकों के लिए लगभग 45,000 सवेतन पद सृजित हुए।
- **भारत में अध्ययन:** भारत में किए गए अध्ययन में पाया गया कि गुणवत्तापूर्ण क्रेच सुविधाओं का महिलाओं के कल्याण, आय, बच्चे के कल्याण और परिवार के सदस्यों के साथ संबंधों पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
  - **सरकारी कार्यक्रम: पालना योजना** को नया रूप दिया गया, **आंगनवाड़ी-सह-क्रेच पहल** आदि।

चार्ट VIII.27: बाल देखभाल व्यवस्था की कमी का प्रभाव: एक वैचारिक मॉडल

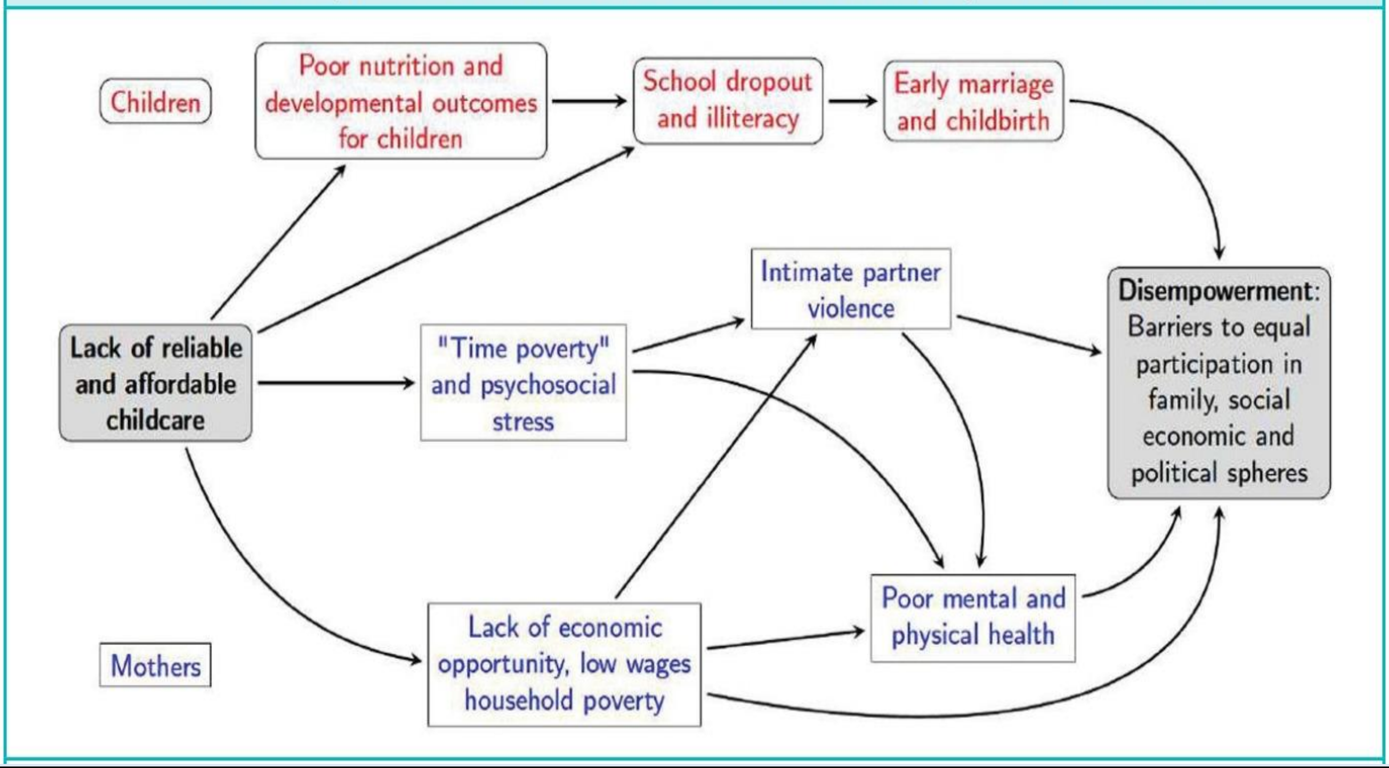

भारत में वरिष्ठ देखभाल सुधार: वरिष्ठ देखभाल प्रतिमान की पुनर्कल्पना

परिचय

एशियाई विकास बैंक की **'एजिंग वेल इन एशिया' रिपोर्ट** के अनुसार, भारत की वृद्ध आबादी 2022 में 20% से बढ़कर 2050 तक 30% हो जाने की संभावना है। इससे भविष्य के लिए तैयार वृद्ध देखभाल नीति विकसित करने के लिए वरिष्ठ देखभाल पर शीघ्र चर्चा आवश्यक हो गई है।

वृद्धों की देखभाल की बढ़ती आवश्यकता

- बुजुर्ग आबादी का एक बड़ा हिस्सा दीर्घकालिक बीमारियों, कार्यात्मक सीमाओं, अवसादग्रस्त लक्षणों और निम्न जीवन संतुष्टि से ग्रस्त है।
- चूंकि बुजुर्ग आबादी में महिलाओं की संख्या लगातार बढ़ रही है और वे ग्रामीण इलाकों में रहती हैं, इसलिए बुजुर्गों का स्त्रीकरण और ग्रामीणीकरण गरीबी, निर्भरता और अकेलेपन से जुड़ा हुआ है।

इंडिया एजिंग रिपोर्ट 2023 की सिफारिशें

- साक्ष्य-आधारित नीति निर्माण के लिए राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण, राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण और भारत की जनगणना में प्रासंगिक प्रश्नों को शामिल करना।
- वृद्ध व्यक्तियों के लिए मौजूदा योजनाओं के बारे में जागरूकता बढ़ाना।
- बहु-पीढ़ी वाले घरों में रहने वाले बुजुर्ग लोगों के महत्व पर जोर देना।
- क्रेच या डे-केयर सुविधाओं जैसी अल्पकालिक देखभाल सुविधाएं बनाकर यथासंभव घर पर ही वृद्धावस्था को प्रोत्साहित करना।

बुजुर्गों की देखभाल के लिए नवीन समाधानों के उदाहरण

- **टाटा द्वारा वित्तपोषित स्टार्ट-अप गुडफेलो:** यह स्टार्ट-अप भावनात्मक बुद्धिमत्ता और सहानुभूति रखने वाले युवाओं को काम पर रखता है, जिन्हें "ग्रैंडपाल" कहा जाता है। ये संगीति की चाह रखने वाले अकेले वरिष्ठ नागरिकों से बातचीत करते हैं।
- वेदांता लिमिटेड द्वारा नई माताओं के लिए 12 महीने का अवकाश और मातृत्व अवकाश के बाद लचीले कार्य घंटों की **वेदांता की व्यापक पेरेंटहुड नीति,**
- सेवा के संगिनी मॉडल के तहत अनौपचारिक महिला श्रमिकों के छह वर्ष तक की आयु के 3,639 बच्चों के लिए पूर्णकालिक शिशु देखभाल का प्रावधान।

बुजुर्गों की देखभाल के लिए एक समग्र नीति की आवश्यकता

- **भारत का बुजुर्ग देखभाल क्षेत्र अविकसित है।** अपने आकार (7 बिलियन अमेरिकी डॉलर) के बावजूद, इसमें बुनियादी ढांचे, अनुसंधान और आपातकालीन सेवाओं का अभाव है। इन कमियों को दूर करने के लिए एक व्यापक नीति की आवश्यकता है।
- **वृद्ध कर्मचारी अर्थव्यवस्था को बढ़ावा दे सकते हैं।** 60-69 वर्ष की आयु के लोगों को रोजगार देने से एशियाई देशों में सकल घरेलू उत्पाद में 1.5% की वृद्धि हो सकती है। आयु के अनुकूल नौकरियां सृजित करने और आजीवन सीखने को बढ़ावा देने से वृद्ध लोगों को कार्यबल में योगदान करने में मदद मिल सकती है, साथ ही उनके जीवन की गुणवत्ता में सुधार हो सकता है और देखभाल की ज़रूरतें कम हो सकती हैं।

बेहतर देखभाल पारिस्थितिकी तंत्र के निर्माण के लिए सुझाव

- **देखभाल सेवाओं के लिए क्षेत्रक कौशल परिषद की स्थापना:** इससे देखभाल क्षेत्र के लिए कौशल प्रशिक्षण ढांचा विकसित करने, कौशल मॉड्यूल तैयार करने आदि में सहायता मिल सकती है।
- **सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP)**: देखभाल संबंधी बुनियादी ढांचे, विशेष रूप से बच्चों और बुजुर्गों के लिए संस्थानों के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।
- **संस्थागत निरीक्षण और सतत निगरानी:** यह सुनिश्चित करना कि बुनियादी ढांचे का रखरखाव अच्छी तरह से हो और देखभाल सेवाएँ संतोषजनक हों।
- **समुदाय-आधारित और नागरिक समाज संगठनों के साथ सहयोग:** देखभाल के बुनियादी ढांचे और वित्तीय बाधाओं से संबंधित परिचालन संबंधी मुद्दों का समाधान करना।
- **अन्य:** देखभाल सेवाओं को सब्सिडी देना, क्रेच के बारे में जागरूकता पैदा करना, नवीन व्यापार मॉडल विकसित करना, क्रेच और वृद्धाश्रमों की रेटिंग प्रणाली आदि।

निष्कर्ष

देखभाल सेवाएँ प्रदान करके, महिलाएँ कार्यबल में अधिक पूर्ण रूप से भाग ले सकती हैं, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। इस प्रकार, भारत को किफायती, सुलभ देखभाल सेवाओं को बढ़ावा देने वाली नीतियों और साझा अभिभावकीय जिम्मेदारियों को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है।

कौशल निर्माण में विकास और प्रगति

परिचय

जनसांख्यिकीय लाभ प्राप्त करने के लिए, भारत को अपने युवा कार्यबल को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए उद्योग 4.0 कौशल से लैस करना होगा। तदनुसार, कौशल को बढ़ाकर भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश को उत्पादकता लाभांश में बदलने के लिए सरकार द्वारा कई उपाय किए जा रहे हैं।

कौशल विकास कार्यक्रमों की प्रगति

- इस अवधि में कुशल लोगों के अनुपात में उल्लेखनीय सुधार हुआ है।
- आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (PLFS) रिपोर्ट 2022-23 के अनुसार, **4.4% भारतीय युवाओं (15-29) ने औपचारिक व्यावसायिक प्रशिक्षण प्राप्त किया है**, जबकि अन्य **16.6% ने अनौपचारिक स्रोतों के माध्यम से प्रशिक्षण प्राप्त किया है।**
- कौशल विकास में व्यापक प्रगति हुई है। इसे प्रत्येक दो वर्ष में आयोजित होने वाली **विश्व कौशल प्रतियोगिताओं में भारत की बढ़ती स्थिति में देखा जा सकता है।** (इन्फोग्राफिक देखें)

चार्ट VIII.29: विश्व कौशल प्रतियोगिता में भारत

स्रोत: एमएसडीई वार्षिक रिपोर्ट 2022-23

कौशल विकास के लिए कई योजनाएं

कौशल विकास मंत्रालय के अंतर्गत योजनाएं	लक्ष्य/उद्देश्य	प्रगति
प्रधान मंत्री कौशल विकास योजना (PMKVY)	• निःशुल्क लघु अवधि कौशल प्रशिक्षण एवं प्रमाणन	• वर्ष 2015 में इस योजना की शुरूआत के बाद से **1,42,67,888 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया है।** • प्रशिक्षित लोगों में **महिलाओं की भागीदारी वित्त वर्ष 2016 में 42.7% से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 52.3% हो गई है।**
औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों (ITIs) में शिल्पकार प्रशिक्षण योजना	• 14,955 ITIs के नेटवर्क के माध्यम से व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।	• 2014 से 2023 के बीच **1.24 लाख व्यक्तियों ने** दीर्घकालिक प्रशिक्षण में नामांकन कराया। • **महिलाओं की भागीदारी वित्त वर्ष 2016 में 9.8 प्रतिशत से बढ़कर** वित्त वर्ष 2024 में 13.3 प्रतिशत हो गई है।
जन शिक्षण संस्थान (JSS)	• गैर/नव साक्षरों और अल्पविकसित स्तर की शिक्षा वाले व्यक्तियों के कौशल विकास के लिए।	• वित्त वर्ष 19 से वित्त वर्ष 24 तक 26,36,769 व्यक्तियों को प्रशिक्षित किया गया है तथा **24,94,807 व्यक्तियों को प्रमाणित किया गया है।**
राष्ट्रीय प्रशिक्षुता प्रोत्साहन योजना (NAPS)	• आंशिक वजीफे की प्रतिपूर्ति करके प्रशिक्षुता प्रशिक्षण को बढ़ावा देना।	• वित्त वर्ष 2017 से वित्त वर्ष 2024 के बीच **32.38 लाख प्रशिक्षु इसमें शामिल हुए।** • **महिलाओं की भागीदारी** 2016-17 में 7.74 प्रतिशत से बढ़कर 2023-24 में 20.77 प्रतिशत हो गई है।
स्किल इंडिया डिजिटल हब प्लेटफॉर्म कन्वर्जेंस प्लेटफॉर्म	• एआई/एमएल तकनीक के माध्यम से कौशल, रोजगार आदि तक पहुंच को सुगम बनाना।	• 60 लाख शिक्षार्थियों का पंजीकरण **तथा 8.4 लाख ऐप डाउनलोड।**

अंतर्राष्ट्रीय सहयोग

G2G समझौता ज्ञापन	• योग्यताओं की पारस्परिक मान्यता आदि में सहयोग के लिए **8 देशों** अर्थात ऑस्ट्रेलिया, डेनमार्क, फ्रांस, जर्मनी, जापान आदि के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं।
स्किल इंडिया इंटरनेशनल सेंटर (SIIC)	• बजट वित्त वर्ष 24 में 30 SIIC की स्थापना की घोषणा की गई। • वाराणसी और SDI भुवनेश्वर में दो केंद्र चालू कर दिए गए हैं।
NSDC इंटरनेशनल लिमिटेड	• यह सूचना प्रौद्योगिकी, निर्माण, आतिथ्य आदि जैसे प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्किल इंडिया इंटरनेशनल मिशन को संचालित करता है।

MSDE योजनाओं से परे लक्षित कौशल

जल जीवन मिशन	• MSDE द्वारा बहु-कौशल पाठ्यक्रम का समग्र मार्गदर्शन और समन्वय।
पीएम विश्वकर्मा	• यह 2023 में शुरू की गई **केंद्रीय क्षेत्रक की एक योजना है।** इसका उद्देश्य पारंपरिक औजारों के साथ काम करने वाले पारंपरिक कारीगरों/शिल्पकारों को मान्यता देना, कौशल उन्नयन, **जमानत मुक्त ऋण** और **विपणन सहायता** देना है। • इस योजना के अंतर्गत दर्जी, नाई, राजमिस्त्री, बढ़ई आदि **18 व्यवसायों को शामिल किया गया है।** • इस कार्यक्रम के तहत **4.37 लाख अभ्यर्थियों को** प्रशिक्षित किया गया है/प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।
ग्रीन हाइड्रोजन	• **कौशल विकास, उन्नयन और पुनः कौशल विकास** के लिए 50 नई अल्पकालिक योग्यताओं का विकास।
पीएम-JANMAN	• उद्यमिता और कौशल विकास, **क्षमता निर्माण और पहचान किए गए PVTG लाभार्थियों को सहायता प्रदान करना।**
अग्निवीरों के लिए विशेष कौशल प्रावधान	• **अग्निवीरों को** 4 वर्ष की सेवा के बाद उद्योगों में रोजगार के अवसर सुनिश्चित करने के लिए कौशल प्रमाणन दिया जाएगा।

कौशल विकास के लिए उद्योग के साथ साझेदारी

- किसी भी बड़े पैमाने के कौशल कार्यक्रम के लिए उद्योग से जुड़ाव अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह **समकालीन प्रासंगिकता और रोजगार-क्षमता को सक्षम बनाता है। इससे नए कुशल कार्यबल को समाहित करने के लिए मांग का पता लगाया जा सकता है।**
- **उद्योग के साथ साझेदारी के लिए शुरू की गई पहल**
  - **NSDC साझेदारियां:** 62 कॉर्पोरेट गठजोड़ों के माध्यम से 3.1 लाख से अधिक लोगों को प्रशिक्षित किया गया।
  - **स्किल इम्पैक्ट बॉण्ड:** कौशल विकास, नौकरी की नियुक्ति और प्रतिधारण के लिए निजी निधियों का लाभ उठाते हुए, 50,000 युवाओं को प्रशिक्षित किया जाएगा, जिसमें महिलाओं पर विशेष ध्यान दिया जाएगा।
  - **DGT की पहल:** उद्योग के साथ लचीले समझौता ज्ञापन, दोहरी प्रणाली प्रशिक्षण, और उद्योग 4.0 की तैयारी के लिए आईटी सहयोग।

प्रशिक्षुता ढांचे की जांच करना

कार्य करते हुए सीखना **सीखने का सबसे अच्छा तरीका** माना गया है और यह **सिद्धांत से अभ्यास तक की खाई को पाटने का यह सबसे अच्छा तरीका है।** इसे ज्ञान-आधारित व्यवसायों में प्रशिक्षुता या इंटर्नशिप के रूप में जाना जाता है।

महत्व

- लोगों को **अनौपचारिक कार्य से औपचारिक रोजगार की ओर बढ़ने** या शैक्षणिक क्षेत्र से **कार्यस्थल तक जाने में सहायता करता है।**
- इससे **कौशल अंतर को पाटा जा सकता है** तथा **व्यावसायिक छात्रों की रोजगार क्षमता में सुधार किया जा सकता है।**

चुनौतियां

- **शिक्षा संस्थानों और उद्योग के बीच समन्वय** का अभाव।
- **अपर्याप्त बुनियादी ढांचा,** और विनियामक अंतराल।
- व्यावसायिक प्रशिक्षण को अकादमिक शिक्षा से निम्नतर मानने की **नकारात्मक धारणा।**

आगे की राह

- **स्विस और जर्मन मॉडल का अनुकरण करते हुए कार्य के घंटों, पारिश्रमिक** और विघटन में लचीलापन लाने की आवश्यकता है।
- **सरकारी एजेंसियों की भूमिका को न्यूनतम करना चाहिए** तथा स्थानीय स्तर पर अवसरों और मांग का संचालन करना चाहिए।
- दीर्घकाल में जागरूकता बढ़ाने, **उद्योगों को प्रोत्साहित करने** आदि के माध्यम से **प्रभावी कार्यान्वयन** पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

आगे की राह

- **औपचारिकरण और सामाजिक सुरक्षा:** बढ़ते कार्यबल को औपचारिक बनाना, तथा नियमित वेतन/रोजगार वाले लोगों के लिए सामाजिक सुरक्षा का लाभ सुनिश्चित करना चाहिए।
- **रोजगार सृजन:** ऐसे क्षेत्रकों में रोजगार सृजन करना एक चुनौती बनी हुई है जो कृषि क्षेत्रक के श्रमिकों को रोजगार दे सकें।
- **राज्य स्तरीय बाधाओं को दूर करना:** राज्य सरकारों को रोजगार सृजन को सुगम बनाने के लिए व्यवसाय विनियमन और भूमि सुधारों को आसान बनाने की आवश्यकता है।
- **कृषि प्रसंस्करण:** अपनी क्षमता के बावजूद, कृषि प्रसंस्करण क्षेत्र को एक केंद्रित, राष्ट्रीय स्तर के दृष्टिकोण की आवश्यकता है।
- **AI और स्वचालन:** नौकरियों पर AI के प्रभाव को साझा समृद्धि की दिशा में सुनिश्चित करने के लिए इसके सावधानीपूर्वक प्रबंधन की आवश्यकता है।
- **देखभाल अर्थव्यवस्था:** बाल देखभाल और वृद्ध देखभाल के लिए बुनियादी ढांचे का विकास महिला श्रम शक्ति भागीदारी बढ़ाने के लिए महत्वपूर्ण है।
- **कॉर्पोरेट उत्तरदायित्व:** व्यवसायों के लाभ को अधिकतम करने तथा रोजगार सृजन एवं आय के उचित वितरण के बीच संतुलन स्थापित करने की आवश्यकता है।
- **कौशल विकास:** कौशल विकास के लिए बाजार आधारित दृष्टिकोण आवश्यक है, जिसमें नियामक बाधाओं को दूर करने के लिए सरकारी समर्थन भी शामिल है।

बजट में क्या कहा गया है?

व्यय

- बजट 2024 में रोजगार और कौशल पहल के लिए 1.48 लाख करोड़ रुपये आवंटित किए गए।

सरकार द्वारा घोषित पहलें

- प्रधान मंत्री द्वारा 5 वर्ष की अवधि में 4.1 करोड़ युवाओं के लिए रोजगार, कौशल एवं अन्य अवसरों हेतु 5 योजनाओं एवं पहलों का पैकेज।
    - **योजना A - पहली बार नौकरी करने वाले:** EPFO में पंजीकृत पहली बार नौकरी करने वाले कर्मचारियों को 3 किस्तों में 15,000 रुपये तक का एक महीने का वेतन दिया जाएगा।
    - **योजना B - विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार सृजन:** रोजगार के प्रथम 4 वर्षों में कर्मचारी और नियोक्ता दोनों को EPFO में उनके अंशदान के आधार पर सीधे प्रोत्साहन प्रदान किया जाएगा।
    - **योजना C - नियोक्ताओं को सहायता:** सरकार प्रत्येक अतिरिक्त कर्मचारी के लिए नियोक्ताओं के EPFO अंशदान के लिए 2 वर्षों तक 3,000 रुपये प्रति माह तक की प्रतिपूर्ति करेगी।
    - **कौशल विकास के लिए नई केन्द्र प्रायोजित योजना**
        - पांच वर्ष की अवधि में 20 लाख युवाओं को कौशल प्रदान किया जाएगा।
        - 1,000 औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थानों को हब और स्पोक व्यवस्था में उन्नत किया जाएगा।
    - **इंटर्नशिप के लिए नई योजना:** 5 वर्षों में **500 शीर्ष कंपनियों में 1 करोड़ युवाओं को इंटर्नशिप** प्रदान की जाएगी।
- कार्यबल में महिलाओं की अधिक भागीदारी को सुगम बनाने के लिए,
    - औद्योगिक सहयोग से कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास और क्रेच स्थापित किए जाएंगे
    - महिलाओं के लिए विशेष कौशल कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे
    - महिला स्वयं सहायता समूह उद्यमों के लिए बाजार पहुंच को बढ़ावा दिया जाएगा
    - **मॉडल कौशल ऋण योजना को** संशोधित किया जाएगा, ताकि सरकार द्वारा प्रवर्तित निधि से गारंटी के साथ 7.5 लाख रुपये तक के ऋण की सुविधा दी जा सके। इस उपाय से सालाना 25,000 छात्रों को लाभ मिलने की उम्मीद है।

शब्दावली

शब्द/ पद	अर्थ
श्रमिक-जनसंख्या अनुपात	• एक महत्वपूर्ण आर्थिक संकेतक जो किसी देश की कार्यशील आयु वाली जनसंख्या के रोजगार के अनुपात का मापन करता है।
श्रम बल भागीदारी दर	• कार्यशील आयु वर्ग की जनसंख्या का वह प्रतिशत जो या तो कार्यरत है या सक्रिय रूप से रोजगार की तलाश में है।
चौथी औद्योगिक क्रांति	• यह कनेक्टिविटी, उन्नत विश्लेषण, स्वचालन और उन्नत विनिर्माण प्रौद्योगिकी के वर्तमान युग को संदर्भित करती है जो वर्षों से वैश्विक व्यापार में बदलाव ला रही है।
मातृत्व दंड	• इसमें बताया गया है कि किस प्रकार कार्यस्थल पर माताओं को वेतन और नियुक्ति संबंधी गंभीर असुविधाओं का सामना करना पड़ता है।
गिग इकॉनमी	• यह एक ऐसे श्रम बाजार को संदर्भित करता है, जिसमें स्थायी, पूर्णकालिक नौकरियों के विपरीत अल्पकालिक अनुबंध, फ्रीलान्स कार्य और अस्थायी पद होते हैं।

अध्याय 8: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. **'एजिंग वेल इन एशिया'** रिपोर्ट निम्नलिखित में से किसके द्वारा प्रकाशित की जाती है?
   (a) विश्व आर्थिक मंच
   (b) विश्व बैंक
   (c) एशिया-प्रशांत आर्थिक सहयोग
   (d) एशियाई विकास बैंक

2. भारत में कारखानों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. 2021-22 में, 100 से कम लोगों को रोजगार देने वाली फैक्ट्रियां सभी फैक्ट्रियों का लगभग 80% हिस्सा थीं।
   2. बड़ी फैक्ट्रियां छोटी फैक्ट्रियों की तुलना में अधिक रोजगार पैदा करती हैं और अधिक वेतन देती हैं।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

3. भारत में श्रम बल प्रवृत्तियों के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
   1. कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (EPFO) के अधिकांश नए ग्राहक 18-28 वर्ष आयु वर्ग के युवा हैं।
   2. महिला श्रम बल भागीदारी दर (FLFPR) में पिछले छह वर्षों में लगातार वृद्धि देखी गई है।
   3. ग्रामीण क्षेत्रों में FLFPR में वृद्धि मुख्य रूप से औद्योगिक विकास और रोजगार सृजन में वृद्धि के कारण हुई है।

   उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?
   (a) केवल एक
   (b) केवल दो
   (c) केवल तीन
   (d) कोई नहीं

4. निम्नलिखित युग्मों पर विचार कीजिए।

योजना/पहल		***विशेषता/उद्देश्य***
1. प्रधान मंत्री मुद्रा योजना	:	कौशल संवर्धन हेतु ऋण उपलब्ध कराती है
2. स्टैंड अप इंडिया	:	सूक्ष्म/लघु व्यवसायों के लिए 10 लाख रुपये तक का समपार्श्विक-मुक्त ऋण
3. स्टार्ट अप इंडिया	:	अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और महिला उद्यमियों को ऋण प्रदान करना

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
   (a) केवल 1
   (b) केवल 1 और 2
   (c) 1, 2 और 3
   (d) कोई नहीं

© Vision IAS

5. 2023 में शुरू की गई 'पीएम विश्वकर्मा योजना' का मुख्य उद्देश्य है:
   (a) बड़े पैमाने के उद्योगों को सब्सिडी प्रदान करना।
   (b) पारंपरिक कारीगरों और शिल्पकारों को समर्थन देना।
   (c) आधुनिक विनिर्माण तकनीकों को बढ़ावा देना।
   (d) हस्तनिर्मित उत्पादों के निर्यात को प्रोत्साहित करना।

प्रश्न

1. देखभाल कार्य को अक्सर अनदेखा किया जाता है और उसका कम मूल्यांकन किया जाता है। भारतीय संदर्भ में, लैंगिक समानता और आर्थिक विकास को प्राप्त करने की दिशा में देखभाल अर्थव्यवस्था विकसित करने की क्षमता पर चर्चा कीजिए।
2. जलवायु परिवर्तन और तकनीकी प्रगति वैश्विक रोजगार परिदृश्य को नया आकार दे रही हैं। इसके संदर्भ में इस दोहरे परिवर्तन से उत्पन्न चुनौतियों और अवसरों की विवेचना कीजिए।

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

करेंट अफेयर्स की बेहतर तैयारी कैसे करें?

करेंट अफेयर्स सिविल सेवा परीक्षा की तैयारी की आधारशिला है, जो प्रीलिम्स, मेन्स और इंटरव्यू तीनों चरणों में जरूरी होता है। परीक्षा के प्रश्न डायनेमिक स्रोतों से तैयार किए जा रहे हैं। ये प्रश्न सीधे वर्तमान की घटनाओं से जुड़े होते हैं या स्टैटिक कंटेंट तथा वर्तमान की घटनाओं, दोनों से जुड़े होते हैं। इस संदर्भ में, करेंट अफेयर्स से अपडेट रहना अभ्यर्थी को सिविल सेवा परीक्षा के नए ट्रेंड को समझने में सक्षम बनाता है। सही रिसोर्सेज और एक रणनीतिक दृष्टिकोण के जरिए अभ्यर्थी इस विशाल सेक्शन को अपना सकारात्मक पक्ष बना सकते हैं।

करेंट अफेयर्स के लिए दोहरी स्तर वाली रणनीति

करेंट अफेयर्स के लिए दोहरी स्तर वाली रणनीति

अपनी फाउंडेशन को मजबूत करना

न्यूज़पेपर पढ़ना: फाउंडेशन

वैश्विक और राष्ट्रीय घटनाओं की व्यापक समझ हेतु न्यूज़पेपर पढ़ने के लिए प्रतिदिन एक घंटा समर्पित करना चाहिए।

न्यूज़ टुडे: संदर्भ की सरल प्रस्तुति

न्यूज़पेपर पढ़ने के साथ-साथ, न्यूज़ टुडे भी पढ़िए, जिसमें लगभग 200 या 90 शब्दों में करेंट अफेयर्स का सारांश प्रस्तुत किया जाता है। यह रिसोर्स अभ्यर्थियों को महत्वपूर्ण न्यूज़ की पहचान करने, तकनीकी शब्दों और घटनाओं को समझने में मदद करता है।

मासिक समसामयिकी मैगजीन: गहन विश्लेषण

व्यापक कवरेज और घटनाओं के विस्तृत विश्लेषण के लिए मासिक समसामयिकी मैगजीन आपकी जरूरत पूरी कर सकती है। इससे अलग-अलग क्षेत्रों में विभिन्न घटनाओं के संदर्भ, महत्त्व और निहितार्थ को समझने में सुविधा होती है।

तैयारी और रिविजन में महारत हासिल करना

वीकली फोकस: फाउंडेशन को मजबूत करना

किसी टॉपिक के बारे में अपनी समझ को मजबूत करने के लिए वीकली फोकस का संदर्भ लीजिए। इसमें किसी प्रमुख मुद्दे के विभिन्न पहलुओं और आयामों के साथ-साथ स्टेटिक तथा डायनेमिक घटकों को शामिल किया जाता है।

आर्थिक सर्वेक्षण और बजट के हाईलाइट्स तथा सारांश

इसमें आसानी से समझ के लिए जटिल जानकारी को एक कॉम्पैक्ट प्रारूप में प्रस्तुत किया जाता है। आर्थिक सर्वेक्षण और केंद्रीय बजट के सारांश डाक्यूमेंट्स से आप महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

PT 365 और Mains 365: परीक्षा में प्रदर्शन बढ़ाना

पूरे वर्ष के करेंट अफेयर्स की तैयारी के लिए PT 365 और Mains 365 का उपयोग कीजिए। इससे प्रीलिम्स और मेन्स, दोनों के लिए रिविजन में भी मदद मिलेगी।

ब्रोशर पढ़ने के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

Vision IAS का **त्रैमासिक रिवीजन डॉक्यूमेंट** उन छात्रों के लिए उपयोगी रिसोर्स है, जो 2-3 महीनों से मंथली अपडेट पढ़ने से चूक गए हैं। यह प्रमुख घटनाक्रमों का सारांश प्रदान करके लर्निंग में निरंतर सहायता प्रदान करता है।

"याद रखिए, करेंट अफेयर्स को केवल याद ही नहीं रखना होता है, बल्कि घटनाओं के व्यापक निहितार्थों और अंतर्संबंधों को समझना भी होता है। जिज्ञासा के साथ आगे बढ़िए; समय के साथ, यह बोझ कम होता जाएगा और यह एक ज्ञानवर्धक अनुभव बन जाएगा।"

अहमदाबाद | बेंगलूरु | भोपाल | चंडीगढ़ | दिल्ली | गुवाहाटी | हैदराबाद | जयपुर | जोधपुर | लखनऊ | प्रयागराज | पुणे | रांची

अध्याय 9: कृषि और खाद्य प्रबंधन: यदि हम सही कर लें तो कृषि में बढ़ोतरी अवश्य है (Agriculture and Food Management: Plenty of Upside Left If We Get It Right)

परिचय

देश में लगभग 89.4% कृषक परिवारों के पास 2 हेक्टेयर से कम भूमि है। भारत धान, गेहूं, कपास सहित अन्य फसलों का दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा उत्पादक है तथा दूध, दालों और मसालों का सबसे बड़ा उत्पादक है। फिर भी, देश में फसल की पैदावार अन्य प्रमुख उत्पादकों की तुलना में बहुत कम है।

अध्याय का प्रीकैप

वर्तमान स्थिति

- **कृषि**
    - **आजीविका:** देश की 42.3% आबादी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर है।
    - **GDP में योगदान:** वर्तमान मूल्यों पर भारत की **GDP में कृषि की हिस्सेदारी 18.2%** है।
    - **संवृद्धि दर:** कृषि क्षेत्रक ने पिछले पांच वर्षों में **प्रति वर्ष औसतन 4.18% की वृद्धि दर्ज** की है।
    - **खाद्यान्न भंडार:** भारत में उत्पादित कुल खाद्य भंडार का 40% भाग देश की दो-तिहाई आबादी को नि:शुल्क वितरित किया जाता है।
    - **निर्यात:** भारत 7% से अधिक खाद्यान्न का निर्यात करता है।

चार्ट IX-1: कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों की वृद्धि

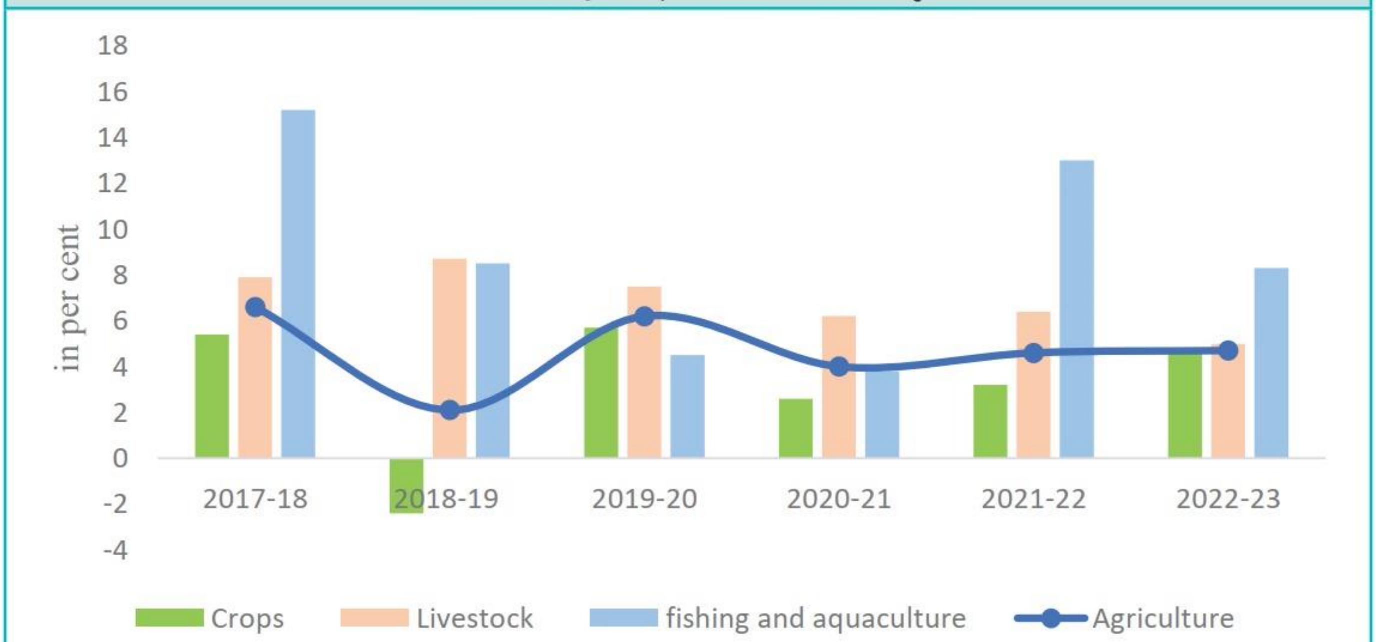

स्रोत: राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (एनएसओ) सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

- **संबद्ध गतिविधियां**
    - **पशुधन:** कृषि GVA में इसकी हिस्सेदारी 2014-15 के 24.38% से बढ़कर 2022-23 में 30.23% हो गई।
    - **मत्स्य पालन:** कृषि GVA में इसकी हिस्सेदारी 2014-15 के 4.44% से बढ़कर 2022-23 में 7.25% हो गई।
    - **प्रदर्शन:** इन दोनों क्षेत्रकों ने अनाज जैसी पारंपरिक फसलों से बेहतर प्रदर्शन किया है।

© Vision IAS

इस दिशा में की गई पहलें

- **कृषि**
  - **न्यूनतम समर्थन मूल्य (MSP):** 2018-19 में MSP को **अखिल भारतीय भारित औसत उत्पादन लागत का डेढ़ गुना तय करने का निर्णय** लिया गया।
  - **प्रधान मंत्री किसान सम्मान निधि (PM-KISAN):** इसके तहत किसान को प्रति वर्ष 6,000/- रुपये की राशि प्रत्यक्ष रूप से दी जाती है।
  - **डिजिटल कृषि मिशन:** यह **स्मार्ट कृषि प्रौद्योगिकियों** को अपनाने की सुविधा प्रदान करता है।
  - **ई-राष्ट्रीय कृषि बाजार (e-NAM):** यह बेहतर मूल्य खोज की अनुमति देता है।
- **संबद्ध क्षेत्रक**
  - **मत्स्य पालन और जलीय कृषि अवसंरचना विकास निधि (FIDF):** इसका उद्देश्य संस्थागत ऋण तक पहुंच बढ़ाना, और अवसंरचना विकास करना है।
  - **प्रधान मंत्री मत्स्य सम्पदा योजना (PMMSY):** इसका उद्देश्य मत्स्य पालन हेतु अवसंरचना मजबूत करना, मछुआरों को प्रौद्योगिकी सक्षम बनाना और इष्टतम जल प्रबंधन को बढ़ावा देना है।
  - **अन्य पहलें:** राष्ट्रीय गोकुल मिशन (RGM), राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन (NDLM), और राष्ट्रीय डेयरी विकास कार्यक्रम (NPDD)।

कृषि उत्पादन: प्रदर्शन और फसल विविधीकरण को बढ़ावा

प्रदर्शन

2022-23 में, खाद्यान्न उत्पादन 329.7 मिलियन टन के सर्वकालिक उच्च स्तर तक पहुंच गया और तिलहन उत्पादन 41.4 मिलियन टन तक पहुंच गया।

चार्ट IX.3: प्रमुख फसलों का उत्पादन

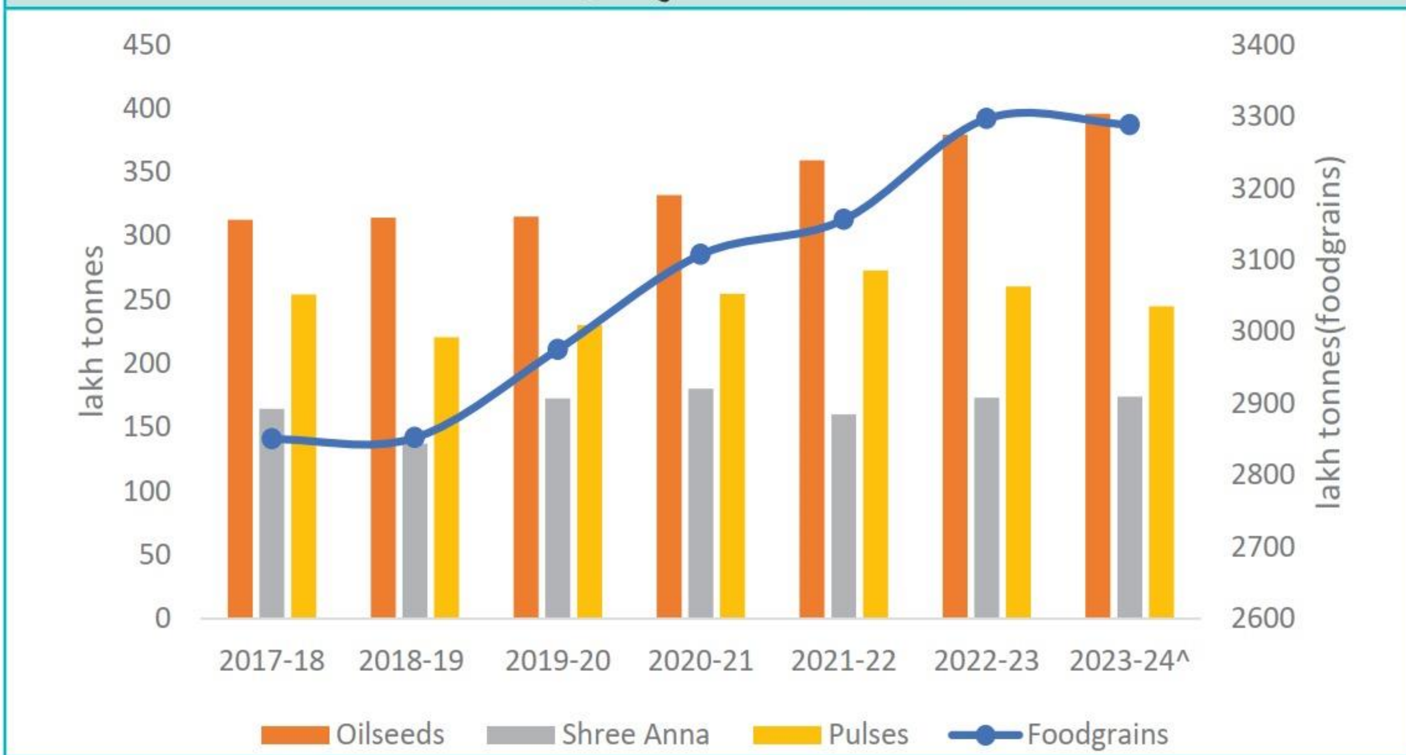

स्रोत: कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
^तीसरा अग्रिम अनुमान के अनुसार

फसल विविधीकरण को बढ़ावा देना

- **दालों और श्री अन्न (मिलेट्स) के लिए MSP:** दालों और तिलहनों के लिए MSP में उल्लेखनीय वृद्धि देखी गई है। इसके तहत 2023-24 के लिए दालों (मसूर) का MSP उत्पादन लागत से 89% अधिक था।
  - वहीं, मोटे अनाज या श्री अन्न (मिलेट्स) का MSP उत्पादन लागत से 82% अधिक था।
- **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन- तिलहन और तेल पाम (NFSM-OS&OP):** इसका लक्ष्य बेहतर उत्पादकता और विस्तारित खेती के माध्यम से वनस्पति तेल की उपलब्धता को बढ़ावा देना है।
  - **सभी तिलहनों का कुल क्षेत्रफल कवरेज:** यह 2014-15 के 25.60 मिलियन हेक्टेयर से बढ़कर 2023-24 में 30.08 मिलियन हेक्टेयर (17.5% की वृद्धि) हो गया।
  - **घरेलू खाद्य तेल की उपलब्धता:** यह 2015-16 के 86.30 लाख टन से बढ़कर 2023-24 में 121.33 लाख टन हो गई।
  - **आयात हिस्सेदारी:** यह 2015-16 के 63.2% से घटकर 2022-23 में 57.3% रह गई।

कृषि और संबद्ध क्षेत्रों में निवेश एवं ऋण तक पहुंच को बढ़ावा देना

- **सार्वजनिक निवेश में वृद्धि: सार्वजनिक निवेश में वृद्धि** के कारण कृषि क्षेत्रक में **सकल पूंजी निर्माण (GCF)** और **सकल मूल्य वर्धित (GVA)** के प्रतिशत के रूप में इसकी **हिस्सेदारी लगातार बढ़** रही है। सरकार कृषि क्षेत्रक में अधिक निवेश कर रही है, जिससे किसानों के पास बेहतर उपकरण, तकनीक और सुविधाएँ उपलब्ध हो रही हैं। इससे कृषि उत्पादन बढ़ रहा है और किसानों की आय में वृद्धि हो रही है।
  - **2022-23 में, GCF में 19.04% की वृद्धि** हुई, और GVA में इसकी हिस्सेदारी 2021-22 के 17.7% से बढ़कर 2022-23 में 19.9% हो गई।

चार्ट IX.4: कृषि एवं संबद्ध क्षेत्र का (जीसीएफ) एवं जीसीफ की कृषि जीवीए में वृद्धि प्रतिशता के रूप में

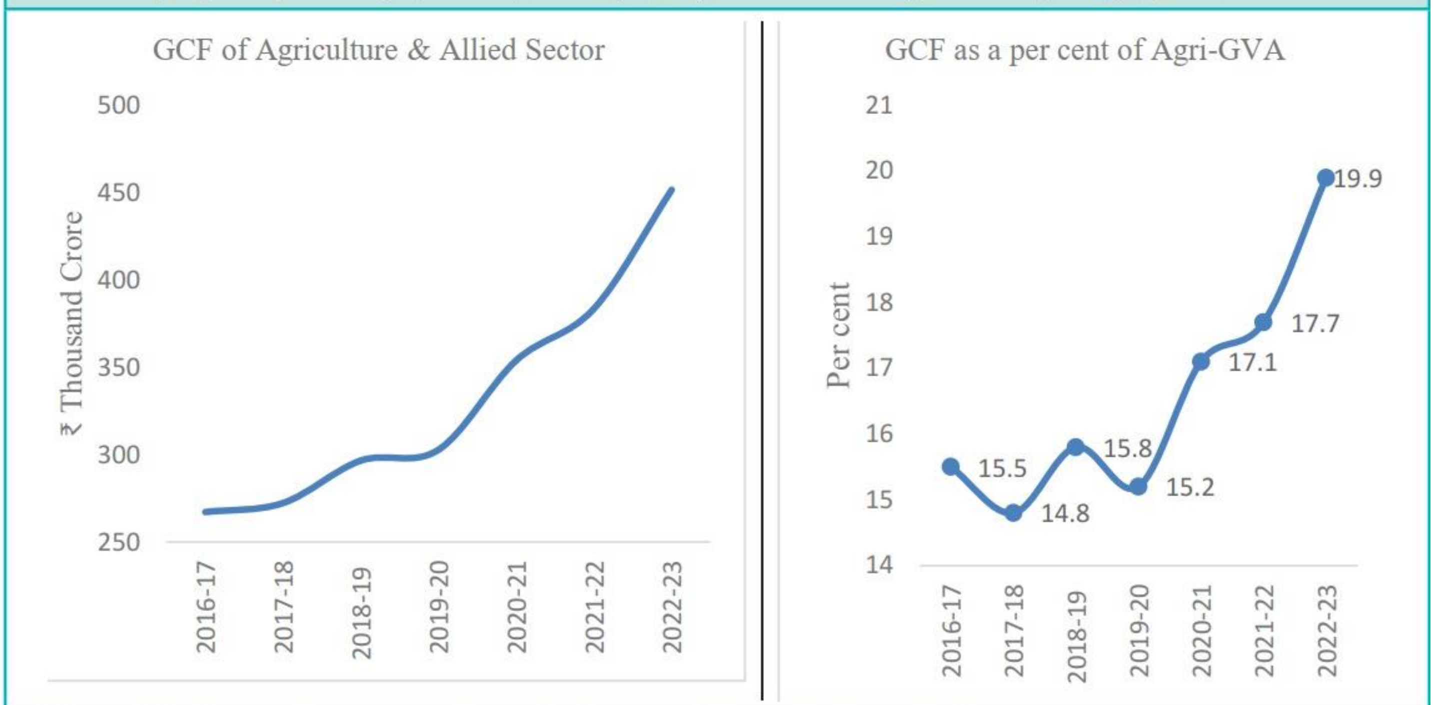

स्रोत: राष्ट्रीय आय का दूसरा अग्रिम अनुमान, राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय (पीआईबी प्रेस विज्ञप्ति (विभिन्न अंक कार्यालय

- **सब्सिडी:** सब्सिडी ने किसानों के खेती संबंधी तौर-तरीकों को बहुत प्रभावित किया है। इससे **बेहतर बीज, उर्वरक का विवेकपूर्ण उपयोग और कृषि मशीनरी** तक पहुंच को बढ़ावा मिला है।

- 2011-12 से 2020-21 तक, **कृषि सब्सिडी दोगुनी** से अधिक हो गई। इसमें उर्वरक और बिजली सब्सिडी में सबसे अधिक वृद्धि हुई।
- सार्वजनिक निवेश और सब्सिडी में समान दर से बढ़ोतरी हुई, लेकिन यह **कुल सब्सिडी का लगभग एक-तिहाई** रहा।

महत्वपूर्ण पहलें

- **निजी निवेश आकर्षित करने से जुड़ी पहलें**
  - **कृषि विपणन अवसंरचना (AMI)[10]:** 2014 से, सरकार ISAM[11] के तहत कृषि विपणन अवसंरचना (AMI) उप-योजना लागू कर रही है। यह योजना भंडारण अवसंरचना में सुधार के लिए पूंजीगत सब्सिडी प्रदान करती है।
    - यह एक **मांग-संचालित, क्रेडिट-लिंक्ड स्कीम** है। **यह व्यक्तियों, किसानों, FPOs, सहकारी समितियों और राज्य एजेंसियों को मैदानी इलाकों** में 25% और पूर्वोत्तर व पहाड़ी क्षेत्रों में 33.33% सब्सिडी प्रदान करती है।
  - **कृषि अवसंरचना कोष (AIF):** इसे 1 लाख करोड़ रुपये की वित्त-पोषण सुविधा के साथ आरंभ किया गया था। यह राशि वित्त वर्ष 2020-21 से वित्त वर्ष 2025-26 के बीच वितरित की जाएगी। यह समर्थन वित्त वर्ष 2032-33 तक प्रदान किया जाएगा।
    - AIF फसल कटाई पश्चात् **प्रबंधन और सामुदायिक खेती परियोजनाओं के लिए मध्यम अवधि के ऋण वित्त-पोषण, ब्याज छूट और क्रेडिट गारंटी सहायता** प्रदान करता है।
  - **प्रधान मंत्री किसान संपदा योजना (PMKSY):** इस योजना के तहत अनुदान सहायता के माध्यम से **क्रेडिट-लिंक्ड वित्तीय सहायता** प्रदान की जाती है। इसका उद्देश्य जल्दी खराब होने वाली उपज की बर्बादी को कम करने के लिए फार्म से रिटेल तक कुशल आपूर्ति श्रृंखला का निर्माण करना है।
- **किफायती ऋण:** सरकारी उपायों ने गैर-संस्थागत ऋण की हिस्सेदारी को 1950 के 90% से घटाकर 2021-22 में 23.40% कर दिया है।
  - **किसान क्रेडिट कार्ड (KCC):** 2018-19 में खेतिहर किसानों के अतिरिक्त, मत्स्य पालन और पशुपालन गतिविधियों की कार्यशील पूंजी की जरूरतों को पूरा करने के लिए KCC का विस्तार किया गया।
    - साथ ही, जमानत-मुक्त ऋण की सीमा बढ़ाकर **1.6 लाख रुपये** कर दी गई। ऋणी, दुग्ध संघों और बैंकों के बीच त्रिपक्षीय समझौते (TPA) के मामले में, **जमानत-मुक्त ऋण की सीमा 3 लाख रुपये** तक हो सकती है।
  - **प्रधान मंत्री फसल बीमा योजना (PMFBY):** PMFBY किसान नामांकन के मामले में दुनिया की सबसे बड़ी फसल बीमा योजना है और बीमा प्रीमियम के मामले में तीसरी सबसे बड़ी योजना है।
    - यह योजना फसलों की बुआई से पहले से लेकर कटाई के बाद तक सभी गैर-रोकथाम योग्य प्राकृतिक जोखिमों के खिलाफ व्यापक जोखिम कवर सुनिश्चित करने के लिए आरंभ की गई है।

PMFBY में हालिया प्रौद्योगिकी हस्तक्षेप

- **डिजी-क्लेम-पेमेंट मॉड्यूल:** इसे राष्ट्रीय फसल बीमा कार्यक्रम (NCIP) को सार्वजनिक वित्तीय प्रबंधन प्रणाली (PFMS) के साथ शुरू से अंत तक एकीकृत करने के लिए लॉन्च किया गया है।
- **प्रौद्योगिकी पर आधारित उपज अनुमान (YES-Tech)[12]:** यह प्रौद्योगिकी-आधारित उपज अनुमान की एक व्यवस्था है।
- **मौसम सूचना नेटवर्क और डेटा सिस्टम (विंड्स/ WINDS)[13]:** विंड्स एक अग्रणी पहल है जिसका उद्देश्य सभी किसानों और कृषि-उन्मुख सेवाओं[14] के उपयोग के लिए तालुका/ ब्लॉक और ग्राम पंचायत स्तर पर स्वचालित मौसम स्टेशनों और वर्षामापी का एक नेटवर्क स्थापित करना है।
- **फसलों का रियल टाइम अवलोकन और तस्वीरों का संग्रह (CROPIC)[15]:** यह फसलों के जीवन चक्र के दौरान उनकी आवधिक तस्वीरें एकत्र करने के लिए शुरू की गई एक पहल है। ये तस्वीरें बोई गई और बीमित फसलों को मान्य करेंगी। ये किसी भी स्थानीय और व्यापक आपदा या जलवायु की स्थिति से नुकसान का आकलन करेंगी और प्रौद्योगिकी-आधारित उपज अनुमान मॉडल के लिए एक इनपुट के रूप में काम करेंगी।

[10] Agriculture Marketing Infrastructure

[11] Integrated Scheme for Agricultural Marketing/ कृषि विपणन के लिए एकीकृत योजना

[12] Yield Estimation Based on Technology

[13] Weather Information Network & Data System

[14] Farming-oriented services

[15] Collection of Real-time Observations and Photographs of Crops

भारत में कृषि जिंसों के लिए फ्यूचर मार्केट (Futures market)

कृषि जिंसों के वायदा बाजार का उद्देश्य कृषि उत्पादन में मौजूद जोखिमों को कम करना और किसानों की आय को स्थिर करना है। चूंकि कृषि उत्पादन मौसमी होता है और प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित होता है, इसलिए वायदा बाजार किसानों को भविष्य में अपनी उपज का मूल्य सुनिश्चित करने में मदद करते हैं। इससे किसानों को बेहतर योजना बनाने और निवेश करने में मदद मिलती है।

महत्वपूर्ण पहलें

- **राष्ट्रीय एक्सचेंजों की स्थापना:** 2003 में निम्नलिखित राष्ट्रीय एक्सचेंजों की स्थापना की गई:
  - नेशनल कमोडिटी एंड डेरिवेटिव एक्सचेंज (NCDEX),
  - मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (MCX), और
  - नेशनल मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज (NMCE)
- **भारतीय कमोडिटी विनियामक परिदृश्य में महत्वपूर्ण विकास 2015 में तब हुआ जब सरकार ने:**
  - **फॉरवर्ड कॉन्ट्रैक्ट्स रेगुलेशन एक्ट (FCRA), 1952** को निरस्त कर दिया।
  - **कमोडिटी डेरिवेटिव बाजारों** को **प्रतिभूति अनुबंध (विनियमन) अधिनियम (SCRA)[16], 1956** के तहत लाया गया।
  - सेबी ने फॉरवर्ड मार्केट कमीशन से **कमोडिटी बाजार नियामक** का कार्यभार संभाला।
- **इलेक्ट्रॉनिक ऑनलाइन मार्केटप्लेस:** e-NAM को भारत सरकार द्वारा 2016 में शुरू किया गया था। e-NAM स्थानीय बाजारों को एकीकृत करके खरीदारों और विक्रेताओं को जोड़ता है। यह किसानों को अपनी उपज के लिए वास्तविक समय में बाजार मूल्य प्राप्त करने में मदद करता है, जिससे उन्हें बेहतर मूल्य मिलता है।
- **डेरिवेटिव ट्रेडिंग के लिए पात्र कमोडिटीज की संख्या में वृद्धि:** डेरिवेटिव ट्रेडिंग के लिए पात्र कमोडिटीज की सूची **91 से बढ़कर 104** कर दी गई है।
  - नई कमोडिटीज में सेब, काजू, लहसुन, स्किम्ड मिल्क पाउडर, सफेद मक्खन, प्रसंस्कृत लकड़ी और बांस उत्पाद शामिल हैं।

चुनौतियां

- **किसान भागीदारी**
  - अधिकांश भारतीय किसान लघु पैमाने के हैं और प्रभावी ढंग से वायदा बाजार में भाग नहीं ले सकते।
  - इसके अलावा, मानकीकृत अनुबंधों में विशिष्ट गुणवत्ता और डिलीवरी की शर्तें होती हैं, जो विभिन्न क्षेत्रों से आने वाली फसलों की विविधता और गुणवत्ता के कारण किसानों के लिए भागीदारी करना मुश्किल बनाती हैं। अर्थात् एक ही तरह का अनुबंध सभी किसानों पर लागू होता है, चाहे उनकी फसल की किस्म या गुणवत्ता कुछ भी हो। इससे लघु एवं सीमांत किसानों को विशेष रूप से मुश्किल होती है क्योंकि वे इन शर्तों को पूरा करने में सक्षम नहीं हो पाते हैं।
  - इसके अलावा, यह भी देखा गया है कि **निर्दिष्ट गुणवत्ता मापदंडों और डिलीवरी आवश्यकताओं के साथ मानकीकृत विनिमय अनुबंधों की आवश्यकता** ने भी अधिकांश भारतीय किसानों को कमोडिटी वायदा बाजार में प्रभावी रूप से शामिल होने से रोक दिया है।
- **समय-समय आरोपित व्यापार प्रतिबंध:** इसके अतिरिक्त, खाद्य मुद्रास्फीति को नियंत्रित करने के प्रयास में, भारत सरकार ने कृषि उत्पादों पर वायदा कारोबार पर समय-समय पर प्रतिबंध लगाए हैं। इन प्रतिबंधों का सीधा प्रभाव भारतीय कमोडिटी और डेरिवेटिव एक्सचेंजों में कारोबार की मात्रा और कीमतों पर पड़ा है।

आगे की राह

- **बाजार विकास:** जैसे-जैसे बाजार गहन होता जाता है और उसमें तरलता बढ़ती है, वायदा कारोबार पर प्रतिबंध लगाना अनावश्यक हो सकता है। ऐसी स्थिति में बाजार के उतार-चढ़ाव और प्रभावों पर नजर रखने के लिए केवल विनियामक निकाय द्वारा नियमित समीक्षा की आवश्यकता होती है।

[16] Securities Contracts (Regulations) Act

- **संवेदनशील वस्तुओं को बाहर करना:** 2008 की **अभिजीत सेन समिति** की रिपोर्ट ने उन वस्तुओं की पहचान करने का सुझाव दिया था जिनका वायदा कारोबार मुद्रास्फीति को प्रभावित कर सकता है। समिति ने ऐसी आवश्यक वस्तुओं को वायदा बाजार से अलग रखने की बात कही थी।
  - समिति ने बाजार विकसित होने तक **संवेदनशील वस्तुओं** (जैसे- साधारण धान, गेहूं, अधिकांश दालें आदि) को वायदा बाजार के दायरे से बाहर रखने की सिफारिश की थी।
  - समिति के अनुसार, कृषि वायदा बाजार कम संवेदनशील वस्तुओं जैसे तिलहन कॉम्प्लेक्स (तिलहन, भोजन और तेल), चारा (मक्का), कपास, बासमती चावल, मसाले आदि पर ध्यान केंद्रित कर सकता है।
- **FPOs का लाभ उठाना:** किसान उत्पादक संगठन (FPOs) भारत में लघु और बिखरे हुए किसानों तथा कमोडिटी बाजार परिवेश को प्रभावी ढंग से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।
  - वित्तीय साक्षरता पहल के माध्यम से **FPOs को कौशल प्रदान करना और उनका समर्थन करना** किसानों को कृषि-व्युत्पन्न बाजारों से लाभ उठाने के लिए प्रोत्साहित करने में काफी मददगार साबित हो सकता है।

कृषि को संधारणीय बनाना

जलवायु परिवर्तन से 2050 में गेहूं की पैदावार में 19.3% और 2080 में 40% की कमी आने का अनुमान है। अनुकूलन के बिना:

- वर्षा आधारित धान की पैदावार 2050 तक 20% और 2080 तक 47% तक गिर सकती है।
- सिंचित धान की पैदावार 2050 तक 3.5% और 2080 तक 5% कम हो सकती है

महत्वपूर्ण पहलें

- **सिंचाई**
  - **राष्ट्रीय सतत कृषि मिशन (NMSA):** यह जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय कार्य योजना (NAPCC) का हिस्सा है। NMSA का लक्ष्य भारतीय कृषि को जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीला बनाना है।
    - NMSA के तहत **वर्षा आधारित क्षेत्र विकास (RAD)**[17] शुरू किया गया था। इसका लक्ष्य कृषि उत्पादकता बढ़ाना और जलवायु संबंधी जोखिमों को कम करना है।
  - **प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY):** इस योजना का उद्देश्य सिंचाई और जल दक्षता के तहत क्षेत्रों के विस्तार को बढ़ावा देना है। इसमें दो प्रमुख घटक- त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम (AIBP) और हर खेत को पानी (HKKP) शामिल है।
    - सिंचाई कवरेज 2015-16 के 49.3% से बढ़कर **2020-21 में 55%** हो गया।
    - सिंचाई गहनता 2015-16 के 144.2% से बढ़कर **2021-22 में 154.5%** हो गई।
  - **सूक्ष्म सिंचाई निधि (MIF):** नाबार्ड के साथ 5,000 करोड़ रुपये की प्रारंभिक राशि की सूक्ष्म सिंचाई निधि बनाई गई है। इस निधि का उद्देश्य **सूक्ष्म सिंचाई के विस्तार में राज्यों का समर्थन** करना है।
    - 2015-16 से 2023-24 तक **90 लाख हेक्टेयर को सूक्ष्म सिंचाई** के तहत कवर किया गया है।
- **उर्वरक अनुकूलन**
  - **पी.एम.-प्रणाम:** इसका उद्देश्य रासायनिक उर्वरक के उपयोग को कम करने के लिए राज्यों को प्रोत्साहन प्रदान करना है।
    - इस योजना के तहत, राज्य/ केंद्र शासित प्रदेशों को रासायनिक उर्वरकों की खपत कम करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। यदि कोई राज्य/ केंद्र शासित प्रदेश पिछले तीन वर्षों के औसत की तुलना में किसी एक वर्ष में रासायनिक उर्वरकों की खपत कम करता है, तो उसे रासायनिक उर्वरक सब्सिडी का 50% अनुदान दिया जाता है।
  - **अन्य पहल:** मृदा स्वास्थ्य कार्ड योजना चलाई जा रही है और **'यूरिया गोल्ड'** (सल्फर की कमी को दूर करने के लिए सल्फर युक्त यूरिया) की शुरुआत की गई है।

[17] Rainfed Area Development

- **जैविक एवं प्राकृतिक खेती**
    - **सिक्किम पूरी तरह से जैविक बनने वाला दुनिया का पहला राज्य** बन गया है। इसके अलावा, त्रिपुरा और उत्तराखंड सहित अन्य राज्यों ने भी इसी तरह के लक्ष्य निर्धारित किए हैं।
    - **परम्परागत कृषि विकास योजना (PKVY):** यह योजना क्लस्टर मोड में लागू की जा रही है (न्यूनतम 20 हेक्टेयर आकार के साथ)। इसके तहत, कम से कम 20 हेक्टेयर वाले क्लस्टर को जैविक खेती को बढ़ावा देने के लिए 3 साल के लिए प्रति हेक्टेयर 31,500 रुपये की मदद दी जाती है। इसमें से 15,000 रुपये सीधे किसानों के बैंक खाते में जैविक खाद के लिए दिए जाते हैं।
    - **MOVCDNER:** सरकार 2015 से पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए मिशन जैविक मूल्य श्रृंखला विकास (MOVCDNER)[18] योजना चला रही है। यह योजना क्लस्टर/ FPO गठन के माध्यम से जैविक कृषि को बढ़ावा दे रही है।

भारत में उर्वरक सब्सिडी

भारत में उर्वरक की खपत असंतुलित है और अधिकांश फसलों में इस्तेमाल किए जाने वाले नाइट्रोजनयुक्त उर्वरकों में यूरिया का हिस्सा **82%** है। **NPK अनुपात** 4:3.2:1 (2009-10) से बढ़कर **7:2.8:1 (2019-20) हो गया है।**

वर्तमान में सब्सिडी का स्वरूप

- भारत सरकार उर्वरकों का आवंटन राज्यवार अनुशंसित पोषक तत्वों की मात्रा (RDN)[19] के आधार पर करती है।
- राज्य, बदले में, **PoS उपकरणों का उपयोग करके डीलरों** और प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (PACS) के माध्यम से किसानों को उर्वरक बेचते हैं।
- **किसानों को बेचे गए उर्वरकों की मात्रा के आधार** पर उर्वरक कंपनियों को उर्वरक सब्सिडी का भुगतान उर्वरक विभाग द्वारा किया जाता है।

भारत में उर्वरक सब्सिडी के स्वरूप से संबंधित मुद्दे

- **PoS उपकरणों के साथ भूमि रिकॉर्ड के एकीकरण का अभाव:** मौजूदा समय में आधार कार्ड रखने वाला कोई भी व्यक्ति, चाहे वह किसान हो या नहीं, किसी भी मात्रा में उर्वरक खरीद सकता है।
- **कोई खरीद सीमा नहीं:** एक व्यक्ति या एक परिवार को उर्वरक की बिक्री पर कोई सीमा नहीं है।
- **अन्य मुद्दे:** गैर-कृषि उद्देश्यों के लिए सब्सिडी वाले उर्वरक का उपयोग करना; उर्वरकों का अत्यधिक उपयोग करना; **सार्वजनिक संसाधनों की बर्बादी करना; स्वास्थ्य संबंधी खतरे इत्यादि।**

आगे की राह

- **एग्री स्टैक:** उर्वरक सब्सिडी के लक्ष्य में सुधार के लिए एग्री स्टैक का उपयोग किया जाना चाहिए।
- **ई-रूपी:** यह एक सहज एकमुश्त भुगतान प्रणाली है जिसका उपयोग किसानों को सीधे आवश्यक सब्सिडी प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। यह प्रणाली सुनिश्चित करती है कि सब्सिडी का उपयोग केवल अधिकृत उर्वरक दुकानों पर पंजीकृत **PoS** उपकरणों के जरिए ही किया जा सकता है।
- **अन्य प्रमुख सुधार:**
    - एग्री स्टैक में किसान रजिस्ट्री के साथ **PoS उपकरणों का एकीकरण** और किसान रजिस्ट्री में प्रत्येक किसान का आधार नंबर, रिकॉर्ड ऑफ राइट्स (RoR) के अनुसार किसान के स्वामित्व वाली सभी कृषि भूमि का विवरण शामिल होगा।
    - म्यूटेशन मॉड्यूल के माध्यम से **डायनेमिक भूमि स्वामित्व** अपडेट।
    - फसल सर्वेक्षण डेटा का डिजिटल एकीकरण।
    - म्यूटेशन मॉड्यूल के माध्यम से **भूमि स्वामित्व डेटा का समय-समय पर अपडेशन** किया जाएगा। डिजिटल फसल सर्वेक्षण के आधार पर बोई गई फसल की रजिस्ट्री को बाद के चरण में एकीकृत किया जाएगा।

सहकारी समितियां- समुदायों को मजबूत करके किसानों को सशक्त बनाना

सहकारी समितियां **उपज एकत्र करने, सौदेबाजी की शक्ति बढ़ाने और लघु एवं सीमांत किसानों के लिए बेहतर बाजार पहुंच सुनिश्चित** करने हेतु महत्वपूर्ण हैं। इससे किसानों को बिचौलियों और व्यापारियों के शोषण से बचाने में मदद मिलती है। यह डेयरी सहकारी आंदोलन के मामले में देखा गया था, जो लघु ग्रामीण उत्पादकों (जिनके पास 1-2 हेक्टेयर भूमि है) पर केंद्रित था।

[18] Mission Organic Value Chain Development for North Eastern Region

[19] Recommended Dose of Nutrients:

महत्वपूर्ण पहलें

- **नई बहुराज्यीय सहकारी समितियां:** राष्ट्रीय स्तर पर, बहुराज्यीय सहकारी समिति (MSC) अधिनियम, 2002 के तहत, निर्यात को बढ़ावा देने, एक ही ब्रांड नाम के तहत उन्नत बीजों तक किसानों की पहुंच को सुगम बनाने और प्रमाणित तथा प्रामाणिक जैविक उत्पादों के उत्पादन एवं वितरण को बढ़ावा देने के लिए तीन नए MSCs स्थापित किए गए हैं। ये हैं-
  - राष्ट्रीय सहकारी निर्यात लिमिटेड (NCEL)
  - भारतीय बीज सहकारी समिति लिमिटेड (BBSSL)
  - राष्ट्रीय सहकारी जैविक लिमिटेड ((NCOL)
- **दक्षता के लिए पहल:** PACS/ वृहद क्षेत्र बहुउद्देशीय समितियों (LAMP) को एकल राष्ट्रीय सॉफ्टवेयर नेटवर्क के माध्यम से नाबार्ड के साथ जोड़ा जा रहा है।
- **विश्व का सबसे बड़ा विकेन्द्रीकृत भंडारण कार्यक्रम:** इस योजना के तहत, विभिन्न मौजूदा योजनाओं के कन्वर्जेंस के माध्यम से कृषि अवसंरचना, जैसे- गोदाम, कस्टम हायरिंग सेंटर, प्रसंस्करण इकाइयां, उचित मूल्य की दुकानें आदि का निर्माण किया जा रहा है।

कृषि अनुसंधान और शिक्षा: प्रौद्योगिकी की सीमाओं को आगे बढ़ाना

- **व्यय और आवंटन:** 2022-23 में कृषि अनुसंधान पर 19.65 हजार करोड़ रुपये खर्च किए गए। यह राशि कृषि GVA का मात्र 0.43% है।
- **उच्च रिटर्न:** यह अनुमान है कि कृषि अनुसंधान (शिक्षा सहित) में निवेश किए गए एक रुपये पर 13.85 रुपये का लाभ मिलता है।
  - भारत अब दुनिया के बाकी हिस्सों को जिन चावल किस्मों का निर्यात करता है, उनमें से कई किस्में अंतर्राष्ट्रीय चावल अनुसंधान संस्थान में किए गए शोध से निकली हैं। यह याद दिलाता है कि कृषि अनुसंधान निवेश पर सबसे अधिक लाभ प्रदान करता है।
- **शीर्ष निकाय:** भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR), देश में कृषि अनुसंधान में शीर्ष संगठन है।

खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रक (FPI): प्रसंस्करण क्षमता

खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रक एक महत्वपूर्ण उद्योग है क्योंकि **इसका कृषि क्षेत्रक के साथ मजबूत संबंध** है। यह कृषि क्षेत्रक से निकले **अधिशेष कार्यबल** को नियोजित कर सकता है। 2022-23 तक समाप्त होने वाले पिछले आठ वर्षों के दौरान, **खाद्य प्रसंस्करण उद्योग 2011-12 की कीमतों पर लगभग 5.35% की औसत वार्षिक वृद्धि दर (AAGR) से बढ़** रहा है। श्रम प्रधान होने के कारण, महामारी ने इस क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डाला है परन्तु अब यह ठीक हो रहा है।

चित्र IX.9: विनिर्माण जीवीए में एफपीआई की हिस्सेदारी और प्रतिशत में एफपीआई की वृद्धि

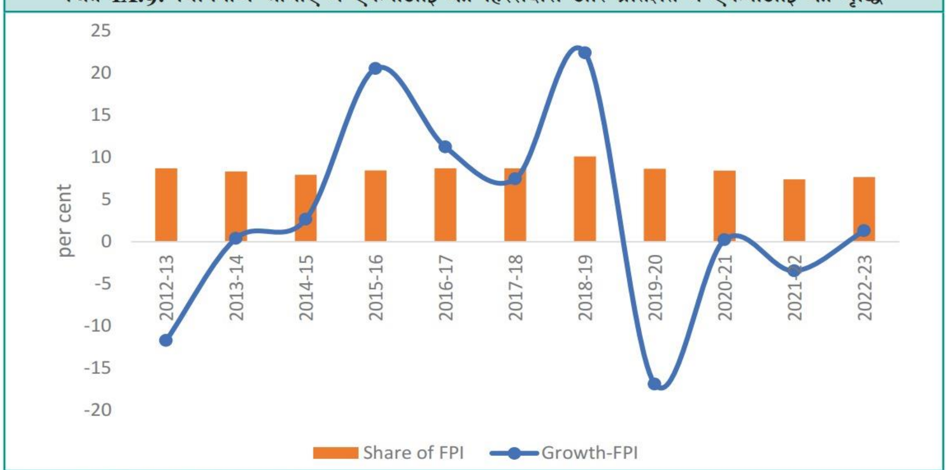

स्रोत: एनएडी, सीएसओ, सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय

प्रमुख डेटा

- **GVA में वृद्धि:** खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्रक में GVA 2013-14 में 1.30 लाख करोड़ रुपये से बढ़कर 2022-23 में 1.92 लाख करोड़ रुपये हो गया है।
  - 2011-12 की कीमतों पर 2022-23 में **विनिर्माण में GVA का 7.66% हिस्सा** इस क्षेत्रक का था।
- **रोजगार:** भारत का खाद्य प्रसंस्करण उद्योग संगठित विनिर्माण क्षेत्र में रोजगार का एक प्रमुख स्रोत है। संगठित क्षेत्र के कुल रोजगार में इसकी हिस्सेदारी 12.02% है।

- **निर्यात मूल्य:** 2022-23 के दौरान प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात सहित कृषि-खाद्य निर्यात का मूल्य 46.44 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। यह भारत के कुल निर्यात का 11.7% है।
- **प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात हिस्सेदारी:** प्रसंस्कृत खाद्य निर्यात की हिस्सेदारी 2017-18 में 14.9% से बढ़कर 2022-23 में 23.4% हो गई।

महत्वपूर्ण पहलें

- **खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए PLI योजना (PLISFPI):** यह योजना विदेशी बाजारों में भारतीय खाद्य उत्पादों की पहुंच बढ़ाने के लिए वैश्विक स्तर पर ब्रांडिंग, वैश्विक खाद्य विनिर्माण चैंपियन और विपणन गतिविधियों को बढ़ावा देती है।
- **पी.एम. फॉर्मलाइजेशन ऑफ माइक्रो फूड प्रोसेसिंग एंटरप्राइजेज (PMFME):** यह योजना मार्केटिंग और ब्रांडिंग सहायता सहित क्रेडिट-लिंक्ड सब्सिडी और क्षमता निर्माण प्रदान करती है।
- **ऑपरेशन ग्रीन:** ऑपरेशन ग्रीन का कवरेज तीन फसलों (टमाटर, प्याज और आलू) से बढ़ाकर जल्दी खराब होने वाली 22 फसलों तक कर दिया गया है, जिसमें फल, सब्जियां और झींगा शामिल हैं। इस योजना का मुख्य उद्देश्य किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाना, फसल के बाद होने वाले नुकसान को कम करना, खाद्य प्रसंस्करण की क्षमताओं को बढ़ाना और मूल्यवर्धन करना है। इस योजना की दो-आयामी रणनीतियां हैं:
  - **मूल्य स्थिरीकरण उपाय (अल्पकालिक उपाय):** इसके तहत अधिक उत्पादन की स्थिति में उत्पादन केंद्रों से अधिशेष उत्पादन की निकासी के लिए फलों और सब्जियों के परिवहन और भंडारण की लागत पर 50% सब्सिडी का प्रावधान है।
  - **एकीकृत मूल्य श्रृंखला विकास परियोजनाएं (दीर्घकालिक):** इसके तहत प्रमुख उत्पादक राज्यों में पहचाने गए उत्पादन क्लस्टर्स में पात्र फसलों के लिए खाद्य प्रसंस्करण परियोजना स्थापित करने के लिए 35 प्रतिशत से 50 प्रतिशत की सीमा में अनुदान सहायता प्रदान की जाती है।

खाद्य प्रबंधन: खाद्य सुरक्षा के लिए सामाजिक जाल

खाद्य प्रबंधन का मुख्य उद्देश्य **किसानों से लाभकारी मूल्य (MSP पर) पर खाद्यान्न की खरीद करना** और केंद्रीय निर्गम मूल्य (CIP) के माध्यम से उपभोक्ताओं को खाद्यान्न का वितरण करना है। खाद्यान्न की खरीद, वितरण और भंडारण करने वाली नोडल एजेंसी **भारतीय खाद्य निगम (FCI)** है।

महत्वपूर्ण पहलें

- **विकेंद्रीकृत खरीद योजना:** इसे केंद्र सरकार द्वारा खाद्यान्न भंडार के विवेकपूर्ण प्रबंधन और केंद्रीय पूल में गेहूं तथा चावल की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए कार्यान्वित किया जा रहा है।
- **राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 (NFSA):** इस कानून का उद्देश्य लोगों को गरिमापूर्ण जीवन हेतु किफायती कीमतों पर पर्याप्त मात्रा में गुणवत्ता वाला भोजन और पोषण सुरक्षा प्रदान करना है।

चित्र: IX.10: जारी की गई खाद्य सब्सिडी

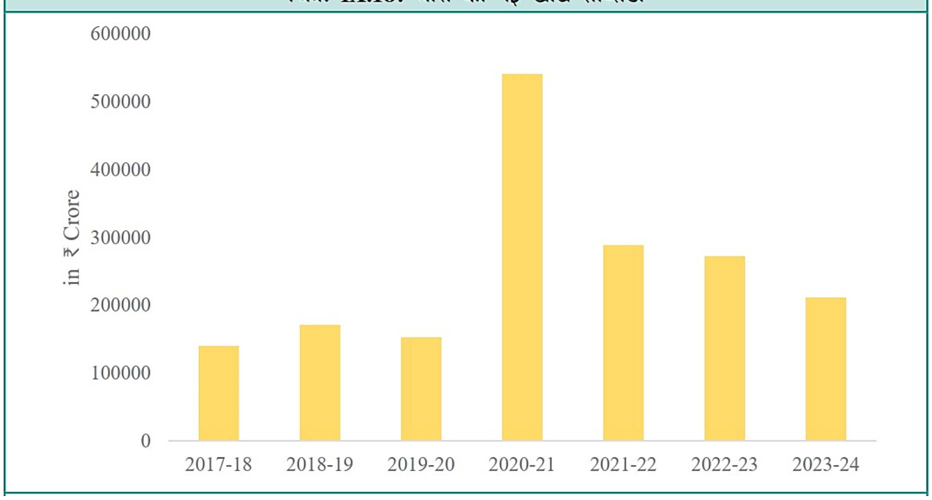

- **प्रधान मंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (PMGKAY): 1 जनवरी, 2024 से पांच और वर्षों के लिए 81.35 करोड़ लाभार्थियों (AAY और PHH परिवारों) को मुफ्त खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाएगा।**
  - इसका अनुमानित कुल वित्तीय परिव्यय 11.80 लाख करोड़ रुपये है जिसे केंद्र सरकार द्वारा वहन किया जाएगा

बजट में क्या कहा गया है?

- **कृषि के लिए डिजिटल पब्लिक इन्फ्रास्ट्रक्चर (DPI):** केंद्र सरकार, राज्यों के साथ साझेदारी में आगामी **तीन वर्षों में** किसानों और उनकी भूमि के कवरेज के लिए कृषि में DPI के कार्यान्वयन की सुविधा प्रदान करेगी।
    - DPI का उपयोग करके **खरीफ फसलों के लिए डिजिटल फसल सर्वेक्षण** का आयोजन **400 जिलों** में किया जाएगा।
- **भूमि पंजीकरण:** 6 करोड़ किसानों और उनकी जमीनों का विवरण किसान और भूमि रजिस्ट्रियों में दर्ज किया जाएगा।
- **किसान क्रेडिट कार्ड (KCC):** सरकार ने बजट में **5 राज्यों में जनसमर्थ आधारित किसान क्रेडिट कार्ड** जारी करने की घोषणा की है।
- **प्राकृतिक खेती:** 10,000 आवश्यकता-आधारित **जैव-इनपुट संसाधन केंद्र** स्थापित किए जाएंगे।
- **सब्जी उत्पादन और आपूर्ति श्रृंखला:** सब्जी उत्पादन के लिए **बड़े उपभोग केंद्रों** के करीब **व्यापक पैमाने पर क्लस्टर** विकसित किए जाएंगे।
    - सरकार संग्रहण, भंडारण और विपणन सहित **सब्जी आपूर्ति श्रृंखलाओं** के लिए **किसान-उत्पादक संगठनों, सहकारी समितियों और स्टार्ट-अप्स को बढ़ावा** देगी।
- **झींगा उत्पादन और निर्यात:** सरकार झींगा ब्रूडस्टॉक्स के लिए न्यूक्लियस ब्रीडिंग सेंटर्स का एक नेटवर्क स्थापित करने हेतु वित्तीय सहायता प्रदान करेगी।
    - इसके अलावा, **झींगा पालन, प्रसंस्करण और निर्यात के लिए नाबार्ड** के माध्यम से वित्त-पोषण की सुविधा प्रदान की जाएगी।

शब्दावली

सकल पूंजी निर्माण (GCF)	• GCF एक विशिष्ट अवधि में **भौतिक परिसंपत्तियों में कुल निवेश को संदर्भित** करता है। • इसमें नई अचल संपत्तियों (जैसे मशीनरी, भवन, सड़कें) का निर्माण, मौजूदा अचल संपत्तियों का नवीनीकरण और मरम्मत, भूमि सुधार, उपकरणों की खरीद, और इन्वेंट्री में वृद्धि शामिल होती है। • यह **कृषि को आधुनिक बनाने**, उत्पादकता बढ़ाने और संधारणीयता सुनिश्चित करने में निवेश का **एक महत्वपूर्ण संकेतक** है।
सिंचाई की गहनता	• यह **सकल सिंचित क्षेत्र का निवल सिंचित क्षेत्र से अनुपात** है।
एग्री स्टैक	• एग्री स्टैक **भारतीय किसानों का एक डेटाबेस** है। इसमें किसानों की भूमि जोत, भूखंडों के GPS निर्देशांक और उन पर उगाई गई फसलों आदि का विवरण शामिल होता है। • यह सरकार द्वारा स्थापित डिजिटल फाउंडेशन है। इसका काम **भारतीय कृषि में सुधार के लिए विभिन्न हितधारकों को एक साथ लाना आसान** बनाना है।

अध्याय 9: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. भारतीय कृषि के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारतीय कृषि की संवृद्धि दर 2022-23 की तुलना में 2023-24 में बढ़ी है।
2. पिछले पांच वर्षों में स्थिर कीमतों पर वार्षिक वृद्धि दर लगभग 4% रही है।
3. पशुधन और मत्स्य पालन ने पारंपरिक फसलों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन किया है।
4. 2022-23 की तुलना में 2023-24 में खाद्यान्न उत्पादन में वृद्धि हुई है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

(a) केवल 1 और 2

(b) केवल 1, 2 और 3

(c) केवल 2 और 3

(d) केवल 3 और 4

2. कृषि अवसंरचना कोष (AIF) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. इसे वित्त वर्ष 2020-21 से वित्त वर्ष 2025-26 के बीच वितरित किए जाने वाले 10 लाख करोड़ रुपये की वित्त-पोषण सुविधा के साथ लॉन्च किया गया था, जिसका समर्थन वित्त वर्ष 2032-33 तक बढ़ाया गया है।
2. AIF फसल कटाई के बाद के प्रबंधन और सामुदायिक खेती परियोजनाओं के लिए दीर्घकालिक ऋण वित्त-पोषण प्रदान करता है तथा ब्याज छूट एवं क्रेडिट गारंटी सहायता प्रदान करता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1 और न ही 2

3. प्रधान मंत्री किसान संपदा योजना (PMKSY) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. यह अनुदान सहायता के माध्यम से क्रेडिट-लिंक्ड वित्तीय सहायता प्रदान करती है। इसका उद्देश्य जल्दी खराब होने वाली उपज की बर्बादी को कम करने के लिए कुशल आपूर्ति श्रृंखला प्रबंधन का निर्माण करना है।
2. यह किसानों के लिए प्रत्यक्ष लाभ अंतरण योजना है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1 और न ही 2

4. ऑपरेशन ग्रीन के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ऑपरेशन ग्रीन को 3 फसलों (टमाटर, प्याज और आलू) से बढ़ाकर केवल 22 फलों और सब्जियों तक कर दिया गया है।
2. योजना का उद्देश्य किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य दिलाना, फसल के बाद होने वाले नुकसान को कम करना, खाद्य प्रसंस्करण की क्षमताओं को बढ़ाना और मूल्यवर्धन करना है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

5. 'यूरिया गोल्ड' क्या है?

(a) विटामिन ए युक्त यूरिया
(b) सल्फर युक्त यूरिया
(c) फास्फोरस युक्त यूरिया
(d) नीम युक्त यूरिया

प्रश्न

1. भारत में कृषि में वायदा बाजारों के लिए मुख्य चुनौतियां क्या हैं और इन चुनौतियों से निपटने के लिए उपाय सुझाइए?
2. भारत में उर्वरक सब्सिडी के वर्तमान स्वरूप का समालोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। भारत के उर्वरक क्षेत्रक में प्रचलित मुद्दों को कैसे हल किया जा सकता है?

अध्याय 10: उद्योग: लघु एवं मध्यम दोनों अपरिहार्य (Industry: Small and Medium Matters)

परिचय

- विनिर्माण क्षेत्रक में अभी भी अकुशल और अर्ध-कुशल रोजगार पैदा करने की क्षमता है और यह लोगों के लिए विकास को सुलभ बना सकता है। सार्वजनिक नीति को प्रतिस्पर्धात्मकता बढ़ाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए और **कार्रवाई का प्राथमिक तरीका विनियमन संबंध बोझ** को करना हो सकता है। निजी क्षेत्रक को भविष्य की योजनाएं बनानी चाहिए और अनुसंधान एवं विकास पर व्यय के जरिए गुणवत्ता बढ़ाने के लिए निवेश करना चाहिए।
- इस अध्याय में हम विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों (जैसे कि प्रमुख औद्योगिक मध्यवर्ती और उपभोक्ता-उन्मुख उद्योग) में प्रगति, चुनौतियों और नीतिगत पहलों पर एक नज़र डालेंगे। इसके बाद क्रॉस-कटिंग विषयों पर एक संक्षिप्त चर्चा की जाएगी, जैसे-
  - उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन (PLIs),
  - सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSMEs),
  - केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम (CPSEs) तथा
  - औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास और नवाचार।

अध्याय का प्रीकैप

अवलोकन

- **भारत में औद्योगिक संवृद्धि (वित्त वर्ष 2024 में):** 9.5%
- **उद्योग, विनिर्माण और निर्माण के चार उप-क्षेत्रों ने लगभग दोहरे अंक की संवृद्धि दर हासिल** की है।

प्रमुख क्षेत्रों का प्रदर्शन

- **सीमेंट:** भारत चीन के बाद दुनिया का **दूसरा सबसे बड़ा सीमेंट उत्पादक** देश है।
  - **विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी मौजूदा कीमतों (FY 2023 में) पर कुल सकल मूल्य वर्धन में 14.3%** है।
- **स्टील/ इस्पात क्षेत्रक:** वित्त वर्ष 2024 के दौरान उत्पादन और खपत अपने उच्चतम स्तर पर था।
  - भारत पिछले दशक में **तैयार इस्पात का नेट एक्सपोर्टर** बन गया।
- **कोयला:** वित्त वर्ष 2024 में, भारत ने 997.2 मिलियन टन कोयले का उत्पादन किया।
- **फार्मास्युटिकल:** भारत का फार्मास्युटिकल बाज़ार मात्रा के हिसाब से दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा बाजार है।
  - उत्पादन की मात्रा के हिसाब से **वैश्विक जेनेरिक दवा निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 20%** है।
- **वस्त्र उद्योग:** मौजूदा कीमतों पर **विनिर्माण GVA** में वस्त्र क्षेत्रक का योगदान **10.6% है**। इसमें परिधान क्षेत्रक भी शामिल है।
  - भारत **दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा वस्त्र निर्माता है और विश्व के शीर्ष पाँच निर्यातक देशों में से एक** है।
- **इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्षेत्रक:** वित्त वर्ष 2022 में वैश्विक बाजार में भारत की हिस्सेदारी अनुमानतः 3.7% थी।
  - वित्त वर्ष 2022 में **भारत के कुल सकल घरेलू उत्पाद में इसका योगदान 4%** था।
- **ऑटोमोबाइल उद्योग:** वित्त वर्ष 2024 में देश में लगभग 49 लाख यात्री वाहनों का उत्पादन हुआ।

उत्पादन-आधारित प्रोत्साहन (PLI) योजना

- **उद्देश्य:** भारत की विनिर्माण क्षमताओं और निर्यात को बढ़ाने के लिए 14 प्रमुख क्षेत्रकों के लिए योजना।
- **महत्व:**
  - मई 2024 तक **1.28 लाख करोड़ रुपये से अधिक निवेश** हुआ है।

 © Vision IAS

○ **10.8 लाख करोड़ रुपये का उत्पादन/ बिक्री।** ○ 4 लाख करोड़ रुपये तक **निर्यात को बढ़ावा दिया** गया।
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME) • **संपूर्ण भारतीय स्तर पर विनिर्माण क्षेत्रक के अंतर्गत होने वाले उत्पादन में MSME की हिस्सेदारी:** 35.4% (वित्त वर्ष 22) • **अखिल भारतीय निर्यात में MSME-विशिष्ट उत्पादों के निर्यात का हिस्सा** (2023-24 में): 45.7%। • **चुनौतियाँ:** औपचारिकता एवं समावेशन से जुड़े हुए मुद्दे, वित्त, बाज़ार, तकनीक और डिजिटलीकरण तक सीमित पहुँच, अवसंरचना संबंधी बाधाएं और कौशल विकास। • MSME के लिए सरकार की पहल ○ **उद्यम पंजीकरण पोर्टल:** इसे MSME को औपचारिक रूप देने के लिए 2020 में शुरू किया गया। ○ **समाधान पोर्टल, संबंध पोर्टल और चैंपियंस पोर्टल:** भुगतान में देरी, खरीद की निगरानी और शिकायतों के त्वरित समाधान जैसे मुद्दों को हल करने के लिए लॉन्च किया गया है। ○ **ऋण संबंधी योजनाएं:** प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम; क्रेडिट गारंटी स्कीम (CGS)।
अन्य क्रॉस कटिंग थीम • **केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम (CPSE):** ○ 31 मार्च, 2023 तक 254 CPSEs कार्यरत थे। ○ लाभ कमाने वाले CPSEs की संख्या 2019 में 178 थी, जो **2023 तक बढ़कर 193 हो गई**। • **औद्योगिक ऋण (Industrial credit):** ○ 2023 से 2024 तक, अधिकांश उद्योगों में ऋण वृद्धि सकारात्मक थी, लेकिन खनन और उत्खनन (कोयला सहित), पेट्रोलियम, कोयला उत्पाद और परमाणु ईंधन में नकारात्मक थी। • **औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास और नवाचार:** ○ **कोर मैन्युफैक्चरिंग में सार्वजनिक क्षेत्रक की कम उपस्थिति:** लगभग 7% के आसपास। ○ **GII के तहत,** भारत की रैंक में उल्लेखनीय सुधार हुआ (2023 में 40)। ○ **भारत में संकेन्द्रित औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास:** शीर्ष पांच क्षेत्रों की हिस्सेदारी 70% से अधिक है।
भारतीय औद्योगिक परिदृश्य में उभरते रुझान • पिछले दशक में औद्योगिक क्षेत्रकों के बीच उत्पादन हिस्सेदारी में काफ़ी अधिक बदलाव हुआ है। • पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रकों के निर्यात-आयात संतुलन में काफी भिन्नता रही है। • पूंजीगत वस्तुओं और इस्पात तथा सीमेंट जैसे प्रमुख निर्माण इनपुट की मांग पर मध्यम अवधि का दृष्टिकोण सकारात्मक रहने की संभावना है। • विभिन्न उद्योगों में दो सामान्य आवश्यकताएं हैं- **अनुसंधान एवं विकास तथा नवाचार को प्रोत्साहित करना और कार्यबल के कौशल स्तर में सुधार करना।**

अवलोकन

- **औद्योगिक विकास (वित्त वर्ष 24 में):** 9.5%
- **उप-क्षेत्रों (sub-sectors) का प्रदर्शन:** उद्योग के **चार उप-क्षेत्रों** में से **विनिर्माण और निर्माण ने दोहरे अंकों की वृद्धि हासिल की है,** जबकि खनन और उत्खनन तथा बिजली और जलापूर्ति ने भी वित्त वर्ष 2024 में मजबूत सकारात्मक वृद्धि दर्ज की।
- **विनिर्माण क्षेत्र की हिस्सेदारी मौजूदा कीमतों (FY23 में) पर कुल सकल मूल्य वर्धन में 14.3%** है।
  - इसी अवधि के दौरान **आउटपुट शेयर** 35.2% है, जो दर्शाता है कि इस क्षेत्र में काफ़ी बड़े बैकवर्ड और फॉरवर्ड लिंकेज हैं, जो इसके मूल्य-वर्धित हिस्से में पूरी तरह से शामिल नहीं हैं।

- पिछले दशक में विनिर्माण क्षेत्र की औसत वार्षिक वृद्धि दर: 5.2%

कुल GVA में उद्योग और उसके घटकों का हिस्सा (स्थिर मूल्यों में)	उद्योग एवं उसके घटकों की वार्षिक वृद्धि (स्थिर मूल्यों में)
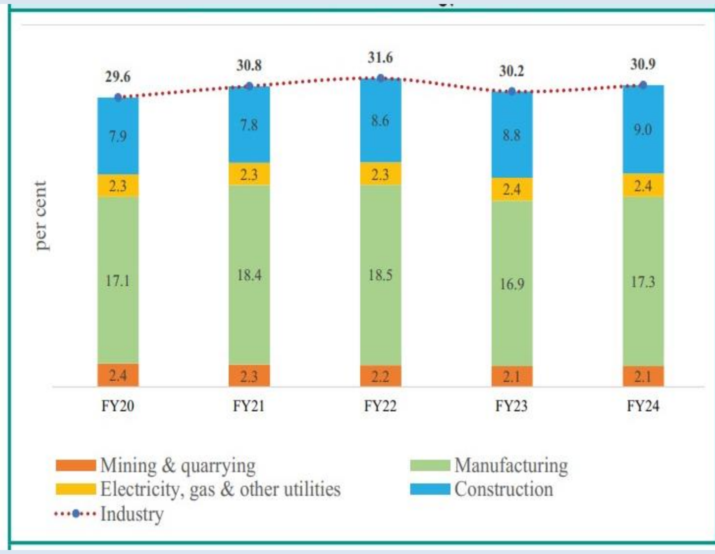	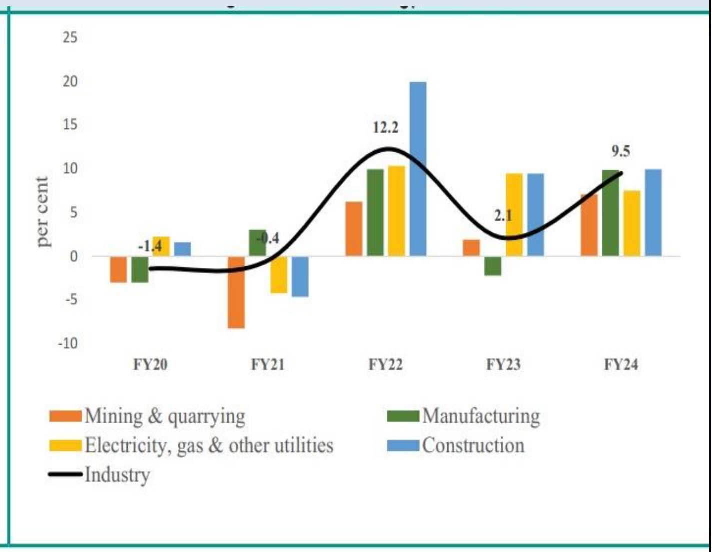

प्रमुख क्षेत्रकों का प्रदर्शन और संबंधित मुद्दे

प्रमुख औद्योगिक घटक

सीमेंट: भविष्य का आधार

- **स्थिति:** भारत, चीन के बाद **दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा सीमेंट उत्पादक** देश है। 1991 में **डी-लाइसेंसिंग के बाद** से, सीमेंट उद्योग ने क्षमता और प्रक्रिया प्रौद्योगिकी दोनों में उल्लेखनीय प्रगति की है।
  - सीमेंट उद्योग **भारत में निर्माण क्षेत्र में इनपुट लागत का लगभग 11 प्रतिशत** योगदान देता है।

सीमेंट उद्योग की स्थापित क्षमता, उत्पादन और क्षमता उपयोग

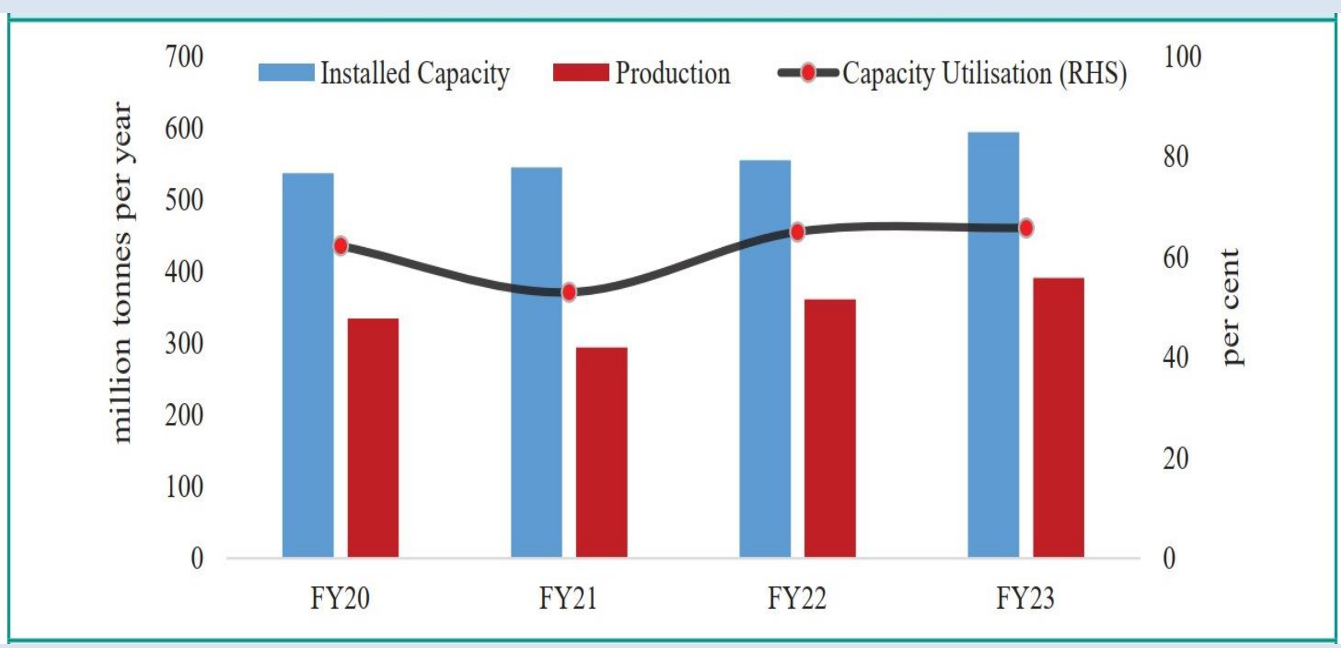

© Vision IAS

- **भारत में सीमेंट उद्योग की वर्तमान वार्षिक स्थापित क्षमता लगभग 622 मिलियन टन है।** इसमें वित्त वर्ष 24 में सीमेंट उत्पादन लगभग 427 मिलियन टन है।
- **उत्पादन का स्थान:** सीमेंट उद्योग का लगभग 85% प्रतिशत हिस्सा राजस्थान, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल राज्यों में केंद्रित है।
- **उद्योग की क्षमता उपयोग दर:** हाल के वर्षों में लगभग 60-65%। (ग्राफ देखें)
- **मुद्दे**
  - **प्रति व्यक्ति कम खपत:** भारत में घरेलू सीमेंट की खपत प्रति व्यक्ति लगभग 260 किलोग्राम है, जबकि वैश्विक औसत 540 किलोग्राम प्रति व्यक्ति है।
  - **ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन:** वैश्विक स्तर पर, सीमेंट क्षेत्र कुल मानव जनित उत्सर्जन का लगभग 7% उत्पन्न करता है।
- **लक्ष्य:** 2050 तक CO_2 उत्सर्जन को घटाकर प्रति टन सीमेंट 0.35 टन CO_2 करना।

इस्पात क्षेत्र (Steel sector) विकास पथ पर

- **स्थिति:** FY24 के दौरान उत्पादन और खपत ने अपने उच्चतम स्तर को हासिल किया।
  - भारत पिछले दशक में **तैयार इस्पात का नेट एक्सपोर्टर** बन गया।
  - **भवन और निर्माण में लौह और इस्पात का योगदान:** सभी इनपुट का लगभग 47%।
- **मुद्दे**
  - अंतर्राष्ट्रीय बाजार में **कीमतों में उतार-चढ़ाव**।
  - **कोर्किंग कोल के आयात पर निर्भरता:** इस्पात/ स्टील उत्पादन के लिए एक आवश्यक कच्चा माल (वित्त वर्ष 23 में 56.1 मीट्रिक टन और वित्त वर्ष 24 में 58.1 मीट्रिक टन)
  - **उच्च ऊर्जा गहनता:** प्रति टन कच्चे इस्पात पर 2.5 टन CO_2 की उत्सर्जन तीव्रता, जबकि वैश्विक औसत प्रति टन कच्चे इस्पात पर 1.9 टन CO_2 है।
  - **उत्सर्जन:** भारत के **GHG उत्सर्जन का 12% हिस्सा** है।

वित्त वर्ष 24 में तैयार इस्पात की वार्षिक वृद्धि

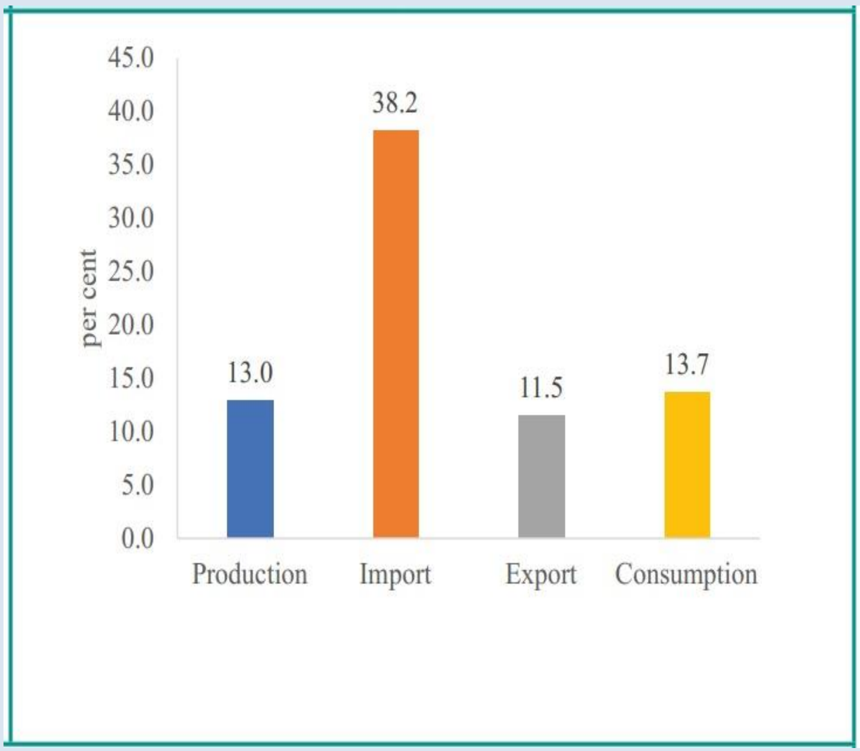

इस्पात क्षेत्र के लिए शुरू की गई पहलें

- **बस्तर जिले में नगरनार स्टील प्लांट की स्थापना:** भारत की इस्पात उत्पादन क्षमताओं को बढ़ाने के लिए।
- **स्पेशियलिटी स्टील के लिए PLI योजना (2021 में स्वीकृत):** इसने 24 मई तक ₹15,519 करोड़ का निवेश आकर्षित किया है।
- **27 चयनित कंपनियों के साथ समझौता ज्ञापन (MOU):** 24,780 हजार टन क्षमता वृद्धि के साथ 29,531 करोड़ रुपये की कुल निवेश प्रतिबद्धता को आकर्षित करना।

कोयला: बाहरी निर्भरता को कम करना

- **स्थिति:** वित्त वर्ष 2024 में, भारत ने 997.2 मीट्रिक टन (MT) कोयले का उत्पादन किया, 261 मीट्रिक टन का आयात किया और 1233.86 मीट्रिक टन की खपत की।
- **ऊर्जा:** भारत की प्राथमिक वाणिज्यिक ऊर्जा में कोयले की 55% से अधिक हिस्सेदारी है।
    - कुल विद्युत उत्पादन में **कोयला आधारित विद्युत उत्पादन का योगदान लगभग 70%** है।

कोयले के उत्पादन, खपत और आयात में वृद्धि (प्रतिशत में CAGR)
स्रोत: कोयला मंत्रालय

वर्ष	उत्पादन	खपत	आयात
वित्त वर्ष 14 से वित्त वर्ष 19	5.2	5.6	7.1
वित्त वर्ष 19 से वित्त वर्ष 24	6.5	5.0	2.1
वित्त वर्ष 24 (वर्ष दर वर्ष)	11.7	10.7	9.8

हाल ही में शुरू की गई पहलें	चुनौतियां, अवसर और विकल्प
• **लक्ष्य:** आयात को कम करने के लिए 2030 तक 100 मीट्रिक टन कोयले को गैसीफाई करना। • **कोयला/ लिग्नाइट गैसीफिकेशन परियोजनाओं को व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण प्रदान करने** के लिए 2023-24 के दौरान 8500 करोड़ रुपये के परिव्यय वाली एक योजना शुरू की गई है। • कोयला निकासी के लिए तकनीकी रूप से सक्षम, एकीकृत और लागत प्रभावी रसद विकसित करने के लिए फरवरी 2024 में **एकीकृत कोयला रसद नीति और योजना** शुरू की गई। • मई 2023 में **संशोधित कोयला ब्लॉक आवंटन नियम, 2017** को अधिसूचित किया गया। • **कोल इंडिया लिमिटेड (CIL) की पहलें:** ○ 2025-26 तक बिजली खनन कार्यों के लिए **3,000 मेगावाट अक्षय ऊर्जा क्षमता** स्थापित करने का उपक्रम। ○ धीरे-धीरे **उच्च क्षमता वाली कोयला निकासी प्रणाली** की ओर बढ़ना। ○ भारत और विदेशों में **लिथियम और कोबाल्ट जैसी महत्वपूर्ण खनिज परिसंपत्तियों** के अधिग्रहण का प्रयास करना।	• स्वदेशी निर्माताओं से आधुनिक खनन उपकरणों की सीमित उपलब्धता के कारण तकनीकी जटिलताएं। • वानिकी और पर्यावरण मंजूरी, भूमि अधिग्रहण और कब्जे को प्राप्त करने में प्रक्रियात्मक जटिलताओं का ध्यान रखा जाना चाहिए, ताकि खनन परियोजनाओं का समय पर विकास किया जा सके। • कोर्किंग कोयले की बढ़ती मांग से **कोर्किंग कोयले के आयात में वृद्धि** होगी। • **'कोर्किंग कोल मिशन'** के तहत आयातित कोयले के साथ मिश्रण के लिए कोर्किंग कोल के लाभ को बढ़ाया जाना चाहिए। • कोयले का उपयोग हरित ऊर्जा स्रोत के रूप में किया जा सकता है, जैसे- **कोल माइन मीथेन (CMM), कोल बेड मीथेन (CBM)** आदि।

प्रमुख उपभोक्ता-उन्मुख उद्योग

फार्मास्युटिकल्स: बढ़ती और वैश्विक उपस्थिति

- **स्थिति:** भारत का फार्मास्युटिकल बाज़ार वर्तमान में 50 बिलियन अमेरिकी डॉलर का है। यह मात्रा के हिसाब से **दुनिया का तीसरा सबसे बड़ा बाज़ार है।**
- **दुनिया की फार्मेसी (जेनेरिक दवाओं में):** भारत मात्रा के हिसाब से वैश्विक जेनेरिक दवा निर्यात का 20% का उत्पादन करता है।
    - शीर्ष **20 वैश्विक जेनेरिक कंपनियों** में से **8 भारत में स्थित** हैं।
- **निर्यात:** भारत **थोक दवाओं का शुद्ध निर्यातक** बन गया है।
- **उच्च गुणवत्ता अनुपालन:** 703 अमेरिकी FDA-अनुमोदित सुविधाएं (अप्रैल 2023 तक), 386 यूरोपीय GMP-अनुपालक संयंत्र (नवंबर 2022 तक) और 2418 WHO-GMP-अनुमोदित संयंत्र।

वित्त वर्ष 24 में फार्मा क्षेत्र का कारोबार, निर्यात और आयात

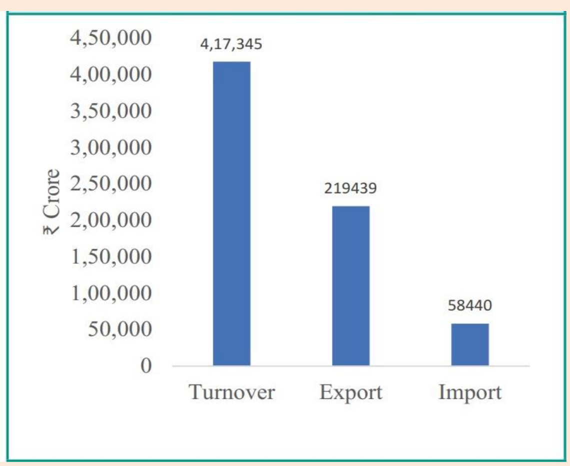

- **फार्मा क्षेत्र की हालिया पहल, चुनौतियाँ और दृष्टिकोण**

आत्मनिर्भरता का अनुसरण	प्रधानमंत्री भारतीय जनऔषधि परियोजना	चुनौतियाँ एवं दृष्टिकोण
• पहचान की गई **प्रमुख प्रारंभिक सामग्री** (Key Starting Materials) / **ड्रग इंटरमीडिएट्स और सक्रिय दवा सामग्री** (Active Pharmaceutical Ingredients: APIs) **के घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देना।** • थोक दवाओं के लिए **PLI योजना के तहत,** 48 परियोजनाओं को मंजूरी दी गई है। • **3 बल्क ड्रग पार्क स्थापित** करने के लिए बल्क ड्रग पार्कों को बढ़ावा देने की योजना।	• सभी को किफायती दामों पर **गुणवत्तापूर्ण जेनेरिक दवाइयां** उपलब्ध कराना। • 12500 से अधिक **प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि केंद्र (PMBJKs)** खोले जा चुके हैं। • 12 लाख लोग प्रतिदिन **जन औषधि केंद्रों पर आते** हैं।	• भारत किण्वन के माध्यम से निर्मित कई एंटीबायोटिक API के लिए काफी हद तक आयात पर निर्भर है। भारत की **आयात निर्भरता** काफी हद तक आयात की तुलना में घरेलू API विनिर्माण में लागत प्रभावी विकल्पों की कमी के कारण है। • फार्मा उद्योग के **2030 तक 130 बिलियन अमेरिकी डॉलर तक पहुंचने की उम्मीद** है। • **आवश्यकता:** कौशल उन्नति, नवाचार तथा प्रौद्योगिकी का उपयोग और एक मजबूत आपूर्ति श्रृंखला की स्थापना।

फार्मा अनुसंधान एवं विकास को बढ़ाने और पुनर्कल्पित करने की आवश्यकता

- दुनिया भर के फार्मास्युटिकल उद्योग को **इनोवेटर या जेनेरिक उत्पादक में विभाजित** किया जा सकता है। भारत जेनेरिक उत्पादक श्रेणी में आता है।
- भारत में दवाओं एवं फार्मास्युटिकल्स क्षेत्र में अनुसंधान और विकास व्यय **वित्त वर्ष 20 और वित्त वर्ष 21 में बिक्री कारोबार का औसतन लगभग 5%** था।
- रिपोर्ट **"भारतीय फार्मास्युटिकल सेक्टरियल सिस्टम ऑफ़ इनोवेशन"** निम्नलिखित की आवश्यकता पर जोर देता है:
  - **उद्योग जगत के प्रवर्तकों के बीच संयुक्त अनुसंधान** को बढ़ावा देना।
  - अनुप्रयुक्त अनुसंधान के लिए उद्योग-अकादमिक संपर्क को बढ़ावा देना।
  - ज्ञान आधारित संस्थानों के बीच संचार की कठोरता को कम करना, विशेष रूप से टियर 2 और टियर 3 संस्थानों को शामिल करना।
  - उद्यम पूंजी और एंजेल निवेशकों से **वित्त पोषण के चैनलों को बढ़ाना।**
  - सरकारी निकायों के बीच **बेहतर ज्ञान साझा करना।**
- **अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए सरकारी उपाय:** फार्मा मेडटेक क्षेत्र में अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देना, फार्मास्युटिकल क्षेत्र में सहयोगात्मक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए उत्कृष्टता केंद्रों की स्थापना करना आदि।

कपड़ा उद्योग: चुनौतियों का सामना करना

- **स्थिति:** परिधान क्षेत्र सहित वस्त्रों ने वित्त वर्ष 23 में 3.77 लाख करोड़ रुपये का सकल मूल्य वर्धित किया, जो वर्ष के दौरान मौजूदा कीमतों पर **विनिर्माण GVA का लगभग 10.6 %** था।
- **निर्यात:** भारत दुनिया का **दूसरा सबसे बड़ा वस्त्र निर्माता** है और विश्व के **शीर्ष पांच निर्यातक देशों में से एक** है।
  - वित्त वर्ष 2024 में हस्तशिल्प सहित वस्त्र और परिधान के निर्यात में 1% की वृद्धि दर्ज की गई।
  - **निर्यात में विविध हिस्सा (वित्त वर्ष 2024):** निर्यात में सबसे बड़ी हिस्सेदारी (41 प्रतिशत) रेडीमेड कपड़ों की है, इसके बाद सूती वस्त्र (34 प्रतिशत) और मानव निर्मित वस्त्र (14 प्रतिशत) का स्थान आता है।

कपड़ा उत्पादों का कुल निर्यात (बिलियन अमेरिकी डॉलर में)

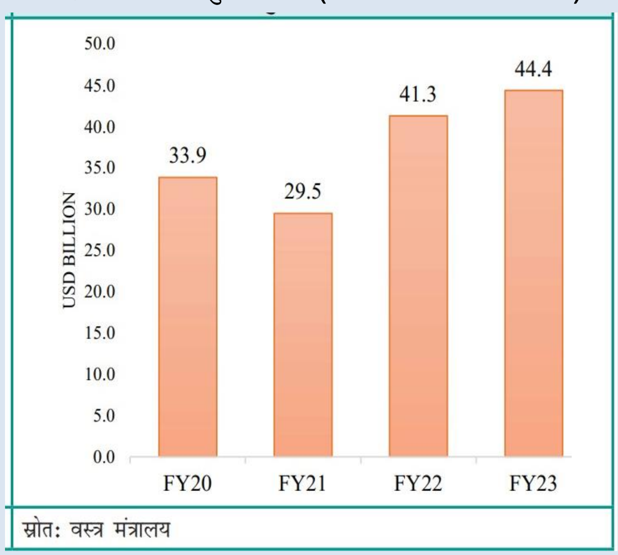

स्रोत: कपड़ा मंत्रालय

- **वस्त्र उद्योग में चुनौतियां और सहायक पहलें**

उद्योग संदर्भ और चुनौतियां	सहायक पहल

• **भारत की कपड़ा और परिधान उत्पादन क्षमता का अधिकांश हिस्सा MSMEs के कारण है,** जो इस क्षेत्र में **80 प्रतिशत से अधिक का योगदान** देता है। इस प्रकार, बड़े पैमाने पर आधुनिक विनिर्माण से दक्षता और पैमाने की अर्थव्यवस्थाएँ सीमित हैं।
• भारत के परिधान क्षेत्र की **विखंडित प्रकृति** के कारण परिवहन की लागत काफी बढ़ जाती है और ऑर्डर को पूरा करने में देरी होती है।
  ○ कच्चा माल मुख्य रूप से महाराष्ट्र, गुजरात और तमिलनाडु से प्राप्त होता है, जबकि कताई क्षमता दक्षिणी राज्यों में केंद्रित है।
• **अन्य चुनौतियां: कताई क्षेत्र को छोड़कर अन्य कार्य के लिए आयातित मशीनरी पर भारी निर्भरता;** कुशल श्रमिकों की अपर्याप्त उपलब्धता; **अप्रचलित तकनीकों** का प्रयोग, आदि।
• **नीति आयोग की सिफारिशें:** ATUFS जैसी पहलों के माध्यम से घरेलू मशीनरी विनिर्माताओं को समर्थन देना, अनुसंधान एवं विकास को बढ़ावा देना और नवाचार को बढ़ावा देना।
• **प्राथमिकताएँ:**
  ○ प्लग एंड प्ले के साथ विश्वस्तरीय टेक्सटाइल इंफ्रास्ट्रक्चर की निर्माण सुविधाएं;
  ○ तकनीकी उन्नयन;
  ○ स्थिरता और परिपत्रता;
  ○ गुणवत्ता और मानक; और
  ○ हथकरघा और हस्तशिल्प उत्पादों को बढ़ावा देना।
	• वित्त वर्ष 2022 से वित्त वर्ष 28 तक 4,445 करोड़ रुपये के बजट के साथ **सात पी.एम. मित्र पार्क** स्थापित किए जाएंगे।
	• **सरकार ने** मानव निर्मित फाइबर परिधान और कपड़े तथा तकनीकी वस्त्रों के लिए **पांच वर्षों में ₹10,683 करोड़ की PLI** योजना को मंजूरी दी।
	• **राष्ट्रीय तकनीकी वस्त्र मिशन** तकनीकी वस्त्रों के उपयोग को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करता है।
	• वित्त वर्ष 2022 से वित्त वर्ष 2026 के लिए 96 छोटे हथकरघा क्लस्टर स्थापित करने के लिए **राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम (NHDP)** को मंजूरी दी गई है।

इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग: भविष्य को सशक्त बनाना

- **स्थिति:** भारत का इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्षेत्र वित्त वर्ष 22 में वैश्विक बाजार हिस्सेदारी का अनुमानित 3.7% है।
  - इसने वित्त वर्ष 22 में भारत के कुल सकल घरेलू उत्पाद में 4% का योगदान दिया।
- **इलेक्ट्रॉनिक्स सामानों के उत्पादन में CAGR (वित्त वर्ष 18 से वित्त वर्ष 23 तक):** 16.19%
- **निर्यात में वृद्धि (वित्त वर्ष 18 से वित्त वर्ष 23 तक):** 35.7%
- **कार्यबल:** मोबाइल फोन के उत्पादन में प्रत्यक्ष कार्यबल वित्त वर्ष 2017 से वित्त वर्ष 2022 के बीच तीन गुना से अधिक हो गया है।
- **प्रमुख मुद्दे:** वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं (GVC) में निर्बाध भागीदारी के लिए सेवा लिंक लागत को कम करना महत्वपूर्ण है, जिससे लेनदेन लागत कम करने के प्रयासों की आवश्यकता होती है।

इलेक्ट्रॉनिक्स वस्तुओं के उत्पादन और व्यापार में वृद्धि (वर्ष दर वर्ष) (प्रतिशत में)

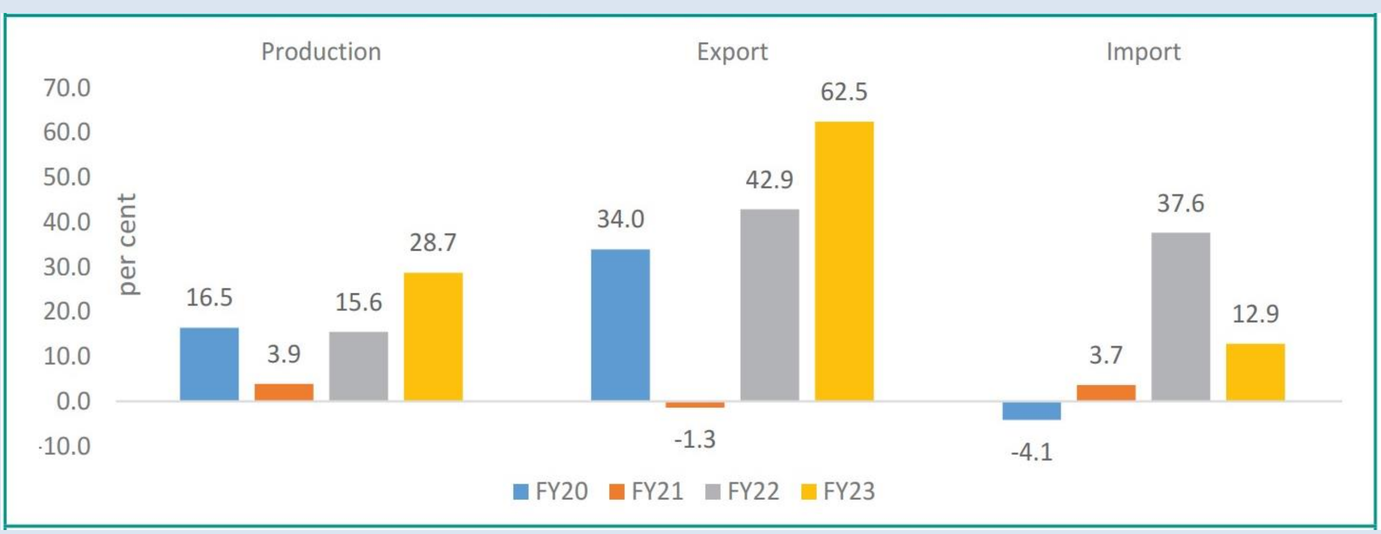

इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग को बढ़ावा देने के लिए पहल
• **उत्पादन आधारित प्रोत्साहन योजना (PLI):** बड़े पैमाने पर इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण के लिए। • **PLI 2.0 आईटी हार्डवेयर:** वृद्धिशील बिक्री और निवेश सीमा से जुड़े घटकों और उप-असेंबली के स्थानीयकरण को प्रोत्साहित करना। ○ यह योजना छह वर्षों के लिए भारत में निर्मित पात्र वस्तुओं की **निवल वृद्धिशील बिक्री पर लगभग 5%** का औसत प्रोत्साहन प्रदान करती है। • **इलेक्ट्रॉनिक घटकों और अर्धचालकों के विनिर्माण के संवर्धन की योजना (SPECS):** इलेक्ट्रॉनिक वस्तुओं की एक विशिष्ट सूची के लिए पूंजीगत व्यय पर 25% का पर्याप्त वित्तीय प्रोत्साहन प्रदान करता है। • **संशोधित इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण क्लस्टर (EMC 2.0):** भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण को आकर्षित करने के लिए EMC परियोजनाओं और सामान्य सुविधा केंद्रों का समर्थन करता है।

मोटर वाहन उद्योग

- **स्थिति:** वित्त वर्ष 2024 में, देश में लगभग 49 लाख यात्री वाहन, 9.9 लाख तिपहिया वाहन, 214.7 लाख दोपहिया वाहन और 10.7 लाख वाणिज्यिक वाहन का उत्पादन हुआ।
- **मुद्दे:** महामारी ने ऑटोमोबाइल क्षेत्र को प्रभावित किया, इसने ऑटोमोटिव पार्ट्स की मांग को कमजोर कर दिया और इसलिए उनके विस्तार की गति कम हो गई है।

विभिन्न श्रेणियों के ऑटोमोबाइल के उत्पादन में वार्षिक वृद्धि (वर्ष दर वर्ष)

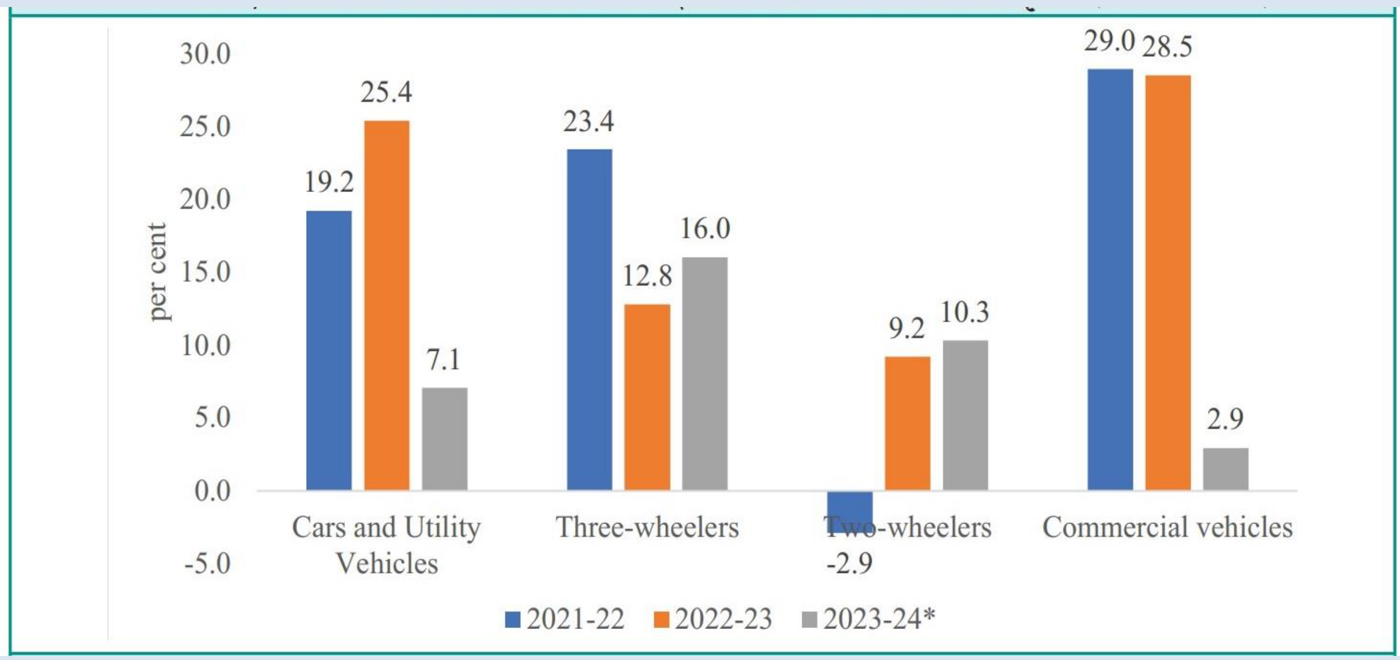

ऑटोमोबाइल और ई-मोबिलिटी के लिए नीतिगत समर्थन		
PLI योजना के तहत	**बैटरी भंडारण**	**FAME योजना का चरण II**
• वित्त वर्ष 23 से वित्त वर्ष 27 तक ₹25,938 करोड़ का **बजटीय परिव्यय**। • **चैंपियन मूल उपकरण निर्माण प्रोत्साहन योजना और घटक चैंपियन**	• 2021 में **उन्नत रसायन सेल (ACC) बैटरी भंडारण** पर **राष्ट्रीय कार्यक्रम को मंजूरी** दी गई।	• **वित्त वर्ष 2020 से वित्त वर्ष 24 तक** 5 वर्षों के लिए स्वीकृत। • **उद्देश्य:** 7000 ई-बसों, 5 लाख ई-3 पहिया वाहनों, 55000 ई-4 पहिया यात्री कारों और 10 लाख ई-2 पहिया वाहनों का समर्थन करके इलेक्ट्रिक वाहनों की मांग पैदा करना।

प्रोत्साहन योजना में उप-विभाजित। • मार्च 2024 तक 14,043 करोड़ रुपये का निवेश किया गया है।	• इसका उद्देश्य 50 GWh की संचयी ACC विनिर्माण क्षमता स्थापित करना है। • **ACC PLI बोली का पहला दौर 2022** में संपन्न हुआ।	• **भारत में इलेक्ट्रिक यात्री कारों के विनिर्माण को बढ़ावा देने की योजना (SPMEPCI)** को 2024 में मंजूरी दी गई। • **इलेक्ट्रिक मोबिलिटी प्रमोशन स्कीम 2024 (EMPS 2024)**

क्रॉस-कटिंग थीम

उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन (PLI) योजना

- **उद्देश्य:** भारत की विनिर्माण क्षमताओं और निर्यात को बढ़ावा देने के लिए 14 प्रमुख क्षेत्रों के लिए समर्पित योजना।
- **महत्व**
  - इसके तहत मई 2024 तक **1.28 लाख करोड़ रुपये से अधिक निवेश** की सूचना दी गई है।
  - **10.8 लाख करोड़ रुपये** का उत्पादन/ बिक्री।
  - प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से 8.5 लाख से अधिक का **रोजगार सृजन।**
  - निर्यात में **4 लाख करोड़ रुपये** तक की वृद्धि हुई।

PLI योजना के तहत वास्तविक क्षेत्रवार निवेश

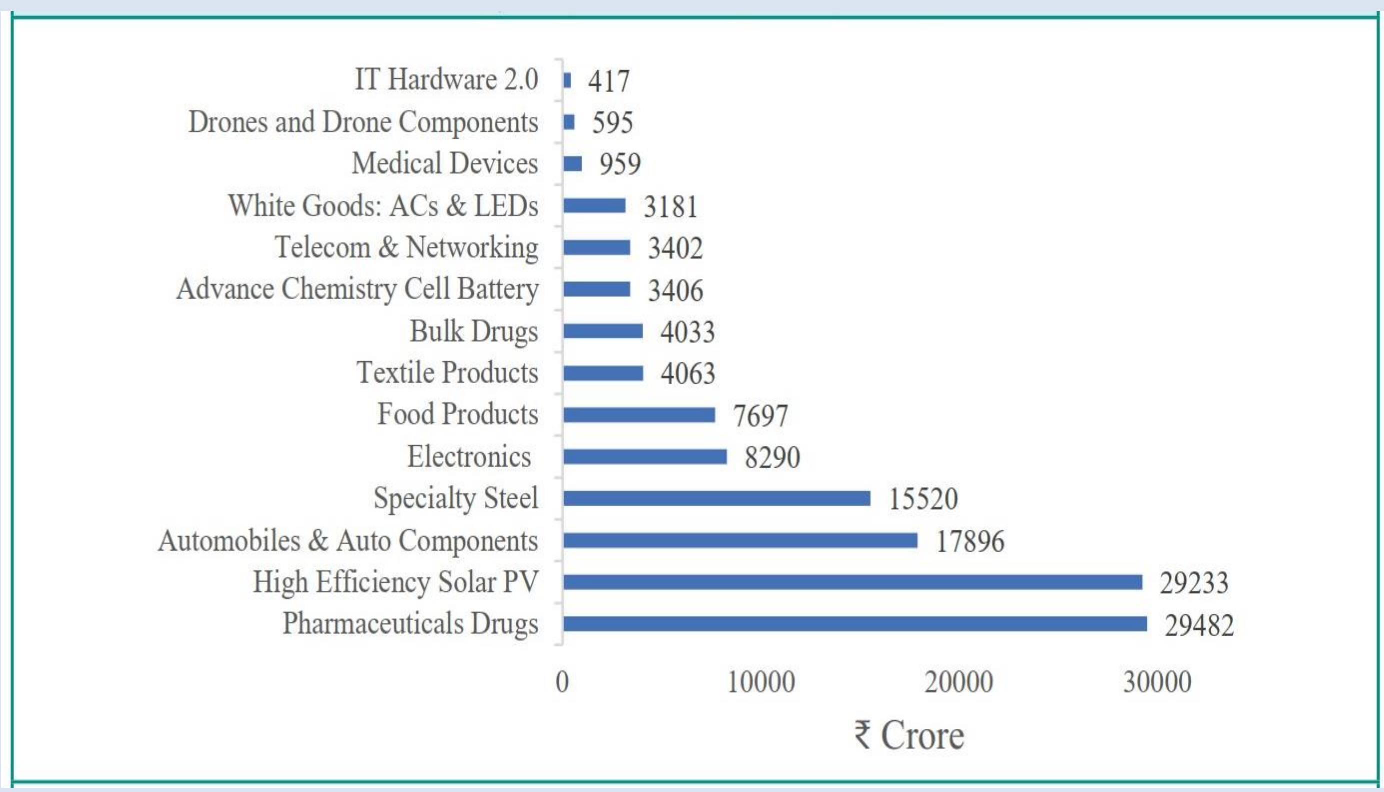

सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम (MSME)

- **अर्थव्यवस्था में भूमिका**
  - **अखिल भारतीय स्तर पर विनिर्माण उत्पादन में MSMEs की हिस्सेदारी:** 35.4% (वित्त वर्ष 2022)
  - **अखिल भारतीय स्तर पर** निर्यात में **MSMEs के जरिए निर्मित उत्पादों के निर्यात की हिस्सेदारी** (2023-24 में): 45.7%।

- **MSMEs के लिए सरकार द्वारा की गई पहल**
  - **MSMEs को** औपचारिक रूप देने के लिए 2020 में **उद्यम पंजीकरण पोर्टल** लॉन्च किया गया।
    - उद्यम पंजीकरण पोर्टल पर **4.69 करोड़ MSMEs पंजीकृत** हैं।
    - उद्यम-पंजीकृत MSMEs बैंकों से प्राथमिकता क्षेत्रक ऋण के लिए भी पात्र हैं।
  - केंद्रीय बजट 2023-24 में सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए **क्रेडिट गारंटी फंड ट्रस्ट (CGTMSE)** को 9,000 करोड़ रुपये आवंटित किए गए।
  - **समाधान पोर्टल, संबंध पोर्टल** और **चैंपियंस पोर्टल,** भुगतान में देरी, खरीद निगरानी और शिकायतों के त्वरित समाधान जैसे मुद्दों को हल करने के लिए।
  - **ऋण योजनाएं**
    - **प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम:** वित्त वर्ष 23 के दौरान, सब्सिडी के साथ 85,167 सूक्ष्म इकाइयों को सहायता प्रदान की गई।
    - **ऋण गारंटी योजना (CGS):** 85% तक की गारंटीकृत कवरेज के साथ 5 करोड़ रुपये तक के गिरवी-मुक्त ऋण की पेशकश करके MSMEs द्वारा ऋण प्राप्त करने में आने वाली बाधाओं को कम करना।
      - CGTMSE द्वारा प्रशासित।
- **चुनौतियां और अवसर:**
  - **चुनौतियां:** औपचारिकता और समावेशन से जुड़े मुद्दे, वित्त, बाज़ार, तकनीक और डिजिटलीकरण तक सीमित पहुंच, अवसंरचना संबंधी अड़चन तथा कौशल संबंधी मुद्दे।
  - डिजिटल अर्थव्यवस्था से MSMEs को महत्वपूर्ण अवसर प्राप्त हुए हैं।
    - 2020-21 में कुल ई-कॉमर्स बिक्री का 70% हिस्सा MSMEs से संबंधित था।
- अध्ययन से पता चलता है कि **फैक्ट्री स्पेस के उपयोग पर विनियमों को युक्तिसंगत बनाने से MSMEs की विनिर्माण क्षमता में वृद्धि** होगी।

विनिर्माण क्षमता को बढ़ाने के लिए भवन विनियमों की पुनर्कल्पना

स्टेट ऑफ रेगुलेशन: बिल्डिंग स्टैंडर्ड्स रिफॉर्म्स फॉर जॉब्स एंड ग्रोथ नामक रिपोर्ट में दर्शाया गया है कि किस तरह भूमि का उपयोग नहीं हो पाता है।

- **ग्राउंड कवरेज के कारण भूमि का नुकसान होता है:** फैक्ट्री प्लॉट पर ग्राउंड कवरेज विनियमों के तहत, एक फैक्ट्री बिल्डिंग संपूर्ण प्लॉट के 40-60% से अधिक हिस्से को कवर नहीं कर सकती है।
- **सेटबैक के कारण भूमि का नुकसान:** आग के जोखिम, वेंटिलेशन और प्रकाश से संबंधित विनियमों का पालन करने के लिए फैक्ट्रियों को अपनी भूमि का 60-90% हिस्से का नुकसान होता है।
- **पार्किंग विनियमों के कारण भूमि का नुकसान:** भारत में पार्किंग के कारण लगभग 12-70% भूमि का नुकसान होता है।
- **फ़्लोर रेशियो के कारण भूमि का नुकसान:** औसतन, राज्यों में कारखानों को प्लॉट के आकार से 1.3 गुना अधिक फ़्लोर स्पेस बनाने की अनुमति है।

समाधान

- **विनिर्माण क्षमता बढ़ाने के लिए भवन विनियमों** की जांच करना और उसे युक्तिसंगत बनाना।
- **अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रचलित सर्वोत्तम प्रथाओं का अध्ययन करना:** उदाहरण के लिए, 1000 वर्ग मीटर के प्लॉट के साथ, मुंबई में 5000 वर्ग मीटर तक का कार्यालय भवन बनाया जा सकता है, जबकि जापान में यह 13,000 वर्ग मीटर और सिंगापुर और हांगकांग में 15,000 वर्ग मीटर तक हो सकता है।

एक जिला एक उत्पाद (ODOP): क्षेत्रीय गौरव और आर्थिक सशक्तिकरण का निर्माण

- **उद्देश्य:** प्रत्येक जिले की अद्वितीय क्षमता की पहचान करना, ब्रांडिंग करना और उस जिले में उत्पादित एकल, प्रतिष्ठित उत्पाद के जरिए उसका प्रचार करना।
- **प्रगति:** अब तक देश भर के 761 जिलों से 1102 उत्पादों की पहचान की गई।
- **ODOP को बढ़ावा देने के लिए सरकारी पहल**
  - ODOP के कारीगरों और उपभोक्ताओं को जोड़ने के लिए **"पीएम-एकता मॉल"।**
  - केंद्र और स्थानीय विक्रेताओं के बीच सहयोग को सुविधाजनक बनाने और स्वदेशी उद्योगों को पुनर्जीवित करने के लिए **'ODOP संपर्क'**।

- **सफलता की कहानियां**
  - पैक शेड और सिंचाई के लिए बिछाई गई पाइपों के परिणामस्वरूप कश्मीर के **शोपियां में सेब के उत्पादन में 20% की वृद्धि** हुई।
  - उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में गैर-सरकारी संगठनों, स्थानीय प्रशासन और **700 से अधिक किसानों को जैविक खेती का कौशल** प्रदान किया गया है।
  - **आंध्र प्रदेश के अराकू घाटी में लगभग 1,50,000 आदिवासी परिवारों ने कॉफी उत्पादन में 20% की वृद्धि की है।**

केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उद्यम (CPSEs)

- **CPSEs की संख्या:** 31 मार्च, 2023 तक **254 CPSEs कार्यरत** थे।
  - लगभग **66% CPSEs सेवा क्षेत्रक से संबंधित** थे।
- **CPSEs की स्थिति**
  - 31 मार्च, 2023 तक भारत के स्टॉक एक्सचेंजों पर कारोबार करने वाले 63 CPSEs का कुल **बाजार पूंजीकरण (M-cap)** 16.69 लाख करोड़ रुपये था।
  - वित्त वर्ष 2023 में परिचालन करने वाले CPSEs का **कुल शुद्ध लाभ 2.12 लाख करोड़ रुपये** था।
  - **लाभ कमाने वाले CPSEs की संख्या** 2019 से 2023 तक 178 से **बढ़कर 193 हो गई।**

वित्त वर्ष 19 और वित्त वर्ष 23 के बीच सीपीएसई के प्रदर्शन में सुधार (प्रतिशत में) (CAGR)

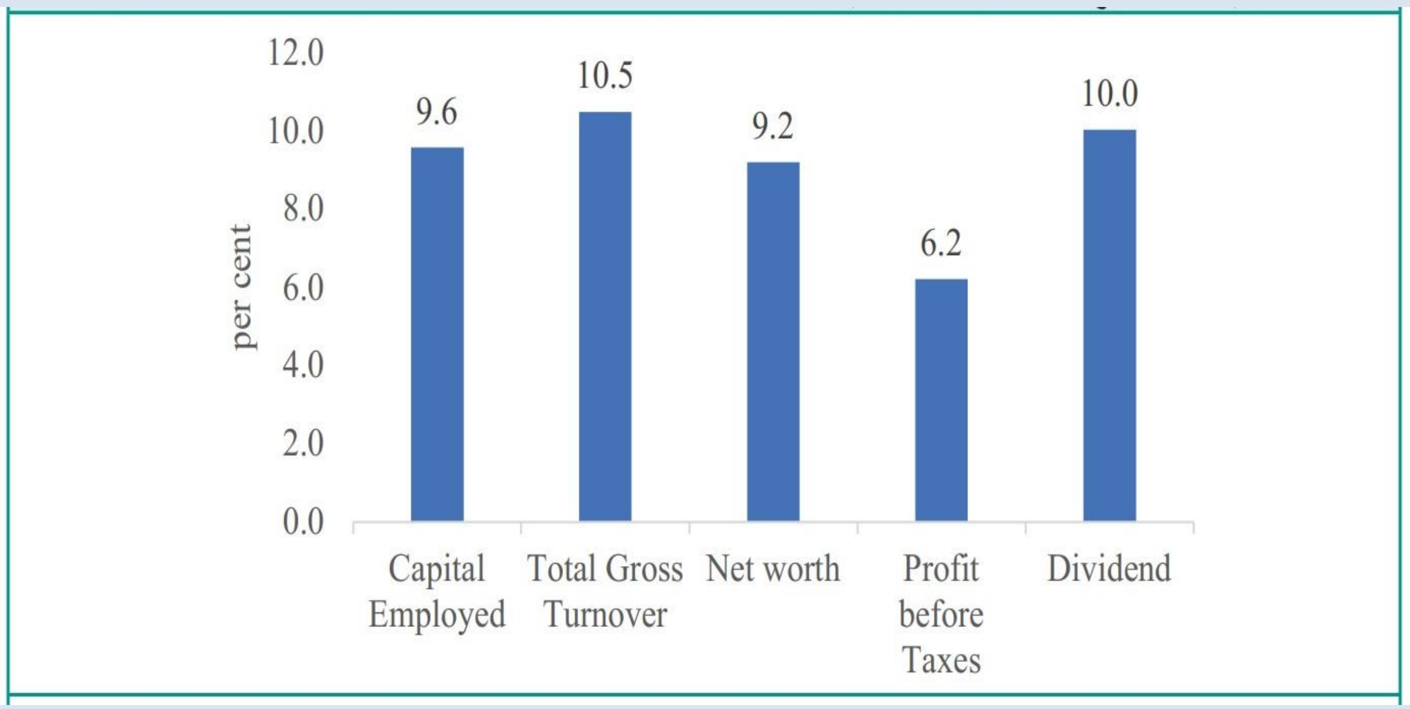

औद्योगिक ऋण

- वित्त वर्ष 2023 में, **ऋण वृद्धि मुख्य रूप से बड़े उद्योगों द्वारा संचालित थी।**
  - इसकी वृद्धि आर्थिक गतिविधियों की चक्रीयता, बैंक फंड और अन्य बाजार आधारित विकल्पों की उपलब्धता तथा लागत में सापेक्षता और बैंकिंग प्रणाली की जोखिम लेने की क्षमता जैसे कारकों पर निर्भर करती है।
- 2023 से 2024 तक, अधिकांश उद्योगों में **ऋण वृद्धि की दर सकारात्मक रही है,** लेकिन **खनन और उत्खनन (कोयला सहित), पेट्रोलियम, कोयला उत्पाद** और परमाणु ईंधन के मामले में यह दर नकारात्मक रही है।

उद्योग को सकल बैंक ऋण आवंटन में वृद्धि (प्रतिशत में)

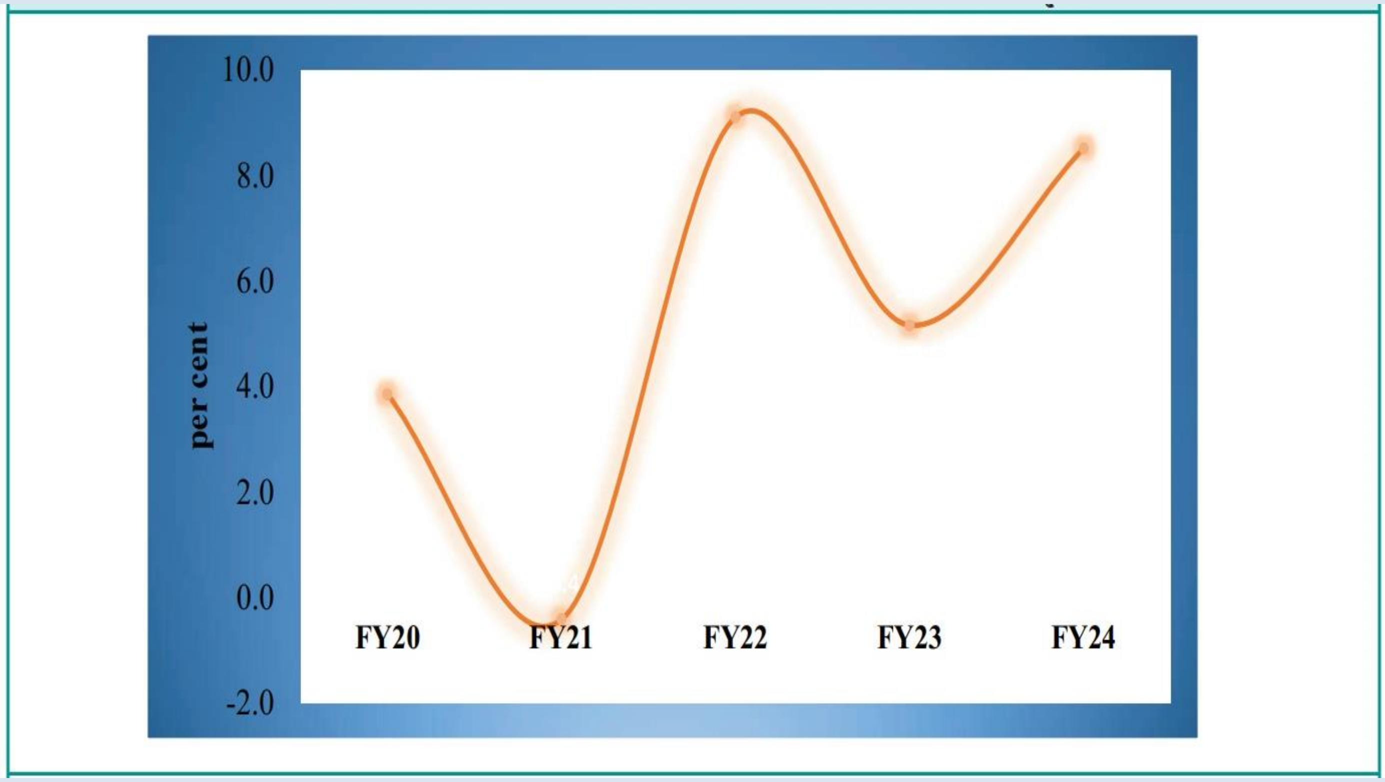

औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास तथा नवाचार

- **कोर विनिर्माण उद्योगों में सार्वजनिक क्षेत्रक की कम उपस्थिति:** केवल लगभग 7%।
- **कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास:** ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (GII) 2023 के अनुसार, कॉर्पोरेट अनुसंधान एवं विकास में अमेरिका सबसे अग्रणी देश है, उसके बाद चीन और जर्मनी का स्थान आता है।
- **भारत में केंद्रित औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास:** शीर्ष पांच क्षेत्रों में 70% से अधिक की हिस्सेदारी है।
    - भारत में औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास व्यय 44720 करोड़ रुपये (वित्त वर्ष 2019 से वित्त वर्ष 2021 तक की अवधि में)।

भारत में औद्योगिक अनुसंधान एवं विकास व्यय में उप-क्षेत्रों की हिस्सेदारी: वित्त वर्ष 19 से वित्त वर्ष 21 (% में)

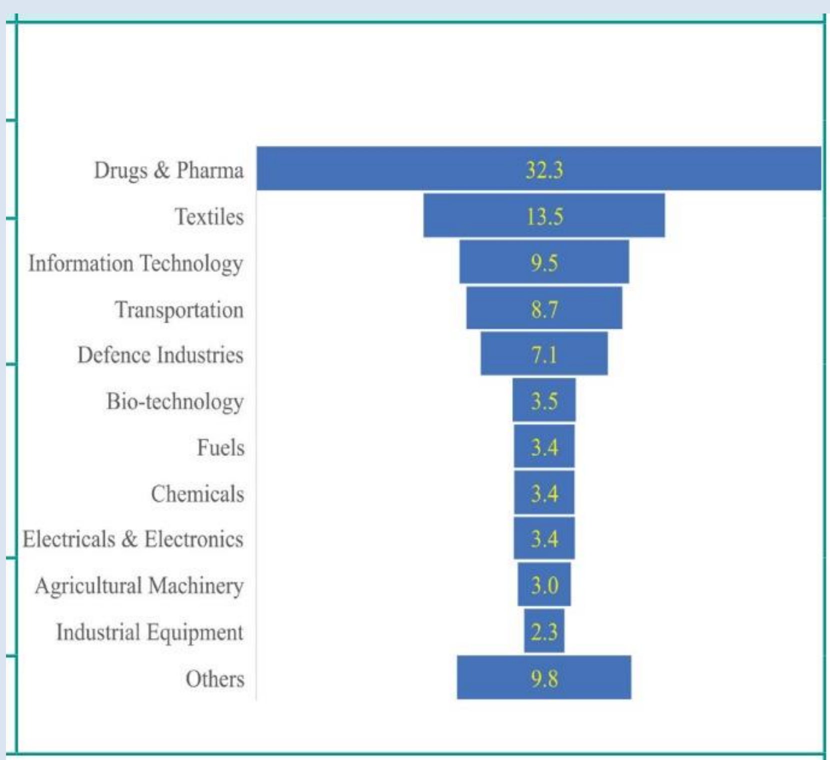

भारत में स्टार्टअप और नवाचार संस्कृति को बढ़ावा देने के प्रयास		
पेटेंट और शोध	**स्टार्ट-अप**	**नवाचार**
• **पेटेंट नियम, 2024** को अधिसूचित किया गया, जिसके जरिए पेटेंट अधिग्रहण और प्रबंधन को सरल बनाया गया। ○ 2014-15 से 2023-24 तक स्वीकृत पेटेंट में **सत्रह गुना की वृद्धि हुई है।** ○ **रजिस्टर्ड डिजाइन** 2014-15 के 7147 से बढ़कर 2023-24 में 30672 हो गए। • **अनुसंधान, राष्ट्रीय अनुसंधान फाउंडेशन (ANRF)** विधेयक 2023 पारित किया गया। • ANRF वैज्ञानिक अनुसंधान के लिए उच्च-स्तरीय रणनीतिक दिशा प्रदान करने के लिए एक शीर्ष निकाय के रूप में कार्य करेगा।	• मार्च 2024 के अंत तक **DPIIT-मान्यता प्राप्त स्टार्टअप की संख्या 1.25 लाख से अधिक** थी। • मान्यता प्राप्त स्टार्टअप में से **45% से अधिक** टियर 2/3 शहरों से उभर रहे हैं। • मान्यता प्राप्त स्टार्ट-अप में से **47% से अधिक** में कम-से-कम एक महिला निदेशक हैं। • स्टार्ट-अप के लिए फंड ऑफ फंड्स ने 135 से अधिक **वैकल्पिक निवेश फंडों को 10,500 करोड़ रुपये से अधिक की राशि** देने का वादा किया है। • **भारत स्टार्टअप नॉलेज एक्सेस रजिस्ट्री** का उद्देश्य स्टार्टअप इकोसिस्टम में विविध हितधारकों को एक साथ लाना है।	• GII के तहत, **भारत की रैंक में उल्लेखनीय सुधार** हुआ है (2023 में 40)। ○ भारत **निम्न मध्यम आय वाले देशों और मध्य और दक्षिणी एशियाई अर्थव्यवस्थाओं में पहले स्थान पर** है। • **घरेलू बाजार के विस्तार के संकेतक** के मामले में भारत वैश्विक स्तर पर शीर्ष स्थान पर है।

निष्कर्ष और दृष्टिकोण

भारतीय औद्योगिक परिदृश्य में उभरते रुझान

- **पिछले दशक** में औद्योगिक क्षेत्रों के बीच **उत्पादन हिस्सेदारी में काफी बड़े बदलाव** हुए हैं।
  - रसायन, काष्ठ आधारित उत्पाद और फर्नीचर, फार्मास्यूटिकल्स, परिवहन उपकरण, इस्पात और मशीनरी तथा उपकरण जैसे क्षेत्रों में मजबूती आई है।
  - वस्त्र, खाद्य उत्पाद, पेय पदार्थ और तंबाकू तथा पेट्रोलियम उत्पाद और चमड़ा जैसे क्षेत्रों में सापेक्षिक रूप से कमी आई है।
- पिछले कुछ वर्षों में विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों के **निर्यात-आयात संतुलन में बहुत अधिक भिन्नता** रही है।
  - प्रमुख शुद्ध निर्यातकों में इस्पात, फार्मास्यूटिकल्स और ऑटोमोबाइल जैसे उद्योग शामिल हैं, जबकि **कोयला, पूंजीगत सामान और रसायन जैसे प्रमुख क्षेत्रों में आयात निर्भरता बनी हुई है।**
- पूंजीगत उत्पादों और इस्पात तथा सीमेंट जैसे **प्रमुख निर्माण इनपुट की मांग पर मध्यम अवधि का दृष्टिकोण सकारात्मक रहने की संभावना** है।
  - **वैश्विक अनिश्चितताएं** कोयला, पेट्रोलियम, इस्पात और मशीनरी जैसे महत्वपूर्ण आयातित इनपुट्स पर निर्भरता के कारण निर्यात मांग और उत्पादन की घरेलू लागत को प्रभावित कर सकती हैं।
  - उद्योगों में दो सामान्य आवश्यकताएं **अनुसंधान और विकास तथा नवाचार को प्रोत्साहित करने और कार्यबल के कौशल स्तरों में सुधार** करने से संबंधित हैं।

सहकारी संघवाद मोड में MSMEs के लिए अनुशंसित कार्रवाई:

- MSME परियोजनाओं और उनकी बैंकिंग क्षमता को विकसित करने के लिए समर्थन प्रणाली और पर्याप्त वित्तपोषण सुनिश्चित करना।
- रोजगार-गहन MSME सेगमेंट के लिए **लक्षित आधार पर सुविधाएं प्रदान करना और प्रोत्साहन देना।**
- सिंगल-विंडो मैकेनिज्म के साथ **अनुपालन संबंधी अनिवार्यताओं को क्रमशः आसान बनाना।**
- MSME उत्पादों तक बाजार पहुंच सुनिश्चित करने के लिए **जमीनी स्तर पर सुविधाएं प्रदान करना।**
- कार्यबल को बेहतर बनाने के लिए **सरकार-उद्योग-अकादमिक सहयोग** को बढ़ावा देना।

नीति निर्माण में सहायता करने के लिए उद्योगों से जुड़े आंकड़ों को उन्नत करने के लिए सिफारिशें:

- **औद्योगिक उत्पादन सूचकांक को अपडेट करना।**
- MSMEs में **उत्पादन और रोजगार संवृद्धि के नियमित संकेतक।**
- उद्योग-वार बैंक ऋण के सकल संवितरण (वर्तमान में उपलब्ध बकाया ऋण के आंकड़ों के विपरीत), उद्योग-वार मासिक सकल वित्तीय प्रवाह की जानकारी आदि।

© Vision IAS

बजट में क्या कहा गया है?

विनिर्माण एवं सेवा क्षेत्रक

- **विनिर्माण क्षेत्र में MSMEs के लिए ऋण गारंटी योजना**
    - मशीनरी और उपकरणों की खरीद के लिए MSMEs को सावधि ऋण में बिना किसी कोलैटरल या तीसरे पक्ष की गारंटी के ऋण गारंटी योजना।
- **आर्थिक तनाव की अवधि के दौरान MSMEs को ऋण सहायता**
    - तनाव की अवधि के दौरान MSMEs को बैंक ऋण सहायता जारी रखने की सुविधा के लिए नई व्यवस्था।
- **मुद्रा ऋण**
    - 'तरुण' श्रेणी के तहत मुद्रा ऋण की सीमा उन लोगों के लिए 10 लाख से बढ़ाकर 20 लाख की जाएगी, जिन्होंने पिछले ऋणों को सफलतापूर्वक चुका दिया है।
- **TReDS में अनिवार्य ऑनबोर्डिंग के लिए दायरे का विस्तार**
    - TReDS प्लेटफॉर्म पर अनिवार्य ऑनबोर्डिंग के लिए खरीदारों की टर्नओवर सीमा 500 करोड़ से घटाकर 250 करोड़ की जाएगी।
- **खाद्य विकिरण, गुणवत्ता और सुरक्षा परीक्षण के लिए MSME इकाइयां**
    - MSME क्षेत्र में 50 बहु-उत्पाद खाद्य विकिरण इकाइयां स्थापित करने के लिए वित्तीय सहायता।
- **ई-कॉमर्स निर्यात केंद्र**
    - MSME और पारंपरिक कारीगरों को अपने उत्पादों को अंतर्राष्ट्रीय बाजारों में बेचने के लिए सार्वजनिक-निजी-भागीदारी (PPP) मोड के तहत ई-कॉमर्स निर्यात केंद्र स्थापित किए जाएंगे।

नवाचार, अनुसंधान एवं विकास

- बुनियादी अनुसंधान और प्रोटोटाइप विकास के लिए **अनुसंधान राष्ट्रीय अनुसंधान कोष** की शुरुआत की जाएगी।
    - वाणिज्यिक स्तर पर निजी क्षेत्रक द्वारा संचालित अनुसंधान और नवाचार को बढ़ावा देने के लिए 1 लाख करोड़ रुपये का वित्त पोषण पूल तैयार किया जाएगा।
- **अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था**
    - अगले 10 वर्षों में अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था को 5 गुना बढ़ाने के लिए **1,000 करोड़ का उद्यम पूंजी कोष** स्थापित किया जाएगा।

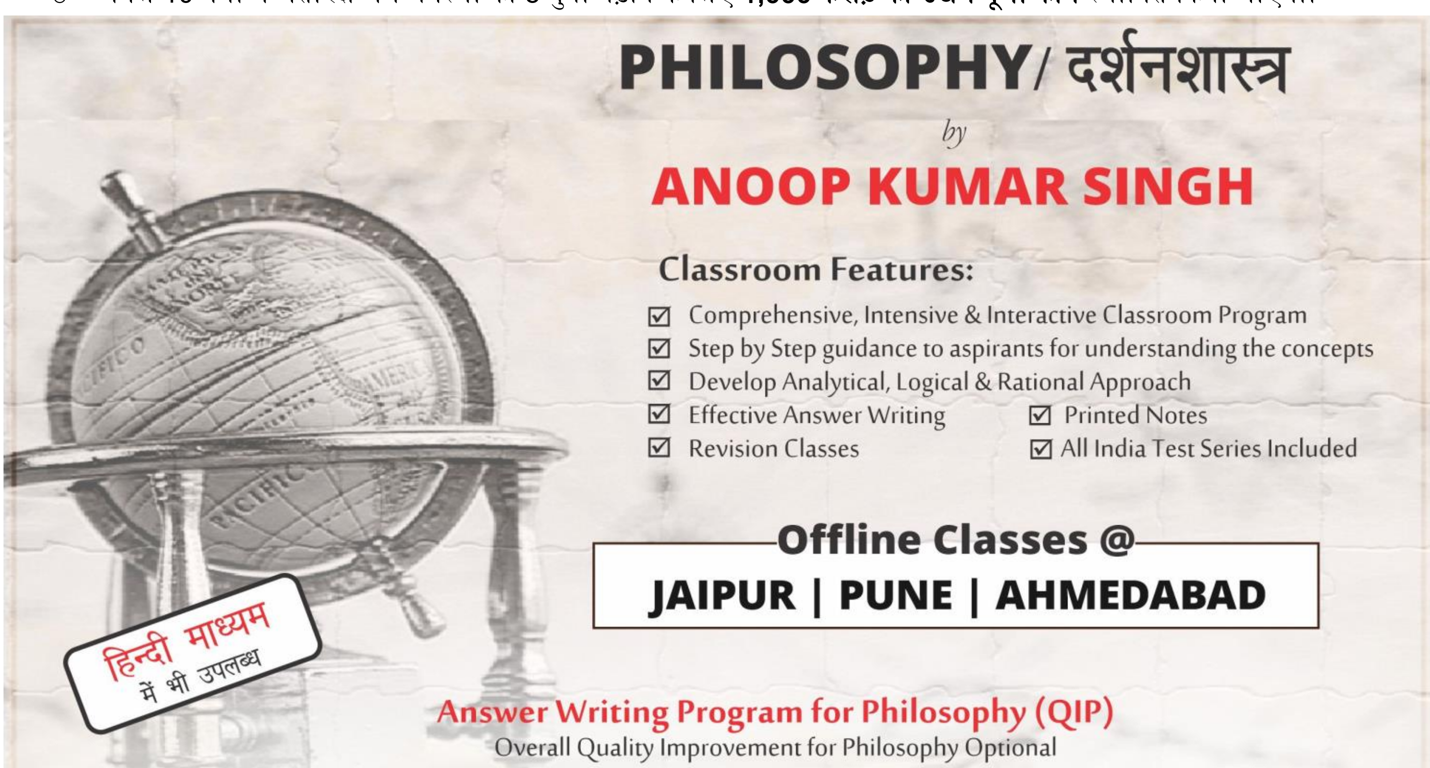

शब्दावली

शब्द/ पद	अर्थ
फ्लोर अनुपात	यह **इमारत के फ्लोर एरिया की माप** है जो उस लॉट/ पार्सल के आकार के संबंध में है जिस पर इमारत स्थित है।
बाजार पूंजीकरण (M-CAP)	यह किसी कंपनी का कुल मूल्यांकन है, जो इसके वर्तमान शेयर मूल्य और बकाया स्टॉक की कुल संख्या पर आधारित होता है।
ऊर्जा तीव्रता	इसे आउटपुट या गतिविधि के एक निश्चित स्तर का उत्पादन करने के लिए उपयोग की जाने वाली ऊर्जा की मात्रा के रूप में परिभाषित किया जाता है।
सक्रिय फार्मास्युटिकल घटक (API)	कोई भी पदार्थ या पदार्थों का मिश्रण जिसका उपयोग किसी दवा (औषधीय) उत्पाद के निर्माण में किया जाना है और जो दवा के उत्पादन में उपयोग किए जाने पर दवा का एक सक्रिय घटक बन जाता है।
ड्रग इंटरमीडिएट (DI)	API के संश्लेषण में मध्यवर्ती चरणों के दौरान उत्पादित एक सामग्री जिसे API बनने से पहले आगे घटक संबंधी परिवर्तनों या प्रसंस्करण से गुजरना पड़ता है।
मुख्य प्रारंभिक सामग्री (KSM)	एक कच्चा माल, मध्यवर्ती या API जिसका उपयोग API के उत्पादन में किया जाता है और जिसे APL की संरचना में एक महत्वपूर्ण संरचनात्मक खंड के रूप में शामिल किया जाता है।

अध्याय 10: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. उद्योग के निम्नलिखित उप-क्षेत्रों में से किसने वित्त वर्ष 2024 में दोहरे अंकों की वृद्धि हासिल की?

   1. विनिर्माण
   2. निर्माण
   3. खनन और उत्खनन
   4. बिजली और जल आपूर्ति

   नीचे दिए गए कूट का उपयोग करके सही उत्तर चुनिए:

   (a) केवल 1 और 2

   (b) केवल 2 और 3

   (c) केवल 1, 2 और 3

   (d) 1, 2, 3 और 4

2. निम्नलिखित में से कौन-सा देश सीमेंट का सबसे बड़ा उत्पादक है?

   (a) चीन

   (b) भारत

   (c) USA

   (d) ऑस्ट्रेलिया

3. भारतीय दवा क्षेत्र के बारे में निम्नलिखित कथन पर विचार कीजिए:

1. यह मात्रा के हिसाब से दुनिया का सबसे बड़ा बाजार है।
2. यह मात्रा के हिसाब से वैश्विक जेनेरिक दवा निर्यात का 20% हिस्सा नियंत्रित करता है।
3. यह थोक दवाओं का नेट एक्सपोर्टर है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल एक
(b) केवल दो
(c) सभी तीनों
(d) कोई नहीं

4. ग्लोबल इनोवेशन इंडेक्स (GII) 2023 के अनुसार, कॉर्पोरेट R&D में कौन-सा देश अग्रणी है?

(a) चीन
(b) जर्मनी
(c) भारत
(d) संयुक्त राज्य अमेरिका

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए

कथन 1: भारत में DPIIT-मान्यता प्राप्त स्टार्ट-अप की संख्या मार्च 2024 के अंत तक 1.25 लाख से अधिक हो गई।

कथन 2: मान्यता प्राप्त स्टार्ट-अप का 45% से अधिक टियर 2/3 शहरों से उभर रहा है।

उपर्युक्त कथनों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा सही है?

(a) कथन 1 और कथन 2 दोनों सत्य हैं, और कथन 2 कथन 1 का सही स्पष्टीकरण है।
(b) कथन 1 और कथन 2 दोनों सत्य हैं, लेकिन कथन 2 कथन 1 का सही स्पष्टीकरण नहीं है।
(c) कथन 1 सत्य है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(d) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सत्य है।

प्रश्न

1. भारत की विनिर्माण क्षमताओं और निर्यात को बढ़ावा देने में उत्पादन लिंक्ड प्रोत्साहन (PLI) योजना की भूमिका का विश्लेषण कीजिए। (150 शब्द)
2. सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यमों (MSMEs) के प्रदर्शन का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। (250 शब्द)

अध्याय 11: सेवाएं: विकास के अवसरों को बढ़ावा देना (Services: Fuelling Growth Opportunities)

परिचय

भारत के सेवा क्षेत्रक को **संपर्क-गहन सेवाओं (contact-intensive service) और गैर-संपर्क-गहन सेवाओं** में वर्गीकृत किया गया है। **संपर्क-गहन सेवाओं** में व्यापार, आतिथ्य सत्कार, परिवहन, रियल एस्टेट, सामाजिक, सामुदायिक और व्यक्तिगत देखभाल शामिल हैं। वहीं **गैर-संपर्क-गहन सेवाओं में** वित्तीय सेवाएं, IT, पेशेवर, संचार, प्रसारण और भंडारण सेवाएं शामिल हैं।

अध्याय का प्रीकैप

सेवा क्षेत्रक की वर्तमान स्थिति

- **भारतीय अर्थव्यवस्था में हिस्सेदारी:** वित्त वर्ष 24 में, देश की अर्थव्यवस्था में सेवा क्षेत्रक की हिस्सेदारी **लगभग 55%** थी।
- **दशकीय विकास दर:** कोविड-19 महामारी से प्रभावित वित्त वर्ष 2021 को छोड़कर पिछले दस वर्षों में 6% से अधिक की रियल वृद्धि दर दर्ज की गई।
- **वैश्विक निर्यात में हिस्सेदारी:**
  - **भारत सेवा क्षेत्रक निर्यात में पांचवें स्थान पर है** और **2022 में वैश्विक वाणिज्यिक सेवा निर्यात में भारत** की हिस्सेदारी **4.4%** थी।
  - वैश्विक स्तर पर **डिजिटल रूप से वितरित सेवाओं के निर्यात में भारत की हिस्सेदारी 2019 में 4.4% से बढ़कर 2023 में 6.0% हो गई।**
  - **आयात में हुई गिरावट** के साथ **सेवाओं के निर्यात में वृद्धि** से **भारत के चालू खाता घाटे को कम करने में मदद मिली**

चार्ट XI-1: सेवा क्षेत्र में जीवीए की बढ़ती प्रवृत्ति (स्थिर मूल्यों में)

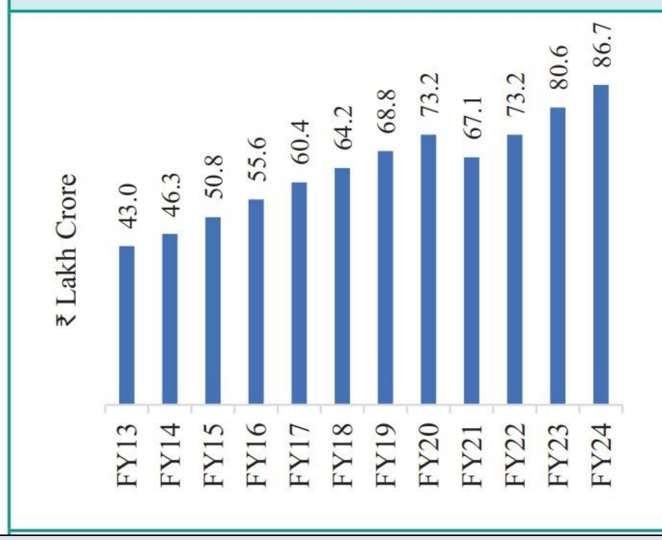

चार्ट XI.7: सेवाओं के अंतर्गत चार प्रमुख उप-क्षेत्रों का निर्यात में योगदान

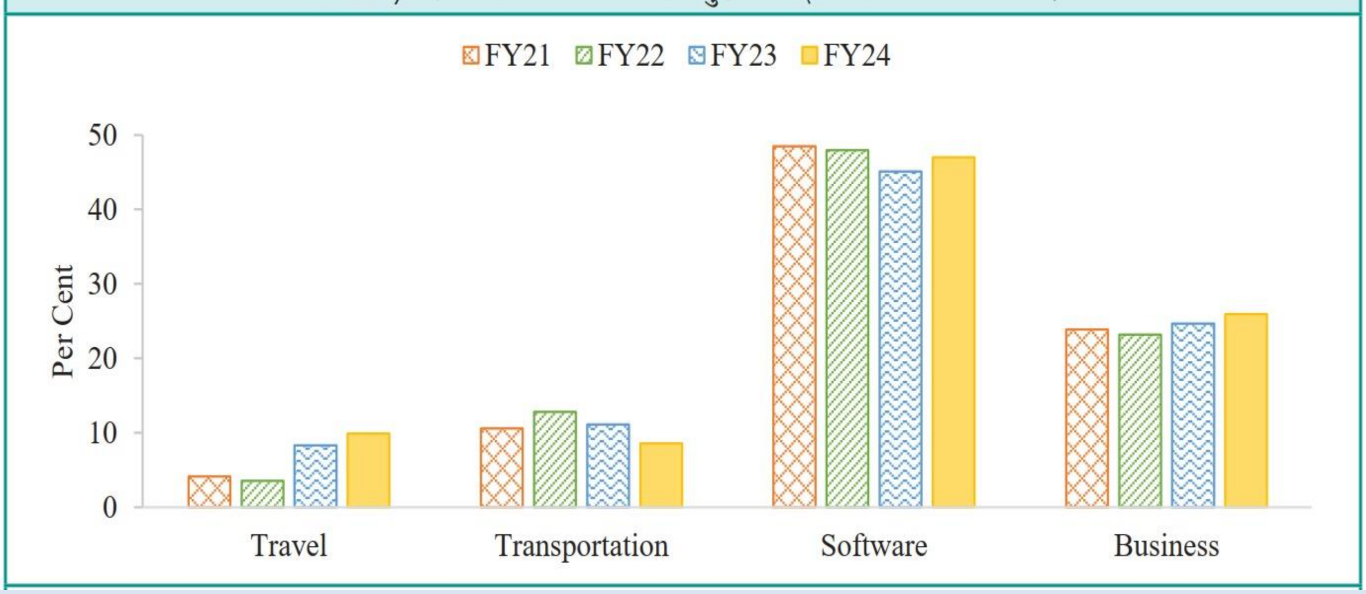

© Vision IAS

<table>
<tr><td>

चुनौतियां

- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) भारत से सेवा क्षेत्रक की निर्यात वृद्धि को धीमा कर सकता है।** इसलिए रोजगार सृजन के लिए पर्यटन क्षेत्र को बढ़ावा देने का महत्व और अधिक बढ़ जाता है।
- आवश्यक डिजिटल और उच्च तकनीकी कौशल वाले **वर्कर्स की उपलब्धता में कमी।**
- **ऋण प्राप्त करने में समस्या,** विशेष रूप से सेवा क्षेत्रक में काम करने वाले लघु और मध्यम उद्यमों के लिए मुश्किलें पैदा कर सकती है।
- सेवाओं के बढ़ते डिजिटलीकरण के साथ **डेटा प्राइवेसी और साइबर सुरक्षा** महत्वपूर्ण चिंताएं बन गई हैं।
- **वैश्विक आर्थिक स्थिति की अनिश्चितता और वस्तुओं की कीमतों में उतार-चढ़ाव** सेवा के लिए इनपुट लागत और मांग के लिए गंभीर चुनौतियां प्रस्तुत करते हैं।

</td><td>

शुरू की गई पहलें

- **कार्यबल को आवश्यक कौशल से लैस करने के लिए** स्किल इंडिया प्रोग्राम और राष्ट्रीय शिक्षा नीति जैसे उपायों के माध्यम से कौशल विकास पहल संचालित की जा रही है।
- GST सरलीकरण जैसे **विनियामक सुधार** और **रियल एस्टेट (विनियमन और विकास) अधिनियम** जैसी क्षेत्रक-विशिष्ट नीतियां अधिक अनुकूल कारोबारी माहौल को बढ़ावा दे रही हैं।

</td></tr>
<tr><td colspan="2">

आगे की राह

- **प्रौद्योगिकी को आत्मविश्वास के साथ अपनाने के लिए,** मजबूत सुरक्षा उपायों का पालन करना, निजता (प्राइवेसी) नियमों का अनुपालन करना और सुरक्षा प्रौद्योगिकियों में नवाचार को बढ़ावा देना आवश्यक है।
- **भारत के कौशल कार्यक्रमों को** ब्लॉकचेन, **AI, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), साइबर सुरक्षा, क्लाउड कंप्यूटिंग, बिग डेटा, ऑगमेंटेड रियलिटी (AR), वर्चुअल रियलिटी (VR), 3D प्रिंटिंग और वेब/ मोबाइल विकास** पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
- सार्वजनिक नीति को सरकारी और निजी क्षेत्रों के बीच सहयोग के साथ **पर्यटन को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।**
- **केरल के बैकवाटर उपयोग और नीदरलैंड के अंतर्देशीय जलमार्गों की जैसी रणनीतियों** को अपनाने से भारत की जल परिवहन प्रणाली को बेहतर किया जा सकता है, संधारणीय विकास का समर्थन किया जा सकता है और यातायात की भीड़-भाड़ को कम किया जा सकता है।

</td></tr>
</table>

सेवा क्षेत्रक गतिविधि के लिए वित्तपोषण के स्रोत

- **बैंक ऋण:** वित्त वर्ष 2024 में, **सेवा क्षेत्रक को ऋण प्राप्ति में वृद्धि हुई।** अप्रैल 2023 से हर महीने वार्षिक आधार पर वृद्धि दर 20% से अधिक रही।
- **विदेशी वित्तपोषण:** UNCTAD की **विश्व निवेश रिपोर्ट 2024 (WIR 2024)** के अनुसार, भारत अंतर्राष्ट्रीय परियोजना वित्तीय सौदों के रूप में निवेश प्राप्त करने वाला **दूसरा सबसे बड़ा देश है** और ग्रीनफील्ड परियोजना की घोषणाओं के मामले में **चौथा सबसे बड़ा होस्ट देश है।**
  - **प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (FDI): उच्च ब्याज दरों, भू-राजनीतिक संघर्षों और बढ़ते संरक्षणवाद के कारण** वित्त वर्ष 2024 में सेवा क्षेत्रक में **FDI इक्विटी इंफ्लो में गिरावट** दर्ज की गई।
  - **बाह्य वाणिज्यिक उधार (ECBs):** वित्त वर्ष 24 में कुल बाह्य वाणिज्यिक उधार (ECB) इंफ्लो में सेवा क्षेत्रक की **हिस्सेदारी 53%** थी।

सेवा उप-क्षेत्रकवार प्रदर्शन

अतिथि सत्कार (Hospitality) और पर्यटन

- **वर्तमान स्थिति**
  - **वैश्विक रैंकिंग:** विश्व आर्थिक मंच के 'यात्रा और पर्यटन विकास सूचकांक 2024 (Travel and Tourism Development Index 2024)' में भारत 39वें स्थान पर है।
  - **विदेशी मुद्रा आय:** 2021 की 1.38% से बढ़कर **2022 में 1.58%** हो गई।
- **मुख्य पहलें**
  - **प्रसाद/ PRASHAD योजना:** तीर्थयात्रा कायाकल्प और आध्यात्मिक विरासत संवर्धन अभियान।
  - **स्वदेश दर्शन 2.0:** यह एकीकृत पर्यटन स्थल विकास पर केंद्रित है।
  - **अतुल्य भारत पर्यटन सुविधा प्रदाता प्रमाणपत्र कार्यक्रम:** ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के माध्यम से कुशल पर्यटक सुविधा प्रदाताओं को प्रशिक्षित और तैयार करता है।

- **अन्य पहलें:** 11 वां अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन मार्ट, **भारत पर्व 2023,** ई-मार्केटप्लेस नेशनल इंटीग्रेटेड डेटाबेस ऑफ हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री (NIDHI/ निधि) पोर्टल तथा **साथी/ SAATHI** (सिस्टम फॉर असेसमेंट, अवेयरनेस, एंड ट्रेनिंग फॉर हॉस्पिटैलिटी इंडस्ट्री)।

रियल एस्टेट

- **वर्तमान स्थिति**
  - **GVA में योगदान:** पिछले दशक में रियल एस्टेट का **GVA में 7% से अधिक योगदान रहा है। वित्त वर्ष 2012 से वित्त वर्ष 2024 तक सकल घरेलू उत्पाद के प्रतिशत के रूप में आवास ऋण में वृद्धि हुई।**
  - **वित्तपोषण:** परंपरागत रूप से, बैंकों का होम लोन वितरण पर वर्चस्व रहा है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में **हाउसिंग फाइनेंस कंपनियों (HFCs)** ने भी **महत्वपूर्ण भूमिका निभाई** है।
- **विकास में योगदान देने वाले कारक:** तेजी से शहरीकरण, बढ़ती आय, एकल परिवारों में वृद्धि, बाजार में नई कंपनियों का प्रवेश, घर के स्वामित्व की इच्छा जो कोविड लॉकडाउन के दौरान और भी प्रबल हुई, डेवलपर्स और खरीदारों के लिए बेहतर वित्तीय विकल्प।
- **मुख्य पहलें**
  - **प्रधान मंत्री आवास योजना-शहरी (PMAY-U):** यह क्रेडिट लिंक्ड सब्सिडी योजना है। ब्याज में छूट मिलने के कारण इस योजना की अधिक मांग रही है।
  - **रियल एस्टेट (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016 (RERA):** यह पारदर्शिता, जवाबदेही और वित्तीय अनुशासन को बढ़ाता है।
  - **भूमि रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण:** यह लेनदेन की पारदर्शिता में सुधार करता है और स्वामित्व संबंधी विवादों को कम करता है।
  - **आवासीय बंधक-समर्थित सिक्योरिटीज (RMBS):** यह नेशनल हाउसिंग बैंक (NHB) की योजना है। इसका उद्देश्य फंडिंग की कमियों को दूर करना है।
  - **निवेश कोष:** स्पेशल विंडो फॉर अफोर्डेबल एंड मिड-इनकम हाउसिंग (SWAMIH/स्वामिह) निवेश कोष, को-लेंडिंग मॉडल और शहरी बुनियादी ढांचा विकास कोष।
  - **नीतिगत सुधार:** GST और इन्सॉल्वेंसी एंड बैंकरप्सी कोड (IBC)।

सूचना प्रौद्योगिकी सेवाएं

- **वर्तमान स्थिति:**
  - **विकास दर:** भारत की जीडीपी में सूचना और कंप्यूटर से संबंधित सेवाओं में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जो वित्त वर्ष **2013 के 3.2% से बढ़कर वित्त वर्ष 2023 में 5.9%** हो गई। कोविड महामारी के बावजूद, इन सेवाओं ने **वित्त वर्ष 2021 में 10.4% की वृद्धि दर** हासिल की थी।
  - **भारत का तकनीकी स्टार्ट-अप इकोसिस्टम**
    - संयुक्त राज्य अमेरिका और यूनाइटेड किंगडम को पीछे छोड़कर **भारत, विश्व में तीसरे स्थान** पर है।
    - **दुनिया की 16% AI प्रतिभा** धारक भारत एक प्रमुख नवाचार केंद्र है।
- **विकास में योगदान देने वाले कारक**
  - **सॉफ्टवेयर एज अ सर्विस (SaaS) स्टार्ट-अप** की बढ़ती मांग।
- **प्रमुख पहलें**
  - **ग्लोबल पार्टनरशिप ऑन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (GPAI):** यह एक **अंतरराष्ट्रीय पहल** है। यह पहल **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जिम्मेदार विकास और उपयोग को इस तरीके से निर्देशित करने के लिए स्थापित** की गई है, जो मानव अधिकारों और इसके सदस्यों के साझा लोकतांत्रिक मूल्यों का सम्मान करती हो।
    - **भारत इसका संस्थापक सदस्य है।**
  - **ड्राफ्ट नेशनल डीप टेक स्टार्ट-अप पॉलिसी (NDTSP)** डीप टेक स्टार्टअप की चुनौतियों से निपटने के लिए एक व्यापक फ्रेमवर्क है।

© Vision IAS

- स्टार्ट-अप के प्रारंभिक चरण, सीड चरण और विकास चरणों का समर्थन करने के लिए स्टार्ट-अप्स के लिए **10,000 करोड़ रुपये का 'फंड ऑफ फंड्स'**।
- **ड्रोन शक्ति कार्यक्रम** तथा इलेक्ट्रिक वाहनों (EV) से संबंधित पूंजीगत वस्तुओं और मशीनरी के आयात पर **सीमा शुल्क में छूट।**
- **'फ्यूचर स्किल्स प्राइम'**: यह इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय (MeitY) और NASSCOM की पहल है। इसका उद्देश्य आईटी पेशेवरों को उनकी आकांक्षाओं और योग्यता के अनुरूप कौशल में निरंतर वृद्धि की सुविधा प्रदान करना है।
- **प्रधान मंत्री कौशल विकास 4.0 (PMKVY 4.0):** इसका उद्देश्य इंडस्ट्री 4.0, AI, रोबोटिक्स, मेक्ट्रोनिक्स, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और ड्रोन जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों में प्रशिक्षण प्रदान करना है।
- **AI रिसर्च एनालिटिक्स एंड नॉलेज डिसेमिनेशन प्लेटफॉर्म (AIRAWAT):** यह AI सुपर कंप्यूटर है, जिसे C-DAC पुणे में स्थापित किया गया है। इसने जर्मनी में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सुपरकंप्यूटिंग सम्मेलन 2023 में घोषित शीर्ष **500 वैश्विक सुपरकंप्यूटिंग सूची में 75 वां स्थान** हासिल किया है।
- **डिजिटल कौशल कार्यक्रम:** भारत को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में बदलने के लिए 2015 में शुरू किया गया।
- **GI क्लाउड - 'मेघराज':** इस पहल का उद्देश्य देश में क्लाउड आधारित इकोसिस्टम के प्रसार को सुनिश्चित करने के लिए केंद्र और राज्यों/ केंद्रशासित प्रदेशों के सभी विभागों/ मंत्रालयों को क्लाउड पर सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) सेवाएं प्रदान करना है।

दूरसंचार

- **वर्तमान स्थिति:** टेली घनत्व 2014 में 75.2% से बढ़कर 2024 में 85.7% हो गया। मार्च 2024 में इंटरनेट घनत्व 68.2% तक पहुंच गया। भारत, दुनिया में सबसे तेजी से अपनाने वाले 5G नेटवर्क में से एक है।
- **विकास में योगदान देने वाले कारक:** डेटा लागत में अधिक गिरावट होना तथा प्रति सब्सक्राइबर औसत वायरलेस डेटा उपयोग में वृद्धि।
- **प्रमुख पहलें:**
  - **5G टेस्ट बेड:** इसे 2022 में लॉन्च किया गया। यह शिक्षा जगत और उद्योग में अनुसंधान एवं विकास के लिए परीक्षण सुविधाएं प्रदान करता है।
  - **भारत 5G पोर्टल:** यह दूरसंचार क्षेत्र में नवाचार, सहयोग और ज्ञान-साझा को बढ़ाने का समर्थन करता है।
  - **भारत 6G विजन:** इसे मार्च 2023 में लॉन्च किया गया। इसका लक्ष्य 6G प्रौद्योगिकियों को विकसित और उपयोग करना है।
  - **भारत 6G मिशन**: 6G के चरण-वार उद्देश्यों को परिभाषित करने के लिए अपेक्स परिषद की स्थापना की गई।
  - **संरचनात्मक और प्रक्रिया संबंधी सुधार:**
    - **समायोजित सकल राजस्व (Adjusted Gross Revenue: AGR)** को तार्किक आधार पर परिभाषित किया गया।
    - **स्पेक्ट्रम-संबंधित सुधार:** इनमें स्पेक्ट्रम साझा करना, व्यापार और यूजर शुल्क को तर्कसंगत बनाना, आदि शामिल हैं।
    - सुरक्षा उपाय सुनिश्चित करते हुए स्वचालित मार्ग के तहत दूरसंचार क्षेत्रक में **100% प्रत्यक्ष विदेशी निवेश** की अनुमति दी गई है।
    - **दूरसंचार अधिनियम 2023:** यह स्पेक्ट्रम असाइनमेंट सहित दूरसंचार कानूनों को व्यवस्थित करता है।
    - दूरसंचार क्षेत्र में अनुसंधान एवं विकास के वित्तपोषण के लिए **USOF** (यूनिवर्सल सर्विसेज ऑब्लिगेशन फंड) **से वार्षिक संग्रह का 5% आवंटन।**
    - **दूरसंचार प्रौद्योगिकी विकास कोष:** इसे स्टार्टअप, MSMEs, शिक्षा और उद्योग की महत्वपूर्ण भागीदारी के साथ 2022 में स्थापित किया गया।

ई-कॉमर्स

वर्तमान स्थिति:

- **विकास दर:** 2030 तक भारतीय ई-कॉमर्स उद्योग के **350 बिलियन अमेरिकी डॉलर** को पार करने की उम्मीद है।
- **अधिकतर असंगठित:** वर्तमान में, रिटेल मार्केट काफी हद तक असंगठित है। ई-कॉमर्स सहित **मॉडर्न रिटेल** के **अगले 3-5 वर्षों में कुल रिटेल में 30-35% तक भागीदारी होने** का अनुमान है।
- **विकास में योगदान देने वाले कारक:**
  - तकनीकी प्रगति और नए व्यवसाय मॉडल।
  - डिजिटल इंडिया, UPI, एक जिला एक उत्पाद (ODOP), ओपन नेटवर्क फॉर डिजिटल कॉमर्स (ONDC) जैसी सरकारी पहलें।
  - नई **विदेश व्यापार नीति (FTP)**।
  - **FDI सीमा** में पहले की अपेक्षा ढील दी गई।
- **प्रमुख पहलें**
  - **उपभोक्ता संरक्षण (ई-कॉमर्स) नियम, 2020** उपभोक्ताओं को ई-कॉमर्स में अनुचित व्यापार गतिविधियों से बचाता है।
  - **सूचना प्रौद्योगिकी (मध्यवर्ती दिशानिर्देश और डिजिटल मीडिया आचार संहिता) नियम, 2021** के तहत डिजिटल प्लेटफॉर्म्स की जवाबदेही तय की गई है।
  - **डिजिटल व्यक्तिगत डेटा संरक्षण अधिनियम, 2023** एक व्यापक डेटा सुरक्षा फ्रेमवर्क प्रदान करता है। यह उपभोक्ताओं के डेटा को और अधिक सुरक्षित रखता है।

बजट में क्या कहा गया है?

- **रोजगार:** EPFO में नामांकन के आधार पर 'रोजगार से जुड़े प्रोत्साहन' की घोषणा की गई है।
- **कौशल:** 1000 नए ITI तथा छात्रों के लिए इंटर्नशिप प्रदान करने वाली योजना की घोषणा की गई है।
- **पर्यटन: विष्णुपद मंदिर कॉरिडोर, महाबोधि मंदिर कॉरिडोर और राजगीर** का व्यापक विकास।

शब्दावली

शब्द	अर्थ
ग्रीनफील्ड	ऐसी परियोजना, जिसके लिए पहले से कोई अवसंरचना, निर्माण या विकास मौजूद नहीं होती है तथा ऐसी परियोजना नई होती है और शुरुआत से शुरू की जाती है।
SaaS	सॉफ्टवेयर एज अ सर्विस: यह एक सॉफ्टवेयर लाइसेंसिंग और डिलीवरी मॉडल है जिसमें सब्सक्रिप्शन के आधार पर सॉफ्टवेयर का लाइसेंस दिया जाता है और उसे केंद्रीकृत रूप होस्ट किया जाता है।
AGR	समायोजित सकल राजस्व: दूरसंचार विभाग (DoT) द्वारा दूरसंचार ऑपरेटरों से लिया जाने वाला उपयोग और लाइसेंसिंग शुल्क है।
RMBS	आवासीय बंधक-समर्थित सिक्योरिटीज (Residential Mortgage-Backed Securities): एक प्रकार का बंधक (गिरवी)-आधारित ऋण दायित्व है, आवासीय ऋण से नकदी प्राप्त होती है।

अध्याय 11: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. रियल एस्टेट (विनियमन और विकास) अधिनियम, 2016 (RERA) का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(a) रियल एस्टेट में विदेशी निवेश को बढ़ाना
(b) आवास सब्सिडी प्रदान करना
(c) आवासन क्षेत्रक में पारदर्शिता और जवाबदेही बढ़ाना
(d) रियल एस्टेट उद्योग का राष्ट्रीयकरण करना

2. आवासीय बंधक-समर्थित सिक्योरिटीज (RMBS) का लक्ष्य रियल एस्टेट क्षेत्रक के लिए अतिरिक्त फंडिंग स्रोत प्रदान करके इस क्षेत्रक को लाभ पहुंचाना है। इसे लॉन्च किया गया है:
(a) राष्ट्रीय आवास बैंक (NHB) द्वारा
(b) भारतीय लघु उद्योग विकास बैंक (SIDBI) द्वारा
(c) राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (NABARD) द्वारा
(d) उपर्युक्त में से कोई नहीं

3. भारत के सेवा क्षेत्रक के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह कुल GVA में आधे से अधिक का योगदान देता है।
2. इसने पिछले दस वर्षों में प्रत्येक वर्ष में 6% से अधिक की वृद्धि दर दर्ज की है।
उपर्युक्त में से कौन सा/ से कथन सही है/ हैं?
(a) केवल 1
(b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों
(d) न तो 1, न ही 2

© Vision IAS

4. विश्व निवेश रिपोर्ट किसके द्वारा जारी की जाती है?
   (a) विश्व बैंक
   (b) अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष
   (c) विश्व आर्थिक मंच
   (d) अंकटाड

5. भारत के तकनीकी स्टार्ट-अप इकोसिस्टम के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
   (a) यह वैश्विक स्तर पर तीसरे स्थान पर है।
   (b) दुनिया की 16% AI प्रतिभा भारत में है।
   (c) 10,000 करोड़ रुपये का फंड ऑफ फंड्स शुरुआती चरण वाले स्टार्टअप का समर्थन करेगा।
   (d) उपर्युक्त सभी

प्रश्न

1. भारत के सेवा क्षेत्रक की वर्तमान स्थिति पर चर्चा करते हुए अर्थव्यवस्था और वैश्विक निर्यात में इसके योगदान पर प्रकाश डालिए। सेवा क्षेत्रक के सामने आने वाली चुनौतियों का परीक्षण कीजिए और उन्हें दूर करने के उपाय सुझाइए। (150 शब्द)
2. भारत के सेवा क्षेत्रक को समर्थन देने वाले अलग-अलग वित्तपोषण स्रोतों की भूमिका का विश्लेषण कीजिए। हालिया वैश्विक आर्थिक स्थितियों ने इन वित्तपोषण स्रोतों को कैसे प्रभावित किया है? (250 शब्द)

अध्याय 12: अवसंरचना: संभावित विकास को प्रोत्साहन (Infrastructure: Lifting Potential Growth)

परिचय

भारत की नीति रणनीति (पॉलिसी स्ट्रैटेजी) का लक्ष्य **भौतिक, सामाजिक, वित्तीय और डिजिटल क्षेत्रकों** में लचीले, विश्व स्तरीय बुनियादी ढांचे के विकास पर ध्यान केंद्रित करके 2047 तक **विकसित भारत** बनना है। केंद्र सरकार ने **महामारी से प्रेरित आर्थिक मंदी से निपटने के लिए** मुख्य प्रतिक्रिया के रूप में पूंजीगत खर्च को बढ़ाया है।

अध्याय का प्रीकैप

वर्तमान स्थिति

- बुनियादी ढांचे में भारत का निवेश **बड़े पैमाने पर सार्वजनिक क्षेत्रक द्वारा वित्त पोषित किया गया था।** वित्त वर्ष **2019 और 2023 के बीच, केंद्र और राज्य सरकारों ने क्रमशः कुल निवेश का 49% और 29% योगदान दिया**, जबकि निजी क्षेत्रक ने 22% योगदान दिया।

प्रमुख क्षेत्र

- **सड़क परिवहन:** पिछले दस वर्षों में **राष्ट्रीय राजमार्गों की संख्या 1.6 गुना बढ़ गयी है।**
- **रेल परिवहन: भारतीय रेलवे दुनिया का चौथा सबसे बड़ा नेटवर्क** है।
- **जल परिवहन: वर्ल्ड बैंक लॉजिस्टिक्स परफ़ॉर्मेंस सूचकांक, 2023 में** अंतर्राष्ट्रीय शिपमेंट श्रेणी में भारत की रैंकिंग 22वीं हो गई है, जो 2014 में 44वीं थी।
- **नागरिक उड्डयन:** भारत **वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ते विमानन बाजारों में से एक है।** सरकार ने **वित्त वर्ष 2020 से वित्त वर्ष 2025 की** अवधि के लिए **26,000 करोड़ रुपये से अधिक की पूंजीगत व्यय की योजना बनाई है।**
- **विद्युत क्षेत्रक:** भारत में विद्युत पारेषण **विश्व में सबसे बड़े एकीकृत विद्युत ग्रिडों में से एक के रूप में उभर रहा है।**
- **नवीकरणीय क्षेत्रक: भारत का** लक्ष्य **2030 तक गैर-जीवाश्म स्रोतों से 500 गीगा वाट (GW) स्थापित विद्युत क्षमता हासिल करना है।**

चुनौतियां

- **भूमि संबंधी:** भूमि अधिग्रहण, भूमि मंजूरी में देरी और डिजिटल भूमि अभिलेखों को दर्ज करने की धीमी गति।
- **कौशल की मांग:** बुनियादी ढांचा परियोजना विकास, व्यवहार्यता मूल्यांकन, वित्तीय लाभ विश्लेषण आदि के विभिन्न पहलुओं में विशेष तकनीकी कुशल कर्मियों की कमी।
- **अग्रलिखित मुद्दों के कारण निजी भागीदारी कम है:** भारी पूंजी निवेश और लंबी चुकौती अवधि, जोखिम आकलन से संबंधित परियोजना संरचना संबंधी मुद्दे, विवाद समाधान के लिए अपर्याप्त व्यवस्था आदि।
- **बुनियादी ढांचे में वित्तीय प्रवाह के एकत्रीकरण का अभाव:** वित्तपोषण स्रोतों में विभिन्न रिपोर्टिंग फ़ॉर्मैट्स और क्षेत्रीय विभाजन के कारण विस्तृत जानकारी के संबंध में विसंगतियां उत्पन्न होती हैं।
- **देश में बुनियादी ढांचा परियोजनाओं की सूची देने वाला कोई एकल स्रोत नहीं है।**
- **जलवायु और पर्यावरणीय स्थिरता:** विमानन क्षेत्रक के लिए अंतर्राष्ट्रीय विमानन हेतु कार्बन ऑफसेटिंग और न्यूनीकरण योजना (CORSIA) का अनुपालन भी एक चुनौती है।

महत्वपूर्ण पहलें

- **राष्ट्रीय अवसंरचना पाइपलाइन (NIP) पोर्टल:** यह मंत्रालयों और राज्यों/ केंद्र शासित प्रदेशों को सभी प्रमुख अवसंरचना परियोजनाओं को एक ही स्थान पर एकत्रित करने का अवसर प्रदान करता है।
- **परियोजना निगरानी समूह (PMG):** यह 500 करोड़ रुपये और उससे अधिक की निवेश वाली परियोजनाओं की समस्याओं और नियामक बाधाओं के शीघ्र समाधान के लिए एक संस्थागत तंत्र है।
- **पीएम गतिशक्ति राष्ट्रीय मास्टर प्लान (PMGS-NMP):** संबंधित मंत्रालयों के बीच सहयोग के माध्यम से मल्टीमॉडल बुनियादी ढांचे की एकीकृत योजना को सुविधाजनक बनाने के लिए सरकार का एक समग्र दृष्टिकोण अपनाया गया है।
- **राष्ट्रीय लॉजिस्टिक्स नीति (NLP):** यह PMGSNMP के पूरक के रूप में 2022 में शुरू की गई थी। इसका उद्देश्य सर्वोत्तम श्रेणी की प्रौद्योगिकी और प्रक्रियाओं का लाभ उठाकर एक एकीकृत, कुशल, टिकाऊ और लागत प्रभावी लॉजिस्टिक्स नेटवर्क के माध्यम से व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना है।

आगे की राह

- **निजी क्षेत्रक के वित्तपोषण को बढ़ाना:** केंद्र सरकार से नीतिगत और संस्थागत समर्थन आवश्यक होगा, जबकि राज्य और स्थानीय सरकारें निम्नलिखित उपायों के ज़रिए संसाधन जुटाने में सुविधा प्रदान कर सकती हैं:
    - नगरपालिका परियोजनाओं के लिए संयुक्त वित्तपोषण तंत्र,

- विशेष नगरपालिका मध्यस्थ का प्रावधान,
- परिसंपत्ति पुनर्चक्रण कार्यक्रम,
- कर वृद्धि वित्तपोषण और
- भूमि बिक्री और विकास संबंधी अधिकार।

- **डेटा कैप्चर और रिपोर्टिंग:** बुनियादी ढांचे के विकास और वित्तीय प्रवाह डेटा को एकल एक्सेस प्वाइंट के तहत समेकित करना, HML (हार्मोनाइज्ड लिस्ट) वर्गीकरण के अनुसार नियमित रूप से अपडेट करना।

अवसंरचना वित्तपोषण: सार्वजनिक व्यय को बढ़ावा देना

- **सरकार के पूंजीगत व्यय में वृद्धि: से केंद्र सरकार का** पूंजीगत व्यय वित्त वर्ष 2021 से वित्त वर्ष 2024 (PA) तक **2.2 गुना बढ़ गया, जबकि** इसी अवधि के दौरान **राज्य सरकारों का पूंजीगत व्यय 2.1 गुना बढ़ गया।**
- **केंद्र सरकार के पूंजीगत व्यय के प्राथमिक घटक**
  - **लाइन विभाग:** विभिन्न सरकारी विभागों द्वारा प्रत्यक्ष व्यय।
  - **सकल बजटीय सहायता (GBS): सेंट्रल पब्लिक सेक्टर एंटरप्राइजेज (CPSEs) को** प्रदान की गई वित्तीय सहायता।
    - GBS के अतिरिक्त, CPSEs के समग्र निवेश योग्य संसाधनों में स्वयं CPSEs द्वारा जुटाए गए संसाधन भी शामिल होते हैं।

चार्ट XII.1: केंद्र सरकार के पूंजीगत व्यय और सीपीएसई और राज्य सरकारों के लिए इसकी सहायता में काफी विस्तार हुआ है

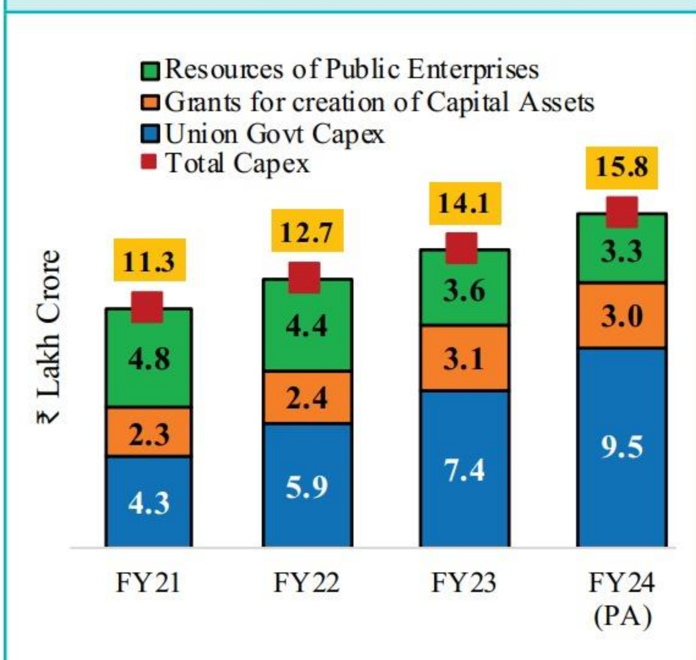

चार्ट XII.2: राज्य सरकारों के संयुक्त पूंजीगत व्यय* में भी जोरदार विस्तार होता है

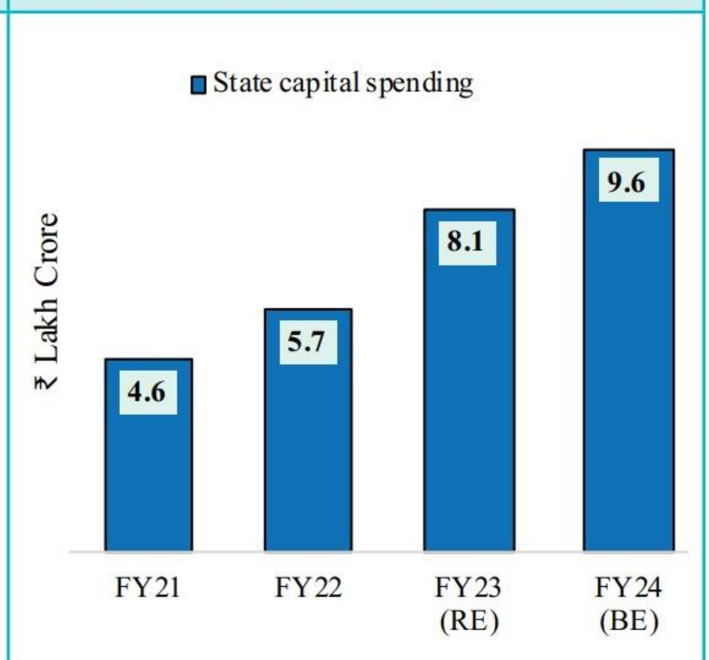

वित्तपोषण के गैर-सरकारी स्रोत

- **बैंक ऋण:** मार्च 2023 से मार्च 2024 तक बुनियादी ढांचा क्षेत्रों को बैंक ऋण लगभग ₹79,000 करोड़ था, जो रेलवे या सड़कों के लिए केंद्र सरकार के GBS से काफी कम है।

- **ECB का सकल अंतर्वाह:** बुनियादी ढांचा क्षेत्रों के लिए ECB वित्त वर्ष 2020 से वित्त वर्ष 2023 के दौरान औसतन 5.91 बिलियन अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वित्त वर्ष 2024 में 9.05 बिलियन अमेरिकी डॉलर हो गया।
- **ऋण और इक्विटी: वित्त वर्ष 24** में, बुनियादी ढांचा क्षेत्रों ने पूंजी बाजार में ऋण और इक्विटी के माध्यम से **₹1,00,000 करोड़ से अधिक जुटाए।**
    - 2019 से 2024 तक, REITs (रियल एस्टेट इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स) ने ₹18,840 करोड़ जुटाए, जबकि InvITs (इंफ्रास्ट्रक्चर इन्वेस्टमेंट ट्रस्ट्स) ने ₹1,11,294 करोड़ जुटाए हैं।
    - **वित्त वर्ष 24** के दौरान बुनियादी ढांचा क्षेत्रों में **FDI इक्विटी अंतर्वाह ₹94.1 हजार करोड़** था।

चार्ट XII.9: वित्त वर्ष 24 के दौरान इंफ्रास्ट्रक्चर सेक्टर्स में एफडीआई इक्विटी इनफ्लो

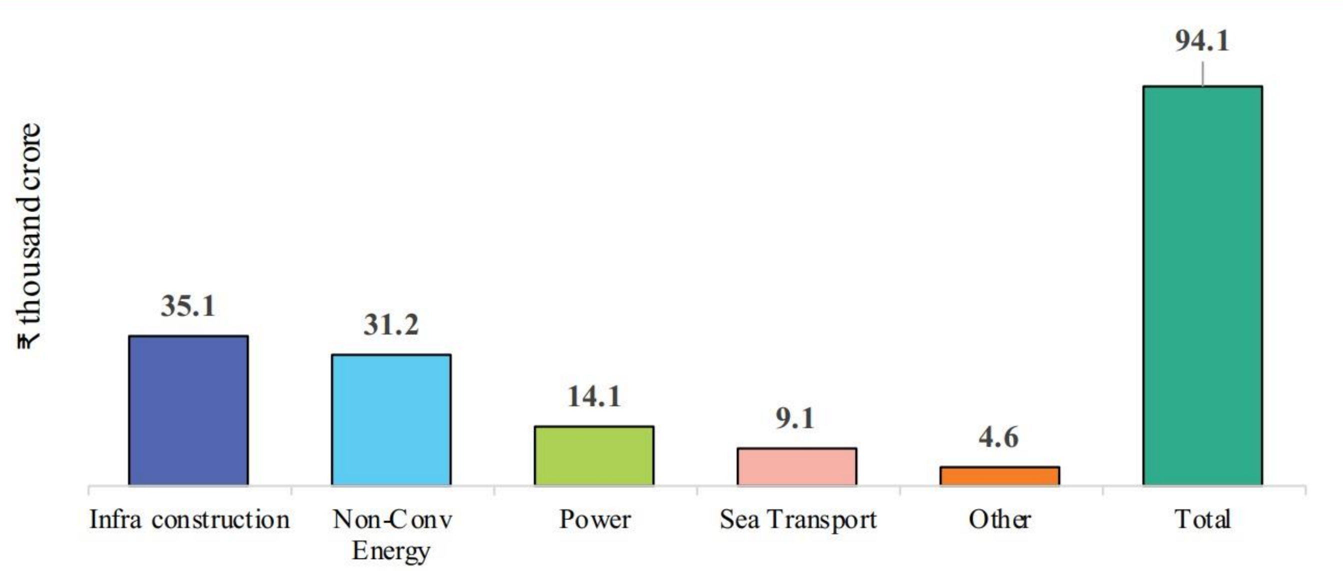

सार्वजनिक निजी भागीदारी (PPP) को बढ़ावा देने के लिए प्रमुख तंत्र

- **सार्वजनिक निजी भागीदारी मूल्यांकन समिति (PPPAC):** केंद्रीय क्षेत्रक की PPP परियोजनाओं के मूल्यांकन के लिए शीर्ष निकाय।
- **व्यवहार्यता अंतर वित्तपोषण (VGF):** वित्तीय रूप से अव्यवहार्य लेकिन सामाजिक/ आर्थिक रूप से वांछनीय PPP परियोजनाओं को सहायता।
    - वित्त वर्ष 15 से वित्त वर्ष 24 तक कुल ₹5,813.6 करोड़ (केंद्र सरकार और राज्य सरकार दोनों का हिस्सा) का VGF अनुमोदन।
- **भारत अवसंरचना परियोजना विकास निधि योजना:** PPP परियोजनाओं के परियोजना विकास के लिए वित्तीय सहायता।
    - वित्त वर्ष 23 से वित्त वर्ष 25 तक तीन वर्षों के लिए ₹150 करोड़ के कुल परिव्यय के साथ नवंबर 2022 में अधिसूचित किया गया।
    - **28 प्रस्तावों को मंजूरी दी गई है।**
- **राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन (NMP): 2021 में घोषित, NMP का उद्देश्य सरकारी प्रमुख परिसंपत्तियों का मुद्रीकरण करके नए बुनियादी ढांचे के लिए निजी क्षेत्र के निवेश को आकर्षित करना है। वित्त वर्ष 22 से वित्त वर्ष 25 तक** अनुमानित मुद्रीकरण **क्षमता ₹6.0 लाख करोड़ है।**
    - **2021-22 से 2022-23:** ₹2.3 लाख करोड़ मूल्य के लेनदेन पूरे हुए।
    - **2023-24:** ₹1.51 लाख करोड़ मूल्य के लेनदेन पूरे हुए, जो 2021-22 की तुलना में 1.55 गुना अधिक है।

अवसंरचना क्षेत्रक में विकास

भौतिक कनेक्टिविटी अवसंरचना

सड़क परिवहन

- **वर्तमान स्थिति:**
    - पिछले दस वर्षों में **राष्ट्रीय राजमार्गों की संख्या 1.6 गुना बढ़ गयी है।**

- भारतमाला **परियोजना के तहत** नेटवर्क का विस्तार किया गया, जिससे 2014 से 2024 तक **हाई-स्पीड कॉरिडोर की लंबाई 12 गुना और 4-लेन सड़कों की लंबाई 2.6 गुना बढ़ गई।**

- **महत्वपूर्ण पहलें**
  - **प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY)**
    - **PMGSY-I:** यह सभी मौसमों के लिए ग्रामीण कनेक्टिविटी हेतु 2000 में शुरू की गई। लक्षित 99.6% बस्तियों को कनेक्टिविटी मिल गई है।
    - **PMGSY-II:** इसे 50,000 किलोमीटर चयनित मार्गों और प्रमुख ग्रामीण संपर्कों (MRLs) को उन्नत करने के लिए 2013 में शुरू किया गया था।
    - **PMGSY-III:** इसे कृषि बाजारों, उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों और अस्पतालों को जोड़ने हेतु 1,25,000 कि.मी. के लिए 2019 में शुरू किया गया।
  - **राष्ट्रीय औद्योगिक गलियारा कार्यक्रम:** सरकार भविष्य हेतु तैयार, टिकाऊ शहरों के लिए मल्टी-मॉडल कनेक्टिविटी और "प्लग एंड प्ले" बुनियादी ढांचे की पेशकश करने हेतु 11 औद्योगिक गलियारे विकसित कर रही है।
  - **पर्वतमाला परियोजना:** अंतिम छोर तक धार्मिक और पर्यटन संपर्क को बढ़ावा देने के लिए छह रोपवे परियोजनाएं आवंटित की गई हैं।
  - **संधारणीय कच्चे माल:** राजमार्ग विकास में अब संधारणीय सामग्रियों और आधुनिक निर्माण तकनीकों का उपयोग किया जाता है। इसमें कुछ सड़कों के लिए लैंडफिल सामग्रियों का उपयोग और NH को बेहतर बनाने में बिटुमेन और डामर का पुनर्चक्रण शामिल है।
  - **डिजिटलीकरण:** टोल डिजिटलीकरण के कारण 2014 से अब तक **टोल प्लाजा पर प्रतीक्षा समय लगभग 16 गुना घटकर 47 सेकंड हो गया है।**
    - **नंबर प्लेट की स्वचालित तरीके से पहचान** और **वैश्विक नेविगेशन सैटेलाइट प्रणाली** के साथ फ्री-फ्लो टोलिंग भी शुरू की गई है।

रेल परिवहन

- **वर्तमान स्थिति:**
  - **भारतीय रेलवे** 68,584 कि.मी. लंबे मार्ग और 12.54 लाख कर्मचारियों के साथ, एकल प्रबंधन के तहत **दुनिया का चौथा सबसे बड़ा नेटवर्क है।**
  - **पिछले 5 वर्षों में रेलवे पर पूंजीगत व्यय में 77% की वृद्धि हुई है,** जो वित्त वर्ष 24 में 2.62 लाख करोड़ रुपये तक पहुंच गया है, जिसमें नई लाइनों, गेज परिवर्तन और पटरियों के दोहरीकरण पर ध्यान केंद्रित किया गया है।
- **रेलवे संवर्द्धन के लिए पहलें**
  - **मिशन 100 प्रतिशत विद्युतीकरण कार्यक्रम:** भारतीय रेलवे का 96.4% विद्युतीकरण हो चुका है।
  - **अमृत भारत स्टेशन योजना:** स्टेशनों के निरंतर विकास के लिए 2023 में शुरू की गई। अब तक 1,324 स्टेशनों को उन्नयन के लिए चिन्हित किया गया है।
  - **मुंबई-अहमदाबाद हाई स्पीड रेल (MAHSR) परियोजना:** 508 किलोमीटर की परियोजना के तहत भूमि अधिग्रहण और सिविल कंडक्ट अवार्ड का कार्य पूरा हो चुका है। यह **जापान सरकार के सहयोग से क्रियान्वित** की जा रही है।
  - **समर्पित माल ढुलाई गलियारे (DFCs):** पूर्वी और पश्चिमी DFCs कार्यान्वयनाधीन हैं, वित्त वर्ष 24 के अंत तक कुल मार्ग लंबाई का 96.1% पूरा हो जाएगा।
  - **गतिशक्ति मल्टी-मॉडल कार्गो टर्मिनल (GCT):** उद्योग की मांग और कार्गो यातायात की क्षमता के आधार पर, रेलवे और गैर-रेलवे भूमि पर निजी भागीदारों द्वारा विकसित किया जा रहा है।
  - **विद्युत/ इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग प्रणालियाँ:** इनका उपयोग यांत्रिक सिग्नलिंग के स्थान पर किया जा रहा है।
    - इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (EI) प्रणाली, स्वचालित ट्रेन सुरक्षा (ATP) प्रणाली के रूप में कवच तथा स्वचालित ब्लॉक सिग्नलिंग (ABS) का उपयोग किया जा रहा है।

 © Vision IAS

जल परिवहन

- **वर्तमान स्थिति:**
  - **विश्व बैंक लॉजिस्टिक्स प्रदर्शन सूचकांक 2023 में** अंतर्राष्ट्रीय शिपमेंट श्रेणी में भारत की रैंकिंग 22वीं हो गई है, जो 2014 में 44वीं थी।
  - बंदरगाहों, शिपिंग और जलमार्गों के लिए केंद्रीय **पूंजीगत व्यय में 27% की वृद्धि हुई।**
- **महत्वपूर्ण पहलें**
  - **द्वीपों का विकास: मैरीटाइम इंडिया विजन 2030** के तहत**, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और लक्षद्वीप द्वीप समूह** को पर्यटन और अन्य पहलों के लिए विकसित करने की योजना बनाई गई है।
  - **सागरमाला कार्यक्रम:** 2015 में शुरू किए गए इस कार्यक्रम के तहत **बंदरगाह आधुनिकीकरण और नए विकास के लिए 5.8 लाख करोड़ रुपये की लागत की कुल 839 परियोजनाएं शुरू की गई हैं।**
    - पांच फोकस क्षेत्रों में कनेक्टिविटी बढ़ाना, बंदरगाह आधारित औद्योगिकीकरण, तटीय सामुदायिक विकास और तटीय शिपिंग तथा अंतर्देशीय जल परिवहन शामिल है।
  - **प्रमुख बंदरगाह प्राधिकरण अधिनियम, 2021: विकेंद्रीकृत तरीके से निर्णय लेने,** व्यावसायिकता और PPP मॉडल पर ध्यान केंद्रित करने से प्रमुख बंदरगाहों की दक्षता में वृद्धि हुई है और प्रशासन में सुधार हुआ है।
  - **राष्ट्रीय समुद्री विरासत परिसर:** यह समुद्री कलाकृतियों और भारत के समृद्ध समुद्री इतिहास के विशाल संग्रह को प्रदर्शित करने के लिए **लोथल** में बनाया जा रहा है।
  - **वधावन में प्रमुख बंदरगाह:** मंत्रिमंडल ने महाराष्ट्र के वधावन में **सभी मौसमों के अनुकूल ग्रीनफील्ड डीप ड्राफ्ट प्रमुख बंदरगाह के विकास को मंजूरी दे दी है।**
  - **जहाज निर्माण, मरम्मत और पुनर्चक्रण:**
    - **जहाज निर्माण वित्तीय सहायता नीति योजना** को वित्त वर्ष 2017 से वित्त वर्ष 2025-2026 तक हस्ताक्षरित जहाज निर्माण अनुबंधों के लिए भारतीय शिपयार्डों को वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु शुरू किया गया था।
    - **जहाज पुनर्चक्रण अधिनियम, 2019 और इसके तहत नियम: यह हांगकांग अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन** के अनुरूप सुरक्षित और पर्यावरण अनुकूल जहाज पुनर्चक्रण के लिए अंतर्राष्ट्रीय मानक निर्धारित करता है।
      - यह **नौवहन महानिदेशालय को** जहाज पुनर्चक्रण के लिए राष्ट्रीय प्राधिकरण नामित करता है, जो सभी संबंधित गतिविधियों की देखरेख के लिए जिम्मेदार होगा।
  - **हरित सागर:** 2023 में ग्रीन पोर्ट दिशानिर्देश जारी किए गए हैं जिसके तहत चार प्रमुख बंदरगाह पहले से ही हैं।

नागरिक उड्डयन

- **वर्तमान स्थिति:**
  - भारत **वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ते विमानन बाजारों में से एक है।**
  - सरकार ने अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुरूप हवाई अड्डों के विकास, उन्नयन और आधुनिकीकरण के लिए **वित्त वर्ष 20 से वित्त वर्ष 25 की** अवधि के लिए **26,000 करोड़ रुपये से अधिक की पूंजीगत व्यय योजना बनाई है।**
- **पहलें:**
  - **हवाई अड्डा**
    - **उड़े देश का आम नागरिक (उड़ान):** पिछले सात वर्षों में, 85 असेवित और अल्पसेवित हवाई अड्डों को जोड़ने वाले 579 RCS मार्गों को शुरू किया गया है।
    - **21 ग्रीनफील्ड हवाई अड्डों** को **सैद्धांतिक मंजूरी** दी गई, जिनमें से **12 हवाई अड्डे चालू हो चुके हैं।**

- ड्रोन: सरकार ने **2021 में उदारीकृत ड्रोन नियम पेश किए। अन्य उपायों में, ड्रोन हवाई क्षेत्र के नक्शे प्रकाशित करना, PLI योजना को लागू करना** और **ड्रोन प्रमाणन योजना शुरू करना शामिल है।**
- **पट्टे पर देना:** सरकार **गिफ्ट सिटी में अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र (IFSC) के माध्यम से विमान पट्टे पर देने को बढ़ावा दे रही है।**
- **रख-रखाव, मरम्मत और संचालन (MRO) उद्योग:** सरकार ने **भारत के MRO क्षेत्र को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाने के लिए नीतियां शुरू की हैं।**
  - वैश्विक OEMs के सहयोग से इंजन जैसे **नए क्षेत्रों में विस्तार किया है ।**
  - **राष्ट्रीय नागरिक विमानन नीति (NCAP 2016)** के बाद से MROs की संख्या 114 से बढ़कर 147 हो गई है।
- **चुनौतियाँ:** 2027 से, विमानन क्षेत्र को अंतर्राष्ट्रीय विमानन के लिए कार्बन ऑफसेटिंग और न्यूनीकरण योजना (CORSIA) का अनुपालन करना होगा।
  - ICAO के सदस्य के रूप में, भारत को या तो संधारणीय विमानन ईंधन (SAF) का उपयोग करना चाहिए या कार्बन क्रेडिट खरीदकर उत्सर्जन की भरपाई करनी चाहिए। हालाँकि, भारत के पास ICAO द्वारा अनुमोदित उत्सर्जन इकाई कार्यक्रम नहीं है और SAF जीवाश्म विमानन ईंधन की तुलना में **3 से 5 गुना अधिक महंगा है।**

ऊर्जा अवसंरचना

विद्युत क्षेत्र

- **वर्तमान स्थिति**
  - भारत में विद्युत पारेषण **विश्व में सबसे बड़े एकीकृत विद्युत ग्रिडों में से एक के रूप में उभर रहा है।**
  - वित्त वर्ष 24 में अधिकतम **बिजली की मांग 13% बढ़कर** 243 गीगावाट हो गई।
  - वित्त वर्ष 23 और वित्त वर्ष 24 के बीच, उपयोगिताओं के लिए **नवीकरणीय ऊर्जा संसाधनों में बिजली उत्पादन में अधिकतम वृद्धि** दर्ज की गई थी।
- **पहलें**
  - **वन सन, वन वर्ल्ड, वन ग्रिड पहल:** एक टास्क फोर्स नवीकरणीय ऊर्जा के आदान-प्रदान के लिए क्षेत्रीय ग्रिडों अर्थात दक्षिण पूर्व एशिया, दक्षिण एशिया, मध्य पूर्व, अफ्रीका और यूरोप के अंतर्संबंध की व्यवहार्यता का अध्ययन कर रहा है।
  - **पुनर्गठित वितरण क्षेत्र योजना (RDSS):** परिणाम-लिंक्ड वित्तीय सहायता प्रदान करके वितरण कंपनियों को परिचालन क्षमता और वित्तीय स्थिरता में सुधार करने में मदद करने के लिए 2021 में शुरू की गई।
    - **वित्त वर्ष 22 से वित्त वर्ष 26 तक** लगभग 3.04 लाख करोड़ रुपये का परिव्यय किया गया है।
  - **उजाला योजना:** सभी के लिए किफायती LEDs द्वारा उन्नत ज्योति (UJALA), 2015 में शुरू की गई।
    - **पारंपरिक और अकुशल प्रकारों के स्थान पर** LEDs बल्ब, LEDs ट्यूब लाइट और ऊर्जा कुशल पंखे बेचे जाते हैं।
  - **समर्थ:** थर्मल पावर प्लांट में कृषि अवशेषों के उपयोग पर सतत कृषि मिशन (SAMARTH) 2021 में शुरू किया गया।
    - NCR थर्मल पावर प्लांटों में बायोमास को-फायरिंग 1.68% तक पहुंच गई है, इसे 5% तक ले जाने के प्रयास चल रहे हैं।
  - **स्ट्रीट लाइटिंग नेशनल प्रोग्राम (SLNP):** यह कार्यक्रम पारंपरिक स्ट्रीट लाइटों को स्मार्ट और ऊर्जा-कुशल एलईडी स्ट्रीट लाइटों से बदलने के लिए 2015 में शुरू किया गया था।

नवीकरणीय क्षेत्र

- **वर्तमान स्थिति:**
  - भारत ने UNFCCC को अपने अपडेटेड राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (**NDCs**) प्रस्तुत किए और **2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन से लगभग 50% संचयी विद्युत** स्थापित क्षमता हासिल करने की प्रतिबद्धता जताई।

- ○ **नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा** मंत्रालय **2030 तक गैर-जीवाश्म स्रोतों से 500 गीगावाट (GW) स्थापित बिजली क्षमता** हासिल करने की दिशा में काम कर रहा है।
- ○ 31 मार्च, 2024 तक भारत की पवन ऊर्जा क्षमता पिछले 10 वर्षों में **2.1 गुना बढ़कर लगभग 45.89 गीगावाट हो गयी है।**
  - REN21 के अनुसार, **पवन ऊर्जा क्षमता के मामले में भारत विश्व में चौथे स्थान पर है।**
- **पहलें**
  - **प्रधान मंत्री-सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना**: इसका लक्ष्य **एक करोड़ घरों में छत पर सौर संयंत्र स्थापित करना है** और इसे वित्त वर्ष 27 तक लागू किया जाना है।
  - **प्रधान मंत्री किसान ऊर्जा सुरक्षा एवं उत्थान महाभियान (PM-KUSUM)**: इसका उद्देश्य **सौर कृषि पंपों द्वारा सौर क्षमता का विकेंद्रीकरण करना है**।
  - **उच्च दक्षता वाले सौर फोटोवोल्टिक (PV) मॉड्यूल पर राष्ट्रीय कार्यक्रम के लिए PLI योजना**: उच्च दक्षता वाले सौर पीवी मॉड्यूल में गीगावाट पैमाने की विनिर्माण क्षमता हासिल करना।
  - **सौर पार्क योजना**: सौर ऊर्जा डेवलपर्स को प्लग एंड प्ले मॉडल प्रदान करना।
  - **हरित ऊर्जा गलियारा (GEC) परियोजनाएं:** नवीकरणीय ऊर्जा निकासी को सुविधाजनक बनाने और भविष्य की आवश्यकताओं के लिए ग्रिड को पुनः आकार देने के लिए शुरू की गई।
  - **राष्ट्रीय हरित हाइड्रोजन मिशन**: मिशन का लक्ष्य 2030 तक लगभग 5 मिलियन मीट्रिक टन (MMT) वार्षिक हरित हाइड्रोजन उत्पादन क्षमता हासिल करना है।
  - **नई सौर ऊर्जा योजना (विशेष रूप से PVTG बस्तियों/ गांवों के लिए) : एक लाख गैर-विद्युतीकृत PVTG घरों के विद्युतीकरण के लिए** PM जनमन के तहत शुरू की गई।
  - **CPSU योजना चरण-II (सरकारी उत्पादक योजना):** इसका उद्देश्य PSUs और सरकारी संगठनों द्वारा ग्रिड से जुड़ी सौर PV बिजली परियोजनाएं स्थापित करना है।
  - **नीतियां**
    - **ऊर्जा भंडारण प्रणालियों को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय रूपरेखा (ESS):** ESS का उपयोग नवीकरणीय स्रोतों से उपलब्ध ऊर्जा के भंडारण के लिए किया जा सकता है जिसका उपयोग दिन के अन्य समय में किया जा सकता है।
    - **पम्प भंडारण परियोजनाओं (PSPs) के विकास को बढ़ावा देने के लिए दिशानिर्देश:** पम्प स्टोरेज परियोजनाएं (PSPs) स्वच्छ, मेगावाट-पैमाने की हैं, जो घरेलू स्तर पर उपलब्ध हैं। साथ ही, ये भंडारण और सहायक सेवाओं के लिए अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत हैं।

सामाजिक और आर्थिक अवसंरचना

खेल क्षेत्र

मुख्य पहलें

- **राष्ट्रीय खेल विश्वविद्यालय, इम्फाल:** यह विश्वविद्यालय वर्तमान में खेल अवसंरचना में उल्लेखनीय सुधार करने और शीर्ष स्तरीय खेल शिक्षा, प्रशिक्षण और अनुसंधान सुविधाएँ प्रदान करने के लिए विकसित किया जा रहा है।
- **खेलो इंडिया कार्यक्रम:** यह कार्यक्रम विभिन्न स्तरों पर खेलों को बढ़ावा देने के लिए खेल अवसंरचना परियोजनाओं के विकास पर केंद्रित है।
- **भारतीय खेल प्राधिकरण:** वित्त वर्ष 24 में विभिन्न केंद्रों पर नौ अवसंरचना परियोजनाओं को मंजूरी दी गई।
- **मॉडल रियायत समझौता (MCA):** खेल अवसंरचना के विकास में निजी भागीदारी को प्रोत्साहित करना।
  - इसे सार्वजनिक-निजी भागीदारी (PPP) मोड में **डिज़ाइन, बिल्ड, फ़ाइनेंस, ऑपरेट और ट्रांसफ़र (DBFOT)** मॉडल का उपयोग करके एकीकृत बहु-खेल क्षेत्र बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है।

जल एवं स्वच्छता क्षेत्र

- **महत्वपूर्ण पहलें:**
  - **स्वच्छ भारत मिशन – ग्रामीण (SBM-G)**
    - **10-वर्षीय लक्ष्य:** 2024 में SBM-G के शुभारंभ के 10 वर्ष पूरे हो जाएंगे, जिसका उद्देश्य **घरेलू शौचालयों और सामुदायिक स्वच्छता परिसरों के लिए वित्तीय प्रोत्साहन के साथ भारत को खुले में शौच से मुक्त (ODF) बनाना है।**
    - **चरण II के लक्ष्य:** 2024-25 तक ODF के दर्जे को बनाए रखना, ठोस और तरल अपशिष्ट का प्रबंधन करना और सभी गांवों को ODF से ODF प्लस में बदलना।
    - **आदर्श उदाहरण:** तेलंगाना के सिद्धिपेट जिले में स्टील (बर्तन) बैंक।
      - **संकल्पना:** ग्राम पंचायत कार्यालय में प्लेट और गिलास जैसे स्टील के बर्तन उपलब्ध कराकर प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन पर ध्यान दिया जाता है।
        - ✓ प्लास्टिक के स्वास्थ्य संबंधी खतरों के बारे में जागरूकता बढ़ाता है, तथा सामुदायिक कार्यों के लिए आय प्रदान करता है।
      - **लाभ:** प्लास्टिक कचरे के संग्रहण, डंपिंग और जलाने में कमी आई है, जिससे प्रति आयोजन 6-8 किलोग्राम प्लास्टिक कचरे और प्रति माह 28 क्विंटल प्लास्टिक कचरे में कमी आने की उम्मीद है।
  - **जल जीवन मिशन (JJM):**
    - **लॉन्च और लक्ष्य:** 2024 तक प्रत्येक ग्रामीण परिवार को नल का जल कनेक्शन प्रदान करने के लिए अगस्त 2019 में शुरू किया गया था, जिसका कुल परिव्यय ₹3.6 लाख करोड़ है।
    - **प्रगति:** मिशन की शुरुआत के समय केवल 17% ग्रामीण परिवारों के पास नल के पानी की सुविधा थी, जो अब बढ़कर 76.12% से अधिक हो गई है।
    - **आदर्श उदाहरण: सैलम** गांव **(मिजोरम),**
      - **परिवर्तन: जल जीवन मिशन के अंतर्गत सैलम जल-विहीन से जल-पर्याप्त मॉडल गांव बन गया है, जिससे सैलम अब 24x7 समुदाय-प्रबंधित जल आपूर्ति वाला 'हर घर जल' गांव बन गया है।**
      - **सामुदायिक पहल:** ग्रामीणों द्वारा स्वयं **जल मीटर** लगाए गए हैं। वे **वास्तविक खपत के आधार पर शुल्क का भुगतान** कर रहे हैं तथा **दीर्घकालिक स्रोत स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए मौजूदा वसंत स्रोतों के जलग्रहण क्षेत्र के तहत 30 एकड़ जंगल की रक्षा** कर रहे है।
        - ✓ कुछ लोगों ने **वाटरशेड विकास के लिए स्वेच्छा से अपनी जमीन दान की है। साथ ही, एक स्थानीय पंप ऑपरेटर को प्रशिक्षित किया गया है, जो जल आपूर्ति प्रणाली का प्रबंधन** करता है।

जल संसाधन प्रबंधन क्षेत्र

- **ग्लोबल रिवर सिटीज एलियांस:** राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (NMCG) के नेतृत्व में, **इसमें 11 देशों के 275 से अधिक रिवर सिटीज, अंतर्राष्ट्रीय वित्त पोषण एजेंसियां और नॉलेज पार्टनर शामिल** हैं, **जो नदी संरक्षण और सतत जल प्रबंधन** पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
- **नमामि गंगे कार्यक्रम**: 2014-15 में NMCG द्वारा एकीकृत संरक्षण मिशन के लिए शुरू किया गया है। इसका उद्देश्य प्रदूषण निवारण, संरक्षण और गंगा नदी के कायाकल्प पर ध्यान केंद्रित करना है।
  - कार्यक्रम का बजट ₹20,000 करोड़ (2014-2020) से बढ़कर ₹22,500 करोड़ (2021-2026) कर दिया गया है।
  - नमामि गंगे इस पहल के तहत स्थापित किए जा रहे सीवेज उपचार संयंत्रों के लिए व्यापक रूप से लोकप्रिय हाइब्रिड एन्युइटी मॉडल (HAM) का उपयोग कर रहा है।
- **बांध पुनर्वास और सुधार परियोजना (DRIP):** DRIP को विश्व बैंक की वित्तीय सहायता से क्रियान्वित किया जा रहा है, ताकि चयनित मौजूदा बांधों की सुरक्षा और परिचालन प्रदर्शन में सुधार के साथ-साथ प्रणाली-व्यापी प्रबंधन दृष्टिकोण के साथ बांध सुरक्षा संस्थागत सुदृढ़ीकरण किया जा सके।

- DRIP चरण-I (2012-21): 223 बांधों का पुनर्वास किया गया।
- DRIP चरण II (2021-31): 736 बांधों के पुनर्वास के लिए सुरक्षा और परिचालन प्रदर्शन में सुधार की परिकल्पना की गई है।

- **अटल भूजल योजना: यह विश्व बैंक द्वारा सहायता प्राप्त** केंद्रीय क्षेत्रक की योजना है, जिसे 1 अप्रैल 2020 से पांच वर्षों के लिए लागू किया गया था। यह **एकमात्र ऐसा कार्यक्रम है जो मांग पक्ष भूजल प्रबंधन को लक्षित करता है,** समुदाय के व्यवहार परिवर्तन पर ध्यान केंद्रित करता है। GPs (ग्राम पंचायत) **जल स्तर, जल गुणवत्ता, वर्षा और भूजल निष्कर्षण की निगरानी के लिए उपकरणों से लैस हैं।**
- **प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना (PMKSY):** खेतों तक जल की भौतिक पहुंच बढ़ाने, सुनिश्चित सिंचाई के तहत कृषि योग्य क्षेत्रों का विस्तार करने, खेतों में जल उपयोग दक्षता में सुधार लाने और स्थायी जल संरक्षण पद्धतियों को लागू करने के लिए 2015-16 में शुरू की गई।
  - यह एक व्यापक योजना है जिसके दो प्रमुख घटक हैं: **त्वरित सिंचाई लाभ कार्यक्रम (AIBP) और हर खेत को पानी (HKKP)।**
- **नदियों को जोड़ने की परियोजना**
  - **अवलोकन:** राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य योजना (NPP) के अंतर्गत 30 लिंकों (16 प्रायद्वीपीय और 14 हिमालयी) की पहचान की गई है।
  - **प्राथमिकता वाली परियोजनाएं:** पांच प्रमुख लिंकों में केन बेतवा लिंक परियोजना, संशोधित पार्वती-कालीसिंध-चंबल लिंक और गोदावरी-कावेरी लिंक (तीन खंड) शामिल हैं।
  - **केन बेतवा लिंक परियोजना:** इसे 2021 में 39,317 करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता के साथ अनुमोदित किया गया। इसे मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश और केंद्र सरकार द्वारा संयुक्त रूप से लागू किया जाना है।
- **बांध सुरक्षा अधिनियम 2021:** बांध विफलता से संबंधित आपदाओं की रोकथाम के लिए निर्दिष्ट बांध की निगरानी, निरीक्षण, संचालन और रख-रखाव की व्यवस्था करना तथा उनके सुरक्षित कामकाज को सुनिश्चित करने के लिए संस्थागत तंत्र प्रदान करना।
- **भूजल प्रबंधन एवं विनियमन (GWMR) योजना:** राष्ट्रीय स्तर पर भूजल व्यवस्था की निगरानी देश भर में फैले भूजल निगरानी स्टेशनों के माध्यम से की जाती है।
  - इनमें से कई स्टेशन **रियल टाइम निगरानी के लिए टेलीमेट्री के साथ डिजिटल जल स्तर रिकॉर्डर से लैस** हैं।
  - देश के विभिन्न भागों में लगभग 300 **कृत्रिम भूजल पुनर्भरण संरचनाएं बनाई गई हैं।**
- **जल निकायों की गणना: देश में जल निकायों की पहली गणना** 2023 में पूरी और प्रकाशित हुई थी।
- **प्रयाग:** नदी की गुणवत्ता और सीवेज उपचार की सतत निगरानी के लिए एक ऑनलाइन डैशबोर्ड शुरू किया गया है।

शहरी क्षेत्र

- **आउटलुक:** 2030 तक **भारत की 40% से अधिक आबादी शहरी क्षेत्रों में रहेगी।**
  - शहरों को आर्थिक विकास केंद्रों में बदलने के लिए केंद्रीय, राज्य और शहरी स्थानीय निकायों के बीच सहयोग बहुत ज़रूरी है। इसकी मुख्य रणनीतियों में शामिल हैं:
    - कुशल शहरी नियोजन।
    - मजबूत परियोजना ढांचे का विकास करना।
    - शहरी स्थानीय निकायों (ULBs) को मजबूत बनाना।
  - **सुरक्षित राजस्व स्रोतों के साथ परियोजना-आधारित वित्तपोषण** मॉडल **वायबिलिटी गैप फंडिंग,** बाजार उधार और क्रेडिट एनहांसमेंट को आकर्षित कर सकते हैं।
  - शहरी स्थानीय निकायों और कार्यान्वयन एजेंसियों को **परियोजना कार्यान्वयन को अनुकूलित करने के लिए वैल्यू-फॉर-मनी विश्लेषण** और वॉटरफॉल तंत्र का उपयोग करना चाहिए।
- **महत्वपूर्ण पहलें**
  - **प्रधानमंत्री आवास योजना-शहरी (PMAY-U):** शहरी क्षेत्रों में सभी पात्र लाभार्थियों को बुनियादी सुविधाओं के साथ पक्के मकान उपलब्ध कराने के लिए 2015 में शुरू की गई।

- **कायाकल्प और शहरी परिवर्तन के लिए अटल मिशन (अमृत/ AMRUT):** जून 2015 में 500 शहरों में शुरू किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य सार्वभौमिक रूप से सुरक्षित और सुनिश्चित पेयजल आपूर्ति प्रदान करना था।
- **2021 में** पांच वर्षों के लिए शुरू किए गए अमृत 2.0 का उद्देश्य शहरों को आत्मनिर्भर और जल सुरक्षित बनाना तथा 500 अमृत शहरों में सीवरेज और सेप्टेज प्रबंधन की सार्वभौमिक कवरेज प्रदान करना है।
  - संपत्ति कर और उपयोगकर्ता शुल्क की अधिसूचना, **शहरी स्थानीय निकायों की वित्तीय स्थिरता और जल सुरक्षा को बढ़ाना, 20% उपचारित उपयोग किए गए जल का पुनः उपयोग,** दोहरी प्रविष्टि लेखा प्रणाली और कुशल नगर नियोजन आदि।
- **स्मार्ट सिटीज मिशन (SCM):** SCM की शुरुआत जून 2015 में की गई थी, इसका उद्देश्य ऐसे शहरों को बढ़ावा देना है जो मूलभूत बुनियादी ढांचे, स्वच्छ और टिकाऊ पर्यावरण प्रदान करते हों और 'स्मार्ट समाधानों' के अनुप्रयोग के माध्यम से अपने नागरिकों को **एक सभ्य गुणवत्ता वाला जीवन प्रदान करते हों।**
- **स्वच्छ भारत मिशन शहरी (SBM-U): शहरी क्षेत्रों को खुले में शौच से मुक्त (ODF)** बनाने और **100 प्रतिशत स्रोत पृथक्करण**, घर-घर जाकर कचरा संग्रहण और कचरे के सभी हिस्सों के वैज्ञानिक प्रबंधन के ज़रिए सभी शहरों के लिए कचरा मुक्त स्थिति प्राप्त करने हेतु शुरू किया गया। **आदर्श उदाहरणों में शामिल हैं:**
  - **इंदौर में** PPP मॉडल के तहत **500 टन प्रतिदिन (TPD) क्षमता वाला बायो-मीथेनेशन प्लांट** स्थापित किया गया।
  - **इंदौर बायो CNG:** संयंत्र की प्रतिदिन प्रसंस्करण क्षमता 400 मीट्रिक टन है, जो सार्वजनिक निजी भागीदारी के तहत संचालित है।
  - मैंगलोर (कर्नाटक) में गीले कचरे के उपचार के लिए **ब्लैक सोल्जर फ्लाईज़ (BSF) का उपयोग किया जा रहा है।**
  - पिंपरी-चिंचवाड़ नगर निगम (महाराष्ट्र) में **अपशिष्ट से विद्युत उत्पादन।**

रणनीतिक अवसंरचना

अंतरिक्ष क्षेत्र

- **अंतरिक्ष परिसंपत्तियाँ:**
  - भारत के पास वर्तमान में संचार, मौसम विज्ञान, पृथ्वी अवलोकन उपग्रह हैं।
    - नेविगेशन उपग्रह {2016 में इंडीजीनस सैटलाइट नेवीगेशन कांस्टेलेशन (NavIC) श्रृंखला का निर्माण पूरा हुआ और इसका संचालन शुरू हुआ।}
  - इसरो के प्रक्षेपण वाहनों में **ध्रुवीय उपग्रह प्रक्षेपण यान (PSLV)** और **भूस्थिर उपग्रह प्रक्षेपण यान (GSLV), प्रक्षेपण यान मार्क-3 (LVM3)** और **लघु उपग्रह प्रक्षेपण यान (SSLV) शामिल हैं।**
    - **न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड (NSIL) ने LVM3, M2 और M3 मिशनों के माध्यम से वनवेब के 72 उपग्रहों को पृथ्वी की निचली कक्षा में** प्रक्षेपित करने के अपने अनुबंध को सफलतापूर्वक पूरा किया है। इससे LVM3 वैश्विक वाणिज्यिक प्रक्षेपण सेवा बाजार में एक विश्वसनीय प्रक्षेपण यान के रूप में स्थापित हो गया है।
- **हालिया अंतरिक्ष अन्वेषण मिशन**
  - मंगल ऑर्बिटर मिशन (2014),
  - ASTROSAT (2015),
  - चंद्रयान-2 ऑर्बिटर (2019)
  - चंद्रयान-3 की चंद्रमा पर लैंडिंग (2023)
  - आदित्य–L1 मिशन (2023)

- **अंतरिक्ष क्षेत्र में निजी भागीदारी**
  - **भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन और प्राधिकरण केंद्र (IN-SPACe): IN-SPACe** अंतरिक्ष गतिविधियों को बढ़ावा देने और अधिकृत करने वाली एक सिंगल-विंडो एजेंसी है, जिसका उद्घाटन जून 2022 में किया गया।
  - **निजी प्रक्षेपण और बुनियादी ढांचा**
    - **विक्रम-एस (प्रारंभ मिशन):** स्काईरूट एयरोस्पेस प्राइवेट लिमिटेड, हैदराबाद का एक उपकक्षीय प्रक्षेपण यान है।
    - **भारत का पहला निजी अंतरिक्ष वाहन लॉन्चपैड:** अग्निकुल कॉसमॉस प्राइवेट लिमिटेड ने सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र, श्रीहरिकोटा (आंध्र प्रदेश) के इसरो परिसर में पहला निजी लॉन्चपैड और मिशन नियंत्रण केंद्र स्थापित किया है।
  - **उद्योग साझेदारी:** HAL और L&T कंसोर्टियम को पांच PSLVs के संपूर्ण उत्पादन के लिए भारतीय उद्योग साझेदार के रूप में चुना गया है।
  - **निजी क्षेत्र के विकास: पिक्सलस्पेस, दिगंतरा, ध्रुव स्पेस, अजिस्ता BST एयरोस्पेस और टाटा एडवांस्ड सिस्टम्स लिमिटेड** सहित कई निजी संस्थाओं ने बाह्य अंतरिक्ष में संचालन के लिए उपग्रह और कार्यात्मक पेलोड विकसित किए हैं।
- **प्रमुख चुनौतियाँ**
  - **विकासात्मक अंतराल:** प्रमुख तकनीकी चुनौतियों में कार्बन फाइबर के निर्माण के लिए स्वदेशी क्षमता का विकास, अंतरिक्ष अनुप्रयोगों के लिए समर्पित कैप्टिव सेमीकंडक्टर फैब, प्रमुख मिश्र धातु तत्वों की उपलब्धता आदि शामिल हैं।
  - **व्यवसायीकरण:** प्रौद्योगिकियों के व्यवसायीकरण से संबंधित चुनौतियों में बहुत ही विशिष्ट और/ या प्रतिस्पर्धी बाजार की उपस्थिति, मूल्य निर्धारण संबंधी बाधाएं, आमतौर पर सीमित मांग, दीर्घकालिक मांग की कमी आदि शामिल हैं। सीमित मांग बड़े पैमाने पर व्यवसायीकरण को बाधित करती है।

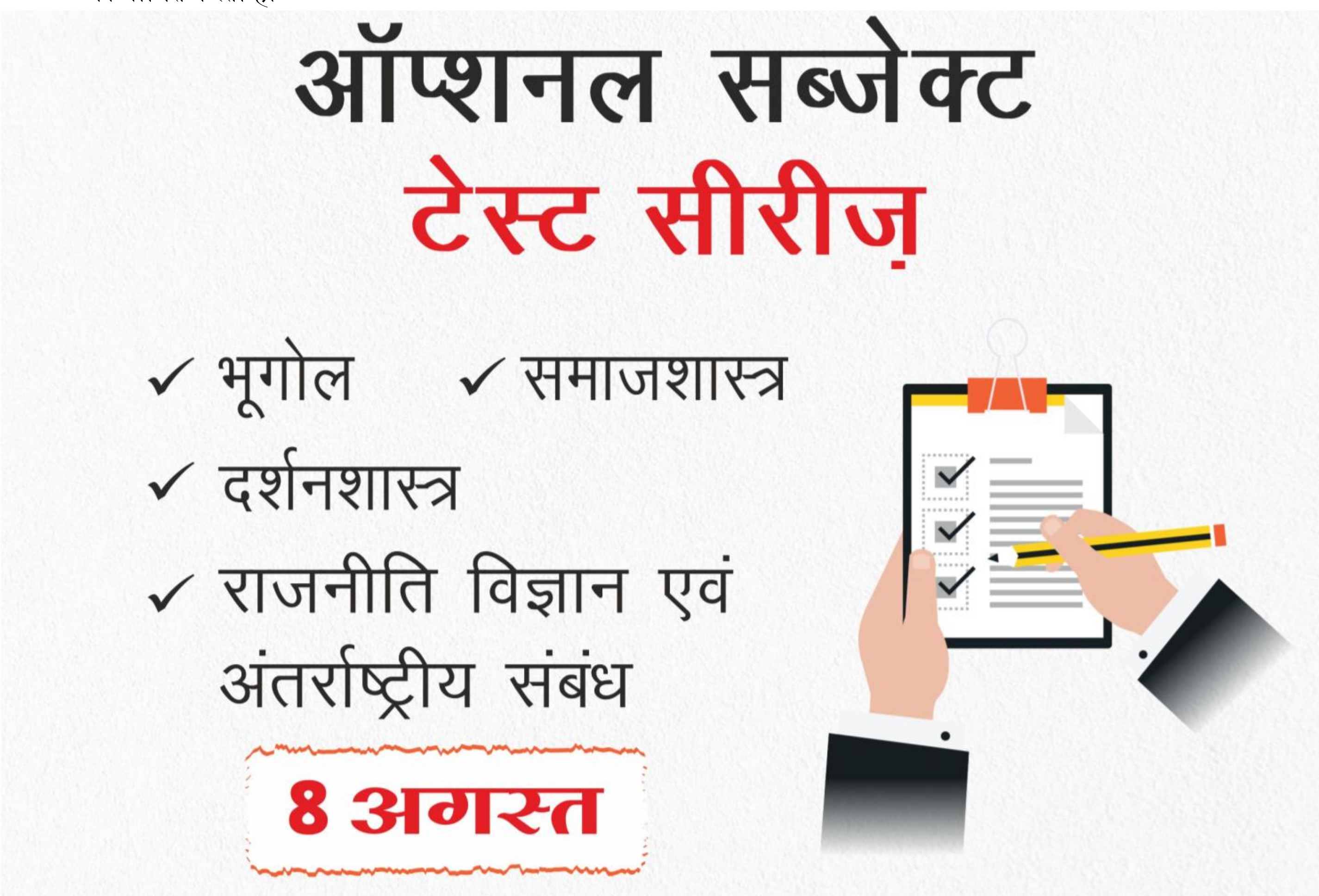

बजट में क्या कहा गया है?

- **केन्द्र सरकार द्वारा बुनियादी ढांचे में निवेश:** पूंजीगत व्यय के लिए सकल घरेलू उत्पाद का 3.4% उपलब्ध कराया जाएगा।
- **राज्य सरकारों द्वारा बुनियादी ढांचे में निवेश:** बुनियादी ढांचे में निवेश के संबंध में राज्यों को सहायता देने के लिए **दीर्घकालिक ब्याज मुक्त ऋण** हेतु **1.5 लाख करोड़ रुपये** का प्रावधान है।
- **बुनियादी ढांचे में निजी निवेश: वायबिलिटी गैप फंडिंग** और सक्षम नीतियों तथा विनियमों के माध्यम से निजी क्षेत्र द्वारा बुनियादी ढांचे में निवेश को बढ़ावा दिया जाएगा।
  - बाजार आधारित वित्तपोषण ढांचा लाया जाएगा।
- **प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना (PMGSY): 25,000 ग्रामीण बस्तियों** को सभी मौसमों में कनेक्टिविटी प्रदान करने के लिए **PMGSY के चरण IV का** शुभारंभ किया गया।
- **शहरी आवास:** PM आवास योजना शहरी 2.0 के तहत 10 लाख करोड़ रुपये के निवेश से 1 करोड़ शहरी गरीब और मध्यम वर्गीय परिवारों की आवास आवश्यकताओं को पूरा किया जाएगा।
- **व्यापार की सुविधा: घरेलू विमानन और नाव एवं जहाज MRO** (रख-रखाव, मरम्मत और ओवरहाल) को बढ़ावा देकर।

शब्दावली

GBS	**सकल बजटीय सहायता:** सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों को केन्द्र सरकार द्वारा प्रदान की जाने वाली वित्तीय सहायता।
HAM	**हाइब्रिड एन्युटी मॉडल:** बुनियादी ढांचे के विकास के लिए एक PPP मॉडल है, जिसमें सरकार निर्माण कार्य के दौरान परियोजना लागत का 40% भुगतान करती है और शेष 60% का भुगतान 15 वर्षों में वार्षिक रूप से किया जाता है।
IN-SPACe	**भारतीय राष्ट्रीय अंतरिक्ष संवर्धन एवं प्राधिकरण केंद्र:** निजी क्षेत्र में अंतरिक्ष गतिविधियों को बढ़ावा देने और अधिकृत करने के लिए एक सिंगल-विंडो एजेंसी है।
NSIL	**न्यू स्पेस इंडिया लिमिटेड:** अंतरिक्ष विभाग के अंतर्गत एक सार्वजनिक क्षेत्र का उद्यम है। यह इसरो के अनुसंधान एवं विकास कार्यों का व्यावसायिक उपयोग करता है।

अध्याय 12: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. बुनियादी ढांचे में भारत के निवेश के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

   1. इसका वित्तपोषण मुख्यतः सार्वजनिक क्षेत्रक द्वारा किया जाता है।
   2. राज्य सरकारों का वित्तपोषण केन्द्र सरकार के वित्तपोषण से अधिक है।

   उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

2. लॉजिस्टिक्स परफॉर्मेंस इंडेक्स निम्नलिखित में से किसके द्वारा जारी किया जाता है?

   (a) विश्व बैंक
   (b) विश्व आर्थिक मंच
   (c) UNCTAD
   (d) IMF

 © Vision IAS

3. भारत में सड़कों के निर्माण/ उन्नयन के लिए निम्नलिखित में से किसका उपयोग किया जा रहा है?

(a) लैंडफिल सामग्री

(b) अस्फ़ाल्ट

(c) डामर

(d) उपर्युक्त सभी

4. भारत के नवीकरणीय ऊर्जा क्षेत्र के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत ने 2030 तक गैर-जीवाश्म ईंधन से लगभग 50% संचयी स्थापित विद्युत क्षमता हासिल करने की प्रतिबद्धता जताई है।
2. पिछले 10 वर्षों में भारत की पवन ऊर्जा क्षमता 2.1 गुना बढ़ गई है।
3. पवन ऊर्जा क्षमता के मामले में भारत विश्व में चौथे स्थान पर है।
4. प्रधानमंत्री-सूर्य घर मुफ्त बिजली योजना का लक्ष्य 10 करोड़ घरों में रूफटॉप सोलर संयंत्र स्थापित करना है।

उपर्युक्त कथनों में से कितने सही हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) केवल 3

(d) सभी चारों

5. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन (NMP) के मुख्य लक्ष्य का सर्वोत्तम वर्णन करता है?

1. सरकारी संपत्तियों को बेचना।
2. नये बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए निजी क्षेत्र के निवेश का दोहन करना।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

प्रश्न

1. 2047 तक विकसित भारत के लक्ष्य को प्राप्त करने में अवसंरचना क्षेत्रक में भारत के समक्ष मुख्य बाधाएं क्या हैं? और बाधाओं से निपटने के लिए क्या रणनीतियां लागू की जा सकती हैं? (उत्तर 250 शब्दों में दीजिए)

2. भारत वैश्विक स्तर पर सबसे तेजी से बढ़ते विमानन बाजारों में से एक है। इस उपलब्धि को हासिल करने के लिए कौन सी पहलें शुरू की गई है और भारत के नागरिक उड्डयन क्षेत्र में और क्या चुनौतियां मौजूद हैं? (उत्तर 150 शब्दों में दीजिए)

ऑल इंडिया मुख्य परीक्षा टेस्ट सीरीज़
देश के सर्वश्रेष्ठ टेस्ट सीरीज़ प्रोग्राम के इनोवेटिव असेसमेंट सिस्टम का लाभ उठाएं
ENGLISH MEDIUM 2024: 8 AUGUST
हिन्दी माध्यम 2024: 8 अगस्त
ENGLISH MEDIUM 2025: 11 AUGUST
हिन्दी माध्यम 2025: 11 अगस्त

अध्याय 13: जलवायु परिवर्तन और भारत: हमें समस्या को अपने नजरिए से क्यों देखना चाहिए (Climate Change And India: Why We Must Look At The Problem Through Our Lens)

परिचय

- दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाला देश और वर्तमान में विश्व की **पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था भारत 2030 तक तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था** बनने की दिशा में अग्रसर है। स्वाभाविक रूप से, इसका मतलब यह है कि भारत की ऊर्जा आवश्यकताएं अगले 30 वर्षों में वैश्विक औसत से लगभग 1.5 गुना तेजी से बढ़ने की उम्मीद है। हालांकि, भारत को दुनिया के सबसे बड़े प्रदूषक देशों में से एक माना जाता है और पर्याप्त कदम न उठाने के लिए अक्सर इसकी आलोचना भी की जाती रही है।
- यह अध्याय इस बात का परीक्षण करता है कि **जलवायु परिवर्तन का सामना करने के लिए अपनाई गई वर्तमान रणनीति सर्वश्रेष्ठ और सभी के हित वाली है अथवा नहीं।** यह अध्याय विकासशील देशों द्वारा कुछ पश्चिमी शैलियों को अपनाने के पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभावों पर भी चर्चा करता है। साथ ही यह इस बात पर भी प्रकाश डालता है कि भारत की जीवनशैली और उसके मिशन लाइफ **(LiFE: Lifestyle for Environment/ पर्यावरण के लिए जीवन शैली)** में संधारणीय जीवन कैसे निहित है।

अध्याय का प्रीकैप

जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वर्तमान वैश्विक अप्रोच से जुड़ी चिंताएं

- **जीवन के नियमों की कम सैद्धांतिक समझ**
- **अस्तित्व की परस्पर जुड़ी प्रकृति के बारे में अज्ञानता:** नवीकरणीय ऊर्जा के संपूर्ण जीवनचक्र की लागत पर शोध का **अभाव।**
- **इच्छित लक्ष्य के लिए पर्याप्त ऊर्जा की कमी।**
- **अत्यधिक उपभोग:** वर्तमान जलवायु परिवर्तन रणनीति हमारे जीवन के तरीके में संधारणीय तरीकों को अपनाने पर ध्यान केंद्रित नहीं करती है।
- **अधिक ऊर्जा खपत वाली प्रौद्योगिकियों पर ध्यान केंद्रित करना:** उदाहरण के लिए, एक जैसे प्रश्न को Chat-GPT और गूगल पर सर्च कर किया जाए तो Chat-GPT, **गूगल की तुलना में 10 गुना अधिक ऊर्जा की खपत** करती है।
- **प्रति व्यक्ति उत्सर्जकों पर ध्यान न देना:** वर्तमान में 85% सबसे बड़े उत्सर्जक संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप और चीन जैसी विकसित अर्थव्यवस्थाओं में रहते हैं और विकासशील देशों की हिस्सेदारी केवल 10% है।
- **ऐतिहासिक डेटा पर ध्यान न देना:** 1850 और 2019 के बीच **कुल वैश्विक संचित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में भारत की हिस्सेदारी केवल 4%** है।
- **जलवायु वित्तपोषण पर्याप्त नहीं होना:** 2030 तक विकासशील देशों को अपने मौजूदा "राष्ट्रीय स्तर पर निर्धारित योगदान (NDC)' लक्ष्यों का लगभग पचास प्रतिशत हासिल करने के लिए लगभग 6 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता है।

पश्चिमी शैली को अपनाने से विकासशील विश्व में पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव

- **उत्सर्जन में कमी करने वाले लक्ष्यों को हासिल करने में बाजार अर्थव्यवस्था की सीमाएं हैं।**
- **खाद्य-आहार संतुलन का विनाश:** कुल कृषि योग्य भूमि में मांस के लिए फीड इंडस्ट्री की हिस्सेदारी 33 प्रतिशत है।
- **हाउसिंग में परिवर्तन:**
  - **पश्चिमी जीवन शैली के मॉडल को अपनाना:** भारत में कुल परिवारों में से लगभग 50% एकल परिवार (1-4 सदस्य) हैं। 2008 में यह अनुपात 38% था।
  - **शहरी विस्तार की प्रवृत्ति**
- **यूनिवर्सल जीवन शैली मॉडल की नकल करना।**

© Vision IAS

मिशन लाइफ (LiFE/ पर्यावरण के लिए जीवन शैली)

- **घोषणा:** इसकी घोषणा भारत के प्रधान मंत्री ने 2021 में संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (UNFCCC-COP26) में की।
- **उद्देश्य:** वैश्विक जलवायु कार्य योजना में व्यक्तिगत जिम्मेदारी को केंद्र-बिंदु में लाना।
- **LiFE के पांच मौलिक सिद्धांत, जो दुनिया के लिए डॉक्ट्रिन बन सकते हैं:**
    - व्यक्तिगत कार्रवाई जलवायु उत्तरदायित्व का मुख्य आधार है।
    - पृथ्वी ग्रह के अनुकूल व्यक्तिगत जीवन विकल्पों को सामूहिक नीतियों में जगह देना।
    - स्थानीय और संधारणीय भूगोल और संस्कृति का समावेश।
    - 'सही' निर्णय लेने में बाजार नहीं, बल्कि पब्लिक पॉलिसी की भूमिका अधिक है।
    - संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना, जो जरूरत आधारित हों, न कि लालच पर।

जलवायु परिवर्तन और वैश्विक एप्रोच

- जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए वैश्विक स्तर पर एक ऐसी रणनीति अपनाई गई है, जिसमें कई पाथवे शामिल हैं। इन्हें आमतौर पर **'जलवायु अनुकूलन' (Climate adaptation)** और **'जलवायु शमन' (Climate mitigation)** कहा जाता है।
- इसमें जीवाश्म ईंधन के बदले ऊर्जा के स्वच्छ स्रोतों को अपनाना, ऊर्जा दक्षता बढ़ाना, रीजेनरेटिव और पर्यावरण की दृष्टि से अनुकूल कृषि पद्धतियों को अपनाना आदि शामिल हैं।

2030 तक जलवायु के मामले में दुनिया को सही दिशा में लाने के लिए WEO-2023 द्वारा प्रस्तावित वैश्विक रणनीति के पांच मुख्य पिलर्स

- **वैश्विक नवीकरणीय ऊर्जा स्थापित क्षमता को तीन गुना करना।**
- **ऊर्जा दक्षता में** सुधार की दर **को दोगुना करना।**
- **जीवाश्म ईंधन** गतिविधियों से मीथेन उत्सर्जन को 75% तक कम करना।
- उभरती और विकासशील अर्थव्यवस्थाओं में स्वच्छ ऊर्जा में निवेश को तीन गुना करने के लिए **नवाचार, अधिक वित्तपोषण तंत्र उपलब्ध करवाना।**
- जीवाश्म ईंधन के उपयोग में **चरणबद्ध कमी करने के उपाय,** जिसमें कोयला आधारित नए अन-एबेटेड बिजली संयंत्रों की स्थापना को मंजूरी नहीं देना भी शामिल है।

वर्तमान एप्रोच त्रुटिपूर्ण क्यों है?

- **जीवन के प्राकृतिक नियमों की सीमित सैद्धांतिक समझ:** जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं के संपूर्ण समाधान में केवल मानव जनित कार्रवाइयों को दूरदर्शी नहीं कहा जा सकता है।
- जलवायु परिवर्तन नीतियां अलग-अलग **भौगोलिक, आर्थिक और जलवायु विशेषताओं वाले देशों के अनुरूप नहीं बनाई गईं** हैं।
    - संधारणीय विकास के लिए प्रासंगिक प्रकृति अनुकूल कई विचारों, **जैसे कि उपभोग पैटर्न, जीवनशैली, पौधे बनाम मांस-आधारित आहार इत्यादि, को जलवायु नीतियों में शामिल नहीं किया गया है।**
    - उदाहरण के लिए, खाद्य उत्पाद में बीफ के उत्पादन में प्रति किलोग्राम सबसे अधिक उत्सर्जन होता है। इसके बावजूद इस गतिविधि में किसी प्रकार के बदलाव की मांग नहीं की जा रही है। (इन्फोग्राफिक देखिए)।
- **अस्तित्व की परस्पर जुड़ी प्रकृति के प्रति अज्ञानता:**
    - **स्वीकार किए गए पाथवे अलग-थलग समाधानों पर बल देते** हैं और इस बात को नजरअंदाज करते हैं कि **प्रकृति कई तरीकों से स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे से जुड़ी हुई है।** उदाहरण के लिए:
        - सौर पैनल नवीकरणीय ऊर्जा उत्पन्न कर सकते हैं, लेकिन सौर बैटरियां पृथ्वी की भूपर्पटी से निकाली गई सामग्री से बनती हैं, जिसके लिए बड़े पैमाने पर जल दोहन की आवश्यकता होती है, और प्रति टन खनिज से लगभग 15 टन CO_2 का उत्सर्जन होता है।
        - खनन के लिए अत्यधिक उच्च तापमान वाली ऊष्मा की आवश्यकता होती है। विडंबना यह है कि इसे केवल जीवाश्म ईंधन को जलाकर ही किफायती रूप से निकाला जा सकता है।

चार्ट XIII.1: विभिन्न खाद्य उत्पादों की आपूर्ति श्रृंखला में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन (2018)

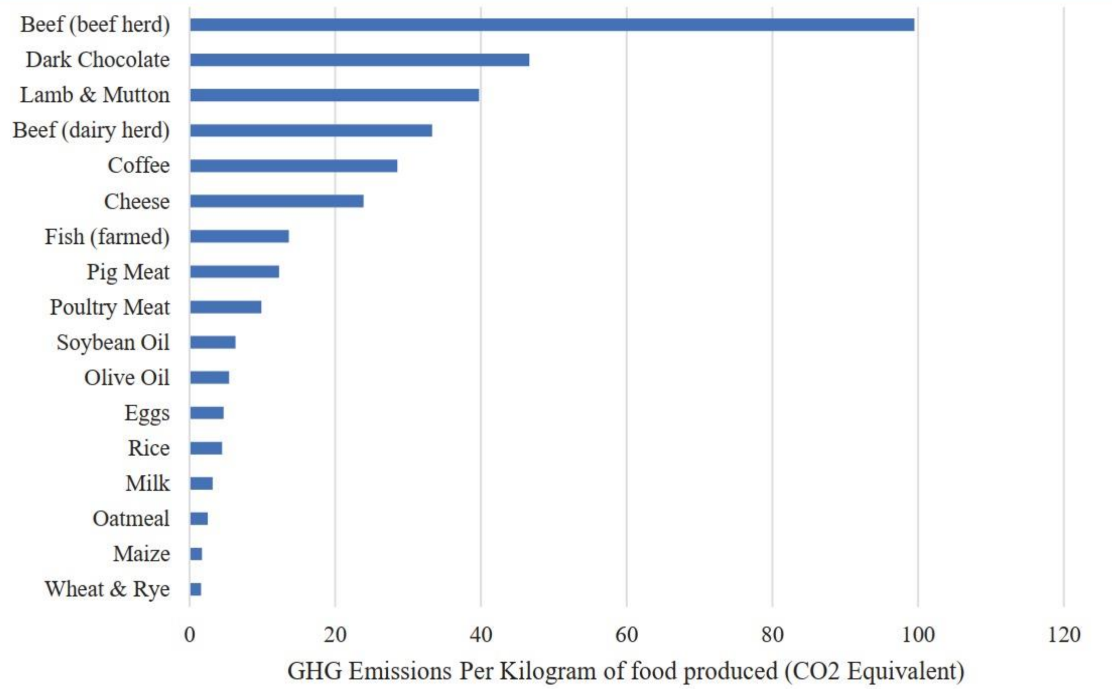

- नवीकरणीय ऊर्जा अपनाने में उत्पादन से लेकर अंतिम प्रक्रिया तक कितनी लागत चुकानी पड़ सकती है, इस पर **पर्याप्त शोध नहीं किए गए हैं।**
  - **उदाहरण के लिए, सोलर ऊर्जा को परमाणु ऊर्जा की तुलना में 300 गुना** अधिक जगह की आवश्यकता हो सकती है, और **बायोमास को 8,000 गुना से अधिक जगह की आवश्यकता हो सकती है,** टरबाइन ब्लेड और सौर पैनलों को हर दो दशकों में बदलना पड़ता है, आदि।
  - अध्ययनों से पता चलता है कि 100% सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा प्रणालियों को **बड़ी भंडारण क्षमता की आवश्यकता होगी, जो अत्यधिक महंगा सौदा है।** (नीचे दिए गए इन्फोग्राफिक देखिए)।

- **इच्छित लक्ष्य के लिए अपर्याप्त ऊर्जा:** ऊर्जा (एनर्जी) और बिजली (पावर), जिन्हें अक्सर एक-दूसरे के स्थान पर उपयोग किया जाता है, वास्तव में अलग-अलग हैं।
  - उदाहरण के लिए- अंतिम ऊर्जा उपयोग और विशिष्ट ऊर्जा कन्वर्टर्स के मामले में, स्वच्छ ऊर्जा अपनाने हेतु वाहनों में कंबस्टन (गैसोलीन और डीजल) इंजन को बदलने की आवश्यकता होगी; सभी कृषि और फसल प्रोसेसिंग मशीनरी को बदलना होगा; अलग-अलग प्रकार की औद्योगिक प्रक्रियाओं जैसे लोहा गलाने आदि में उपयोग किया जाने वाले हीट, हॉट एयर और हॉट वाटर के नए स्रोत खोजने पड़ेंगे।
- **अधिक उपभोग:** वर्तमान जलवायु परिवर्तन रणनीति बढ़ती ऊर्जा आवश्यकता के साथ पारंपरिक ईंधन की जगह नवीकरणीय और स्वच्छ ऊर्जा अपनाने पर केंद्रित है।
  - **यह रणनीति हमारे जीवन जीने के तरीके में संधारणीय पद्धतियों** को अपनाने पर ध्यान केंद्रित नहीं करती है।
- **अधिक ऊर्जा उपयोग वाली प्रौद्योगिकियों पर ध्यान:** विकसित देश क्लाउड स्टोरेज सुविधाओं, क्रिप्टो माइनिंग और AI जैसी प्रौद्योगिकियों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं, जिनसे ऊर्जा की मांग में तेजी से वृद्धि होने का अनुमान है।
  - **अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी** के एक आम अनुमान के अनुसार, **एक जैसे प्रश्न को Chat-GPT और Google पर सर्च कर किया जाए** तो Chat-GPT, **Google की तुलना में 10 गुना अधिक ऊर्जा की खपत** करती है।
- **प्रति व्यक्ति उत्सर्जकों पर ध्यान की कमी:** संयुक्त राज्य अमेरिका और चीन के बाद **भारत, विश्व का तीसरा सबसे बड़ा ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जक देश है।** इसलिए, जलवायु परिवर्तन जिम्मेदारी स्वीकार करने के लिए भारत पर बार-बार दबाव बनाया जाता है।

- **हालांकि, वर्तमान में 85% सबसे बड़े उत्सर्जक** संयुक्त राज्य अमेरिका, यूरोप और चीन जैसी एडवांस्ड अर्थव्यवस्थाओं में रहते हैं और विकासशील देशों की हिस्सेदारी केवल 10% है।

- **ऐतिहासिक डेटा पर ध्यान न देना:** विकसित देश पर्यावरण के क्षरण में अपने ऐतिहासिक जवाबदेही को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं हैं।
  - विश्व की 17% से अधिक आबादी वाला देश होने के बावजूद भारत ने 1850 और 2019 के बीच **कुल वैश्विक संचित ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में केवल 4% का योगदान** दिया।
  - सभी देशों में नेट जीरो उत्सर्जन लक्ष्य के लिए एक ही समय सीमा रखना अनुचित है।
- **जलवायु वित्त-पोषण अधिक नहीं होना:** शोध से पता चलता है कि विकासशील देशों को **2030 तक अपने मौजूदा NDC लक्ष्यों का लगभग पचास फीसदी हासिल करने के लिए लगभग 6 ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर की आवश्यकता है।**
  - **इसके विपरीत,** विकसित देशों ने 2020 तक **केवल 100 बिलियन अमेरिकी डॉलर प्रदान करने का वायदा किया था,** जिसमें से केवल 83.3 बिलियन अमेरिकी डॉलर वास्तविक रूप में प्रदान किए गए।

चार्ट XIII.5: प्रमुख अर्थव्यवस्थाएं अपने कुल और प्रति व्यक्ति जीएचजी उत्सर्जन (CO2 समतुल्य) के साथ

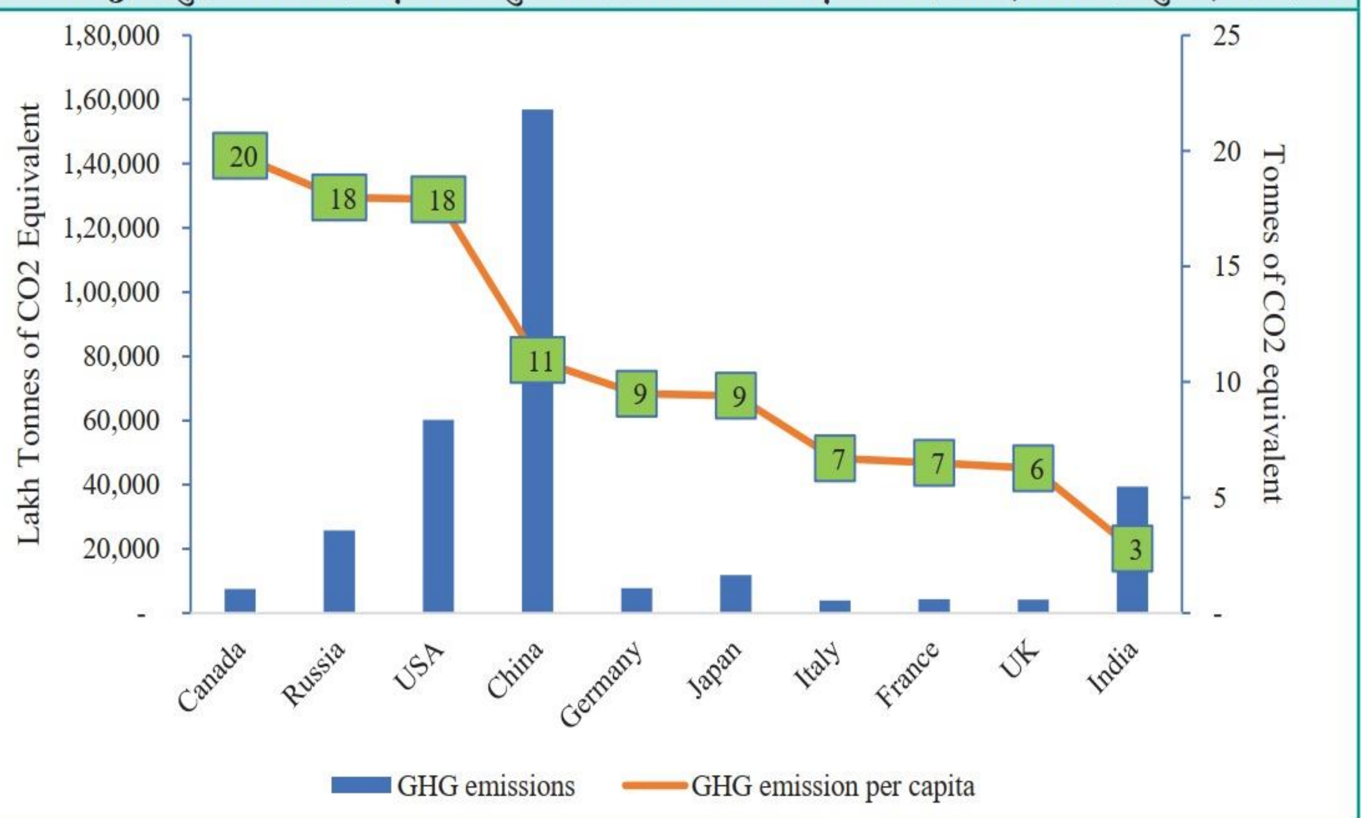

पश्चिमी शैलियों को अपनाने से विकासशील विश्व में पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव

- **भारत में बाजार उन्मुख व्यवस्था नहीं है:** भारत में एक अनोखा समाज है जहां हमारी संस्कृति, अर्थव्यवस्था, सामाजिक मानदंड और पर्यावरण परस्पर चक्रीय रूप से जुड़े हुए हैं।
  - भारत एक दक्ष **बाज़ार अर्थव्यवस्था जरूर बनना चाहता है, लेकिन बाजार आधारित समाज नहीं।**
- **उत्सर्जन में कमी के लक्ष्यों को प्राप्त करने में बाजार अर्थव्यवस्था की अपनी सीमाएं हैं:** यह वास्तव में शायद ही कभी 'अच्छा विकल्प' बने, लेकिन आर्थिक रूप से हमेशा एक अच्छे विकल्प के रूप में उभर कर आता है।
- **वन-साइज-फिट्स-ऑल (OSFA) एप्रोच की आवश्यकता नहीं:** बाजार आर्थिकी को यूनिवर्सल रूप से डिजाइन किए गए एकल मापदंड का पालन नहीं करना चाहिए बल्कि इसे स्थानीय परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए।

चार्ट XIII.7: विभिन्न विचारों के प्रति प्रतिबद्धता वाली अंतर्राष्ट्रीय घोषणाएँ

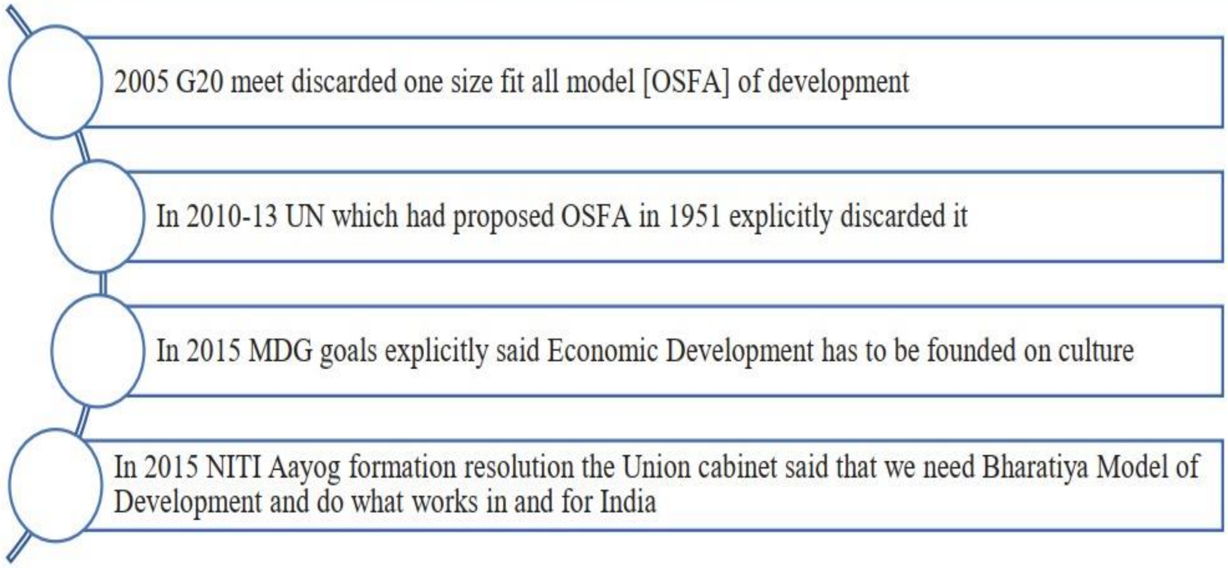

- **खाद्य-आहार संतुलन का विनाश:** मांस के लिए **पशु-चारा** उद्योग (फीड इंडस्ट्री) की हिस्सेदारी कुल कृषि योग्य भूमि की 33 प्रतिशत है। इस कृषि भूमि का उपयोग अब चारे की फसल के उत्पादन के लिए किया जाता है। इसके चलते निम्नलिखित चिंताएं सामने आईं हैं-
  - **खाद्य-आहार प्रतिस्पर्धा:** वैश्विक स्तर पर उत्पादित कुल अनाज के एक-तिहाई से अधिक का उपयोग पशु चारे के रूप में किया जाता है।
  - **भूमि की कमी:** बढ़ती आबादी को भोजन उपलब्ध करवाने के लिए 2050 तक अतिरिक्त 600 मिलियन हेक्टेयर (भारत के आकार का लगभग दोगुना) भूमि की आवश्यकता होगी।
  - **पर्यावरण पर प्रभाव:** चारा उगाने की उद्योग मानक गतिविधियां कृषि भूमि के पोषक तत्वों को स्थायी रूप से कम कर रही हैं, जिससे मृदा का क्षरण हो रहा है और जल की गुणवत्ता में गिरावट आ रही है।
  - **भोजन-पशुचारा संबंधी बहस का समाधान**
    - **विकासशील देशों की पारंपरिक कृषि पद्धतियां** अपनाई जा सकती है, जहां कई कृषि गतिविधियों के साथ पशुपालन को भी बढ़ावा दिया जाता है।
    - किसी अन्य गतिविधि के लिए इनपुट के रूप में उपयोग करने के लिए कृषि अपशिष्ट और **अन्य कृषि गतिविधियों के उपोत्पादों की रीसाइक्लिंग** (मानव के लिए अखाद्य लेकिन पशुचारे के लिए उपयुक्त; जैसे- खेतों से प्राप्त घास और खरपतवार, आदि) पर जोर देना चाहिए।
    - मांस उत्पादन प्रक्रियाओं में **बदलाव लाने की जरूरत है।**
- **आवास में परिवर्तन:**
  - **जीवन जीने के पश्चिमी मॉडल** यानी, **एकल परिवार और एकल-व्यक्ति निवास शैली को अपनाने के दुष्प्रभाव:** वर्तमान में यह अनुमान लगाया गया है कि **भारत में सभी परिवारों में से लगभग 50% एकल परिवार (1-4 सदस्य) हैं।** यह 2008 के 38% अनुपात से अधिक है।
    - यह एक ही छत के नीचे रहने वाली कई पीढ़ियों के हिंदू अविभाजित परिवारों (HUF) के हमारे पुराने सामाजिक मानदंडों में एक बड़ा बदलाव है।
  - **शहरी विस्तार की प्रवृत्ति:** उच्च-आय वाली शहरी केन्द्रित बस्तियों की बढ़ती आबादी के कारण शहरी क्षेत्रों का विस्तार होता जा रहा है।
    - इस विस्तार की वजह से **उच्च ऊर्जा खपत, प्रदूषण का उच्च-स्तर और यातायात की बढ़ती भीड़ जैसी समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं, और ये समस्याएं पर्यावरण पर नकारात्मक प्रभाव** डाल रही हैं।
  - **जीवन जीने के यूनिवर्सल मॉडल की नकल करना:** इसमें कंक्रीट, बंद स्थान, कम वेंटिलेशन और एयर कंडीशनिंग की अधिक आवश्यकता का बोलबाला है।

© Vision IAS

- **'संधारणीय आवास' से जुड़ी चिंताएं:**
  - **पूरी बिल्डिंग और निर्माण संरचना में फिर से बदलाव** करने से **अधिक संसाधनों की जरूरत प**ड़ेगी। संसाधन की कमी वाली स्थिति के लिए यह विकल्प उपयुक्त नहीं लगता।
  - उच्च-घनत्व और एक ही छत के नीचे पूरे परिवार वाले पारंपरिक घरों के संपूर्ण **जीवन-चक्र की लागत की तुलना में आधुनिक छोटे-छोटे उपायों के प्रभावों को बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया जाता है।**
- **समाधान - पारंपरिक भारतीय आवासीय स्थान: इनमें निम्नलिखित संधारणीय विशेषताएं हैं:**
  - घर के बीच में **प्रांगण;** वेंटिलेशन, प्राकृतिक रोशनी और कूलिंग की व्यवस्था तथा पूरे परिवार का एक साथ रहने का आनंद जैसी पारंपरिक भारतीय घरों की विशेषताएं कहीं अधिक संधारणीय हैं।
  - घर बनाने में दूर से कंक्रीट लाने के बदले **स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्रियों का उपयोग किया जाता है।** ,
  - **घर बनाने के लिए अत्यधिक मशीनों और इंजीनियरिंग की आवश्यकता नहीं पड़ती है, बल्कि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कारीगर** की मदद ली जाती है।

चार्ट XIII.9: 'खाद्य, चारा और खाद्य प्रसंस्करण' के लिए उपयोग की जाने वाली फसल का औसत अंश (2009-2013)

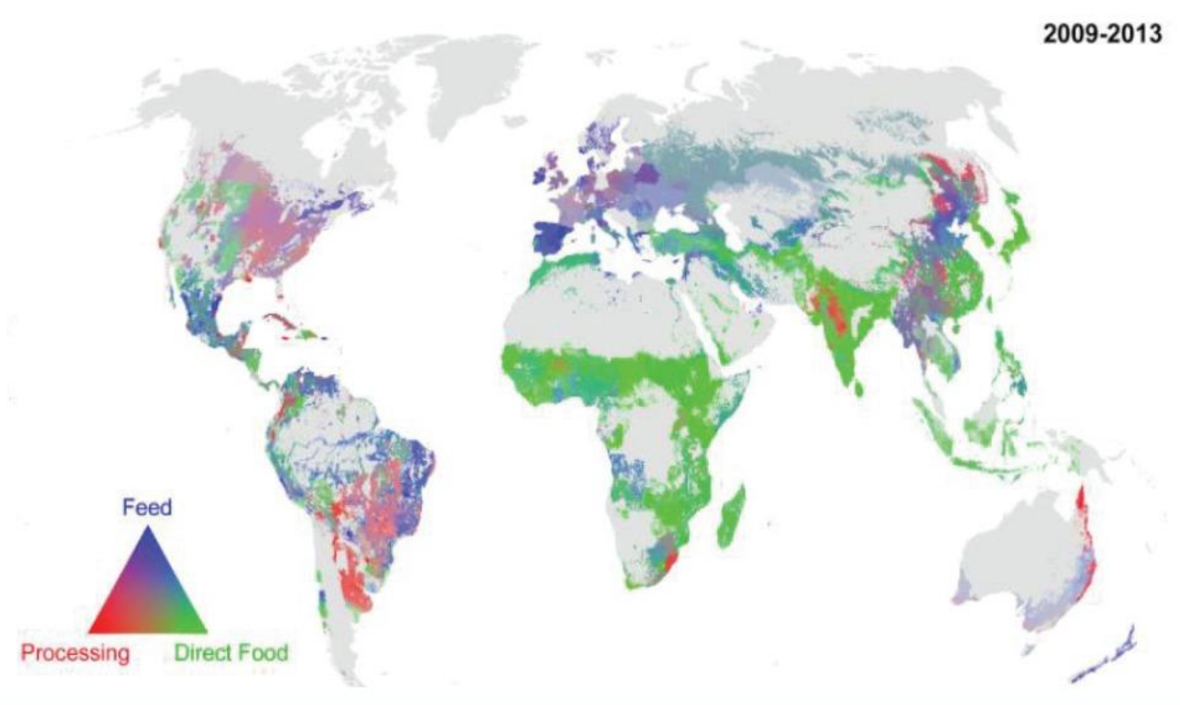

भारतीय मॉडल: एक सतत जीवन शैली

- **भारत से सीख:**
  - भारतीयों के पास सृजन और विनाश के चक्र की अवधारणा की गहरी, आध्यात्मिक और दार्शनिक समझ है।
  - **वैश्विक पर्यावरण और संधारणीयता की रणनीति** को प्रकृति की चक्रीय प्रवृत्ति के अनुसार होना चाहिए, न कि प्रकृति को बदलने के लिए मजबूर करना चाहिए।
  - नीतियां बनाते समय यह ध्यान में रखा जाना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति का **उत्सर्जन करने और उत्सर्जन को कम करने में योगदान होता है।**

मिशन लाइफ (LiFE/ पर्यावरण के लिए जीवन शैली)

- **घोषणा:** इसकी घोषणा भारत के प्रधान मंत्री ने **2021 के संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (UNFCCC-COP26) में की थी।**
- **उद्देश्य:** वैश्विक जलवायु वार्ताओं में **व्यक्तिगत जिम्मेदारी** को केंद्र-बिंदु में लाना और पृथ्वी **ग्रह के अनुकूल विकल्पों** को चुनने की दिशा में व्यक्तिगत कार्यों और सामूहिक मांग को आगे बढ़ाना।
- इसमें व्यक्तियों के लिए अधिक संधारणीय जीवन शैली अपनाने हेतु **75 LiFE कार्यों की एक व्यापक लेकिन आसान सूची शामिल** हैं।
- **लाभ:** अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार, दुनिया भर में LiFE पहल द्वारा लक्षित कई प्रकार की कार्रवाइयों और उपायों को अपनाने के निम्नलिखित फायदे हैं:
  - **2030 तक वार्षिक वैश्विक CO2 उत्सर्जन को 2 बिलियन टन (Gt) से अधिक कम करने** में मदद मिलेगी, जो **2030** तक आवश्यक उत्सर्जन कटौती का 20% है।
  - **उपभोक्ता को लगभग 440 बिलियन अमेरिकी डॉलर की बचत हो सकती है।**

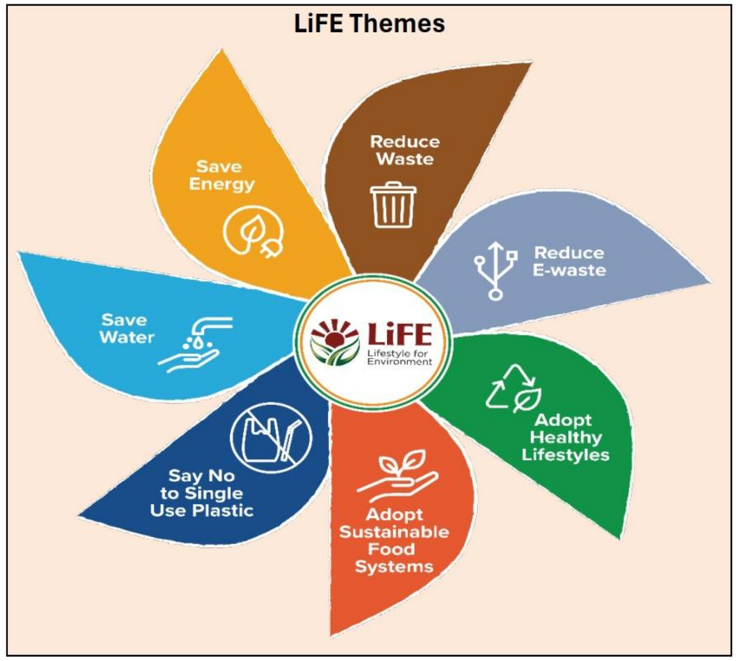

- LiFE के रूप में दुनिया के लिए एक डॉक्ट्रिन हो, **जो 5 मौलिक सिद्धांतों पर आधारित हो-**
  - **जलवायु उत्तरदायित्व के केंद्र में व्यक्तिगत कार्रवाई करना:** लोगों को, विशेष रूप से विकसित देशों के लोगों को अपनी जीवनशैली में सामान्य बदलाव लाने की आवश्यकता है। भारत में व्यक्तिगत पहल वाले संधारणीय व्यवहार के उदाहरण-
    - **रसोई की सफाई के लिए टिश्यू पेपर की जगह कपड़े** का उपयोग करना।
    - **डिस्पोजेबल प्लेटों और पैकेजिंग सामग्री की बजाय पौधों की पत्तियों** का उपयोग करना।
    - **जल आधारित शौचालय** की सफाई प्रणाली।
    - घरेलू वस्तुओं का **फिर से उपयोग और अपसाइक्लिंग।**
    - कागजी बिलों के बजाय ई-बिल स्वीकार करने के लिए **डिजिटल माध्यम से जागरूकता फैलाना**, ऊर्जा-दक्ष उत्पादों की खरीद आदि।
    - **'गिव इट अप' LPG सब्सिडी योजना।**
  - **पृथ्वी ग्रह के अनुकूल व्यक्तिगत जीवन विकल्पों को सामूहिक नीतियों में जगह देना:** छोटे-छोटे लेकिन सतत कार्यों का समय के साथ व्यापक समुचित प्रभाव देखा जा सकता है। छोटे (लघु) कार्यों के उदाहरण-
    - **अधिक जरूरी होने पर और असहनीय गर्मी पर** ही एयर कंडीशनिंग और थर्मोस्टेट का उपयोग करना।
    - डिस्पोजेबल प्लास्टिक बैग का **उपयोग कम** करना और उनकी जगह **री-यूजेबल कपड़े के बैग का उपयोग करना।**
    - व्यक्तिगत व्यवहार में बदलाव लाकर **पानी की कम खपत करना** और वर्षा जल संचयन जैसी संरचनाओं के निर्माण पर अनिवार्य डिजाइन निर्देशों का पालन करना।
    - स्थानीय बीजों और प्राकृतिक कृषि पद्धतियों के उपयोग के माध्यम से **संधारणीय कृषि को अपनाना।**
    - एक या दो सदस्य वाले परिवारों की बजाय **एक साथ रहने वाले परिवारों को सरकारी प्रोत्साहन देना।**
    - **भारत में वस्त्र उद्योग में सर्कुलेरिटी पर नीति की आवश्यकता:** वर्तमान में, भारत में कपड़े के कुल अपशिष्ट में से 50% से भी कम अपशिष्ट री-यूज, मरम्मत या पुन: निर्माण की प्रक्रिया से गुजरता है।
      - UNEP के अनुसार, फैशन उद्योग **जल संसाधन का दूसरा सबसे बड़ा उपभोक्ता है** और वैश्विक कार्बन उत्सर्जन के 2-8% के लिए जिम्मेदार है।
  - **स्थानीय और संधारणीय भौगोलिक क्षेत्र और संस्कृति का समावेश:** भारतीय व्यंजन **स्थानीय भौगोलिक क्षेत्र पर आधारित है** जो औषधीय मूल्य तो प्रदान करता ही है, साथ ही इकोलॉजिकल फुटप्रिंट और ऊर्जा की मांग को भी कम करता है।

- **भारत में आयुर्वेद की प्रैक्टिस की जाती है,** जो प्रकृति के अनुसार सामंजस्य पूर्ण जीवन जीने पर जोर देता है और इसे संधारणीय जीवन शैली के रूप में अपनाया जा सकता है।
- **संधारणीय उपभोग के स्वर्णिम सिद्धांत का पालन करना- स्थानीय खाना, ताजा खाना, संधारणीय खाना:** उदाहरण के लिए, वनस्पति-आधारित आहार पर अधिक निर्भरता बढ़ाना; फर्मेन्टेड उत्पादों का उपयोग; अपने आस-पास तुलसी जैसी औषधीय पौधों को उगाना; मौसमी और स्थानीय रूप से उपलब्ध खाद्य स्रोतों पर निर्भरता बढ़ाना - जैसे कि क्विनोआ के बदले मिलेट्स का अधिक उपयोग आदि।

- **'सही' निर्णय लेने में बाजार की बजाय पब्लिक पॉलिसी को ध्यान में रखना:** यह **नीतिगत एप्रोच के माध्यम से व्यक्तिगत जीवन के व्यवहार** को बदलने पर केंद्रित है। इसमें सरकार, सामुदायिक नेताओं और मीडिया की बड़ी भूमिका है।
  - **उदाहरण के लिए,** उजाला कार्यक्रम के तहत, लोगों को सब्सिडी पर LED लाइट्स खरीदने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इससे स्वच्छ रोशनी के लिए लोगों को कम कीमत चुकानी पड़ी।
- **संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना, जो जरूरत आधारित हों, न कि लालच पर:** देशों को अत्यधिक भौतिकवाद के नकारात्मक बाहरी प्रभावों को दूर करने के लिए **संधारणीय जीवन शैली अपनाने के लिए प्रोत्साहित** करना चाहिए।

निष्कर्ष

- उपर्युक्त सिद्धांतों को अपने जीवन में उतारने के लिए सबसे महत्वपूर्ण मानवीय कारक 'संतुष्टि' है जो समभाव यानी शांत-चित्त मनोदशा से आती है। अब समय आ गया है कि हम समभाव के साथ समाज को फिर से बनाए। अधिक उपभोग की भूख को कम करें ताकि हम संधारणीयता की ओर बढ़ सकें।
- आंतरिक समभाव दूसरों को भी अधिक स्वीकार्य बनाने में योगदान देता है और इसलिए बेहतर मानवीय संबंध स्थापित होते हैं। हमारे सचेत और अचेतन निर्णय पृथ्वी पर जीवन के प्रेरकों से अलग नहीं होने चाहिए। इसलिए, जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक आंदोलन स्वायत्त विकल्पों और आर्थिक जरूरतों के अनुरूप होना चाहिए, लेकिन इसे व्यक्तिगत व्यवहार यानी 'लाइफ (LiFE)' पर केंद्रित होना चाहिए।

बजट में क्या कहा गया है?

- **ट्रांज़िट ओरिएंटेड डेवलपमेंट**
  - इसे 30 लाख से अधिक आबादी वाले 14 बड़े शहरों में कार्यान्वयन और वित्तपोषण करना।
- **शहरी आवास**
  - अगले 5 वर्षों में प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) 2.0 के तहत 10 लाख करोड़ रुपये का निवेश किया जाएगा, जिसमें 2.2 लाख करोड़ रुपये की केंद्रीय सहायता शामिल है।
- **प्लास्टिक**
  - PVC फ्लेक्स बैनरों पर बेसिक कस्टम ड्यूटी 10 से बढ़ाकर 25 प्रतिशत की गई।
- **सौर ऊर्जा**
  - सौर सेल और पैनल के निर्माण में उपयोग के लिए पूंजीगत वस्तुओं को सीमा शुल्क से छूट दी गई है।

शब्दावली

शब्द/ पद	अर्थ
बाजार आधारित समाज (मार्केट सोसाइटी)	• **बाजार आधारित समाज** अक्सर मार्केट इकॉनमी की एक दीर्घकालिक व्यवहार का परिणाम है, जहां सामाजिक मानदंड बाजार मूल्यों से अत्यधिक प्रभावित हो जाते हैं। इससे उन क्षेत्रों का कमोडिफिकेशन हो जाता है जो परंपरागत रूप से नॉन-मार्केट मानदंडों द्वारा शासित होते थे। ○ **बाजार अर्थव्यवस्था** इस धारणा पर केंद्रित होती है कि वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन आपूर्ति और मांग द्वारा संचालित होते है।

अध्याय 13: अपने सीखने के कौशल का परीक्षण कीजिए

MCQs

1. निम्नलिखित में से कौन सा/से भारत के 'मिशन लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवन शैली)' की थीम/थीम्स है/हैं?

   1. सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग को मना करना
   2. स्वस्थ जीवन शैली अपनाना
   3. पानी बचाना

   नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:

   (a) केवल एक
   (b) केवल दो
   (c) सभी तीन
   (d) कोई नहीं

© Vision IAS

2. निम्नलिखित देशों को उनके प्रति व्यक्ति GHG उत्सर्जन (CO_2 समतुल्य) के घटते क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. भारत
2. यूएसए
3. जापान

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) 1-3-2

(b) 2-3-1

(c) 3-2-1

(d) 1-2-3

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. अमेरिका और चीन के बाद भारत तीसरा सबसे बड़ा GHG उत्सर्जक देश है।
2. भारत ने 1850 और 2019 के बीच वैश्विक संचयी ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में केवल 4% का योगदान दिया।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

4. 'मिशन लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवन शैली)' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. भारत ने 2023 में आयोजित संयुक्त राष्ट्र जलवायु परिवर्तन सम्मेलन (UNFCCC-COP28) में इसकी घोषणा की थी।
2. इसका उद्देश्य व्यक्तिगत कार्यों और सामूहिक मांग को पृथ्वी ग्रह के अनुकूल विकल्पों की ओर ले जाना है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन सा/ से सही है/ हैं?

(a) केवल 1

(b) केवल 2

(c) 1 और 2 दोनों

(d) न तो 1, न ही 2

5. निम्नलिखित खाद्य उत्पादों को उनकी आपूर्ति श्रृंखला में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन के बढ़ते क्रम में व्यवस्थित कीजिए।

1. बीफ
2. कॉफ़ी
3. चावल

नीचे दिए गए कोड का उपयोग करके सही उत्तर का चयन कीजिए:

(a) 3-2-1

(b) 1-3-2

(c) 3-1-2

(d) 1-2-3

प्रश्न

1. जलवायु परिवर्तन से निपटने की वर्तमान वैश्विक रणनीति में कुछ मौलिक खामियां मौजूद हैं, विशेषकर विकासशील देशों में। स्पष्ट कीजिए। (150 शब्द)
2. भारत का मिशन लाइफ (पर्यावरण के लिए जीवन शैली) क्या है, और यह वैश्विक जलवायु कार्रवाई में योगदान करने में कैसे मदद कर सकता है? (250 शब्द)

MCQs के उत्तर

Chapter 1 Answers:

1) D	2) D	3) D	4) B	5) A

Chapter 2 Answers:

1) D	2) B	3) C	4) C	5) A

Chapter 3 Answers:

1) D	2) B	3) B	4) C	5) A

Chapter 4 Answers:

1) A	2) D	3) A	4) C	5) B

Chapter 5 Answers:

1) A	2) A	3) B	4) C	5) C

Chapter 6 Answers:

1) C	2) B	3) D	4) B	5) A

Chapter 7 Answers:

1) B	2) A	3) A	4) C	5) A

Chapter 8 Answers:

1) D	2) C	3) B	4) D	5) B

Chapter 9 Answers:

1) C	2) D	3) A	4) B	5) B

Chapter 10 Answers:

1) B	2) A	3) B	4) D	5) B

Chapter 11 Answers:

1) C	2) A	3) A	4) D	5) D

Chapter 12 Answers:

1) A	2) A	3) D	4) C	5) B

Chapter 13 Answers:

1) C	2) B	3) C	4) B	5) A

Copyright © by Vision IAS

All rights are reserved. No part of this document may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Vision IAS.

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION
SANDHAN

संधान के जरिए पर्सनलाइज्ड तरीके से UPSC प्रीलिम्स की तैयारी कीजिए

(ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज के तहत पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज)

UPSC प्रीलिम्स की तैयारी के लिए सिर्फ मॉक टेस्ट देना ही काफी नहीं होता है; बल्कि इसके लिए स्मार्ट तरीके से टेस्ट की प्रैक्टिस भी जरूरी होती है।

अभ्यर्थियों की तैयारी के अलग-अलग स्तरों और उनकी जरूरतों को ध्यान में रखते हुए, हमने संधान टेस्ट सीरीज को डिजाइन किया है। यह ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज के तहत ही एक पर्सनलाइज्ड टेस्ट सीरीज है।

संधान की मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

प्रश्नों का विशाल संग्रह: इसमें UPSC द्वारा विगत वर्षों में पूछे गए प्रश्नों (PYQs) के साथ-साथ VisionIAS द्वारा तैयार किए गए 20,000 से अधिक उच्च गुणवत्ता वाले प्रश्न उपलब्ध हैं।

पर्सनलाइज्ड टेस्ट: अभ्यर्थी अपनी जरूरत के अनुसार विषयों और टॉपिक्स का चयन करके पर्सनलाइज्ड टेस्ट तैयार कर सकते हैं।

प्रश्नों के चयन में फ्लेक्सिबिलिटी: अभ्यर्थी टेस्ट के लिए Vision IAS द्वारा तैयार किए गए प्रश्नों या UPSC के विगत वर्षों के प्रश्नों में से चयन कर सकते हैं।

समयबद्ध मूल्यांकन: अभ्यर्थी परीक्षा जैसी स्थितियों को ध्यान में रखते हुए तय समय-सीमा में टेस्ट के जरिए अपने टाइम मैनेजमेंट स्किल का मूल्यांकन कर उसे बेहतर बना सकते हैं।

प्रदर्शन में सुधार: टेस्ट में अभ्यर्थी के प्रदर्शन के आधार पर, सुधार की गुंजाइश वाले क्षेत्रों पर पर्सनलाइज्ड फीडबैक दिया जाएगा।

स्टूडेंट डैशबोर्ड: स्टूडेंट डैशबोर्ड की सहायता से अभ्यर्थी हर विषय में अपने प्रदर्शन और ओवरऑल प्रगति को ट्रैक कर सकेंगे।

संधान के मुख्य लाभ

अपनी तैयारी के अनुरूप प्रैक्टिस: अभ्यर्थी अपनी जरूरतों के हिसाब से विषयों और टॉपिक्स का चयन कर सकते हैं। इससे अपने मजबूत पक्षों के अनुरूप तैयारी करने में मदद मिलेगी।

पर्सनलाइज्ड असेसमेंट: अभ्यर्थी अपनी आवश्यकता के अनुसार टेस्ट तैयार करने के लिए Vision IAS द्वारा तैयार प्रश्नों या UPSC में पिछले वर्षों में पूछे गए प्रश्नों का चयन कर सकते हैं।

कॉम्प्रिहेंसिव कवरेज: प्रश्नों के विशाल भंडार की उपलब्धता से सिलेबस की संपूर्ण तैयारी सुनिश्चित होगी।

लक्षित तरीके से सुधार: टेस्ट के बाद मिलने वाले फीडबैक से अभ्यर्थियों को यह पता लग सकेगा कि उन्हें किन विषयों (या टॉपिक्स) में सुधार करना है। इससे उन्हें तैयारी के लिए बेहतर रणनीति बनाने में सहायता मिलेगी।

प्रभावी समय प्रबंधन: तय समय सीमा में प्रश्नों को हल करने से टाइम मैनेजमेंट के लिए कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी।

आत्मविश्वास में वृद्धि: कस्टमाइज्ड सेशन और फीडबैक से परीक्षा के लिए अभ्यर्थियों की तैयारी का स्तर तथा उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।

यह अपनी तरह की एक इनोवेटिव टेस्ट सीरीज है। संधान के जरिए, अभ्यर्थी तैयारी की अपनी रणनीति के अनुरूप टेस्ट की प्रैक्टिस कर सकते हैं। इससे उन्हें UPSC प्रीलिम्स पास करने के लिए एक समग्र तथा टार्गेटेड अप्रोच अपनाने में मदद मिलेगी।

रजिस्ट्रेशन करने और "ऑल इंडिया GS प्रीलिम्स टेस्ट सीरीज" का ब्रोशर डाउनलोड करने के लिए दिए गए QR कोड को स्कैन कीजिए

संधान पर्सनलाइज्ड टेस्ट कैसे एक परिवर्तनकारी प्लेटफ़ॉर्म बन सकता है, यह जानने के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

AHMEDABAD | BENGALURU | BHOPAL | CHANDIGARH | DELHI | GUWAHATI | HYDERABAD | JAIPUR | JODHPUR | LUCKNOW | PRAYAGRAJ | PUNE | RANCHI

लाइव / ऑनलाइन
कक्षाएं भी उपलब्ध

VISIONIAS
INSPIRING INNOVATION

सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स 2025

प्रीलिम्स और मेन्स, दोनों

दिल्ली	अवधि
22 अगस्त | 1 PM	12–14 महीने

VisionIAS ऐप को डाउनलोड करने के लिए दिए गए **QR कोड को स्कैन कीजिए**

नि:शुल्क काउंसिलिंग के लिए QR कोड को स्कैन कीजिए

डेली MCQs और अन्य अपडेट्स के लिए हमारे ऑफिशियल **टेलीग्राम ग्रुप को ज्वाइन कीजिए**

- सामान्य अध्ययन फाउंडेशन कोर्स में GS मेन्स के सभी चारों पेपर, GS प्रीलिम्स, CSAT और निबंध के सिलेबस को विस्तार से कवर किया जाता है।
- अभ्यर्थियों के ऑनलाइन स्टूडेंट पोर्टल पर लाइव एवं ऑनलाइन रिकॉर्डेड कक्षाओं की सुविधा भी उपलब्ध है, ताकि वे किसी भी समय, कहीं से भी लेक्चर और स्टडी मटेरियल तक प्रभावी ढंग से पहुंच सकें।
- इस कोर्स में पर्सनालिटी डेवलपमेंट प्रोग्राम भी शामिल है।
- 2025 के प्रोग्राम की अवधि: 12–14 महीने
- प्रत्येक कक्षा की अवधि: 3–4 घंटे, सप्ताह में 5–6 दिन (आवश्यकता पड़ने पर रविवार को भी कक्षाएं आयोजित की जा सकती हैं)

नोट: अभ्यर्थी फाउंडेशन कोर्स की लाइव वीडियो कक्षाएं घर बैठे अपने ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी देख सकते हैं। साथ ही, अभ्यर्थी लाइव चैट के जरिए कक्षा के दौरान अपने डाउट्स और विषय संबंधी प्रश्न पूछ सकते हैं। इसके अलावा, वे अपने डाउट्स और प्रश्न को नोट कर दिल्ली सेंटर पर हमारे क्लासरूम मेंटर को बता सकते हैं, जिसके बाद फोन/ मेल के जरिए अभ्यर्थियों के प्रश्नों का समाधान किया जाता है।

GS फाउंडेशन कोर्स की अन्य मुख्य विशेषताओं पर एक नज़र

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मूल्यांकन
अभ्यर्थियों को नियमित ट्यूटोरियल, मिनी टेस्ट एवं ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज के माध्यम से व्यक्तिगत व अभ्यर्थी के अनुरूप और ठोस फीडबैक दिया जाता है

सभी द्वारा पढ़ी जाने वाली एवं सभी द्वारा अनुशंसित
विशेषज्ञों की एक समर्पित टीम द्वारा तैयार की गई मासिक समसामयिकी मैगजीन, PT 365 और Mains 365 डॉक्यूमेंट्स तथा न्यूज़ टुडे जैसी प्रासंगिक एवं अपडेटेड अध्ययन सामग्री

नियमित तौर पर व्यक्तिगत मार्गदर्शन
इस कोर्स के तहत अभ्यर्थियों के डाउट्स दूर करने और उन्हें प्रेरित रखने के लिए नियमित रूप से फोन/ ईमेल/ लाइव चैट के माध्यम से "वन–टू–वन" मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज़
प्रत्येक 3 सफल उम्मीदवारों में से 2 Vision IAS की ऑल इंडिया टेस्ट सीरीज को चुनते हैं। Vision IAS के पोस्ट टेस्ट एनालिसिस के तहत टेस्ट पेपर में स्टूडेंट्स के प्रदर्शन का विस्तार से विश्लेषण एवं समीक्षा की जाती है। यह अपनी गलतियों को जानने एवं उसमें सुधार करने हेतु काफी महत्वपूर्ण है।

कोई क्लास मिस ना करें
प्रत्येक अभ्यर्थी को एक व्यक्तिगत "स्टूडेंट पोर्टल" उपलब्ध कराया जाता है। इस पोर्टल के जरिए अभ्यर्थी किसी भी पुराने क्लास या छूटे हुए सेशन और विभिन्न रिसोर्सेज़ को एक्सेस कर सकते हैं एवं अपने प्रदर्शन का सापेक्ष एवं निरपेक्ष मूल्यांकन कर सकते हैं।

बाधा रहित तैयारी
अभ्यर्थी VisionIAS के क्लासरूम लेक्चर्स एवं विभिन्न रिसोर्सेज़ को कहीं से भी तथा कभी भी एक्सेस कर सकते हैं और वे इन्हें अपनी जरुरत के अनुसार ऑर्गनाईज कर सकते हैं।

/c/VisionIASdelhi /vision_ias /visionias_upsc /VisionIAS_UPSC

Heartiest
Congratulations
to all Successful Candidates
79
in TOP 100 Selections in CSE 2023
from various programs of Vision IAS
1 AIR
Aditya Srivastava
2 AIR Animesh Pradhan
5 AIR Ruhani
6 AIR Srishti Dabas
7 AIR Anmol Rathore
9 AIR Nausheen
10 AIR Aishwaryam Prajapati
हिंदी माध्यम में 35+ चयन CSE 2023 में
हिदी माध्यम टॉपर
53 AIR मोहन लाल
136 AIR अर्पित कुमार
238 AIR विपिन दुबे
257 AIR मनीषा धार्वे
313 AIR मयंक दुबे
517 AIR देवेश पाराशर
UPSC TOPPERS/OPEN SESSION: QR स्कैन करें
53 AIR TOPPERS' TALK मोहन लाल
136 AIR TOPPERS' TALK अर्पित कुमार
विगत वर्षों में UPSC मेन्स में पूछे गए प्रश्न
UPSC मेन्स 2024 के लिए व्यापक रणनीति
DELHI
HEAD OFFICE
Apsara Arcade, 1/8-B 1st Floor, Near Gate-6 Karol Bagh Metro Station
MUKHERJEE NAGAR CENTER
Plot No. 857, Ground Floor, Mukherjee Nagar, Opposite Punjab & Sindh Bank, Mukherjee Nagar
GTB NAGAR CENTER
Classroom & Enquiry Office, above Gate No. 2, GTB Nagar Metro Building, Delhi - 110009
FOR DETAILED ENQUIRY
Please Call: +91 8468022022, +91 9019066066
enquiry@visionias.in
/c/VisionIASdelhi
/visionias.upsc
/vision _ias
VisionIAS_UPSC
अहमदाबाद
बेंगलूरु
भोपाल
चंडीगढ
दिल्ली
गुवाहाटी
हैदराबाद
जयपुर
जोधपुर
लखनऊ
प्रयागराज
पुणे
रांची